सूरजमुखी का सपना

अंतर्भारतीय पुस्तकमाला

सूरजमुखी का सपना

सैय्यद अब्दुल मलिक

अनुवाद

लोकनाथ भराली

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया

भूमिका

असमिया भाषा में उपन्यास लिखने के प्रयास का आरंभ 'अरुणोदय काल' (ईस्वी 1846-82) में ही हुआ है। अरुणोदय काल में असमिया भाषा ने जिस प्रकार अपने पूर्व स्वरूप को छोड़कर नए स्वरूप को स्वीकारा था, रचना-शैली में अभिनवत्व आया था, उसी प्रकार साहित्य में भी एक नए प्रकार के साहित्य के सृजन के लिए द्वार उन्मोचन किया था। वह है उपन्यास साहित्य। बृहत्कथाा के समय से ही यद्यपि भारतीय साहित्य में कथा और आख्यानों के लिखने की परंपरा थी, उपन्यास कहने से साहित्य की जो विद्या मानस-पटल में झांकने लगती है, उस प्रकार का साहित्य उस काल में नहीं रचा गया था। इसलिए, प्राचीन असमिया साहित्य में भी आधुनिक काल के उपन्यास का पूर्व रूप नहीं था। रवींद्रनाथ ठाकुर ने अवश्य ही कहा था कि महाकाव्य और उपन्यास के बीच कोई मौलिक अंतर नहीं है ; क्योंकि दोनों ही मूलतः आख्यान का ही वर्णन करते हैं।

अरुणोदय काल में 'जात्रिकर जात्र' नाम से बुनियान के 'पिलग्रिम्स प्रोग्रेस' का भाषांतर हुआ था। (यहां ध्यान देने की बात है कि 'जात्रिक' शब्द का व्यवहार असमिया भाषा में नहीं है; संस्कृत और प्राकृत व्याकरण के अनुसार भी 'जात्रिक' शब्द का गठन नहीं हुआ है।)

इनके अलावा इसी काल में ही कामिनीकांत, फुलमनि, आरु करुणा, एलोकेशी बेश्यार कथा, आदि उपन्यास के नाम से कुछ कहानियों का प्रचार हुआ। ये सारे उपन्यास मिशनरियों ने बंगला भाषा में लिखे थे, और बाद में असमिया में अनुवाद कराए थे। कहना न होगा कि ये सारे धार्मिक दृष्टिकोण से लिखित प्रचारात्मक उपदेशप्रधान उपन्यास हैं। इसी काल में प्रकाशित पद्मावती फुकननी का उपन्यास 'सुधर्म्मार उपाख्यान' इस कोटि की मौलिक रचना है। उपदेश-प्रधान होते हुए भी 'सुधर्म्मार उपाख्यान' प्रचारात्मक नहीं है।

दरअसल उन्नीसवीं शताब्दी के अंतिम दशक में ही असमिया उपन्यास का आरंभ होता है। सन् 1891 में प्रकाशित श्रीपद्मनाथ गोहांई बरुआ का 'भानुमती' और उसके ठीक बाद ही प्रकाशित इन्हीं का 'लाहरी' असमिया उपन्यास साहित्य का शिलान्यास समझा जा सकता है। दोनों उपन्यासों के कथानकों को आहोम शासन

के अंतिम समय के इतिहास से लिया गया है। इतिहास से कथानक लिए जाने पर भी इन दोनों उपन्यासों को ऐतिहासिक उपन्यास की संज्ञा देना आसान नहीं है। ऐतिहासिक घटनाओं का सिलसिला दोनों उपन्यासों के निकट का अवलंबन नहीं है, दूर की पृष्ठभूमि ही है''। ऐतिहासिक घटनाओं ने कथानकों के विकास में सहायता नहीं की है, ऐतिहासिक चरित्रों ने ऐतिहासिक संभावनाओं को उन्मुक्त विचरण का मौका दिया है।

इसके कुछ ही दिनों बाद श्री लक्ष्मीनाथ बेजबरुआ का 'पदुम कुंवरी' नाम का उपन्यास प्रकाशित हुआ। 'पदुम कुंवरी' का कथानक भी उसी काल के इतिहास से लिया गया है। किंतु 'भानुमती' और 'लाहरी' उपन्यासों से 'पदुम कुंवरी' उपन्यास पर इतिहास का प्रभाव अधिक है। घटनाशम इतिहास से जुड़े रहने पर भी 'पदुम कुंवरी' के बहुत सारे चरित्र काव्य जगत के ही हैं। परिस्थितियों के अयथार्थ चित्रण ने उपन्यास के सौष्ठव को दूषित किया है।

कथानकों का विकास, घटनाओं की परिपाटी, वर्ण्यशैली, चरित्र-चित्रण, मनःस्थिति और संघातों की अभिव्यक्ति की ओर से विश्लेषण करने पर देखी जाती हैं।

इसी दशक में ही श्री रजनीकांत बरदलै का सामाजिक उपन्यास 'मिरी जीयरी' प्रकाशित हुआ। सोवनगिरि नदी के किनारे 'मिछि' जनजाति समाज के एक युगल युवक-युवती के बीच की प्रेम कहानी को लेकर लिखा गया 'मिरि जीयरी' एक दुखांत उपन्यास है। सही अर्थ में असमिया में यही पहला सामाजिक उपन्यास है। उसके बाद श्री बरदलै के 'रहदै लिगिरी', 'मनोमती', 'रडिंली', 'निर्म्मल' 'भकत और तामेश्वरी मंदिर', आदि ऐतिहासिक उपन्यासों का प्रकाशन हुआ।

गोहांई बरुआ, बेजबरुआ और बरदलै—असमिया उपन्यास साहित्य के इन तीन पथ-निर्माताओं द्वारा, अपने-अपने उपन्यास के लिए इतिहास से कथानक चुने जाने पर यह अनुमान किया जा सकता है कि स्वतंत्र असम के अंतिम काल की घटनाओं ने उनकी मनःस्थिति पर गंभीर प्रभाव छोड़ा था। संभवयता विचित्रताहीन स्थिर समाज की तुलना में संघात प्रधान अतीत की घटनाएं उनके लिए अधिक आकर्षक थीं।

नाटक और उपन्यास के कथानकों के लक्षणों का विश्लेषण करके देखने पर सामान्यतः यही देखा जाता है—पौराणिक आख्यानों में नाटक का उद्भव होकर, ऐतिहासिक आख्यानों से होकर, सामाजिक आख्यानों में इसको पूर्णता प्राप्त हुई है। किंतु उपन्यास का जन्म सामाजिक घटनाक्रमों में ही हुआ है। असमिया उपन्यास का भी जन्म सामाजिक घटनाक्रमों में ही हुआ है। किंतु मोड़ बदलकर इतिहास की ओर उसने दिशा ली। 'मिरि जीयरी' इसमें व्यक्तिक्रम है।

बीसवीं सदी के प्रारंभ से उस सदी के तीसरे और चौथे दशक तक का काल

असमिया उपन्यास का विकास का काल है। इस काल में लिखे गए कई उपन्यास काल की सीमा को लांघने में समर्थ हुए हैं। इस काल में प्रकाशित उपन्यासों के कथानक प्रायः समाज के अभिजात वर्ग या क्षितिज वर्ग से लिए गए हैं। कथानक का विकास, चरित्र-चित्रण, मानसिक द्वंद्व के विश्लेषणात्मक वर्णन में उपन्यास की शिल्प-विधि का सार्थक प्रयोग दिखाई पड़ता है। कई उपन्यासों में किसी प्रकार के राजनीतिक आर्दश का समावेश किए बिना एक आदर्श को उपस्थापित किया गया है और सत्य का प्रतिपादन किया है। मनस्तात्विक विश्लेषण रहते हुए भी उपन्यासकार सामाजिक घटक्रमों के आवर्त्तण में, पीड़ित लोगों के मन की गहराई में नहीं जा सका है। संक्षेप में कहा जा सकता है कि इस काल के उपन्यास घटना के वर्णन में जितना सफल हुए हैं, मानव-अंत के सनातन द्वंद्व के विश्लेषण में उतना ऊपर उठ नहीं सके हैं।

दूसरे विश्वयुक और 'भारत छोड़ो आंदोलन' ने सारे भारत में सामाजिक मूल्य में जो परिवर्तन किया है, युक क्षेत्र की देहरी पर स्थित असम उससे अछूता नहीं रह सकता था। इस परिवर्तन के कारण और स्वरूप दोनों ही व्यापक और गहरे हैं। परिवर्तित सामाजिक मूल्यों ने असमिया साहित्यिकों की अनुभूति को झंकृत कर दिया है। आहत अनुभूति ने कहानी-उपन्यास के माध्यम से अपने को साकार किया। किंतु युक से उत्पन्न कारणों से नई अनुभूति, नई सृष्टि का प्रकाश 1945-46 में ही हुआ। असल में इसी समय से ही असमिया साहित्य का युकोत्तर काल आंरभ हुआ है।

युद्धोत्तर असमिया साहित्य, विशेष रूप से कहानी और उपन्यास व्यापक है। विविध अनुभवों का समावेश, अवलेहित क्षेत्र और उपेक्षित चरित्रों का संग्रह, तीव्र अनुभूति तथा उदग्र वासना की तीक्ष्ण अभिव्यक्ति और राजनीतिक मतवादों के अनुकूल सृष्ट सामाजिक चेतना के विश्लेषण से पुष्ट इस युग का कथा साहित्य केवल विशिष्ट ही नहीं, व्यापक भी है। पहले की स्वच्छंदतावादी भावुकता के स्थान पर यथार्थता और दैहिक अनुभूति दिखाई पड़ता है।

सैय्यद अब्दुल मलिक एक यशस्वी कथाकार हैं। कहानीकार के रूप में ये अधिक मशहूर हैं। दूसरे विश्वयुद्ध के पूर्व से ही ये लिखने लगे और आज भी लिख रहे हैं। यह सही है कि समय के अंतराल के साथ मलिक की कहानी के विषय में परिवर्तन हुआ है, स्वरूप में कोई विशेष परिवर्तन नहीं हुआ है। संक्षेप में, इस परिवर्तन को कल्पना से वस्तुनिष्ठ और मध्यम वर्ग के शिक्षित कोटि से सामान्य वर्ग की कोटि में उतर आना कह सकते हैं।

कहानीकार के रूप में साहित्य जगत में प्रवेश किए जाने पर छोटे-बड़े दस-ग्यारह उपन्यासों में 'सूरजमुखीर स्वप्न' इनकी अन्यतम कृति है। यह उपन्यास पहले-पहल असम प्रकाशन परिषद की आर्थिक सहायता से प्रकाशित हुआ था, और दो वर्ष पहले इस पर साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त हुआ था।

'सूरजमुखीर स्वप्न' की रचना असम राज्य की धनशिरि नदी के किनारे के एक गांव को केंद्रित करके की गई है। यह हिंदू-मुसलमान, नेपाली-मिकिर का मिला-जुला गांव है। वहां नामघर (प्रार्थना-गृह) है, मस्जिद भी है। धनशिरि में बाढ़ आने पर, जंगली हाथी निकलने पर, किसी के घर में आग लगने पर, हैजा-शीतला होने पर अल्लाह और ईश्वर एक साथ गांव में आते हैं। धनशिरि की बाढ़ की तलौंछ से उपजाऊ बने मैदान में डालिम के किसान खेती करते हैं और झील में मछली पकड़ते हैं।

इस कृषि पर निर्भर समाज का एक आंतरिक चित्र इस उपन्यास में अभिव्यक्त हुआ है। उपन्यास का नायक गुलच ऐसा है जैसे नई जमीन तैयार करके खेती करने का आग्रह।

इस उपन्यास के दो चरित्रों के अलावा (उनमें से एक गौण है) बाकी सभी चरित्र मुसलमान समाज के हैं। इसका अर्थ यह नहीं कि उसमें एक भिन्न समाज का चित्र मुखर हुआ है। सामाजिक रीति-रिवाज, आचार-व्यवहार, पहनावा आदि सभी विषयों में असम में हिंदू-मुसलमानों के बीच कोई भेद नहीं है। इसलिए, उपन्यास के चरित्र-चित्रण में असम के शिक्षा-दीक्षाहीन किसी भीतरी गांव के रहने वाले और कठोर जीवन-संघर्ष के बीच जीवित रहने वाले बूढ़ा-बूढ़ी, जवान लड़के-लड़कियों का चित्रण ही अच्छा हुआ है। उसके अलावा गुलच, केलाई, तिखर, कपाही, चेनिमाइ, तरा आदि नाम भी बिलकुल असमिया हैं और दोनों रूप से चलते हैं। उपन्यास का कथानक इस प्रकार है—डालिम गांव का तेईस वर्ष का जवान गुलच अपने ही गांव की लड़की चेनिमाइ के साथ एक रात भाग गया। इंदू नेपाली के गुहाल में रात बिताने के बाद दोनों पकड़े गए। गुलच के पिता ने इस दुष्कार्य के लिए अपने बेटे को घर से निकाल दिया। गुलच के साथ उसकी मां भी परिवार से निकल आई। चेनिमाइ अपने पिता के घर चली गई। इधर मां और गुलच अलग एक साथ रहने लगे। गुलच नदी के उस पार पाही में काम करने लगा। बीच-बीच में गुलच पाही से घर आता और तरा के परिवार में भी जाता। चौदह वर्ष की तरा अपनी मौसी कपाही के साथ गांव के एक छोर पर रहती है। कपाही की जवानी कभी न घटने वाली थी, उसकी उम्र करीब तीस वर्ष की थी, किंतु अब भी षोड़शी लगती थी''। गुलच और तरा का पूर्व राग गंभीर प्रेम में बदल जाता है। मौका पाकर एक दिन तरा को पाही ले जाने का उपाय गुलच ने किया। किंतु तरा नहीं, कपाही ही छिपे वेष में उसके साथ गई। दामन काढ़ी हुई कपाही के साथ मौलवी ने तरा का निकाह पढ़ाकर विवाह की रस्म पूरी की। गुलच पहले हक्का-बक्का हुआ, फिर उसने हालत को मान लिया''। गुलच कपाही का नया संसार बसा। तरा भी जाकर उस संसार की यात्री बनी। अब गुलच का संसार धनधान्य से भरा-पूरा है। गुलच सुखी है, किंतु उसके हृदय में एक अज्ञात वेदना है। तरा की वेदना भी मूक है, अव्यक्त है। कपाही

के रहने पर तरा नदी के किनारे के झुरमुटों के बीच गुलच का सान्निध्य लाभ करती है।

चेनिमाइ का विवाह अधेड़ और रोगी केलाई के साथ होता है। उसकी चिकित्सा के लिए गुलच उसे गोलाघाट नगर ले जाता है। केलाई को अस्पताल में भर्ती करवाकर गुलच एक रात चेनिमाइ के साथ मेस में बिताता है और गांव वापस आ जाता है''। घर पहुंचकर वह केलाई के छोटे भाई तिखर को अपने घर में पाता है। तरा को उसके साथ विवाह कर देने का षड्यंत्र कपाही रच रही थी, यह समझकर वह आपा खो बैठता है और एक दिन कपाही को हल-बैल हांकने वाली छड़ी से पीटकर उसे घर से निकाल देता है। धनशिरि की गोद में संध्या-देवी उतर आती है। धनशिरि किनारों को तोड़ती है। झंझावात आकाश और पृथ्वी को एक कर रहा है। तरा गुलच के निकट आती है। गुलच कहता है, "बाढ़ आई है, इस साल की खेती बर्बाद हो गई है, तेरी मौसी भी चली गई, सब समाप्त हो गया। जाने दे, तू है...''

गुलच-तरा-कपाही इस तिकोने प्रेम के संघात में उपन्याम के कथानक का विकास हुआ है। चेनिमाइ इस केंद्र के बाहर है, फालतू है। किंतु चेनिमाइ ही गुलच की प्रथम नारी है। चेनिमाइ ने ही गुलच के हृदय में वासना की तीव्र आग जलाई थी''। उद्बुक वासना के साथ गुलच मुकुलित यौवना तरा के पास जाता है। दूसरी ओर प्रौढ़ा कपाही चाहती है गुलच को। चरित्र्च्युता कपाही, उम्र में अपने से छोटे गुलच के सामने देह समर्पण करने में जरा भी संकोच नहीं करती है। (बसीरत के साथ अपना अवैध संबंध रखे जाने के संदेह में उसके मर्द ने कपाही को घर से निकाल दिया था।) उसके बाद एक दिन तरकीब से तरा को वंचित करके खुद ही कपाही गुलच की संगिनी बन जाती है। गुलच का मन खोजता है तरा को, किंतु चेनिमाइ द्वारा जगाई गई वासना खोजती है कपाही को; इसलिए गुलच कपाही को सहजता के साथ स्वीकार कर लेता है। और दैहिक वासना की पूर्णता उसे मिलती है। किंतु गुलच के अंतस्तल में तरा का चित्र ही सजीव रहता है। इसलिए, किसी दूसरे के साथ उसके विवाह होने की बात सुनकर ही वह अपना धीरज खो बैठता है। चेनिमाइ गुलच के जीवन में एक दिन फिर वासना का ज्वार लाती है। इस बार गुलच कपाही को अपनी जगह से हटाकर तरा को स्थापित करता है। कपाही वार्षिक खेती थी, यौवन के ज्वार ने गुलच के मन के साधनों को तोड़ डाला, कपाही बह गई।

कथानक के विकास में उपन्यास में किसी प्रकार की असंगति नहीं है। उसका विकास स्वाभाविक रूप से ही हुआ है। किंतु कोई भी यह प्रश्न कर सकता है कि कपाही द्वारा तरा को धोखा दिए जाने के बाद तरा को गुलच-कपाही के संसार में दिखाना यथार्थ नहीं है। उसके उत्तर में कहना होगा कि मननशील साहित्य की

सत्यता से रस साहित्य की सत्यता की प्रकृति जरा भिन्न है। मननशील साहित्य में जो प्रत्यक्ष है उसे उसी प्रकार ही उपस्थापित किया जाता है ! किंतु रस साहित्य में जो होना संभव होता है, उसी प्रकार ही उसे उपस्थापित किया जाता है। इस बात का अर्थ है—विज्ञान और दर्शन की तरह ही रस साहित्य का सत्य के साथ घनिष्ठ संबंध होता है; किंतु रस साहित्य में सत्य अपना स्वरूप पाता है मानव को केंद्रित करके। मनुष्य के सुख-दुख, आशा-निराशा, प्रेम-विद्वेष आदि ही रस साहित्य के वर्ण्य विषय हैं। किंतु जिस घटना के सहारे इनका वर्णन किया जाता है, वह घटना यथार्थ नहीं है, कल्पित होते हुए भी पाठकों को विश्वास दिलाने के लिए उनमें यथार्थ का पुट होना चाहिए''। पाठक उपन्यासकार के कल्पना रथ पर चढ़कर घूमने के लिए तैयार है, किंतु कल्पित कहानी की संभावना की सीमा को लांघकर नहीं जाना चाहिए। उस दृष्टि से देखने पर कथानक के विकास और विन्यास में कहीं भी कोई अयथार्थता नहीं है।

चरित्र-चित्रण की दिशा में गुलच के चरित्र में आशा आकांक्षा देखी जाती है, किंतु उसमें दृढ़ता नहीं है। वह परिस्थिति को मान लेता है। चंद्र के चरित्र में कारणहीन परोपकार का आधिक्य है। यह उपन्यास पाठकों को केवल एक ही बात में असमंजस में डालता है—वह है, ईर्ष्या-हिंसा की अभिव्यक्ति का अभाव। चेनिमाइ, कपाही, तरा-किसी के भी मन में प्रणय-ईर्ष्या नहीं जगी है।

—विश्वनारायण शास्त्री

नदी बोलती है।

बहुत पुरानी बात है।

बातें दोनों किनारों के कगारों में चिपक जाती है। किनारों की घासों में बहुत दिनों तक चिपकी रहती हैं। हवा का एक झोंका आकर घासों के साथ चिपकी हुई पुरानी बातों को कहीं उड़ा ले जाता है।

तथापि बातों का कहीं अंत नहीं होता।

धनशिरि पहाड़ों की बात जानती है, घाटी की बात जानती है, हरे-भरे गांव की बात जानती है, वर्षात की बात जानती है, सूखे मौसम की बात जानती है।

नदी के हृदय में अनंतकाल की बातें हैं—दुख की, आनंद की, हंसी, रोने की, जन्म की, मृत्यु की।

प्यार की भी बहुत सारी बातें जानती है धनशिरि।

बातें पुरानी हो जाती हैं, धनशिरि नई बनती है। बरसात की बाढ़ सूखे मौसम की वेदना को धो डालती है। बातें भी नई हो जाती हैं।

धनशिरि के किनारे पर नई कहानी के किसलय निकलते हैं।

धनशिरि के किनारे दरिद्र, जराजीर्ण डालिम गांव है। डालिम गांव के युवक-यवतियों के शरीर में अनार के बीज के लाल रक्त को पहले-पहल किसने देखा था—धनशिरि को यह मालूम है।

दूसरा और कोई नहीं जानता।

कई सौ वर्षों का पुराना गांव है। उसका साक्षी है नदी किनारे का बूढ़ा वटवृक्ष, डरावना मरघट गांवों के बूढ़ों के मुख से पुराने समय की लोक कथाएं अलेख सुनी जाती हैं। नदी के घाट पर हजारों युवक—युवतियों के खोए हुए पद-चिह्नों की स्मृतियां हैं—हजारों—लाखों ...।

पांव जब मजबूत होते हैं तब बच्चा खड़ा होने लगता है। शरीर का मिट्टी के साथ संबंध कम होने लगता है किंतु मिट्टी पांव को कभी नहीं छोड़ती। मिट्टी का पावों के साथ संबंध युगों का है। न छूटने वाला। मिट्टी और तलवा ! मित्र।

धनशिरि नगा पहाड़ियों से उतर आई है। किसी नगा युवती की नृत्यभरी कमर

की लय की तरह धनशिरि के देह में लय है। होठों पर नगा युवती की हंसी—मीठी।

धनशिरि हंसती है।

ब्रह्मपुत्र की गोद में बह गई है। न जाने लुइत (ब्रह्मपुत्र) के बाहुपाश में किसे खोजते हुए। ठहरने के लिए क्षण भर भी समय नहीं है।

एक बात कह जाओ ना !

एक बात सुन जाओ ना !

... नहीं ठहरती है!

नृत्य पटियसी धनशिरि की कमर में देवता उतर आया है—देवता द्वारा प्रभावित नृत्य का लय।

धनशिरि बह रही है—दक्षिण से उत्तर की ओर—नगा पहाड़ी से ब्रह्मपुत्र की ओर। डालिम गांव को जानती है—बहुत दिनों से।

पूरब की ओर धनशिरि, पश्चिम की ओर डालिम। धनशिरि के पश्चिमी किनारे डालिम गांव है। सत्तर परिवारों का एक छोटा सा पुराना गांव है। हिंदू, मुसलमान, नेपाली, मिकिर आदि लोगों का मिश्रित गांव हैं। नदी के बिल्कुल किनारे पर नेपाली के अठारह परिवार हैं—साथ ही उनकी गाय—भैंसों के रहने के मकान आदि हैं। सरसों, मक्का आदि बोते हैं, दूध बेचते हैं, मिर्चाई, लौकी की खेती करते हैं।

उनके साथ ही मुसलमानों के सैंतीस परिवार हैं। दो मुहल्लों में बंटे हुए—नया डालिम, पुराना डालिम—किंतु डालिम गांव एक ही है।

धान की खेती करते हैं, सरसों, उड़द, पटसन की खेती करते हैं नदी के उस पार पूरब की ओर मौसमी खेती करते हैं, विवाह करते हैं, बड़ा भोज खाते हैं, लड़ाई झगड़ा करते हैं। चुपचाप रह जाते हैं।

उसके आगे अधिकतर हिंदू परिवार ही हैं— कछारी और सुत वर्ण के लोग, एक ब्रांण परिवार भी है। आठ परिवार मिकिर है।

ईश्वर, अल्लाह, पत्थर वृक्ष सबको पूजा मिलती है। दो मसजिद और एक नामघर (मंदिर) है।

गोधूलि के समय ईश्वर गांव में उतर आता है। हिंदू परिवार के आंगन में कोई बरगीत (प्राचीन उदात्त भाव का उपासना गीत) की एक कलि लंबे स्वर में गाता है—पावे परिहर, करीहों कातरि—

शुक्रवार के दिन मसजिद में अल्लाह आता है।

कोई अज़ान देता है—अल्ला-हु-अकबर।

धनशिरि में बाढ़ आने पर, जंगली हाथी निकलने पर, किसी के घर में आग लगने पर, हैजा-शीतला होने पर अल्लाह-ईश्वर एक साथ गांव आते हैं। तुलसी के पौधे के सामने दीया जलता है, मसजिद में मोमबत्ती जलती है, वटवृक्ष के नीचे सिंदूर का सिरहान लेकर जंगली फूल नींद लेने लगता है।

बाकी समय अल्लाह-ईश्वर सबको छुट्टी रहती है।

आबादी पतली है।

पड़ती जमीन काफी है। गांव की पश्चिमी और दक्षिणी ओर गहरे जंगल हैं—नामघर जंगल की शाखा-प्रशाखाओं के रूप में। बड़े-बड़े वृक्ष हैं, सांप हैं, बाघ हैं, हाथी हैं, और गैंडे की भयानक दहाड़ है। बीच-बीच में वन का राजा आकर गोशालाओं से गाय-भैंस उठाकर ले जाता है। हाथी धान का खेत नष्ट करता है—घर तोड़ता है।

गांव से बाहर जाने के लिए कोई निश्चित रास्ता नहीं है। गांव के बीचोबीच पूरब और पश्चिम की ओर फैला हुआ और गांववालों द्वारा ही बनाया हुआ एक पुराना रास्ता है, वह भी बीच-बीच में टूटा हुआ है। उनको आने जाने के लिए किसी रास्ते की जरूरत नहीं, गाय-भैंसों के लिए हो जाए तो ठीक है। जिस किसी ओर से धनशिरि का किनारा मिल जाए तो ठीक है, और रास्ते की जरूरत नहीं है।

गोलाघाट नगर वहां से बत्तीस मील दूरी पर है। मुकदमा न हो तो गोलाघाट जाने की कोई जरूरत नहीं है। मुकदमा भी सदा नहीं होता।

डालिम के घाट से धनशिरि को पार करके आधा मील रास्ता बिलकुल सुनसान पड़ता है। उसके बाद उस पार का गांव आता है। गांव के बीच रास्ते से छह मील जाने पर बड़ा रास्ता आता है—गोलाघाट-डिमापुर का रास्ता। बसें चलती हैं, मोटरें चलती हैं, बैलगाड़ियां भी चलती हैं। दुकानदार रहीम और चंद्रकांत दोनों ही उसी रास्ते से दुकान के सामान बस से लाते हैं। एक टीन किरासन तेल, दस सेर नमक, एक बंडल बीड़ी, सवा सेर तंबाकू का पत्ता और रंगीन छींट के कपड़े।

डालिम गांव में बस, मोटर, रेलगाड़ी नहीं हैं, नहीं चलती हैं। बैलगाड़ियां दो या तीन हैं।

उनके सर के ऊपर से हवाई जहाज उड़ते हैं, उन्होंने हवाई जहाज देखा है, किंतु बहुतों ने रेलगाड़ी नहीं देखी है। मोटर नहीं देखी है, बस नहीं देखी है, पक्का मकान नहीं देखा है।

गोलाघाट से लौट कर कोई-कोई अजीब कहानियां कह जाता है। बाल-बच्चे-औरतें कान लगाकर सुनते हैं। कैसी अजीब बातें—अजनबी। औरतें आश्चर्य में एक-दूसरे का मुंह ताकने लगती है। सोचती हैं—यदि खुद जाकर देख आ सकतीं।

किंतु दूसरे मुहूर्त में ही वे नगर के आकर्षण को भूल जाती हैं। मिट्टी बुलाती है—परिचित, प्यारी बुलाहट।

पुराने और नए डालिम के बीच ही पुरानी पाठशाला है, जिसकी स्थापना लोकल बोर्ड के समय ही हुई थी। घर का निर्माण रैयतों ने ही किया था। नामघर की तरह ही बड़े-बड़े खंभों का लंबा-चौड़ा मकान है। पहले यहां मफीज पंडित पढ़ाया करता था। मफीज ने नगर में रहकर अंग्रेजी भी दो कक्षाओं तक पढ़ी थी। वह उसी

गांव का ही था। मफीज के बाद आजकल जयराम पढ़ाता है। पाठशाला की फेहरिस्त में पंद्रह या सोलह छात्रों के नाम हैं। चटाई भी है। बारह-तेरह छात्र हैं किंतु छह सात से अधिक हाजिर नहीं रहते। जयराम बुरा नहीं मानता। किसी प्रकार अक्षरों की पहचान हो जाए तो ठीक है। डालिम गांव के लड़के वकील-मंसुप क्या होंगे।

पाठशाला के निरीक्षण के लिए भी आज तक कोई नहीं आया है। एक बार कहते हैं कि हैट-कोट पहनकर डिप्टी इंस्पेक्टर के नाम से कोई आया था। गांव के लोग डर के मारे अपने-अपने घर में ही रह गए थे। मफीज पंडित भी डर के मारे कापंने लगा था।

उसके बाद आज तक कोई भी नहीं आया है—गनीमत है।

जयराम चार-छह महीनों में एक बार नगर में जाता है। और एस. आई. डी. आई. को एक-दो चीजों का उत्कोच देकर तीन-चार दिन वहीं ठहरकर वेतन के रुपए ले आता है। उनमें से कई रुपए किरानी 'उधार' ले लेता है। तिस पर भी जयराम को अच्छा लगता है। अपनी नौकरी के वेतन के रुपए उसे तहसीलदार के लगान के रुपए के जैसे लगते हैं। वेतन के रुपए भी लिए जाते हैं, और शहर को भी एक बार देख लिया जाता है।

धनशिरि के किनारे ही फारेस्ट बीट-हाउस है। वहां फारेस्टर रहता है। उस क्षेत्र का वही सबसे बड़ा आदमी है। खाकी कमीज पहनता है। बूट पहनता है। हाथ में बंदूक लेकर घूमता है।

बंदूक इस गांव में चार है। बापुकन की एक है, जयनूर की एक है, बहादुर की एक है और एक प्रेमकांत की है। जयनूर की बंदूक ही सबसे अच्छी है—दो नाल की है।

गांव के जवान-बूढ़े बंदूक की अपेक्षा दाब-कुल्हाड़ी-बरछे पर ही अधिक विश्वास रखते हैं, नेपाली खुखड़ी का स्वाद बहुत-से वन-राजाओं को भी मिला है। तथापि गांव में बंदूक रहने की बात गौरव की बात होती है।

कभी-कभी और कहीं-कहीं लाल पगड़ी और खाकी कपड़े पहनने वाली पुलिस आ निकलती है—दो या तीन। पूरे गांव वालों को पुलिस के लिए भय है। पकड़कर यदि ले जाए तो वे क्या करेंगे ! गांव में पुलिस का आना किसी को पसंद नहीं है, मुद्दई मुद्दालह किसी को भी नहीं। दोनों पक्ष रिश्वत देकर जल्दी-जल्दी उसे विदा करते हैं।

गांव में पुलिस का आना और वहां बाघ निकलना—दोनों एक ही बात है। बाघ को भगा सकते हैं; किंतु पुलिस को !

जो गांव में पुलिस लाता है उसे सभी कोसते हैं। पुलिस जब आई—गांव की इज्जत क्या रह गई ! गांव के लोग क्या आपस में ही मामले को तय नहीं कर सकते ? पुरखों बीत गए हैं।

दूसरा कोई झगड़ा नहीं हैं।

पुलिस बूट के चिह्न धनशिरि की छाती में लगे नहीं रहते। नदी के किनारे के सेमर के फूल अपने अतुल सौंदर्य को लेकर जगमगाते रहते हैं। पुलिस की लाल पगड़ी की बात सभी भूल जाते हैं।

शहर से अधिक दूर नहीं है—फिर भी बहुत दूर है। आज के युग का ही आदमी है। तथापि बड़ा पुराना है। सूर्य का प्रकाश सदा उसे उजाला कर जाता है। फिर भी डालिम गांव को घने जंगल का आदिम अंधेरा ढंके रहता है।

वर्ष के अंत में वर्ष बदल जाता है, डालिम गांव में कुछ परिवर्तन नहीं होता। डालिम गांव एक वर्ष पुराना पड़ जाता है। काल के विवर्तन से यथेष्ट दूरी पर डालिम गांव निष्पंद पड़ा रहता है।

चुनाव के दिनों में भी डालिम गांव में राजनीति नहीं आती, आता है किसी उम्मीदवार का एजेंट, न पढ़े जा सकने वाले मुद्रित कागज। गांव के दो-चार चालाक बूढ़े आदमी सभी उम्मीदवारों से पैसा खाते हैं, और वोट के दिन अन्य गांवों में घूमने चले जाते हैं। वोट की पेटी दिन भर बाट जोहती है। खाली पेटी ही शाम को शहर लौट जाती है। डालिम गांव के वोटों के बिना ही कोई जीत जाता है—बड़ा आदमी बन जाता है। और कोई हार भी जाता है।

हार जाने से क्या होता है—किसी को भी मालूम नहीं है।

पश्चिम की ओर जंगल के बीच बड़ी-बड़ी झीलें हैं, झीलों में बड़ी-बड़ी मछलियां-कछुवे हैं। डालिम गांव के किसी को भी मामूली भोजन नहीं करना पड़ता। यदि वंशी लेकर जाए तो एक पोटली मछली पकड़ी जा सकती है।

धनशिरि भी अपनी कोख में मछलियां छिपाकर नहीं रखती।

दो

समय कितना बीत गया है, मालूम नहीं है। अनुमान हो रहा था कि तीसरा पहर हो गया है। देह भारी मालूम हो रही थी। कल सबेरे से बारिश हो रही है, भारी बारिश। डालिम गांव में जब बारिश होने लगती है, शीघ्र छूटने वाली नहीं होती। राह-रास्ते सड़ जाते हैं, घर-द्वार गंदे हो जाते हैं। गाय-बैलों को कष्ट होता है। बाल-बच्चे घर के बाहर नहीं निकल सकते। जवान युवक-युवती बाहर न आए तो परिवार का काम नहीं चलता।

गुलच ने एक बार पश्चिमी आकाश को निहारा। बादल भरे पड़े हैं। सात

दिन तक बरसेगा। इन्हीं कई दिनों में मकान के छप्पर की मरम्मत करनी थी। भीतर में पानी ही पानी हो गया होगा ! मरम्मत कभी की होने वाली थी। किंतु उसे समय ही कब मिला है? घर के बाहर खेत में ही उसे अधिकांश समय रहना पड़ता है।

तिस पर भी उससे सब कोई कहते हैं—वह जरा अनमना है। कहीं निकल गया तो लौट आने की चिंता ही नहीं, कहीं बैठ गया तो बैठा ही रह गया—उठने का नाम नहीं लेता।

यह बिलकुल झूठ भी नहीं है शायद !

उसकी मां तो उसे सदा इसी बात के लिए फटकारती है।

अपनी मां के लिए गुलच का अधिक स्नेह भी नहीं है और चिंता भी नहीं। ज्यादा बूढ़ी नहीं हुई है। संभव है, पचास की हो गई होगी। अच्छी तरह खाने-पीने को मिलता तो शायद जवान बनी रहती। किंतु सारा जीवन दुख में ही बीता।

चूने वाले मकान में गुलच की मां अकेली ही रहती है। गांव के ठीक बीच में उसका घर है—किसी प्रकार का डर नहीं है। कभी-कभी उसकी लड़की भी आकर दो-चार रात के लिए ठहर जाती है। चोर के लिए कोई विशेष भय नहीं है। घर के भीतर तो कुछ भी सामान नहीं है। पुरानी एक पेटी में सिर्फ दो-चार मामूली सामान हैं।

अपनी सम्पत्ति में चार गायें, कई बकरियां और मुर्गे-मुर्गियां हैं। सियार इनमें से कितने ले गया है, किसको पता है—ले जाने दे। सियार—कुत्ते यदि देहातियों का नहीं खाएंगे तो किसका खाऐंगे ?...

मन-ही-मन इन बातों के बारे में सोचते हुए गुलच घर की ओर आ रहा था। पुरानी जापी (एक ग्रामीण छाता) बारिश को रोक नहीं सकी थीं। रास्ते में घुटनों तक पहुचने वाला कीचड़ है जो फिसलने लगता है। कीचड़ की छींटें उसके सर तक आ गिरी थीं। किंतु वह कोई नई बात नहीं थी। धूप, बरसात, कीचड़ आदि से डरना उसने कभी नहीं सीखा था। इन्हीं हालतों के बीच वह बड़ा हुआ था।

अपने तेईस वर्ष के जीवन में उसने डालिम के कीचड़-पानी को पहचाना है। वे उसे अपने से लगते हैं।

घर के बाहर भीगता है तो कोई बात नहीं। किंतु घर के भीतर ही यदि भीगा जाए तो अच्छा नहीं लगता। कभी-कभी रात को जब वह सोए रहता है तो उसके सिरहाने पर ही पानी चूने लगता है। उसको उस समय बड़ा गुस्सा आता है। अगले ही दिन उसे पीटने की प्रतिज्ञा कर लेता है। बादलों को गाली देता है—गांव के किसी बदमाश को जिस तरह गाली दी जाती है।

उसकी मां नींद का बहाना करके आंख मूंदे पड़ी रहती है। जानती है—गुलच कल कुछ नहीं करेगा। अपनी देह पर पानी चूने की बात वह कल बिलकुल भूल जाएगा। बरसात के रुक जाने पर वह यह भूल जाएगा कि उसके घर की छत से

कभी पानी भी चूता था।

गुलच भी वह बात जानता है।

बाघ कभी गोशाला से गाय-बैलों को उठा ले जाता है। वह बाघ के चौदह पुरखों को गाली देने लगता है। वह चिल्ला-चिल्लाकर यह घोषणा तुरंत कर देता है कि वह कल ही जयनूर से बंदूक लेकर बाघों का समूल नाश कर देगा।

किंतु उसने बंदूक एक दिन भी पकड़कर नहीं देखी है।

दिन के समय उसे शायद उस बाघ के लिए दया हो जाती जो उसका बैल उठाकर ले जाता है। मां को समझाता है, "जाने दो, एक ही तो ले गया है। हमारा नहीं ले जाएगा तो किसका ले जाएगा ! कुछ भी हो, आखिर वह तो बाघ ही है। बाघ क्या घास खा सकता है ?"

उसकी मां अपने आप ही कुछ कहती है। गोशाला के गाय-बैलों को इस तरह जंगल के बाघों को खाने देने की युक्ति को उसकी समझ में नहीं आती।

गुलच ने अनेक बाघ देखे हैं। जंगल से जब वह लकड़ी लाने के लिए जाता है वहां उसे चीता भी दिखाई पड़ता है, तेंदुआ भी। बाघ देखने में बड़ा ही सुंदर होता है। उसके शरीर को छूकर—उस पर हाथ फेरकर प्यार करने की इच्छा होती है। चीते के शरीर का रंग आंखों को बहुत ही भाता है। बाघ उससे तनिक भी नहीं डरता। वह भी उससे नहीं डरता। बाघ गाय-बैलों को खाता है—आदमी को नहीं खाता। बाघ के लिए गुलच को अत्यंत स्नेह हो जाता है।

उस पार के खेत से गुलच आया था। खेत में बाओ—धान की खेती भी है—शाली की भी। औरों के साथ जाकर उसने भी उस पार में कुछ जमीन नए सिरे से आबाद की है—उसकी अपनी जमीन। उस ओर धनशिरि का कगार कुछ ऊंचा है। बड़ी बाढ़ न आए तो डरने का कोई कारण नहीं है। और बाढ़ आती भी हो तो वह जमीन को उपजाऊ बनाकर जाती है। दुख का कोई कारण नहीं है।

नदी को पार करके गुलच जरा ठहर गया। घूमकर उसने एक बार अपने खेत की ओर देखा। दिखाई नहीं पड़ता। काफी दूरी पर छोड़ आया है। तिस पर बारिश भी हो रही है। सूरज भी डूबने लगा है। बारिश के बीच से अधिक दूर तक नहीं देखा जा सकता। अपनी जमीन की बात याद करके उसे संतोष हुआ। बड़ी उपजाऊ जमीन है।

अकस्मात उसकी दृष्टि नदी पर पड़ी और वह रुक गया। बारिश की सफेद बूंदें नदी के पानी पर गिर रही हैं—लगातार। देखने में इतनी मोहक हो उठी हैं ! पानी पर यदि पानी की बूंदें भी गिरे तो छींटें उछलती हैं। सफेद मुलायम छींटें। नदी का पानी साफ है। उसका रंग प्रायः नीला है। उस पर बादल की कोख से उतर आई है बारिश के पानी की सफेद छींटें।

एक मीठी आवाज हो रही है। पेड़ के पत्तों पर पानी गिरने से जो आवाज

होती है, नदी के पानी पर गिरने वाली बारिश की आवाज के साथ उसका कोई मेल नहीं है। मीठी, कोमल आवाज।

कुछ देर किनारे पर ठहरकर गुलच पानी का खेल देख रहा था। बारिश की छम-छम की आवाज हो रही है। और नदी की छाती पर उसकी मीठी प्रतिध्वनि हो रही है। उसको अच्छा लगा। पानी की रुपहली छींटें उसे बड़ी ही अपनी-सी लगीं।

कुछ अंधेरा होते देख गुलच मुड़ पड़ा और घर की राह ली।

नदी पर बारिश के पानी गिरने का दृश्य देखने में बड़ा अच्छा लगता है। किसी एक आनंद के कारण गुलच का मन परिपूर्ण हो उठा।

कीचड़ से एक नई गंध निकल रही है। रास्ते के दोनों किनारों के पेड़ों के पत्तों से भी एक परिचित, जिंदा गंध आ रही है। घास वन की परिचित आदिम गंध।

गुलच नहीं रुका।

बरसात की रात है। अंधेरा बढ़ जाने से बाघ का डर है। मवेशियों की खोज में आकर यदि उसे मिल जाए ! तथापि उसके हाथ में छुरा है। भय का विशेष कारण नहीं है। और पके हुए चिनिया केला के दो गुच्छे उसके कंधे पर हैं।

उसने एक केले को तोड़कर खाया। उतना अच्छा नहीं लगा, उतना मीठा नहीं है। उसने एक और केला खाया।

अपने परिवार के लिए उसे उतना मोह नहीं है। किंतु यदि वह अपने घर ही नहीं जाएगा तो कहां जाएगा। चाहे वह टूटा हो या फूटा—आखिर वह अपना ही तो घर है। अपनी मां भी वहां है।

कीचड़ भरे रास्ते पर उसने फूंक-फूंककर अपने कदम रखे और धीरे-धीरे आगे बढ़ा। घर अभी भी काफी दूर है। एक मील है ही। बरसात के बीच से कभी उसका मन कहीं उड़ जाता है।

बीच-बीच में उसे चेनिमाइ की याद आ जाती है। खेत में फावड़े चलाते समय, आंगन में बैठकर घोड़ा बनाते समय, अकेले रास्ते से जाते समय, कभी-कभी अकस्मात उसे चेनिमाइ की याद आ जाती है। याद आने पर उसका मन बोझिल हो उठता है।

चेनिमाइ पुराने डालिम गांव की लड़की है। देखने में चेनिमाइ उतनी रूपसी न होने पर भी वह खूब मोटी-तगड़ी-स्वस्थ लड़की थी। उसका पिता स्वाधीन-चेता था। वह भी खुद स्वतंत्र प्रकृति की लड़की थी।

इधर-उधर के कामों में गुलच कभी-कभी पुराने डालिम जाता। एकाध परिवारों में बैठकर पान-सुपारी खा आता। उसी के बहाने गांव की लड़कियों के बारे भी जान लेता।

उसी तरह चेनिमाइ के साथ गुलच का परिचय हुआ था। बातचीत करने के बाद उसे लड़की वह अच्छी लगी। चेनि भी उसके प्रति स्नेहासक्त हो गई थी। वह

स्नेह गाढ़ा होने लगा था।

गुलच की आर्थिक हालत उस समय अच्छी नहीं थी। खुले तौर पर चेनिमाइ को ब्याह करके लाने के लिए उसे कोई उपाय नहीं था। और उसके साथ चेनिमाइ का ब्याह होने की भी आशा नहीं थीं।

अवसर देखकर किसी दिन चेनिमाइ को भगाकर ले जाने के लिए ही गुलच ने योजना बनाई। चेनि भी तैयार हो गई थी। डालिम गांव में लड़की को भगाकर ले जाना या जोर करके ले जाना कोई नई बात नहीं थी। लड़की का मन पाना ही असल बात थी।

दो वर्षों से भी अधिक दिन हो गए हैं, तीन वर्ष ही होने वाले हैं। उस दिन भी वह इसी प्रकार की बारिश में चेनिमाइ के घर आया था। चेनिमाइ के घर की ड्योढ़ी पर अंधेरे में छिपकर रहते समय उसकी छाती कांपने लगी थी—कोई यदि उसे देख ले !

लगातार हो रही बारिश के कारण चेनिमाइ के माता-पिता शाम होते ही सो गए थे। वही रसोई में बर्तनों को इधर-उधर कर रही थी।उसने दीवार के सुराख से झांककर देखा कि भीतर अकेली चेनिमाइ ही है—और कोई नहीं है। उसने दीवार पर दस्तक दी। चेनि निकल आई।

दोनों भागे।

और क्या होगा ?

अगले ही दिन सारे गांव में हलचल मच गई। इंद्र नेपाली की गोशाला में दोनों पकड़े गए। उन पर विचार हुआ।

गांव वालों ने कहा, "जो हो गया, सो हो गया। लड़के-लड़की का मन जब है। तो विवाह कर दे।"

गुलच का पिता जल-भुन गया। भागी हुई लड़की को बहू बनाकर घर में लाने का साहस किस पुरुष को है ! "आ—टुकड़े-टुकड़े कर डालूंगा।"

बूढ़े ने छूरा दिखाया।

"मेरी लड़की को भगाकर ले जाता है, इतना साहस है। मैं यदि मर्द हूं तो दिखा दूंगा कि कौन मेरी लड़की की ओर हाथ बढ़ाता है।"

चेनिमाइ के ताऊ सफीयत ने इस प्रकार से धमकी देकर कहा तो किसी ने भी और कुछ कहने का साहस नहीं किया। सफीयत जल्दी मानने वाला आदमी नहीं था।

विवाह नहीं हो सका। गुलच कुछ नहीं कर सका।

चेनिमाइ रोते-चिल्लाते अपने पिता के साथ चली गई।

अगले ही दिन उसके पिता ने गुलच को अपने घर से निकाल दिया। "मेरा लड़का होकर तूने मेरी नाक कटाई। मेरे घर में तेरे साया तक भी देखूं तो काटकर

टुकड़े-टुकड़े कर दूंगा। जा—जहां मरना है, मर। मेरी संपत्ति से तुझे रत्ती भर भी नहीं मिलेगा।''

उसकी मां ने अपने लड़के की तरफ से कुछ कहा था। पिता ने बेटे के साथ मां को भी घर से निकाल दिया। बूढ़े का बड़ा लड़का और उसकी बहू उसके साथ ही रहते हैं। इसके अलावा उसकी दूसरी औरत भी उसके साथ ही है। गुलच और उसकी मां के चले जाने पर उसको कुछ भी हानि नहीं हुई।

गुलच ने दूसरे के छोड़े हुए एक मकान की छत और दीवारों को इकट्ठाकर थोड़ी-सी जमीन लेकर एक मकान खड़ा किया। अपने पिता को सुनाकर उसने कहा, "मरते समय भी मेरी खोज न करना। मैं जा रहा हूं, और कभी लौटकर नहीं आऊंगा।''

मां-बेटा अलग हो गए।

आज भी वे उसी तरह हैं।

तीन वर्ष पूरे हो जाना चाहते हैं। अपने पिता के साथ गुलच की देखा-देखी होने पर भी कोई किसी से नहीं बोलता।

कोई-कोई आदमी उसकी मां से कहता है—"लड़ाई-झगड़ा किसके घर नहीं होता ? घर को छोड़कर इस सनकी गुलच के साथ कैसे रहेगी ? वह तेरा घर है। गुलच को लेकर वहां लौट जा।''

गुलच की मां को क्रोध हो आया, "सौत के साथ घर बसाने के लिए और नहीं जाऊंगी। पटरानी को ही लेकर रहें। अपने बेटे को घर से निकाल देने वाले आदमी के साथ कोई घर नहीं बसाता है। कोई बेशर्म ही ऐसा करेगा।''

गांव के लोगों ने भी गुलच के पिता को गुलच और उसकी मां को अपने घर बुला लाने के लिए सलाह दी थी, किंतु बूढ़ा अपने निर्णय पर अटल था। "क्या मैं उन्हें बुलाने जाऊंगा ? दोनों मां-बेटे ने मेरी नाक कटाई है। कोई खुद आना चाहता है तो आए, कूड़ेखाने में जगह की कमी नहीं है।''

दूसरी ओर गुलच भी दृढ़ संकल्पी था। अपने जीवन-काल में वह कभी भी अपने पिता के घर में कदम नहीं रखेगा। चाहे जो भी हो।

उसकी मां यदि उसके घर से पिता के घर चली जाती तो उसे अच्छा ही लगता। वह पूर्ण रूप से स्वच्छंद हो जाता। उसे बाधा देने वाला कोई नहीं रहता। किंतु अपनी मां से वह इस बात को कभी नहीं कहता। बल्कि वह कहता है—वहां न जाने पर यदि तुझे भूखों भी मरना है तो भी न जाना। तेरे बेटे और बहू ही यदि तुझे नहीं चाहते तो तुझे ही क्या गरज पड़ी है कि तू उनके बारे में सोच !''

उसकी मां डालिम गांव की ही बेटी है। बिना काम किए खाना नहीं जानती। पांच साल की उम्र से ही खेती-बारी-घर-द्वार का काम करके वह अपना गुजारा करती आई है। काम करने से वह नहीं डरती। अपनी सेहत ठीक रहे तो कभी भी भीख

नहीं मांगेगी—काम करके, खाएगी।

मां के अपने साथ रहने के कारण गुलच को अपने घर की चिंता अधिक नहीं होती। मां ही उसके गाय-बैल, मुर्गे-मुर्गियों की देख-भाल करती है।

तथापि गुलच को पाही पर ज्यादा दिन होने पर उसकी मां के लिए चिंता होती है। शायद नमक का एक दाना भी नहीं रह गया हो—क्या जाने घर में चावल बचा है कि नहीं ! चोर-डाकू भी तंग कर सकते हैं।

घर के लिए जब उसकी अधिक चिंता होती है, तब गुलच पाही से चला आता है। उस समय वह जाड़ा-गर्मी, किसी के लिए परवाह नहीं करता। उस समय उसे मां के लिए स्नेह हो आता है।

अंधेरा हो आया।

बारिश नहीं रुकी। आकाश में चांद होते हुए भी बादल उसे घेरे हैं। अंदाज से ही गुलच आगे बढ़ा। उसे अपना शरीर भारी-भारी-सा लगा। गांव में सूरज डूबते ही रात हो जाती है।

उसने अनुमान किया कि घर और अधिक दूर नहीं हैं। मोड़ को पार करते ही वह घर पहुंच जाएगा।

अकस्मात वह रुक गया, और कुछ सोचा। इसके बाद दाईं ओर मुड़कर अपना कदम बढ़ाया, घर के लिए नहीं—तरा के घर के लिए।

तीन

तीन कमरे वाला फूस का एक नीचा छोटा मकान है। उसका आंगन छोटा है किंतु साफ-सुथरा है। उसे अच्छी तरह साफ करके रखा गया है। कहीं भी पानी नहीं जमा होता। घर के सामने की ओर गोशाला है, वहां तीन दुधारू गाएं बंधी हैं। दरवाजे के पास ड्योढ़ी पर ही काला कुत्ता सोया हुआ था। घर में किसी की भी आवाज सुनाई नहीं पड़ती थी। घर के भीतर जली हुई मिट्टी की बत्ती का प्रकाश दरवाजे के सुराख से दिखाई पड़ रहा था।

उस समय तो छत से बारिश का पानी छप-छप करके गिर रहा था।

गुलच कुछ देर तक आंगन में ही खड़ा रहा—भीतर कौन है, उसका अंदाज किया और इसके बाद दरवाजे को ढकेल कर भीतर घुस गया।

"कौन है ?" भीतर से किसी ने आवाज दी।

"मैं हूं, दीदी है क्या ?"

"गुलच है ? अच्छा आ रही हूं—बैठ !"

भीतर से तरा नहीं, तरा की मौसी कपाही निकल आई।

"भीग-भागकर कहां से इतनी रात आ धमका है ?"

"पाही से"—संक्षेप में उसने कहा और बैठकर एक बार कपाही की ओर ताका।

खूब गोरी होने के कारण नाम रखा था कपाही (कपास के रंग की तरह)।

अब भी कपाही काफी गोरी है। शादी हुए आज चौदह-पंद्रह वर्ष हो गए हैं। कपाही की शादी में गुलच ग्यारह वर्ष का था। उस समय से जितनी बार उसने कपाही को देखा है प्रत्येक बार उसे एक ही रूप में देखा है। उसमें थोड़ी भी कमी-बेशी नहीं हुई है।

चौदह वर्ष की उम्र में ही कपाही की शादी हुई थी—नाहर के साथ।

पुराने डालिम गांव के नाहर ने पहले कपाही की दीदी जुति से शादी की थी। एक लड़की हुई थी उससे—तरा। किंतु तरा जब पांच महीने की हुई तभी प्रसूता के रोग मे जुति की मृत्यु हो गई थी। नाहर की विधवा दीदी ने छह महीने के करीब उस लड़की की देख-भाल की। उसके बाद नाहर की इच्छा से कपाही के साथ गांव वालों ने शादी करा दी। कपाही तरा की अपनी मौसी है। उसे कष्ट नहीं होता।

कपाही के आने के बाद तरा को वह अपनी मां जैसी ही लगी। अपनी मां की स्मृति को स्मरण करने की शक्ति और उम्र तरा की अभी नहीं हुई थी। जब वह बोलने की उम्र की हो गई तब उसे कपाही को मौसी कहने के लिए सिखाने पर भी वह उसे मां जैसी ही समझने लगी। कपाही ने भी तरा को अपनी बेटी की तरह पाल-पोस कर बड़ा किया। उनको देखकर कोई भी ऐसा कह नहीं सकता है कि वे मां-बेटी नहीं हैं। उसकी अपनी कोई दूसरी ही एक मां हो सकती है। इस प्रकार सोचने के लिए उसे मौका ही नहीं मिला था।

नाहर कुछ गंवार स्वभाव का था। दूसरी तरफ कपाही थोड़ी चंचल थी।

आश्विन-कार्तिक महीने में धनशिरि नदी से दो चार व्यापारी नाव लेकर आते हैं साथ में उनके कुछ सामान भी रहते हैं। रबी-फसल के लिए बिन पैसे दे जाते हैं—आलू, दाल, सरसों और दूसरे प्रकार के बीज। माघ और फागुन के महीने में पुनः आते हैं—अपना हिस्सा ले जाने के लिए। नाव भरकर दाल-सरसों ले जाते हैं। कभी कोई नौजवान व्यापारी डालिम गांव की बहू-बेटियों के मन में कुछ रंगीनी पैदा कर जाता है। कपाही के जीवन में भी उलझन पैदा हुई थी। नाहर के साथ उसका संबंध सदा के लिए समाप्त हो गया था।

नाहर ने कपाही को घर से निकाल दिया। किंतु किसी से कुछ कहे बिना एक दिन वह घर से लापता हो गया। गया तो गया ही। कहां गया, कोई भी बतला नहीं सकता। गांव के लोग आश्चर्य में नहीं पड़े। क्योंकि बीच-बीच में दो-चार आदमी

इस प्रकार गायब हो ही जाते हैं। बाघ भी खा सकता है, कहीं भागा भी जा सकता है। आदमी को कौन पकड़े रख सकता है ?

नाहर लौट आएगा, यह सोचकर कपाही कुछ दिनों के लिए उसी के घर में रही। अंत में उसे मालूम हुआ कि वह किसी दूर के गांव में है—इस गांव में और नहीं आएगा। वह समझ गई कि और इंतजार करने से कोई लाभ नहीं है। एक दिन विधवा दीदी के साथ झगड़कर तरा को लेकर अपने घर में चली आई। इसके लिए किसी ने भी आपत्ति नहीं की। वे कपाही के मौसी के घर में ही आकर रहीं।

शुरू—शुरू में गांव के लोगों को यह बात मालूम नहीं हुई थी कि नाहर क्यों वहां से चला गया था। किंतु बाद में कुछ लोग समझने लगे। गत आश्विन के महीने में बसीर व्यापारी सामान लेकर नाव से आया था। उसने पुराने डालिम गांव के घाट में नाव बांधी थी और गांव वालों को दाल, आलू, प्याज आदि के बीज देने लगा था। उसके हाथ में पैसों की गठरी देखकर कपाही उसी समय उसकी ओर आकर्षित हुई थी। बसीर कुछ दिन के लिए कपाही के घर मेहमान था। बसीर जवान था। कपाही भी मनचली थी।

इसके बारे में बाद में नाहर को मालूम हुआ। कपाही को थोड़ा-बहुत पीटा भी। किंतु किसी शोक के कारण वह एक दिन खुद ही घर से भाग गया।

अब तरा चौदह वर्ष की सयानी हो गई। देखने में वे बहन-दीदी जैसी लगती हैं। तरा कुछ अधिक चंचल-कपाही अपेक्षाकृत शांत है। किंतु दोनों सुंदरता में एक-सी हैं। गोरी, सुंदरी और सेहत वाली हैं।

कपाही की मौसी की मृत्यु को तीन वर्ष हो गए। इसके बाद से तरा को एक-मात्र सहारे के रूप में लेकर वह अकेली ही रह रही है। कोई भय-शंका नहीं है।भय का कारण केवल तरा है। तरा सुंदर है। गांव में उसकी जैसी दूसरी लड़की नहीं है। रूप, रंग, गठन—एक से बढ़कर एक है। देखने पर देखते ही रहने की इच्छा होती है। दूसरे के घर खेत में काम कर देने पर भी कहीं चेहरे में उदासी नहीं देखीं जाती। दिन बीतने के साथ-साथ उसका रूप निखरने लगा है।

कपाही को डर है तरा के लिए।

न डरने का कारण भी नहीं है। कपाही को समाज ने कुछ समय के लिए अलग रखने के बाद पुनः यद्यपि अपने भीतर कर लिया, तथापि कपाही की बातों के बारे में लोगों को मालूम हो गया था। इसलिए तरा के प्रति आकर्षित होकर आने वाले गांव के जवान लड़के भी गांव वालों की गाली के भय से आजकल कम आने लगे हैं।

बीच-बीच में गुलच ही आता है। उसको इतनी खबर कहां है ?

संबंध की दृष्टि से गुलच कपाही का कुछ नहीं होता। तथापि उम्र में उससे बड़ी होने के कारण वह उसे दीदी कहके पुकारता है। किंतु तरा उसको कपाही के

साथ उसका जो संबंध है उसी तरह संबोधित नहीं करती। वह उसे भैया कहके संबोधित करती है। गुलच भैया। गुलच बुरा नहीं मानता।

भैया कहने पर भी कपाही गुलच के साथ तरा को अधिक मेल-मिलाप करने नहीं देती।

गुलच जवान है, तरा भी सयानी है। तिस पर चौबीसों घंटे घर में बैठे रहना भी कपाही के लिए संभव नहीं होता। जवान लड़के पर क्या विश्वास है !

केले के गुच्छे से दो-चार केले अपनी मां के लिए रखकर बाकी को गुलच ने कपाही की ओर कर दिया।

"ले, ये केले रख। पाही की बारी में हुए थे।" जरा रुककर कहा, "एक कटोरा चाय नहीं पिला सकती, दीदी ? प्यास लगी है।"

भीतर से तरा निकल आई।

कपाही ने कहा—"केलों को लेकर रख दे, तरा ! और जाकर देख, चाय की पत्ती है या नहीं ? भैया को एक कटोरा चाय पिला, बेचारा भीग भागकर आया है।"

एक बार तरा की ओर देखकर गुलच ने कपाहो के ऊपर नजर रखकर कहा, "तरा देखते ही देखते बड़ी हो गई है।"

कपाही ने कुछ नहीं कहा।

कुछ देर दोनों चुप रहे।

इसके बाद कपाही ने कहा, "खबर मिली होगी?"

"किसकी ?" गुलच ने कपाही की आंखों की ओर देखा—हां, कपाही की आंखें सुंदर हैं।

"सुना है कि चेनिमाइ की शादी हो रही है।"

यह बात सुनकर गुलच के मुंह का रंग जरा फीका पड़ गया।

"सच, कहां ?" उसने अपने को थोड़ा निर्लिप्त सा दिखाया।

"सिपरिया गांव के किसी मोलोका गांव बुढ़ा के बेटे के साथ। किंतु सुना है कि लड़के को दमा या मिरगी की बीमारी है। ठीक ही है। बदनाम लड़की के लिए अच्छा लड़का कहां से मिलेगा ?"

गुलच ने अपना सर नीचा कर लिया। उसे चेनिमाइ को लाना अच्छा लगा था। वह उसके साथ राजी-खुशी से भाग आई थी। भागने की रात वे दोनों इंद्र नेपाली की गोशाला में एक साथ सोए। और उसके कारण ही आज उसे और उसकी मां को अलग रहना पड़ा है। आज उसी चेनिमाइ की शादी है।

कुछ देर बाद गुलच ने पूछा, "शादी कब है ?"

"शादी और क्या होगी ? एक दिन दो-चार आदमी आकर लड़की को ले जाएंगे, बस। शायद अगहन में ही होगी।"

गुलच ने और कुछ नहीं कहा।

तरा उसके लिए एक कटोरा चाय ले आई। एक छोटे कटोरे में जरा गुड़ भी लाई।

केवल नाम के लिए ही चाय है, जरा भूरा रंग आया है। तिस पर उसमें दूध ज्यादा डाला है।

"चद्दर-गमछा कुछ बुन रही है, तरा ?" गुलच ने पूछा।

"हां, अभी करघे पर ही है—मेखला बुन रही हूं।"

गुलच ने चाय की चुस्की ली।

"सुना है, इस बार बाओ धान अच्छी हुई है ?"—तरा ने पूछा।

"अब तक तो उसका चेहरा अच्छा ही है। खेतिहर को, इस बार लगता है, कुछ हाथ लगेंगे।"

"सुना है कि पाही की तरफ तूने इस बार काफी नई जमीन आबाद की है ?" कपाही ने पूछा।

"काफी क्या है ? शायद एक एकड़ के करीब जमीन होगी। नदी के किनारे वाली जमीन का क्या हिसाब है ? किंतु उस ओर जमीन जरा ऊंची हैं। यदि किसी तरह तीन एकड़ के करीब जमीन आबाद कर सकूं तो खाने-पीने की चिंता कुछ कम होगी। किंतु अकेले कितना करूं ?"

"उस जमीन के लिए भी सुना है कि मालगुजारी देनी होगी ?"

"फिलहाल नहीं देनी होगी। नए सिरे से आबाद की गई जमीन में यदि खेती की जाए तो मालगुजारी देनी होगी। सालाना पट्टे के द्वारा जमीन को पहले अपने नाम में करा लेना होगा।" गुलच ने कहा।

कटोरी को लेकर तरा अंदर चली गई।

कपाही ने एक आशा भरी नजर से गुलच की ओर देखा और कहा, "मैं भी और कब तक इस प्रकार कष्ट उठाकर रहूंगी ? दोनों ही बुन रही हैं, दूसरे के खेत में काम कर रही हैं, किंतु इस प्रकार और कब तक करती रहेंगी ? कहीं किसी प्रकार एक चप्पा जमीन मिल जाती तो..."

"जमीन मानों मिल ही गई, तू जमीन से क्या करेगी ?" गुलच ने पूछा।

"किसी को यदि बंदोबस्त करके खेती करने के लिए दी भी जाए तो साल में कुछ फसल घर आती। सदा औरों के भरोसे पर रहना क्या जीवन ?"

गुलच ने संक्षेप में कहा, "हां, ठीक है।"

कुछ दिनों से उसके मन में एक धुंधली-सी आशा अपना रूप ले रही थी—तरा का यदि उसके साथ ब्याह कर दे तो वह कपाही और तरा दोनों को पाही ले जाएगा। वहीं एक नया मकान बनाएगा और अपनी मां को भी वहां ले आएगा। वे सभी अपने खेत में काम करेंगे और अपने ही घर का खाएंगे। नई-नई जमीन आबाद करके वे धनी होंगे। गायों को नेपाली को देकर वह घर के ही बछड़ों से खेती का काम

आरंभ कर सकता है। अपना हल, अपना बैल, बोआई-रोपाई के काम करने वाली अपनी ही हो —उसके बारे में सोचकर ही कितना आनंद मिलता है !

भीतर से निकलकर तरा ने कहा, "भैया, भात यहीं खाकर जाना। घर में जेठी मां सो गई होंगी।''

"नहीं, नहीं, तुम लोग खाओ। मैं घर में ही जाकर खाऊंगा। मां इतने सबेरे नहीं सोती। सो जाने पर भी मैं जगा लूंगा।''

किंतु जब कपाही ने उससे वहीं भात खाने के लिए कहा तो वह भीतर आ गया।

"तरा, एक लोटा पानी दे तो सही। सारे शरीर में कीचड़ ही कीचड़ है।''

"बारिश क्या कम हुई है ?'' लोटे को हाथ में देकर तरा ने कहा।

गुलच और कपाही खाने को बैठे, तरा ने परोस दिया। मछली थी, गुलच को व्यंजन अच्छा लगा।

औरतों के पकाने की बात ही अलग है।

धनशिरि की मछली स्वादिष्ट है। डालिम के खेत के चावल में चर्बी है—और पुराने चावल का भात भी मीठा होता है।

"चेनि को जिस लड़के से ब्याह देने की बात चली है, उसका नाम क्या है, दीदी?''—गुलच ने पूछा।

"जाने क्या नाम है ? तरा, क्या तू जानती है ?''

तरा ने कहा, "सरूमइना या कलाइ होगा शायद...''

"सरूमइना ? सिपरिया गांव का है न ?''

"हां, तेरे पाही की तरफ का ही होगा।'' कपाही ने कहा, "उसके पिता का नाम मलोका या ऐसा ही कुछ...''

भात खाकर गुलच ने एक बीड़ा पान मुंह में भरा और जरा सोचकर कहा, "तू चिंता न कर, दीदी ! देखूं, मैं कितनी जमीन आबाद कर सकूं, यदि ज्यादा जमीन आबाद कर सका तो मां को भी उस पार ले जाऊंगा। दो प्राणियों के लिए दो गृहस्थी की क्या जरूरत है ? और क्या मालूम तुम लोगों को भी शायद ले जा सकूं ! मैं हल और कुदाली चलाऊंगा और तुम लोग रोपाई-कटाई करोगी—यह अच्छा ही रहेगा।''

तरा ने कपाही के मुख की तरफ देखा। कपाही ने एक बार गुलच के मुख की तरफ देखा। उसकी बात में किसी दूसरी बात की इंगिति है या नहीं—इसे जानने के लिए।

इसके बाद कपाही ने कहा, "हमारे बारे में अभी ही सोचने की जरूरत नहीं है। पहले तू वहां जम जा। हम किसी तरह खा-पी रही हैं। अपने गांव वालों को छोड़कर जल्दीबाजी में दूसरे स्थान में चले जाना भी अच्छी बात नहीं है।''

गुलच ने कहा, "गांव वालों के मुंह की तरफ ताकते रहने से ही क्या पेट भर जाएगा ? तुम लोगों के बारे में कौन कितना ख्याल रखता है ? नदी के किनारे वाली जमीन हुई तो क्या हुआ। मैने सोचा है कि एक बार बनाकर मेंड़ पर सुपारी के पेड़ लगा दूंगा। केले के पौधे लगाए थे, उनमें फल आने ही लगे हैं। पपीते के भी दो पौधे लगाए हैं। सेमल और दूसरे पेड़ भी कई हैं। बड़ी उपजाऊ जमीन है, जमीन में कुछ भी गाड़ दो, दो दिन में ही वह बढ़ने लगता है। मेरे यहां सब्जी के ऐसे कुछ पौधे हुए हैं कि देखते ही रहने की इच्छा होती है।"

तरा बर्तनों को लेकर भीतर चली गई। कपाही ने धीमी आवाज में कहा, "सभी काम थोड़ा सोच-समझकर करना चाहिए। हम दोनों तेरे साथ यों ही जाकर रहने लगे तो गांव वाले क्या हमें छोडेंगे ? मान लो, तरा छोटी लड़की है, किंतु मैं तेरे साथ रहने लगूंगी तो लोगों की आंखें जलने नहीं लगेंगी ? मेरे साथ इससे पहले जो व्यवहार कर रखा है वह क्या कम है ?"

गुलच लज्जा में लाल हो उठा। उसने किसी प्रकार कहा, "मेरी मां रहेगी न !"

"उससे क्या होता है ? और हम दोनों जब तेरे यहां रहने लगेंगी तो मेरी मां की तेरे साथ रहने की आशा कम है। तू ये बातें नहीं समझता है।"

गुलच कुछ समय तक न समझने वाली बातों के बारे में सोचकर बैठा रहा। तरा और कपाही दोनों को उसके साथ रखने के लिए एक सहज उपाय के बारे में वह जानता है। उसके बारे में कपाही को समझाने के लिए उसके पास कोई भाषा नहीं थी। क्या तरा का ब्याह कपाही उसके साथ कराएगी ? दूसरी ओर, कपाही के अनुसार तरा अब भी छोटी लड़की है। चौदह वर्ष की सयानी लड़की भी उसके लिए छोटी लड़की है।

तरा बहुत कम बोलती है। शायद हमेशा अकेली रहने के कारण उसे बोलने के लिए मौका ही नहीं मिलता है। कपाही के साथ और कितना बोला जाएगा।

अकेली रहते समय उसका मन यों ही बोझिल रहता है। अब वह समझदार हो गई है। आस-पास के लोगों से उसे मालूम हुआ है कि उसके मौसी के चरित्र में कुछ दोष है। इसीलिए ही गांव के बीच में रहते हुए भी वे लोग अलग-थलग पड़े हुए हैं। उसने यह भी समझा कि कपाही के अवगुण के कारण वह भी बदनाम हो रही है। किंतु उसे जो भी देखता है वही उसे स्नेह करता है। तथापि वह समझती है कि दूसरी लड़की की तरह वह उन्मुक्त नहीं है।

वह अधिक नहीं सोच सकती। वह सयानी लड़की है। चारों ओर का चेतन संसार आनंद का उत्सव करता है। उस उत्सव के लिए उसे अलिखित चिट्ठी मिलती है, निमंत्रण के रूप में। उसका आंनद भरा वातावरण उसके तन का मैल धो देता है। वह अकेली ही हंसती है, गीत गाती है, उसकी मन-मयूरी नाच उठती है। उसका मन कहीं दूर उड़ जाना चाहता है।

भीतर ही भीतर वह इतनी अशांत और चंचल होते हुए भी बाहर से शांत और धीर है। धीर रहकर वह संभवतया प्रकाश की तपस्या करती है, बारी के पीछे की तरफ के शाल के पेड़ के उस पार देखे गए तारों के पास उसकी अपनी कुछ गोपन कथाएं छिपाकर रखना चाहती है।

तरा का मन यद्यपि इस प्रकार विषाद-भरा है। किंतु उसका मन उदार है—तरा उसके मन की सूरजमुखी है—उसे मानो एक विस्तृत नीला आकाश चाहिए—शरच्चंद्र की कोख से उछला हुआ अमृत चाहिए।

उसकी इस गोपन सूर्य-वंदना को कब सफलता मिलेगी—उसके लिए उसे चिंता नहीं है। कभी सोए-सोए ही एक लाल भविष्य का वह चित्र खींचती है—प्रिया होने का पत्नी होने का, मां होने का, गृहिणी होने का। उसका मन किसी के वक्ष का उत्ताप चाहता है। बहुत-सा स्नेह चाहता है।

किंतु उसके घर, उसके मन के आंगन में कोई नहीं आता; आता है, कभी गुलच; आता है कभी चंद्र। पास में मिल जाए तो गुलच को उसे सरल मालूम होता है। उसके सामने सभी बातें मानों कही जा सकती हैं। किंतु जब गुलच चला जाता है, गुलच जब पास में नहीं रहता है, तरा को लगता है, मानो यही गुलच उसकी अव्यक्त प्रार्थना के उस पार का बादल से घिरा सूर्य है। एक दिन वह उसे दोनों हाथों से अंक में भर लेगी। सूर्य का सारा उत्ताप अपने वक्ष में भरकर वह अकस्मात कुबेर के धन की मालकिन बन जाएगी।

किंतु, अपने मन की बात वह किसी से नहीं कहती, स्वयं को भी नहीं कहती। करबला के हजारों शहीदों को कभी न बुझने वाली प्यास को लेकर वह फरहाद नदी की सूखी बालू पर खड़ी रहती है।

चंद्र के मन को समझना कठिन है। वह एक अधपगला है, कब क्या बोलता है, कब क्या करता है—कहा नहीं जा सकता। किंतु वह किसी के प्रति भी अन्याय नहीं करता, धनशिरि की बाढ़ कभी-कभी घर-द्वार को नष्ट नहीं करती क्या ? बाढ़ की मिट्टी बाद में ही जमती है।

नहीं, नहीं चंद्र से कुछ भी कहा नहीं जा सकता। आंधी के आने के पहले मन की बात कहने से क्या फायदा है।

तरा चुप रहती है। चुप रहकर तरा अपने दिल का गीत सुनती है। जीवन का गंभीर, कोमल, चंचल गीत।

बचपन से तरा को मैंने पाला था। उसकी मां की तरह ही उसे दाना चुगाती थी, उसको नहलाती थी, बोलना सिखाती थी। किंतु पालतू चिड़िया एक दिन उड़ जाती है। बिल्ली मारती है, यों ही मर जाती है।

तरा रोती है, एक जून भात नहीं खाती। बिल्ली को मार डालने के लिए कसम खाती है।

किंतु उसे मारे तो कैसे ? वह सफेद बिल्ली उसकी सबसे प्यारी बिल्ली है। वह बिल्ली को अपनी गोद लिए फिरती है; उसके साथ बातें करती है, अपने सीने से लगाकर रात को सो जाती है। उसके कारण कितने ही दिन उसे कपाही की गाली सुननी पड़ी है ! यह केवल बिल्ली को लेकर ही पगली है।

और वह बिल्ली भी कम बदमाश नहीं है—उसे बिना देखे वह क्षण भर भी रह नहीं सकती। म्याऊं—म्याऊं करके चारों ओर खोजती रहती है। उसके हिस्से की भात-मछली से कुछ खाने पर ही उसका पेट भरता था।

जब वह बिल्ली कपाही के पैरों के बीच लोट-पोट जाती है, तब वह तंग आकर कहती, "मुझे तंग न कर, अपनी मां के पास जा। एक ही मार से मार डालूंगी।"

तरा सुनकर अपने आप गुस्सा करती है।

कपाही को मालूम है कि इस सुनसान घर में तरा की उम्र की एक लड़की को किस प्रकार दिन काटना होता है। बिल्ली-मैना को लेकर ही किसी तरह वह रहा करे।

कपाही और गुलच के बीच बात-चीत होते देखकर तरा ने सफेद बिल्ली को अपनी गोद में उठा लिया और दीवार की दूसरी ओर बैठकर उन्हीं की कथाओं पर कान देने लगी। वह क्या भाग लेगी बातचीत में ?

गुलच और कपाही के बीच की बातचीत समाप्त होती आ रही थी। बीच-बीच में वे चुप हो जाते थे।

रात बढ़ रही थी। बारिश अभी नहीं रुकी थी। कपाही को अच्छा नहीं लग रहा था, "मिट्टी का तेल यों ही जल रहा है।" गुलच को चुप रहते देख कपाही ने कहा, "रात काफी हुई है। तू अभी जा। इन बातों के बारे में अभी ही सोचने की जरूरत नहीं है। वक्त पर जो होगा, होगा। जमीन को आबाद किया है तो ठीक ही किया है। जितनी आबाद कर सकता है कर ले।"

"हां, ठीक है"—और तरा और कपाही से विदा लेकर वह बारिश में ही घर की ओर चल पड़ा। हाथ में बत्ती लेकर कपाही दरवाजे के पास आई और गुलच को रास्ते तक पहुंचाने के लिए प्रकाश दिखाया। गुलच जब रास्ते पर पहुंच गया तो दरवाजा बंद करके वह भीतर चली आई।

सोने के समय तरा ने कहा, "जमीन आबाद करके यदि हमें भी दो-चार बीघे दे देता है तो क्या बुरा होगा ?"

"उसने मानो जमीन आबाद कर भी ली, किंतु हमें वह यों ही क्यों देने लगा !"—कपाही ने कहा।

"मुफ्त में कौन मांग रहा है ? भैया जमीन आबाद करेगा और हम रोपाई-कटाई करेंगी। आधे-आधे हिस्से की बात होगी।"

"रोपाई-कटाई की बात भी अलग है और उसके घर में रहने की बात भी

अलग है। तू ये बातें नहीं समझती, सोए रह।''

तरा ने कहा, "क्यों मौसी, मेरे बुने हुए कपड़े बेचकर जो पैसा मिला था—कितना है ?''

"सत्रह रुपए और छह आने हैं।''

"हां, उसी से तेरे लिए एक गहना गढ़ देना होगा। अपने हाथ में पैसा रहने की बात किसी से न कहना।''

"क्यों, उसी से गुलच भैया से नदी किनारे वाली कुछ जमीन नहीं ली जा सकती है ?''

"अच्छा, अभी काफी रात हुई है, सो जा''—कपाही ने कहा। और तरा के मुंह पर हाथ फेरने लगी।

चार

गुलच टोकड़ी की गोट बांध रहा था, जिसको उसकी मां ने बुना था। उसकी मां ढेंकी में धान कूट रही थी। बारिश रुक चुकी थी। धूप अपनी पूरी प्रखरता के साथ गर्मी पहुंचा रही थी। सबके मन में प्रफुल्लता दिखाई पड़ रही थी।

गुलच के मन में आज अपार आनंद है।

उसको आए हुए आज तीन दिन हो गए हैं। कल तक वह पाही चला जाएगा।

आज की धूप बहुत सुंदर है।

धूप निकलने पर गुलच की मन-मयूरी नाचने लगती है। यौवन के साथ सावन की प्रखर धूप का संबंध है।

गाय-बैलों को और इस तरह छोड़ नहीं सकते, औरों के खेत में जा घुसते हैं। गाली-गलौज करते है। क्यों नहीं करेंगे। गाय-बैलों को खिलाने के लिए क्या कोई खेती करता है ? किंतु गाय-बैल भी कम दुष्ट नहीं हैं। अपने बगान में उनको घास पसंद नहीं है, औरों के घेरे आदि को तोड़कर घास पत्ते खाए बिना उन्हें चैन नहीं मिलती। इस प्रकार औरों से झगड़ा करवा कर ही उन्हें शांति मिलती है।

और अधिक बदमाशी दोनों बछड़े ही करते हैं।

वे घेरे आदि किसी की भी परवाह नहीं करते। एक ओर से सब तबाह करते चलते हैं।

"इन दोनों ने मुझे तंग करके रखा है। हो सके तो इन्हें ले जा। मैं कहां तक इन्हें देखती रहूं ? खुल जाने पर वे सीधे धान के खेत में पहुंचते हैं, नहीं तो जंगल

की ओर भाग जाते हैं। दिनभर इनके पीछे दौड़ते रहना ही मेरा काम हो गया है, बांधकर रखे गए दोनों बछड़ों की पीठ पर हाथ फेरकर उसकी मां ने कहा।

गुलच ने दोनों फुर्तीले बछड़ों के ऊपर एक प्यार भरी नजर डाली। अगले वर्ष इनको काम में लगाया जा सकता है। ढ़ाई वर्ष हो गए हैं। दोनो बड़े तगड़े हो रहे हैं।

बैंगनी बछड़े के कपार को खुजलाकर उसकी मां ने कहा, "यही, यह ही मुझे अधिक परेशान करता है। बुलाने पर भी वह नहीं आता।"

इसके बाद लाल बछड़े के सर पर हाथ फेरकर उसने कहा, "यह अच्छा है, बात मानता है, बुलाने पर आता है। यह मेरा प्यारा..."

रोज हाथ फेरकर प्यार किए जाने के कारण वे बच्चे जैसे ही हो गए हैं। गुलच की मां से बिलकुल भी नहीं डरते।

गुलच को यह मालूम है कि बाल-बच्चों से शून्य इस घर में उसकी मां के संगी-साथी ये ही गाय-बैल हैं। उन्हें पाही में यदि ले जाएं तो मां अकेली पड़ जाएगी।

मां को कष्ट देने की उसे इच्छा नहीं है।

धन-संपदाएं उसकी कुछ भी नहीं है। होगी तो कहां से होगी ? अपने पिता की संपत्ति से उसे रत्ती भर भी नहीं मिला है। उसने मांगा भी नहीं। देने पर वह नहीं लेगा। यह भी नहीं। किंतु बाप का बेटा जब हूं तो एक न एक दिन संपत्ति का हिस्सा लूंगा ही। कितने दिन तक वंचित करके रखता है, देखूंगा।

गाय-बैल बकरी ही उसकी संपत्ति है।

"तू आज ही जाएगा क्या ?" उसकी मां ने पूछा।

"हां !"

"कल जाने पर नहीं होगा ?"

गुलच ने सर उठाकर देखा।

"क्यों ?"

"तेरे पिता को, सुना है, बहुत तेज बुखार है"—कुछ डरकर उसकी मां ने कहा।

गुलच एकाएक बैठने की जगह से उठ पड़ा।

"बुखार ? मरने दे ! मैं क्या कर सकता हूं ?"

"एक बार हो आने से क्या जाता है ?"

"तू ही जा, तुझे किसके किसके बारे में जानना है ! उस घर में मैं क्या दूसरी बार जाऊंगा ! मैं आदमी हूं, कुत्ता नहीं हूं।"

उसकी मां चुप रह गई। जवान गुलच से वह डरती भी है। आज उसका आश्रय-स्थल वही है।

उसकी मां ने और कुछ नहीं कहा।

बाप जैसा बेटा है—एक ही बात को जानता है।

दोपहर को भोजन के बाद गुलच गाय-बैलों को लेकर पश्चिम दिशा के जंगल की ओर चला गया। उन्हें चराने के लिए। सदा बांधकर रखे जाने के कारण वे दुबले होते जा रहे हैं।

सफेद बछड़ी शायद गाभिन हुई है, अगहन-पूस में बियाने लगे। हां, दूध और नई फसल का चावल—उसके संबंध में सोचकर ही गुलच को आनंद अनुभव हुआ। अपनी जमीन उसकी ज्यादा नहीं है। तो भी गांव का आदमी होकर नई फसल का स्वाद न ले, यह कैसे हो सकता है ?

नई फसल, नया दूध—और नई लड़की ?

घास का कोई अभाव नहीं है। सभी गाय-बैल आनंद के साथ चर रहे हैं। उन्हें यदि रोज पेट भर कर खाने के लिए मिल जाए तो वे तंग क्यों करेंगे ? रोज अधपेट रहने से आदमी भी तो संतुलित नहीं रहता।

कोई भी गाय-बैल अपना सर नीचे से ऊपर नहीं कर रहा है।

धूप काफी तेज निकली है। बारिश के बाद की धूप।

वट-वृक्ष की जड़ पर बैठकर गुलच ने एक बार आकाश की ओर ताका। असंख्य डालियों से भरे वट के घने पत्तों ने आकाश को ही ढक रखा है। उनके बीच से कहीं-कहीं सफेद धूप आ रही है। साया भी मीठा है और धूप भी मीठी है।

इस वट-वृक्ष को गुलच अपने बचपन से ही जानता है। उसी के साए में बैठकर वह पांच साल की उम्र से ही गाय-बैलों को चरा रहा है। वह अब बड़ा हुआ है, और जवान हुआ है, वट का वृक्ष पहले की तरह ही है, पहले से कुछ मोटा हुआ है, उसकी डालियां पहले की तरह ही हैं।

वट-वृक्ष के सुडौल लाल-से किसलयों को देखना उसे बहुत ही अच्छा लगता है, नुकिले, सुडौल किसलय। पास ही और कई उसी के पौधे हैं। नाहर (एक पेड़ विशेष) के पौधे भी हैं। पौधे बड़े ही सुंदर और स्वस्थ हैं।

वट-वृक्ष के घने पत्तों के बीच दिखाई देने वाले छोटे-छोटे आकाश उसे बड़े अच्छे लगे। वट-वृक्ष की मोटी जड़ पर ऊपर की ओर मुंह करके सोकर वह ताकता रहा। सूरज जरा ढलने लगा है। किंतु धूप की तीव्रता में अब भी कमी नहीं है।

वह यद्यपि अकेले ही वहां पड़ा हुआ था, तो भी उसे अकेला नहीं लगा। उसने अपने ही आप कुछ कहा। इन बातों के कोई माने नहीं हैं।

उसके गाय-बैल खुशी से चर रहे थे।

जंगल के भीतर कोई एक चिडिया लंबी आवाज में चिल्ला रही थी। वह आवाज उसकी परिचित थी। गुलच को भी चिड़िया को बुलाने की इच्छा हुई। उसने एक बार यों ही देखा—वह चिड़िया कहां है। कहीं दूर है, नहीं दिखाई देती।

उसकी दृष्टि अकस्मात नाहर की एक डाली पर पड़ी।

क्या वह मधुमक्खी का छत्ता नहीं है ?

नहीं तो क्या है !

उसका मन नाच उठा।

जमीन से बारह हाथ के करीब ऊपर नाहर की डालियों पर मधुमक्खी का बड़ा छत्ता है। दो हाथ के करीब लंबा लटका हुआ है।

शायद किसी ने भी नहीं देखा है। नहीं तो इतने दिन तक इस तरह नहीं रहता। बड़ा छत्ता है, अच्छी तरह यदि तोड़ा जा सके तो छह-आठ सेर के करीब शहद निकलेगा।

पूर्णमासी के लिए और कितने दिन बाकी हैं ? कल की रात को बड़ा अंधेरा था।

वह बहुत देर तक एकटक छत्ते की ओर देखता रहा।

अकेले इसे तोड़ा नहीं जा सकता। पेड़ पर चढ़ने में छत्ता तोड़ने में नेपाली मुहल्ले का भीम असल आदमी है। उसे किसी का भय नहीं है। इतने ऊंचे पेड़ पर चढ़कर वह डालियों को काटता है। भीम को ही साथ लेना होगा।

दो से ही काम चल जाएगा। गुलच नीचे रहेगा, भीम ऊपर चढ़कर छत्ता तोड़ेगा। इसी बीच दूसरे लोगों को मालूम न हो तो गनीमत है।

आज शाम को ही भीम के साथ एक बंदोबस्त करना पड़ेगा। वह भांग पीने वाला आदमी है। कहां क्या करता है, कौन जानता है ?

गुलच ने गाय-बैलों को एकत्र किया। सूरज डूबने लगा है। धूप हल्की और मीठी होने लगी है। भीम के साथ एक बंदोबस्त आज शाम को ही कर लेना पड़ेगा।

गुलच की दृष्टि अकस्मात पश्चिम आकाश पर पड़ी। उस ओर के जंगल के एक खाली भाग से उसने सूरज डूबने का सुनहरा दिगंत देखा। किसी अदृश्य हाथ ने गले हुए सोने में अबीर सान कर सभी पेड़-पौधों पर मुट्ठी भर-भरकर छिड़काया है। बारिश में धुले हुए हर पत्ते चमककर लाल हो उठे हैं। आकाश के वक्ष में बहते हुए मेघ हजारों रंगों का रंग लेकर विचित्र हो उठे हैं।

गाय-बैलों की आंखें भी चमक उठी हैं।

गुलच स्तबध रह गया, वह अभिभूत हो उठा, वह सब भूल गया।

जंगल में कहीं जंगली फूल खिल रहा था। दूर से एक गंध आकर उसकी नाक में लगी। किंतु बिना पलक झपके वह एकटक आकाश की तरफ देखता रहा। सांझ की इस वर्णाली ने उसके शैशव, यौवन, अतीत और भविष्य को एक में मिला दिया। उसकी छाती फूल उठी। सौंदर्य के प्रति उसके मोह ने उसके समस्त दारिद्रय को समाप्त कर दिया।

पुराने घास-फूस भी सजीव है और नया आकाश भी संजीव है। गुलच ने अपने

को इसी का एक अंग समझा। इसी आकाश और इसी घास-फूस का उत्ताप लेकर वह बड़ा हुआ है। उसके लहू में इसी प्रकृति के घनिष्ठ विश्वास का स्पंदन है।

सभी उसके अपने हैं। उसके प्राण के परिचित हैं।

एक आनंदोल्लास मन लेकर वह गाय-बैलों को आगे-आगे हांककर घर की तरफ चला। नई जमीन पर उसके पग चंचल होने लगे।

हाथ के कोड़े से वह रास्ते के दोनों किनारों के पौधों को यों ही मारता गया। उसका मन फुर्तीला हो उठा। एक सुनहरा आकाश उसकी छाती के भीतर घुस आया है।

उस तरफ से कार्तिक आया था।

आमना-सामना हो गया था।

"पाही से कब आया है, गुलच ?"

किंतु कार्तिक के प्रश्न के उत्तर देने की जरूरत नहीं है।

"अरे, कार्तिक..."

"क्या है ?"

"तू पेड़ पर चढ़ सकता है ? बड़ा ऊंचा पेड़ है।"

"कार्तिक से नहीं होगा।"

"अच्छा जा, तब..."

कार्तिक चला गया।

कुछ दूर जाने के बाद गुलच को पजिर मिला। उस ओर से आया था। कंधे पर हल बनाने के लिए एक लकड़ी है।

"हल ?"

"हां, उसी के लिए। भद्रेश्वर के घर के बड़े पेड़ को कटाया था, उसी में निकली थी। दो आने पैसे लिए।"

गुलच ने एक बार हल की लकड़ी को अच्छी तरह देखा। इसके बाद कहा, "पूर्णमासी कब है रे ?"

"पूर्णमासी ! जाने, छह-सात दिन अभी बाकी हैं शायद। इन दिनों इतनी बारिश हुई है कि चांदनी है या अंधेरा, भान ही नहीं होता।"

"हां, अच्छा जा..."

कुछ दूर जाकर पजिर ने गुलच की ओर घूमकर देखा और चिल्लाकर पूछा, "सुना है, बहुत-सी जमीन तुमने आबाद की है।"

"कौन कहता है, दो-चार बीघे आबाद कर रहा हूं।"

पजिर चला गया।

इस बार उसे चंद्र मिल गया।

चंद्र को नए डालिम के, पुराने डालिम के, सिपरिया गांव के सभी लोग जानते

हैं। उसका दादा गांव का बूढ़ा था, नाम था जीउराम। बहुत-से आदमी चंद्र को गांव बूढ़ा का नाती कहते हैं।

चंद्र का पिता थोड़ा खर्चीला आदमी था। गांव बूढ़ा की संपत्ति की अधिक दिन तक वह रक्षा कर नहीं सका। रोज-रोज उसकी हालत खराब होने लगी, तो भी पाठशाला की पढ़ाई समाप्त होने के बाद चंद्र को उसके पिता ने नगर के एक परिचित वकील के घर में रखा था। घर के काम जो हो वह करेगा और हाई स्कूल में पढेगा। चंद्र पढ़ाई में खराब नहीं था। किंतु उसके छठी कक्षा में पहुंचते ही आमाशय के रोग में उसके पिता की अकस्मात मृत्यु हो गई।

वह और पढ़ नहीं सका। गांव में लौट आया और खेती-बारी में लगा।

उसकी पढ़ाई यद्यपि वहीं समाप्त हो गई है, तथापि डालिम गांव के लोगों के लिए वह विद्वान है, बड़ा आदमी है। गांव के लोग उससे सलाह लेते हैं, परामर्श करते हैं, उपदेश चाहते हैं। वह खुद भी साहसी था, और उसका मन भी उदार था। किसी से डरता नहीं, कोई अपना और कोई पराया नहीं है—गांव को वह अपना घर समझता है।

वह किसी से पक्षपात करने वाला आदमी नहीं है। उसे जो पक्ष को उचित और न्याय का लगता है वह उसी पक्ष के पक्ष में अपनी राय देता है। इसलिए गांव के बहुत-से लोग उससे डरते हैं। किंतु उसका कोई शत्रु भी नहीं है। उसने आज तक किसी का भी अपकार नहीं किया है।

अब चंद्र जवान हो गया है। वह मोटा-ताजा और स्वास्थ्यवान है। घर की खेती-बारी वह खुद ही करता है। उसकी मां और छोटी बहन रोपाई-कटाई करती हैं और वह जुताई का काम करता है। गांव के लोग भी जुताई के अनुसार उसकी सहायता करते हैं, वह भी अपने सामर्थ्य के अनुसार उसका प्रतिदान देता है। सलाह-परामर्श वह जैसा देता है उसी प्रकार अपनी गठरी का पैसा भी उसी तरह खर्च करता है। गांव में उसका स्थान कहां मिटेगा ? गांव के सभी लोग उससे डरते हैं। वह बीच-बीच में शहर जाता रहता है। कहते हैं कभी-कभी साहब के मुंह की ओर देखकर भी वह बातें करता है। वह गांव का भरोसा है। वह कभी झगड़ा भी नहीं करता है, ऐसी बात नहीं। अधिक बातें करता है। उसने अंग्रेजी यद्यपि अधिक नहीं पढ़ी थी तथापि अंग्रेजी बोलता है। गांव के अंग्रेजी न जानने वाले बाल-बच्चे दंग रह जाते हैं। जूता न पहनने पर भी वह पैंट पहनता है—सस्ते मोटे कपड़े की और रंगीन चित्र-विचित्र हवाई शर्ट। अपने संगी-साथी मिल जाने पर अंग्रेजी और असमिया के समान शब्द मिलाकर अपनी बातें करने की बहादुरी दिखाता है। उसकी उम्र बीस के करीब होगी। गांव की बहुत-सी लड़कियों को धमकी देकर उसने खुद भी गाली खाई है। विवाह उसका अभी तक नहीं हुआ है।

चंद्र बहुत सारे उपाय से अपनी कमाई करता है। जरूरत पड़ने पर वह दो-चार

रुपए उधार देने की भी सामर्थ्य रखता है।

उसकी उदारताओं में एक विशेष बात है, औ
जाने वाला उपदेश। वह सबको सभी प्रकारों के बढ़ि
है। पैसा न होने पर भी उसका मन बड़ा है।

वह उपदेश किसी के काम में आता है और
इसके अलावा उसके साथ तीन चीजें सदा रह
की छह आने वाली एक कलम और क्लिप वाली ए
में वह अपने हस्ताक्षर बहुत बढ़िया कर सकता है।

घर की ओर जाने वाले मवेशी—अपने आप
चंद्र को पाकर गुलच रुक गया।

"कहां जाता है, चंद्र ?"

"सोमस बरपाई के घर से आता हूं।"

"सांझ के समय आया है। देखूं, एक बीड़ी

"होवट् ! कितनी बीड़ी पिएगा ! सलाई है ?"

"तू दे तो, उसी के घर से जला लाऊंगा।"

चंद्र ने एक बीड़ी निकालकर गुलच को दी।

"कहां गया था ?"

"मवेशियों को चरा लाया। बीड़ी को सुलगाक

गुलच पास के एक घर से बीड़ी को सुलगाकर
निकालकर चंद्र कंघी करने लगा।

उसने भी गुलच की बीड़ी से अपनी बीड़ी क

"तुझे न्यूज मिला या नहीं ?"

गुलच ने चंद्र की ओर सर उठाकर देखा।

"क्या ?"

"चेनिमाइ के ब्याह का ? सिपरिया गांव का व
का साहस देखा है !"

चंद्र की बात को अच्छी तरह न समझने के का
सुना है ?"

"आइ नो एवरिथिंग। क्या सोचता है ? तू यदि
हूं। चेनिमाइ के पिता ने तुझे क्या कम इंसल्ट किय

"ऐसा न कर। जो जिससे ब्याह करना चाहत
लाकर जो हुआ सो हुआ।"

"तू एक गधा है। मैं होता तो क्या उसे छोड़ दे
बी, मैं सबको ठीक कर देता। तेरा बूढ़ा भी बड़ा ब

अपने पिता के विषय में चंद्र की उक्ति गुलच को अच्छी नहीं लगी। वह चुप रह गया।

"तू क्या मेरेज नहीं करेगा ?" चंद्र ने पूछा।

"इस समय कैसे हो सकता है ? घर-द्वार, जमीन-जायदाद कुछ भी नहीं है।"

"गोली मार घर-द्वार को। एक ब्युटिफुल-सी लड़की को पसंद कर, मेरे सामने पाइंट आउट कर दे, मैं सब ठीक कर दूंगा, यू सी..."

कुछ इधर-उधर देखकर गुलच ने कहा, "तरा तुझे कैसी लगती है ?"

"तरा ? कौन तरा ? कपाही बुआ की लड़की ? ब्यूटिफुल बनी हुई है। यह बात तूने इतने दिनों तक बताई क्यों नहीं ? उसकी मौसी ही अभी तक ब्यूटिफुल बनी हुई है, बिलकुल यंग गर्ल की तरह है।"

विनती के स्वर में गुलच ने कहा, "तू इस बात को किसी से न कहना चंद्र, केवल तुझसे ही कहा है। मैं मन ही मन सोच रहा हूं। और पहले ही कुछ बंदोबस्त न हो तो..."

"गोली मार ! एवरिथिंग हो जाएगा। आइ विल हेल्प इट। ले, और एक बीड़ी पी ले। मैं चलता हूं। नो टाइम। मैं सब ठीक कर दूंगा, जा।"

उल्लसित होकर चंद्र चला गया। गुलच ने भी कदम बढ़ाया। उसके मन में भी आंनद ने झांका। हाथ की मुट्ठी में बीड़ी को लेकर वह घर आ पहुंचा। एक के बाद दूसरी बीड़ी मिलने पर भी उसे पी जाना ठीक नहीं है। दूसरी बीड़ी को वह रात को भात खाकर पीएगा।

बादल छंट गए हैं। चांदनी निकल आई है। दो-एक दिन में पूर्णमासी होगी। दो दिन देर से भी यदि वह पाही को जाता है तो कोई हानि नहीं होगी। मधुमक्खी के इस छत्ते को छोड़ नहीं सकता।

भात खाकर रात को ही गुलच भीम के घर गया। भीम ने हिसाब लगाकर कहा, "पूर्णमासी के लिए और तीन दिन बाकी हैं। किंतु परसों भी यदि उसे तोड़ा जाए तो रस मिलेगा। है कहां ?"

"तू खुद ही देखेगा। बहुत ही बड़ा छत्ता है। अच्छा परसों ही हम जाएंगे।"

भीम के साथ बंदोबस्त हो गया है। और किसी को भी साथ नहीं लेगा। रात को खाना खाने के बाद दोनों जाएंगे, दो मटके भी साथ ले जाएंगे, सीढ़ीं की जरूरत नहीं होगी। दोनों दो दाव ले जाएंगे। बाघ आदि का भय है; तिस पर रात का समय है।

नेपाली के मुहल्ले से उसने सीधे घर का रास्ता ही लिया था, किंतु एक बार तरा को देख जाने की इच्छा हुई। उसके जाने पर बीच में कपाही आकर पड़ती है, वह उसे जरा दूर रखती है। उसके मन का भाव शायद कपाही समझ गई है।

"क्यों दीदी, सो गइ है क्या ?" दरवाजे के पास खड़े होकर उसने धीरे से

आवाज दी।

"हां, कौन है ?" पतली नींद से जागकर कपाही ने उत्तर दिया।

"मैं ही हूं। सो गई है तो रहने दे, उठने की जरूरत नहीं है। रात भी काफी हो गई है।"

कपाही ने दरवाजा खोल दिया। तरा सो गई थी।

"आ, भीतर आ जा—इतनी रात कहां से आया है ?"

"इधर एक जगह गया था।" गुलच बैठ गया।

कपाही ने जोर देकर दरवाजे को बंद कर दिया।

"मैंने सोचा, तू पाही चला गया है। इन दिनों एक दिन भी नहीं आया।"

बत्ती को उठाकर उसने हिलाकर कहा, "इसमें थोड़ा-सा भी तेल नहीं है।"

गुलच ने कहा, "तरा कहां गई है ? सो गई है क्या ?"

"वह बहुत पहले ही सो गई है। अभी बच्ची ही है, बिस्तर पर लेटते-लेटते उसको नींद आ जाती है। हमारे जैसी थोड़े ही हैं—दुनिया की नाना चिंताएं, नींद जल्दी आती ही नहीं।"

बत्ती का प्रकाश कम होता जा रहा था। गुलच ने एक बार कपाही की ओर ताककर कहा, "यों ही आया था ? सो जा, चलता हूं..."

"जाना ही चाहता है ? जरा बैठ, एक बीड़ा पान भी नहीं खाएगा ?"

"अभी रहने दे..."

गुलच उठ पड़ा।

"तो जा ! पाही कब जाएगा ?"

"चौथे दिन तक शायद जाऊंगा। क्यों ?"

"तो परसों तू यहां है ?"

"हां !"

"परसों रात हो सके तो एक बार आना। तेरे साथ कुछ बात करनी है।"

"हो सका तो आ जाऊंगा। किंतु जल्दी नहीं आ पाऊंगा।"

"कहीं जाएगा क्या ?"

मधुमक्खी के छत्ते के बारे में न कहना ही उसने अच्छा समझा।

उसने जरा सोचकर कहा—"हमारे ऊपर सबकी आंखें लगी हैं तू उसे जानती ही है। मैं जल्दी आऊं और कोई देख ले और इधर-उधर की बातें कहता फिरे। मैं यह नहीं चाहता।"

दरवाजे के पास कपाही ने कहा, "परसों तरा को उसके मामा ने बुलाया है। मैं अकेली ही रहूंगी। आना। अकेले मुझे डर ही लगता है..."

"अच्छा, आऊंगा, दीदी ! अभी चलूं।"

गुलच धीरे-धीरे निकल पड़ा।

कुछ देर रुककर कपाही ने भीतर आकर दरवाजा बंद कर दिया।

रास्ते पर आकर गुलच ने आकाश की ओर ताका। परसों तेरह या चौदह की पूर्णमासी है। चांद बहुत ही सुंदर रूप में निकल रहा है। मन प्रफुल्लित हो उठता है।

परसों मधु के छत्ते को तोड़ने के बाद ही वह कपाही दीदी के घर आ सकेगा। रात कितनी होगी, कोई ठिकाना नहीं है।

किंतु उस दिन तरा घर में नहीं रहेगी। तरा न हो तो आने में ही अच्छा नहीं लगता। वह बड़ी ही सुंदर हो उठी है। चेनिमाइ की अपेक्षा तरा अधिक सुंदर है। गांव का कोई पकड़कर ले न जाए। उसकी मां नहीं है—वह यदि खुद ही भाग जाए तो दीदी क्या कर सकेगी ? चंद्र के द्वारा इस बात के संबंध में कहलाना चाहिए। लज्जा की क्या बात है ? मौका पाने पर परसों मैं खुद ही कह दूंगा। दोनों को पाही ले जाऊंगा। मां को भी ले जाऊंगा। कुछ अधिक जमीन यदि आबाद की जा सके और एक जोड़ी बढ़िया बैल लिया जा सके तो तीन रोपाई का काम करने वालियों से चार-छह एकड़ जमीन आसानी से जोती जा सकती है। कौन जाने, तरा का भाग्य ही मेरा और मां का भाग्य खोल दे।

चंद्र के द्वारा कहलाने की कोई जरूरत नहीं है, मैं खुद कहूंगा। चेनिमाइ का विवाह होने दे, मैं तरा से ब्याह करूंगा। तरा के सामने चेनिमाइ क्या है ? तरा यदि बहू के रूप में आए तो मां भी खुश होगी। तरा की यदि असहमति न हो !

पांच

"कौन है ?"—दरवाजा खुलने की आवाज को सुनकर उसकी मां ने आवाज दी।

"मैं हूं, मां ! तू सो गई क्या ? बत्ती को तो जला।" उसकी मां सोते से उठ आई।

"इतनी रात कहां गया था, रात को घूमने की आदत फिर से पड़ने लगी है क्या ?"

बत्ती को जलाकर उसकी मां निकल आई।

"घूमने नहीं गया था। भीम के यहां गया था।"

इसके बाद उसने मां से मधुमक्खी के छत्ते को तोड़ने के संबंध की पूरी योजना के बारे में बतलाया। सुनकर मां को खुशी हुई।

"मैंने सोचा था कि पिता के बारे में समाचार जानने के लिए तू गया था।"

गुलच बड़बड़ाने लगा, "उन बातों के बारे में मुझसे कुछ न कह। कोई मरना चाहे तो मरें। और तू यदि देखना चाहती है तो देख आ। तुम लोगों को तो शर्म-वर्म भी नहीं है।"

उसकी मां भी क्रोधित हो उठी, "मुझे क्या पड़ी है ? पटरानी है, बहू है, खूब सेवा-सुश्रूसा होगी। मरने के समय कौन मुंह में एक बूंद पानी देगा, मैं देखूंगी।"

मां की बात सुनकर गुलच को खुशी हुई। उसी की तरह उसकी मां भी अपनी बात की कायल है।

"अच्छा, रात काफी हो गई है। जा, सो जा। इस समय चिल्लाने-विल्लाने की जरूरत नहीं है।"—गुलच ने कहा।

"तेरे कहने से ही नहीं होता। एक बार रात को घूमकर एक को घर में लाकर तुझे क्या मजा मिला है, तुझे याद नहीं है, तुझे शर्म नहीं है ? भीम के यहां जाता है, जिस किसी के घर जाता है दिन के समय जा। सारे गांव का और काम ही क्या है ? कौन कहां गया, किसने किसकी ओर ताका, उसका हिसाब-किताब लेना ही काम है। शत्रु को कभी भी शह नहीं देनी चाहिए।"

"मैं पाही को ही चला जाऊंगा। घर को बना लेता हूं। तुझे भी लेता जाऊंगा..." मां ने उसके मुंह की तरफ देखा।

"मेरे साथ दिल्लगी करने न आ। अपनी इस जन्म-भूमि इस गांव को छोड़कर ही तेरे उस पार की पाही में क्यों जाऊं ! मरना है तो यही मरूंगी। गांव के बाहर क्यों जाऊंगी ?"—कड़े शब्दों में मां ने कहा।

"वहां क्या आदमी नहीं है ? यदि कुछ अधिक जमीन आबाद कर सकूं तो यहां से कहीं अधिक सुख में रहेंगे।"

"तेरे सुख को रहने दें। स्थान छोड़ने के मतलब हैं अपना सम्मान गंवाना। अपने गांव में झोंपड़े में रहकर मांग कर खाऊंगीं। किंतु यहां से क्यों चली जाऊंगी ? तू जो करना चाहता है कर, मुझसे न कहा कर।"

गुलच को मां के लिए जरा भय-सा लगा। उसकी मां ने एक भी झूठी बात नहीं कही है। मां को इस प्रकार सहज बातों से भुलाया नहीं जा सकता।

पानदान से सुपारी का एक टुकड़ा उठाकर उसने मुंह में भरा और कमीज की जेब से अधजली बीड़ी के टुकड़े को निकालकर जलाने लगा।

उसकी मां ने कहा, "पाही में घर-वर बनाने की जरूरत नहीं है। हो सके तो कहीं यहीं एक अच्छी जमीन देखकर ठीक तरह से एक मकान बना। पानी चूने वाले मकान में और कितने दिन रहेंगे ?

गुलच ने कुछ न कहा।

जवान होने पर भी औरों की तरह वह लगातार काम नहीं कर सकता। उसका मन बड़ा ही कोमल है। यदि एक सुंदर पत्ता भी उसे दिखलाई पड़े तो उसे देखकर

वह दूसरे काम को भूल जाता है, आकाश के मेघ के एक टुकड़े को देखकर वह खाना खाना भी भूल जाता है। कहीं जंगल में किसी चिड़िया की आवाज सुनकर भी वह व्याकुल हो उठता है। वह किसी भी काम में एकाग्रता के साथ लगे नहीं रह सकता।

मां जो कहे पाही में ही एक बढ़िया मकान बनाना होगा—नदी के किनारे एक सुंदर-सा मकान। तरा के लिए।

बहू की सेवा जब मिलने लगेगी तब मां का गुस्सा समाप्त हो जाएगा। तरा यदि कुछ खातिर मां की करे तो सब ठीक हो जाएगा।

बिस्तर पर पड़े-पड़े उसकी मां ने धीरे-धीरे अपने से ही कहा—उसके साथ के सभी ने विवाह किया है, बाल-बच्चे हुए हैं। इस प्रकार घुमक्कड़ होने से घर कैसे बसेगा ! मन को बांधना होगा, तभी होगा। बन गया घुमक्कड़। इतना जवान हो गया है, घर को ठीक करने के लिए कोई हौसला ही नहीं है। दिन भर घूमते रहने से ही उसका घर बसेगा, खाना-कपड़ा होगा।''

बीड़ी का आखिरी कश लगाकर गुलच ने कहा, "इधर-उधर न जाकर घर में बैठकर तेरे मुंह को ताकते रहने से ही पेट भर जाएगा ? तू नहीं जाएगी तो यहीं रह, मैं घर-द्वार पाही में ही बनाऊंगा। जो होगा, होगा।''

उसकी मां ने कुछ और न कहा।

थोड़ी देर बाद मां को नींद आ गई।

चटाई को फर्श पर बिछाकर तेल से दाग भरे तकिए पर सर रखकर गुलच लंबा हो गया। उसकी आंखें अभी नहीं मुंदी है। ऊपर की काली छत की ओर ताककर उसने सोचा इस प्रकार और ज्यादा दिन नहीं रहा जा सकता। कपाही यदि तरा को न देने की बात पर जिद्द करने लगी तो उसे जबरदस्ती ही लाना होगा। चंद्र के साथ जरा सलाह मशवरा करना होगा। कपाही बदचलन औरत है, तरा की अपनी मां भी नहीं है। और कौन तरा से ब्याह करेगा ? पाही में ही अच्छी तरह घर बना डालूं। यदि भगाकर ले आने की नौबत आ जाए तो पाही में ही ले जाऊंगा। वहां जल्दी कोई भी खोज नहीं निकाल सकेगा। और ले जाने के बाद तरा को खोजते हुए कौन आएगा ?

तेल के रिक्त बत्ती का प्रकाश धीरे-धीरे क्षीण होने लगा और एक बार वह बुझ गया। मकान की छत के एक सुराख से होकर चांदनी की एक पीली रेखा आकर उसके तकिए के पास ही पड़ी है। वह कुछ देर तक देखता रहा। कुछ भी हिले बिना चांदनी भीतर चली आई है। उसने अपने हाथ को पसार कर हथेली को उस ओर कर दिया। उसकी हथेली पर एक टुकड़ा सफेद चांदनी है...

छह

डालिम गांव का सफीयत जरा पैसे वाला आदमी है। उसकी बुआई की जमीन ही चौदह एकड़ है। उस पार की पाही में भी उसकी नौ एकड़ के करीब रबी फसल की जमीन है। अठारह साल की उम्र में ही विवाह किया था, अब अड़सठ वर्ष का हो रहा है। उसकी सेहत अभी भी बिलकुल ठीक है।

सफी बूढ़े की पांच बेटियां हैं, उन सबका विवाह कभी का हो चुका है नाती-नातिन हुए हैं। दो बेटे हैं, लड़कियों से छोटे हैं। बड़ा बेटा रफीयत। रफीयत का विवाह भी कई वर्ष पहले हो गया है। दो बच्चियां हुई हैं। छोटे का विवाह अभी नहीं हुआ है। उसकी उम्र बत्तीस पार कर गई है।

विवाह न होने के कारण कई हैं।

बफी उसका नाम है। बफी बौना है, उसकी ऊंचाई साढ़े तीन फुट के करीब है। एक आंख जन्म से ही कानी है। बाएं हाथ की दो अंगुलियों का एक-एक पोर नहीं है। उसके अलावा उसका मुंह जरा टेढ़ा है, ऊपर के दांत उसके इस प्रकार निकले रहते हैं कि लोगों को लगता है कि वह हमेशा हंसता रहता है।

बफी जरा गूंगा भी है। उसको जो कुछ बुद्धि थी गांव के सभी जब उसे गूंगा कहके तंग करने लगे तो उसको भी उसने खो दिया।

सफी बूढ़ा को बफी के लिए दुख न होते हुए भी चिंता अवश्य थी। उसकी मुख्य चिंता थी, उसके लिए किसी प्रकार से एक लड़की की व्यवस्था करना। गांव में लंगड़ा-काना, कोई भी बिना ब्याहे नहीं रहता। विवाह करना सुन्नत है, अनिवार्य धर्म है। विवाह का परिणाम चाहे कुछ भी हो। विवाह न कराना बड़े गुनाह की बात है। पाप की बात है।

सफी बूढ़े की धारणा है कि छोटे बेटे का विवाह वह यदि करके नहीं जा सका तो पिता का कर्त्तव्य अधूरा ही रह जाएगा। कहीं से भी एक लड़की की व्यवस्था करनी होगी।

किंतु कहीं से भी कहने से ही काम चलने वाला नहीं है। सफीयत की बहू, रूप और गुण—दोनों दृष्टि से लोगों को सुहानी लगे। गूंगा हो सकता है, तथापि रफी सफी का बेटा है।

और वह लड़की है, कपाही की बहन की बेटी, तरा।

कपाही की बदनामी पुरानी हो चुकी है। और सफी की बहू की ओर अंगुली उठाने वाले आदमी गांव में बहुत कम हैं। केवल है वह बदमाश चंदू। उसी का जरा भय है। उसके लिए हिंदू-मुसलमान, छोटे-बड़े के बीच भेद नहीं है।

कपाही और तरा सफी के खेत में रोपाई-कटाई करती हैं। कपाही उसके घर धान भी कूटती है और पानी भी भरती है। बफी ने तरा को देखा है, तरा भी उसे

भैया कहकर पुकारती है। बफी देखने में सुंदर नहीं है। किंतु वह क्या आदमी नहीं है ?

दस-बारह वर्ष पहले कपाही के प्रति सफी खुद ही आकर्षित हुआ था। उसके समझने लायक उसने थोड़ा बहुत प्यार भी किया था, उसके घर जाकर उसने समाचार आदि भी लिया था। किंतु जब एक दिन कपाही के घर में अपने बेटे। बफी को उसने देख लिया, उस दिन से कपाही के साथ उसका संबंध अलग कर लिया। अपनी इज्जत की रक्षा किस तरह की जानी चाहिए, सफी को मालूम है।

अगले दिन अपने बेटे रफी को भी उसने सावधान कर दिया कि कपाही के घर रात को जाना यदि वह बंद नहीं करता है तो उसे घर से निकाल देगा। रफी पिता को बाघ जैसा समझता है। कपाही को, बुआ के सम्मान को खोना नहीं पड़ा।

बफी के लिए बूढ़े ने दो-एक जगह लड़की देखी थी। किंतु कोई नाम तक नहीं सुनता है। दो-एक ने गाली गलौज करके कड़े शब्द भी सुनाए। उस काने को अपनी लड़की देने के बजाए उसे काटकर और बोरे में भरकर धनशिरि में बहा देना अच्छा है। सफीयत की बहू न होने पर हमारी लड़की को खाना न मिले तो न मिले।

सफीयत को ज्ञात हुआ। लड़का देखकर ही लड़की खोजनी चाहिए। उस गूंगे को एक बढ़िया लड़की को लाकर देने से वह उसे चैंन से रहने नहीं देगी।

इधर कुछ दिनों से तरा के ऊपर नजर पड़ी है।

तरा सफीयत की बहू बनने लायक लड़की है। न देने की भी बात नहीं है। कपाही जैसी गरीब औरत सफी की बात कैसे न माने ! शायद अपने को इसके लिए भाग्यशालिनी ही समझेगी। कपाही की बात कौन नहीं जानता।

गांव में सफीयत के बारे में बहुत-सी बातों की चर्चा होती है। सफीयत कंजूस है, सूदखोर है और इसी तरह की विभिन्न बदनामियां उसके बारे में हैं। कई बातें तो स्वतः सिद्ध किंवदंती के रूप में फैली हुई हैं।

अपने विवाह के लिए सफीयत ने बारह आने पैसे में दुकान से एक जोडा जूता खरीदा था। करीब चालीस वर्ष पहले। वह जूता अब भी पहले जैसा है। कपड़े से लपेटकर उसे मचान पर रख दिया है। गांव में विवाह होने पर और ईद-बकरीद के अवसर पर उसे एक-आध घंटे के लिए वह पहन लेता है; और उसके बाद उसे ठीक तरह से पोछ-पांछकर फिर मचान पर रख देता है।

उसके लड़के रफी ने अपने विवाह में एक नया जूता खरीदना चाहा था। बूढ़े ने धमकी देकर कहा, "एक जोड़ा जूता है। उसी से काम चल जाएगा। जोड़ा के जोड़ा जूता खरीदने के लिए उसने क्या पैसे का मीनार बनाकर रखा है ?"

अपने पिता के जूते को पहनकर ही रफी हाथी पर चढ़कर विवाह करने गया था।

दूसरी बात है सफीयत का कोट। पंद्रह वर्ष पहले ही जमीन के बारे में एक

मुकद्दमा हुआ था। मुकद्दमे में जीतकर एक रुपया छह आना देकर नीलाम में पाया गया एक लाल, गरम कोट खरीद लाया था। करीब-करीब उसी के नाप का, केवल थोड़ा-सा ढीला था। घर से निकलकर कहीं भी जब वह घूमने निकलता है सफीयत कुर्ते अथवा बनियान के ऊपर उस लाल कोट को पहनकर जाता है। चाहे पूस का महीना हो या जेठ का।

पोशाक पोशाक है, और उसे पहनना चाहिए। जाड़ा और गर्मी का पोशाक के साथ क्या संबंध है ?

लाल कोट को पहनने से बूढ़ा देखने में सुंदर लगता है। छाती तक आने वाली पकी हुई दाढ़ी और अब भी मजबूत दांतों को दोनों पंक्तियों से भरे हुए मुखड़े के साथ बूढ़ा सुंदर दिखाई पड़ता है।

गर्मी के दिनों में जब वह कोट को पहनता है, उसको जरा पसीना आता है। किंतु कोट के कारण ही पसीना आ रहा है, इसके कोई मतलब नहीं हैं।

तीसरी बात है सफीयत के कुत्तों का दल।

गांव के लोगों की स्मरणावधि से सफीयत के घर कुत्ता रहता आया है। बड़े तेज कुत्ते हैं। किसी को भी पिल्ला नहीं दिया जाता—नस्ल चला जाएगा। कोई भी चोर इधर आंखें भी नहीं उठा सकता।

कुत्ता नहीं है—बाघ है।

बूढ़ा का बड़ा स्नेह है अपने कुत्ते के लिए। अपनी थाली से एक मुट्ठा भात यदि कुत्तों को नहीं देता उसकी भूख ही नहीं मिटती। कुत्ते भी बूढ़े की बड़ी भक्ति करते हैं। कहीं जाने पर दो कुत्ते उसके साथ जाएंगे ही। बूढ़ा किंतु कुत्तों को हाथ से नहीं छूता। कुत्ता नापाक होता है। कुत्ते को छूने से अंजु भंग होता है, नमाज अदा नहीं कर सकते। किंतु गांव में भोज आदि होने पर गृहस्थ से मांगकर आदमी के लिए लाने की तरह भोज के भात-मांस को पोटली में बांधकर ले आता है और अपने हाथों खिलाता है। नातियों को वह इतना प्यार नहीं करता।

चौथे में—सफीयत के बगान बारी के मीठे आम हैं।

उनमें से कई-एक सफीयत का पिता लगा गया था। कुछ बूढ़े ने खुद लगाए थे। सचमुच ही अच्छे आम हैं—रसाल, गुड़ के स्वाद जैसा। कच्चा खाया जाने वाला भी है, पका खाया जाने वाला भी है। बूढ़े की बारी के जैसे आम गांव में और दो-चार ही हैं।

आम के पकने के समय यदि कोई उसके घर में जाता है तो बूढ़ा बगीचे के आम खाने के लिए आग्रह के साथ देता है। किंतु खाते समय सामने ही रहता है। किसी को भी गुठली को ले जाने नहीं देता। गुठली ले जाने से उसकी भी नस्ल जाएगी। भात खाने को दिया जा सकता हैं, किंतु उसके साथ अंगुली को तो नहीं। बीज न दो, बीज जाएगा तो लक्ष्मी चली जाएगी।

किंतु किसी दूसरे के घर यदि किसी अच्छे फल का बीज मिल जाए तो बूढ़ा निश्चय ही उसे ले आएगा और अपने घर में उसे लगाएगा। चाहे आम हो, कटहल हो, अनार हो या कोई और दूसरा फल हो। और बूढ़े का हाथ भी लक्ष्मी-स्वरूप है। किसी नीरस जमीन में भी यदि उसे रोप दे, उसी में होने लगता है।

विवाह के पहले दाढ़ी न रखने की बात पर रफी ने अपने पिता से झगड़ा किया था। किंतु सफी की एक धमकी ने ही उसके मुंह पर चिड़िया का घोसला बना दिया।

रोज दाढ़ी बनाकर स्त्री के मुंह जैसा बनाकर घूमने में शर्म नहीं लगती ? और कमाता क्या है ? उस्तरे का दाम ही दो रुपए है, और वह कितने दिन तक चलेगा ? रोज दाढ़ी बनाने पर दो रुपए वाला उस्तरा कितने दिन चलेगा ? और चलेगा तो ज्यादा से ज्यादा तीन वर्ष। इसके बाद धार लगवाने में दो आने लग जाए—उतना खर्च करने के लिए नहीं है। दाढ़ी रख, अल्लाह का नूर है।

दूल्हा बनकर जाते समय भी रफी ने दाढ़ी को कैंची से ही कटवाया था। उस्तरा नहीं लगाया था।

डालिम गांव में नाई नहीं है। सारे गांव में केवल पांच कैंचियां हैं। उनमें से कनबाप दर्जी की ही अच्छी है, तेज है। किंतु उससे कपड़ा ही काटा जाता है। बाल नहीं। कभी-कभी ही चोरी-छिपे उससे दो-एक बाल कटवाता है। गांव का करीब हर जवान बाल काटना जानता है। उनमें से दो-एक का अच्छा नाम है। बहुत बढ़िया काटते हैं।

एक परिवार की कैंची, दूसरे परिवार की कंघी, तीसरे परिवार का उस्तरा है। और एक चौथे घर के आंगन में या दीवारहीन बैठकी में, जो जवान बढ़िया बाल बनाता है उसकी बड़ी खातिर होती है। किंतु बाल-दाढ़ी माघ, फागुन, चैत और आश्विन, कार्तिक में बनाए जाते हैं। सामान्य रूप से खेती के समय डेढ़-दो महीनों तक बाल-दाढ़ी न बनाए जाएं तो कोई अस्वाभाविक बात नहीं होगी। जवानों के मुंह पर दाढ़ी होना कोई आश्चर्य की बात नहीं है।

यह बात नहीं है कि कपाही ने तरा के लिए गांव के दो-चार जवानों पर नजर नहीं रखी है। ऐसा भी नहीं है कि कुछ नौजवानों ने लुक-छिपकर कपाही के घर चाय पान नहीं किया है। किंतु कपाही चतुर है। किसी को शह नहीं दी है, किसी को जबान नहीं दी है।

तरा का मन भी वह ठीक तरह से समझ नहीं पाई है।

सयानी लड़की का मन सहजता से समझना कठिन है।

सफीयत को कपाही अच्छी तरह जानती है। पहले सफी उसको प्यार करता था, प्यार करना चाहता था कपाही को; अब प्यार करता है तरा को। अपने लिए चिंता नहीं है, यह कपाही समझती है। कोई भी अच्छा लड़का यदि उसके हाथ न

लगे, और तरा को अंततः बफी को ही देना पड़े तो कपाही को कोई विशेष अफसोस नहीं होगा। सफीयत के घर तरा सुख से ही रहेगी। किंतु बफी तरा के योग्य नहीं है। यह बात कपाही भी समझती है। गरीब को यदि इतनी चिंता करनी पड़े तो उसका काम कैसे चलेगा ? लड़का हो तो लाना है, लड़की हो तो देना है।

बीच-बीच में इधर-उधर की चीजों की बात को लेकर अथवा कुछ देकर बफी का पिता उसे कपाही के घर भेजता है। बफी को देखने पर तरा पिछवाड़े से भाग जाती है। कपाही पान-वान देकर घंटे भर उसके साथ अनन-सनन बातें करती रहती है। उसके जाने के बाद तरा गुस्सा करके कहती है, "उसको मैं देखना नहीं चाहती। किस प्रकार दांतों को निकालकर हंसता है।"

कपाही कुछ नहीं कहती।

लड़की के भाग्य और गहरे जल में बंशी फेंकना एक ही बात है। क्या हाथ लगता है, किसी को भी मालूम नहीं।

किंतु तरा समझती है कि उसे देख जाने के ख़्याल से ही बफी उनके घर बीच-बीच में आता है। उसको और गुस्सा हो आता है। क्यों, गुलच के आने पर तो उसे गुस्सा नहीं होता। उसको अच्छा ही लगता है। गुलच ज्यादा बातें नहीं करता, ज्यादा देर बैठे नहीं रहता, ज्यादा निरीह नहीं दिखता। दरअसल वही आदमी है। किंतु गरीब है—धनी परिवार भी कितने हैं ? सब के सब ही गरीब हैं। जवान आदमी है, उस पर जमीन आबाद कर रहा है घर-द्वार बनाएगा, हमेशा तो गरीब होकर नहीं रहेगा ! गुलच भी एक दिन धनी होगा।

—उस बेवकूफ को मुझे देखने की इच्छा नहीं होती।

कपाही के मन का भाव तरा की भी समझ में नहीं आता। किंतु कपाही इस तरह रहती है मानो वह सदा कुछ सोचती रहती है। मानो कुछ करने के लिए घात लगा रही है।

हो सकता है कि कपाही को अपने मन की बात ही ठीक तरह से समझ में नहीं आ रही है। वह ठीक तरह से सोचना भी नहीं जानती। भात और कपड़े के साथ तरा के बारे में भी सोचती है—बस इतना ही।

चंद्र भी बीच-बीच में कपाही के घर आता है। कपाही उससे डरती भी है और उसे स्नेह भी करती है। वह मोटा-ताजा आदमी इतना निडर है कि कहने से बने। वह तरा से मांगकर चाय पीता है। कभी तरा के द्वारा पीठ की अंभौरी को तोड़ने देता है। कैसा पागल-सा है—अपना-पराया नहीं जानता है। वह तरा के साथ अंग्रेजी में ही बात करता है। क्या मालूम है, क्या कहता है ! यदि कोई खराब बात भी कहता है, समझ में नहीं आती। किंतु तरा अच्छा उत्तर देती है। भय लगने पर भी चंद्र कपाही को बुरा नहीं लगता। बेचारा कभी कभी बड़ा उपकार कर देता है।

तरा भी चंद्र को 'चंद्र भैया' कहकर बुलाती है। मेल है, और बड़ा मेल है।

एक़ दिन कपाही के सामने ही उसने तरा से पूछ दिया था, "अरे तरा, मैं एक बढ़िया दूल्हा खोज दूंगा, तू ब्याह करेगी ?"

लज्जा से लाल होकर तरा ने कहा "जा, बदमाश कहीं का ! क्या बात कर रहा है, शर्म नहीं आती ? मैं तेरे साथ और बातें ही नहीं करूंगी।"

चंद्र अट्टहास कर उठा।

"कौन-सी शर्म की बात मैंने कही है ! इसका मानो मैरेज होगा ही नहीं। किसी के साथ भाग जाने का तरकीब सोचा है क्या ? भाग जाएगी तो जान ले लूंगा। तेरा विवाह करा दूंगा, समझी—मैं तेरे ब्याह में क्या दूंगा, मालूम है ? तुझे मैं एक जोड़ा सैंडल प्रेजेंट करूंगा, समझती है ? कभी सैंडल पहनकर देखा है ?"

तरा का चेहरा लाल हो उठा। सैंडल पहनकर दुल्हिन होना—कम शर्म की बात है ? सैंडल पहनकर चला भी कैसे जाए ?

कपाही ने कहा, "कहने से क्या होता है। अपनी बहन के लिए एक अच्छा लड़का देखकर दे तो सही..."

तरा के सामने ही कहा। तरा भावहीन होकर और आशाभरी दृष्टि से चंद्र की ओर देखती है।

चंद्र निश्चिंत भरोसा देता है :

"सियरली कहा है, बुआ ? बाद को और ना न कहना। ब्यूटीफुल यंगमैन है, समझती है ! कुछ तुम लोग वेइट करो। क्या सोचती है, व्हाट इज यू थिंक चंद्र !"

चंद्र चला गया।

तरा को आशा जगी।

कपाही अनिश्चय में कुछ सोचती रही। हो सकता है कि चंद्र कुछ करे भी। गंभीर रात में भी दो मील की दूरी से किरासन का तेल लानेवाला आदमी है वह। कौन जानता है, उसी की सहायता से ही तरा को किसी अच्छे लड़के के हाथ में सौंपा जा सके। कहा तो नहीं जा सकता।

सात

पूर्णमासी की चांदनी है—चौदहवीं की पूर्णमासी है। शुद्ध शुभ्र चांदनी चारों ओर छिटक रही है। धनशिरि के पानी पर चांदनी की जगमगाहट है।

उत्तर की ओर बहने वाली हवा जंगल से होकर चल रही है। नेपाली के बथान के पुराने दूध की गंध हवा के साथ बह आई है।

उसके कंधे पर गमछे की पोटली है, मिट्टी का तीन सेर वाला एक घड़ा है—और लंबे हाथ का जंगल साफ करने वाला दाव। हाथ में बिना जलाई हुई एक मशाल है। गुलच के मुंह में एक जली हुई बीड़ी।

नदी के किनारे के छोटे-से बाट से गुलच जा रहा है, मधुमक्खी के छत्ते को तोड़ने के लिए। दिन से ही उसने तैयारी कर रखी थी—कब सांझ हो, इसके लिए अधैर्य-सा हो गया था। आखिर सांझ हुई। वह भी चल पड़ा। भीम को उसके घर से ही ले लेगा।

उसका मन आनंद में उत्तेजित हो उठा था।

कम से कम दस सेर मधु मिलेगा। बिकने पर भी कुछ रुपए हाथ में आएंगे। न हो तो खाने को तो होगा। अपने हाथ से तोड़े गए मधु का स्वाद ही अलग है।

नदी के किनारे-किनारे भीम के घर जाने वाला बाट है। उसके घर से करीब एक मील है। किंतु गांव के बीच से कोई भी इसे एक मील नहीं कहेगा। कभी-कभी पान के एक पत्ते को खोजता हुआ गांव का आदमी एक छोर से दूसरे छोर पहुंचता है। दो मील से भी अधिक है।

मधुमक्खी के छत्ते को जल्दी तोड़कर ला सके तो अच्छा है। मधुमक्खी का छत्ता जब पकने पर होता है तो मधुमक्खी नहीं काटती है। घर में मधु को रखकर वह खाना खाएगा और इसके बाद कपाही दीदी के घर जाएगा। किंतु तरा को आज घर में होना चाहिए। मधु उसी के हाथ में देकर उसे अच्छा लगेगा।

तरा न भी रहे, कोई बात नहीं है—घर में कपाही दीदी का होना जरूरी है। आज वह बिना लज्जा किए कपाही से अपने मन की बात कह देगा।

सीधी बात है—तरा से वह विवाह करेगा, अभी नहीं, माघ-फागुन के महीने में। किंतु यह बात पक्की होनी चाहिए, नहीं तो कपाही के घर के साथ उसका आना-जाना ही क्यों ?

गुलच के मन में एक निश्चित आशा जग उठी—उसे दामाद के रूप में कपाही कभी अस्वीकार नहीं करेगी। उसके पास पैसा भले ही न हो। किंतु उसके जैसा अच्छा लड़का तरा के लिए कहां मिलेगा ?

गहरे और घने आनंद से असका मन भर उठा। आज और लज्जा नहीं करूंगा। कह दूंगा साफ-साफ।

उसने अकस्मात सामने की ओर देखा।

सारी पृथ्वी शुभ्र चांदनी में उजाली हो रही है। पेड़-पौधों के हरे पत्तों पर रुपहली चांदनी जगमगा रही है। नदी के कांपते हुए पानी पर धुंधले प्रकाश की झलझल रुपहली लहरें नाच रही हैं।

गुलच दूसरी सभी बातें भूल गया। हवा के वक्ष में बहुत-सी मीठी बातों का गुंजन है। सर-सर करके पेड़ों के छोटे-छोटे पत्ते कांप रहे हैं। नदी के किनारे की

घास और पौधों के पत्ते पर हवा का झोंका लगकर फट-फट, मट-मट होने लगे हैं।

मीठी चांदनी है, मीठी हवा का कंपन है।

गुलच का मन एक अनकहे आनंद में नाच उठा। घास के पत्तों के साथ उसको भी नाचने की इच्छा हुई।

उसने सीटी बजाई।

उसने किसी को चिल्लाकर कुछ कहना चाहा।

उसने कुछ गाना चाहा...

किंतु उसको किसी का नाम या कोई नाम याद नहीं आया।

नृत्य भरे पग से वह आगे बढ़ा। बाट की घास की जड़ें उसकी साथी हैं।

सीटी बजा-बजाकर वह आगे बढ़ता गया।

उसने सुना कि नदी के किनारे बैठकर कोई वंशी बजा रहा है। उसका स्वर लयहीन है। किंतु रात की चांदनी में वह भी अच्छा लगता है।

—काम नहीं है ! नदी के किनारे बैठकर कोई वंशी बजा रहा है।—उसने यों ही कहा।

इसके पहले डालिम गांव में कभी इतनी चांदनी हुई थी या नहीं, गुलच स्मरण नहीं कर सका। नहीं हुई है, कभी नहीं हुई है।

कुछ सफेद चांदनी उसके मन के भीतर घुस गई।

वह आकर भीम के आंगन में खड़ा हुआ।

"भीम..."

"गुलच है क्या ? आ..."

भीम आंगन में निकल आया।

"मैं सांझ से ही तैयार होकर बैठा हूं। तूने इतनी देर लगाई।"

"बहुत ही बढ़िया चांदनी है, भाई," गुलच ने कहा।

"हूं !"

कुछ देर बाद भीम और गुलच घर से निकल पड़े और जंगल का रास्ता पकड़ा। गुलच चारों ओर आंखें फाड़कर देखता है—यदि किसी कारण से चांदनी छिप जाए।

"आज पूर्णमासी है न ?"

भीम उस समय दूसरी चिंता में था।

"आज चार दिनों से तीन भैंसें नहीं हैं। खोजने के लिए जाने का भी समय नहीं है। भय नहीं है, सावन का महीना समाप्त हो रहा है। भादो की बाढ़ आए तो भय है," भीम ने कहा।

"अभी ही बाढ़ नहीं आएगी, जाने दे"—गुलच ने बात को हलका करके कहा। बाढ़ आती ही है—धनशिरि में। यह एक दूसरी नदी है। उस समय धनशिरि पगली

हो जाती है। किसी भी बाधा को नहीं मानती है—बांध, बुर्ज कुछ भी नहीं मानती। हो-हो करके आती है, किनारों को तोड़ती है, कगार को काटती है, गांव को पाट देती है, खेत को बहा ले जाती है, नदी किनारे वाले किसानों के घर-द्वार तोड़ कर नेस्तनाबूद करती है।

इसलिए क्या कोई धनशिरि को बुरा मानता है ? धनशिरि मां है, मां को कभी क्रोध होगा ही। मां कभी कीचड़ से उठा लेती है, कभी गोद से कीचड़ में फेंक देती है।

धनशिरि में भयानक बाढ़ आने पर आदमी दूर भाग जाते हैं, बाढ़ को रोकने की चेष्टा करना व्यर्थ है।

केवल पागल चंद्र दूसरी बात कहता है, "कौन कहता है कि नदी पर बांध नहीं दिया जा सकता। बड़ी-बड़ी पगली नदियों को बांधकर कहीं से कहीं ले जाई गई हैं। आजकल नदी के देवी-देवता कहीं भाग गए हैं। आदमी बड़ी-बड़ी पगली नदियों को भी अपने नियंत्रण में कर रहा है। एक दिन हम धनशिरि को भी सिखाएंगे, ठहर ! हर साल खेत के मैदानों को डुबाकर उसे शह मिली है।"

चंद्र एक दिन पागल हो जाएगा। वह बाढ़ को रोकना चाहता है। जल-देवी उसका कोई अपकार न करे।

बरगद के नीचे चांदनी और अंधेरे का मीठा मिलन हो रहा है। एक एकांत रहस्य है।

"कहां है ?" कान के पास मुंह को लाकर भीम ने फुसफुसाकर पूछा। मानो मधुमक्खी उसकी बात को समझ ही जाएगी।

"मशाल को जला लूं, ठहर !"

"लटका हुआ गाभिन बढ़िया मधुमक्खी का छत्ता है।"

भीम की आखों में चमक आ गई।

"बड़ा छत्ता है..."

"चिल्ला मत..."

पेड़ के पत्तों के बीच चांदनी का एक झोंका छत्ते पर आ पड़ा है। किंतु मशाल जलाने के साथ-साथ चांदनी हट गई।

"चढ़"—गुलच ने कहा।

मशाल को लेकर एक बार दोनों ने पेड़ के चारों ओर देखा।

"कुछ नहीं है...जा !"

हाथ में जली हुई मशाल को लेकर भीम रेंगते हुए पेड़ पर चढ़ गया। एक दूसरी मशाल लेकर गुलच उसकी ओर एकटक देखता रहा।

"बंदर का नाती है..." उसने यों ही कहा।

एक डाली पर बैठकर भीम ने कहा, "गुलच, मधुमक्खी बहुत हैं।"

"हां !"

गुलच एकटक भीम की ओर देखता रहा।

भीम ने मशाल को छत्ते के नीचे रखा। मधुमक्खियां आग और धुएं के कारण हट गईं। कमर में बंधे मटके को छत्ते के नीचे धरकर भीम ने छत्ते को तोड़ा। मधु के बड़े-बड़े छत्ते हैं। छत्तों को तोड़कर वह लाने लगा। उपायहीन होकर मधुमक्खियां दूर ही दूर रहीं।

"क्यों, तुझसे हो सका है, भीम?" नीचे से गुलच ने पूछा।

"हां।"

मधु की दो-चार बूंदें नींचे टपकी थीं। गुलच ने मटके को वहां रखने की चेष्टा की, किंतु हो नहीं सका।

मशाल को हाथ से पकड़कर और मटके को हाथ में ही लटकाकर भीम उतर आया था। एक मधुमक्खी ने भी उसे नहीं काटा।

पूरा एक मटका मधु है। इसके अलावा पूरे छत्ते को ही ले आया था।

"बहुत मधु था"—आनंद में भीम ने कहा।

दोनों पत्तों के ऊपर ही पालथी मारकर बैठ गए। दोनों पेट भरकर मधु पी गए। भीम के हाथ से मधु बह आया था, उसने उसे जीभ से चाटा।

"आज यदि इसे न तोड़ता तो कल इसमें जीव आ जाते।"

"हूं !"

मधु को बांटकर दोनों जंगल से निकल आए।

भीम ने कहा, "तूने न देखा होता तो यह यों ही खराब हो जाता। उस ओर जंगल के भीतर और रहा होगा ! किंतु उधर घुसने में डर लगता है।"

रात बढ़ रही थी। गांव के करीब सभी लोग सो गए थे। दो-एक इधर-उधर घूमने वाले नौजवान अभी भी चांदनी में बैठे हुए हैं।

भीम मधु के मटके को लेकर घर गया। जाते-समय कहा, "जरा ध्यान रखना तो ! कहीं देखने पर मुझे बुलाना। औरों से न कहना।"

गुलच ने 'हां' कर दिया।

घर के पास पहुंचकर गुलच के मन में आया—यदि अब घर में जाऊं तो आज कपाही दीदी के घर नहीं जा सकूंगा। इतनी रात कहीं जाने की बात सुनकर मां गालियां देगी। अभी घर में नहीं जाऊंगा। बाहर ही बाहर दीदी के यहां से हो आऊं। वहां से लौटकर घर में जाऊंगा। नहीं तो मां बकेगी।

कपाही के घर के आंगन में पहुंचकर गुलच को जरा डर लगा। इतनी रात यहां आते हुए यदि कोई देख ले—क्या सोचेगा ?

उसने चारों ओर देखा। कोई नहीं है, सब सो गए हैं। दूसरी ओर कपाही का घर एक छोर पर है। पास में और किसी का घर नहीं है। उसके अलावा हरेक बगीचा

विभिन्न पेड़-पौधों से भरा हुआ है। बीच में ही मकान है। जब तक आंगन न आ जाए तब तक दिखाई नहीं पड़ता।

और इस ओर रास्ते पर भी कोई नहीं है। अब रात भी शायद तीसरे पहर में पहुंच रही है।

दरवाजे के पास रुककर धीरे से गुलच ने आवाज दी, "दीदी, ओ दीदी !"

भीतर बिस्तर में जरा आवाज हुई।

"दीदी, नींद आई है क्या ?"

"कौन है, गुलच है क्या ? ठहर, आ रही हूं।"

बत्ती को जलाकर, उसने दरवाजे को खोला और गुलच से कहा, "आ, भीतर आ ! इतनी रात कर दी है ?"

दाव और मधु के मटके को लेकर गुलच भीतर घुस गया।

"वह क्या है ?"

दरवाजे को बंद करके कपाही ने पूछा।

"मधु तोड़ने गया था। वहीं इतनी देर हुई है। बाहर ही बाहर आया हूं।"

"मधु ? कहां तोड़ा है ?" थोड़ा रुककर कपाही ने कहा, "क्या तूने भात खाया है ?"

"कहां भात खाया है ? सांझ को ही निकल गया था। किंतु मधु से ही अपना पेट भर लिया है आज।"

एक लोटा पानी लाकर कपाही ने कहा "क्या मधु से पेट भर सकता है ? हाथ-पैर धो करके आ, मैं भात परोसती हूं। तेरे लिए भात मैंने पकाया था।"

भात खाते समय गुलच ने पूछा, "क्या तरा गई है ?"

"हां, वह सबेरे ही गई है। मैं अकेली हूं। तेरे आने की बात सोचकर बहुत देर बैठी रही, यों ही बिस्तर पर लेटी रहीं। नींद नहीं आई थी। अकेली रहने में भय ही लगता है।"

गुलच ने संक्षेप में कहा, "हां।"

गुलच को जरा भय-सा लगा था। तरा नहीं है। कपाही बिल्कुल अकेली है। उसने पहले ही उसके स्वभाव-चरित्र के बारे में सुना है। किंतु कपाही उससे कम से कम तीन-चार वर्ष बड़ी है।

भात खाकर दोनों बीच के कमरे में निकल आए।

पानदान में पान काटकर गुलच के मुंह की ओर देखकर कपाही ने पूछा, "पाही में कितनी जमीन आबाद की है ?"

"थोड़ी-बहुत आबाद की है...अकेले कितना करूंगा ?"

"मकान बनाया है या नहीं ?"

"अभी नहीं। इस कार्तिक में घर का बंदोबस्त करना है, फसल काटने के बाद

ही उसमें लगूंगा।''

"पाही के घर तेरी मां जाएगी क्या ?

"मां जाना नहीं चाहती।''

"तो, मकान किसलिए बनाना चाहता है ?''

उस प्रश्न से गुलच को शर्म लग गई। वह क्या कहे, क्या न कहे—उसके बारे में निश्चय करने के पहले ही कपाही ने हंसकर कहा, "शर्म क्यों कर रहा है ? जवान है एक लड़की लाएगा और...''

पान के बीड़े को मुंह में भरकर गुलच ने कपाही के मुंह की ओर देखा। उसके मुंह की ओर देखकर हंसने वाली कपाही को बत्ती के क्षीण प्रकाश में बड़ी सुंदर लगी। कपाही अब भी जवान है। उसके शरीर की टेढ़ी रेखाओं पर उसकी आखें ठहर गईं।

कपाही ने हंसकर कहा, "मेरे शरीर में क्या देखता है, तूने लड़की नहीं देखी क्या ?''

उस समय भी गुलच बोल नहीं सका। उसका मुंह लाल हो उठा। उसको तरा के बारे में कहने की प्रबल इच्छा हुई थी, किंतु उस समय उसका गला सूख गया था।

सांत्वना और अश्वासन के सुर में कपाही ने हंसकर कहा, "घर-द्वार बना, बगीचा तैयार कर, थोड़ा-बहुत दूसरी तैयारी भी कर। और कितने दिन क्वांरे रहोगे ?''

इसके बाद उसकी ठुड्डी को पकड़कर उसके मुंह को ऊपर किया और कहा, "तुझे डरने की जरूरत नहीं है। चिंता न कर, मैं तेरे ऊपर बहुत दिनों से नजर रख रही हूं। तुझे मैं नहीं छोड़ूगी, समझा...''

गुलच का मन आनंद से भर उठा। इसका तबलब, दीदी मेरे मन की बात समझ गई। तरा को मेरे साथ ब्याह देगी। वह सर नीचा करके बैठा रहा।

बैठे हुए से उठकर उसने एक बार दरवाजे को देखा कि ठीक तरह से बंद है या नहीं और इसके बाद कहा, "चेनिमाइ की चिंता में तू न रह। मेरे जैसे प्यार तुझे और कौन करेगी।

ठीक तो है, आज तक इस प्रकार स्नेह भरी बात किसी ने भी नहीं कही थी। कपाही के प्रति भी उसको स्नेह हो आता है।

थोड़ी देर चुप रहने के बाद उसने जोर करके किसी तरह कहा, "मधु को रख दे, रात बहुत हो गई है, मैं चलता हूं।''

"जाना चाहता है ? तू यदि चला जाएगा तो मैं अकेली कैसे रहूंगी ? यदि जाना ही है तो आया क्यों था ?''

गुलच ने कुछ नहीं कहा। ठीक है, तरा घर में नहीं है। वह चला जाएगा तो

कपाही को डर लगेगा।

उसने किसी तरह कहा "अच्छा, रह ही जाता हूं, किंतु सबेरे होने से पहले ही जाना होगा। गांव के लोग देखेंगे तो..."

"देखेंगे तो क्या ? तू मर्द है, तुझे इतना भय लगता है ?" यह कहकर कपाही अपने सोने के कमरे में चली गई। हाथ में बत्ती ले गई। उसने बिस्तर को जरा झाड़-फूंक दिया और उसको बुलाया, "आ, सो जा। रात काफी हो गई है।"

बिस्तर पर लेटकर गुलच ने कहा, "और दूसरा बिस्तर है क्या ? तू कहां सोएगी, दीदी ?"

चद्दर को शरीर पर से हटाकर कपाही ने बत्ती को बुझा दिया और कहा, "और बिस्तर कहां है ? देखूं, थोड़ा किनारा कर।"

एक ओर होकर गुलच चुपचाप पड़ा रहा। उसकी तरफ सटकर कपाही ने अपना मुंह उसके मुंह के पास ले जाकर कहा, "तू कुछ भी न सोचना। आज से तू मुझे दीदी कहके न पुकारना। मैं क्या तेरी दीदी हूं ?"

गुलच ने समझा कि कपाही उसकी दीदी कभी भी नहीं थी।

रात की निस्तब्धता बढ़ती जा रही थी। दीवार के सुराख से चांदनी की पीली रेखाएं भीतर आ रही थीं। गुलच ने अनुभव किया कि उसने अब तक तरा को खोजा नहीं था। उसने कपाही को ही खोजा था...

आठ

गुलच के पिता का रोग अभी कठिन हालत में है। उस खबर को पाही तक पहुंचा दिया गया। गुलच किंतु नहीं आया। उसे लोभ भी दिखाया गया था। बूढ़े को किस दिन क्या हो जाए, कोई कह नहीं सकता, कुछ होने से पहले जमीन जायदाद और संपत्ति का बंटवारा कर देना चाहता है; इसलिए ही तुझे बुलाया है।

तिस पर भी वह नहीं माना। बाप का बेटा यदि हूं तो संपत्ति का हिस्सा यों ही मिलेगा, और न मिले तो कोई हर्ज नहीं है। और है ही क्या ? नहीं देगा तो न दे। अपने ऊपर भरोसा है—कमा लूंगा।

इसी बात से अपनी मां के साथ भी उसका मतांतर हुआ। बूढ़े की हालत नाजुक होने की खबर सुनकर और लोगों के कहने पर उसकी मां अपने पति को देखने गई। एक दिन जब गुलच घर आया तो उसे घर में उसकी मां नहीं मिली। पूछताछ करके जब उसे मालूम हुआ कि उसकी मां आज कई दिनों से पिता के यहां

है तो गुस्से में वह घर से निकल गया। गांव के लोगों से कह गया, मैं अब लौटकर नहीं आऊंगा, पाही में ही रहूंगा। मां से भी कहना कि उसे अब यहां आने की कोई जरूरत नहीं है, वहीं रहा करे। उसका बड़ा बेटा है वही खिलाएगा। मवेशियों को मैं नेपाली को दे जाऊंगाा, देखभाल करने के लिए।

दो-एक ने उसे सलाह दी, "किसी के ऊपर सदा गुस्सा नहीं करना चाहिए। अपने माता-पिता अपनी संतानों पर क्रोध नहीं करेंगे तो किस पर करेंगे ? तो भी जा, एक बार समाचार जान आ।''

किंतु गुलच नहीं गया।

बीमारी में पड़े हुए अपने पिता को एक बार देखने की उसकी इच्छा हुई थी, किंतु वह अपना वचन भंग नहीं करना चाहता। उस समय उसे कोई मर्द कहेगा ? मर्द की बात है...

उसकी मां का उसके साथ से चले जाना उसे एक प्रकार से अच्छा ही लगा। उसकी चिंता कम हुई। उसका घर पड़ा रहेगा—उसमें है ही क्या ? मां से उसकी अधिक चिंता मवेशियों के लिए थी। उनका बंदोबस्त भी उसने किया है। नेपाली, गांव का चक्र बहादुर उसके मवेशियों को देखेगा। उसके बाद वह अपनी दाल के खेत में हल जोत लेगा। हल जोतने वाले बैल हैं—जोतेगा ही।

तरा और कपाही के बारे में अधिक न सोचने पर भी काम चलेगा। कुछ होगा ही। कपाही ने ही कुछ गड़बड़ कर दी है। किंतु उसका उसके प्रति बड़ा स्नेह है। भाग्य में जो है, होगा।

कार्तिक महीने के बीच का समय है। धनशिरि का पानी दिन-दिन कम होता जा रहा है। नदी के बीच कीचड़ वाले दीयारे बन रहे हैं। इनमें आलू, सरसों, मिर्च, बैगन आदि की अच्छी फसल होती है। सावन और भादो के महीनों में नदी के किनारे वाली जो घास-फूस पानी के नीचे रहती है वह अब निकल पड़ी है, गुलच ने जिस जमीन को आबाद किया है उसी में ऐसी करीब चार एकड़ जमीन निकली है। थोड़ी नीची जमीन है। किंतु नदी की ओर यदि कुछ मिट्टी डाल सकें तो यह जमीन वर्षा में भी निकली रहेगी। अब उसमें रबी की फसल होगी। वर्षा का बाओ धान—शाली भी रोपी जा सकती है, यदि बाढ़ न आए।

ज्यादा बाढ़ आने पर सबको डुबा देती है।—यह अलग बात है।

नई आशा और नई उमंग लेकर गुलच नई जमीन आबाद करने में लग गया। सबेरे से शाम तक उसको और चिंता नहीं है। अपनी ओर से यदि चार एकड़ जमीन आबाद कर उसका वार्षिक पट्टा भी करा सका तो उसको और कोई चिंता नहीं रहेगी। उस हालत में पिता की जमीन की आशा न करने पर भी अपने खाने-पीने की चिंता नहीं रहेगी। कुदाली, कुल्हाड़ी, और जंगल काटने वाले दाब के झाड़ से झंखाड़ काटकर वह जितनी जमीन साफ कर सका, करता गया। एक हाथ जमीन

भी यदि वह साफ कर लेता तो अत्यंत खुश हो उठता है। वह अपने आप अपनी जमीन की ओर देखकर हंसता है। नदी उसके प्रति स्नेह प्रदर्शित करके ही यह उपजाऊ जमीन उसके लिए छोड़ गई है। धनशिरि के लिए उसे स्नेह हो आता है। बाढ़ में भी यह डूब न सके, इस प्रकार से नदी इसे और ऊंचा कर जाती।

धूप में पसीने से तर होकर वह थककर सेमल के नीचे बैठ जाता है। कुदाली और कुल्हाड़ी चला-चलाकर उसने हाथ की हथेलियों को कड़ा कर डाला। वह हाथ के तलवों को सामने लाकर देखता है। हाथ की हथेली पर, सुना है, भाग्य-रेखा होती है। किंतु उसे समझ में नहीं आता। हथेली पर कुछ इधर-उधर की रेखाएं हैं। कौन जानता है, उनका अर्थ क्या है ?

वह आकाश की ओर देखता है। क्वार का साफ आकाश है। उसका मन भी साफ होने लगता है। वह थोड़ी दूरी पर स्थित पाही के अपने मकान की ओर देखता है। उसी जगह मकान बनाना होगा। बाड़ी को उसने पहले से ही तैयार किया है। बीम और दूसरे प्रकार के केले फले ही हैं। बैंगनी रंग की सेम सारे मचान पर फैल गई है। इस बार सरसों भी बढ़िया हो रही है। उसको कुछ हाथ लगेगा।

गुलच ने अपने हाथों की ओर नजर डाली। खूब काले हो गए हैं शायद ! ठीक तो है—दिन भर इस क्वार की धूप में काम करना पड़ता है। काला क्यों नहीं होऊंगा ?

बैठने की जगह से उठकर वह धनशिरि के पानी में उतर गया। इस समय उसका पानी स्फटिक की धारा की तरह साफ है। उसने हाथ और मुख को अच्छी तरह धोया। इसके बाद नदी में अपने मुंह को देखा...। हां, बहुत दिनों से उसने आइने में अपने चेहरे को नहीं देखा। उसने देखा वह अधिक काला नहीं पड़ा है, किंतु उसकी मेहनत ज्यादा हुई है, वह थोड़ा दुबला ही हुआ है। उसने अपने हाथ को गालों पर फेरकर देखा। हां, आंखों के पास उसके गाल जरा नीचे धंस गए हैं, खाने-पीने में अनियम हो गया है। दिन भर काम करके शाम को ठीक तरह से पकाकर खाने की शक्ति नहीं रह जाती। जो भी खाया जाता है, वही अच्छा लगता है। किंतु बीच-बीच में मांस-मछली-मुर्गा आदि न खाने पर शरीर और साथ नहीं दे सकता।

क्वार के दिन किसी तरह कटे।

घर भी—एक होने से नहीं होगा—कम से कम दो होने चाहिए। रसोई के लिए अलग मकान बनाना होगा। एक रहने का और एक बैठने का।

बहुत सारे काम हैं—दिन भी अधिक नहीं हैं। अगहन आते ही हाथ में हंसिया लेना होगा। एक आदमी और दो हाथों से कितना करेगा ?

गुलच ने ऊपर को आंखें करके सेमर की ओर देखा। प्रायः सभी पत्ते पक कर झड़ गए हैं। दो-चार पीले पत्ते कुछ डालियों में अब भी हैं। उसने देखा कि एक

डाली पर चिड़िया ने घोंसला बनाया है। खर-फूसों से बनाए घोंसले डाली से लटके हुए हैं। दो-चार उनमें पुराने हैं। शायद इस वैशाख में बनाए गए थे। दो-एक उसे नए जैसे लगे। एक-एक खर, फूस इकट्ठा कर चिड़िया अपना बढ़िया और स्वयं पूर्ण घोंसला बनाती है

गुलच भी बनाएगा।

किंतु घर बनाने के पहले वह जिस किसी प्रकार से नदी के किनारे वाली कुछ नई जमीन तैयार कर लेगा। जमीन ही जीवन है। कोई लड़की आए तो किस साहस से आए !

डालिम गांव में जाकर वह एक दिन चंद्र से मिला। चंद्र ने उसे ढाढस दिलाया, तू भी बड़ा मूर्ख है। तू अकेले क्या दुनिया के सारे काम कर सकेगा। मनी है ? रुपया ? दस-बीस खर्च करने होंगे। लेबर लगा। मैं ला दूंगा। मिकिर गांव के तुरु और यदु पैसा लेकर हाजिरा करते हैं। खूब काम कर सकते हैं। तू काम में उन्हें लगाकर थोड़ा सुपरवाइज करना। हो सके तो मैं भी आऊंगा। हो जाएगा, डू नॉट अफ्रेड।

चंद्र की अंग्रेजी उसे यद्यपि समझ नहीं आई उसके मर्म को गुलच समझ गया। उसके हाथ में करीब सत्ताईस रुपए थे, केले, ईख आदि बेचकर इकट्ठे किए थे। हां, रुपए की जरूरत ही क्या है ? मिकिर के मजदूरों को लगाकर यदि जमीन को ठीक कर पाए तो चिंता नहीं है।

उसने उस बात को कपाही से भी कहा।

किंतु कपाही ने कहा, "बचाकर रखे हुए सभी रुपयों को खर्चकर हाथ को खाली कर देना अच्छा नहीं होगा।"

तरा ने कहा, "मेरे हाथ में भी रुपए हैं, मां ! भैया को ही दे दूं। दे सके तो उनके बदले में हमें कुछ जमीन भी दे देगा...।"

"तुम लोगों के रुपए नहीं चाहिए," गुलच ने पहले प्रतिवाद किया था, पर कपाही और तरा के समझाने पर उसने पंद्रह रुपए लिए। उसने कहा, "हां, इनसे जो जमीन साफ करवा सकूं वह तुम लोगों की होगी।"

कपाही ने हंसकर कहा, "तू क्या तेरा-मेरा कर रहा है ! हम औरत हैं और जमीन को चबाकर खाएंगे क्या ? वह हमारी जमीन होगी ?"

इशारे को समझकर गुलच मुस्काया। तरा भी इशारे के अर्थ को समझकर लज्जा में लाल हो उठी।

गुलच को, मेरी जमीन कहने का कोई कारण नहीं है, वह होगी; हमारी जमीन...।

कपाही से ही उसे मालूम हुआ कि उसके पिता की हालत पहले से अच्छी है। और उसकी मां वहीं है। उसकी मां की सेवा और यत्न के कारण ही बूढ़ा अपना

जीवन फिर से वापस पा रहा है। उसकी मां को अब परिवार का कोई भी छोड़ना नहीं चाहता।

कपाही ने गुलच के मन के विरक्त भाव को लक्ष्य करके कहा, "अच्छा ही हुआ—तेरी मां अपने आदमी को छोड़कर कब तक इस प्रकार रहेगी ? मर्द और औरत के बीच झगड़ा होता ही रहता है।"

गुलच ने सिर्फ इतना ही कहा, "ईश्वर करे, फिर ऐसा न हो।"

कपाही ने हंसकर कहा, "और एक चेनिमाइ को भगाकर तू ले जा तो झगड़ा हो सकता है। किंतु इस बार तेरी मां उसकी ओर ही रहेगी।"

गुलच के मुंह की ओर ताककर कपाही हंसी। गुलच को कपाही की बात सुनकर आनंद हुआ। यह लड़की—जब बातें किया करती है तो उसके प्रति प्यार हो जाता।

तरा ने अपने ही मन में सोचा—गुलच यदि उसे भगाकर भी ले जाए, उसे कोई आपत्ति नहीं होगी। मौसी कौन-सा मामला मुकदमा करेगी ? हमारे जैसे गरीबों का विवाह कब शामियाना लगाकर किया जाएगा ? वर्षा का दिन समाप्त हो जाए, वह जमीन भी तैयार करे, फसल भी जो हो घर में लाए, और गुलच का मन जब जान जाऊंगी तो मैं ही उसके साथ भाग जाऊंगी। कैसी अनहोनी होगी ?

चंद्र की सलाह काम कर गई।

मिकिर गांव के तुरु और यदु को लगाया, नेपाली गांव के भी केला नाम के नेपाली को लगाया और गुलच खुद भी लग गया। लगातार सात दिन तक जंगल आदि को कटवाया—दो एकड़ के करीब जमीन निकली।

गुलच का मन साहस से भर उठा। तैयार की गई जमीन की ओर देखकर उसे अभिमान हो आता है। तीन एकड़ के करीब नई जमीन हो गई है, इसके पहले की तो है ही—वह आज जमीन का मालिक हो गया है। उसे और कुछ नहीं चाहिए। उपजाऊ और नदी किनारे वाली जमीन है—बड़ी बाढ़ न आए तो यह एक संपत्ति है।

धनशिरि की ओर देखकर उसने कहा, धनशिरि कुछ हटकर बहे तो अच्छा है। तो इस ओर, मेरी जमीन के पास नया दीयारा बनेगा। मेरी जमीन को पानी और तंग नहीं करेगा।

उसने मानो अपनी आंखों के सामने ही देखा कि धनशिरि उसकी जमीन से हटकर दूर बह रही है। उसकी जमीन दिन-दिन ऊंची हो रही है। बाओ-शाली, आहु आदि धानों से उसका खेत भरा पड़ा है। सुंदर, हरी-हरी फसलों से उसका खेत भर गया है। तरा कटाई का काम कर रही है, कपाही कटाई का काम कर रही है। वह धान के मुट्ठों को बांध रहा है और उन्हें कंधे पर चढ़ाकर घर ले जा रहा है। नए धान की गंध घर-द्वार चारों ओर फैल गई है।

चारों ओर के हरे-भरे खेतों के बीच उसका छोटा और स्वयं पूर्ण घर है—फूंककर भात खाने लायक उसका आंगन है। पोखरे की जरूरत नहीं है। धनशिरि जब तक रहेगी तब तक पानी के लिए कोई चिंता नहीं है।

आंगन के सामने ही वह दो फूल लगाएगा।

जमीन को तैयार करने में उसके तीस रुपए का खर्चा हुआ। उनमें से आधे रुपए तरा के हैं। किंतु तरा को जमीन नहीं दी जाएगी। उनको जमीन की जरूरत ही क्या है। खुद हल जोतकर खेती करेगी क्या ? और खेती करे भी, पंद्रह की जगह बीस दे दूंगा, जमीन नहीं दूंगा।

जमीन के प्रति उसको बड़ा मोह है।

उपजाऊ, कीचड़ वाली, कोमल जमीन है। शरीर के मांस का एक टुकड़ा तो दिया जा सकता है, जमीन नहीं।

दूसरी ओर, तरा और उसकी मां ने भी कभी उससे रुपया या जमीन के बारे में कुछ नहीं कहा। तरा ने केवल पूछा था, "उस जगह और किसी ने जमीन आबाद किया है क्या ?"

"नहीं, और कौन आबाद करेगा ? वह पूरी जमीन हमारी है। दूसरे ने नहीं देखी है" गुलच की आवाज में विजयी सम्राट का आत्माभिमानी स्वर था।

तरा ने और कुछ नहीं कहा।

गुलच की जमीन ही तरा की जमीन है।

रुपया नहीं रहता है, जमीन रहती है। बचाकर रखे हुए पैसों से जमीन के लिए यह कुछ कर सकी, इसलिए उसे आनंद महसूस हुआ।

देखते ही देखते अगहन का महीना आ गया। जल्दी होने वाला धान पकने लगा। धनशिरि के किनारे सबेरे का कोहरा घना होने लगा है, दोपहर की धूप मीठी होने लगी, रात की रजाई का आराम सुहाना लगने लगा था।

अब रबी फसल का समय नहीं था। तथापि गुलच ने अपनी नई जमीन में कुदाली से जमीन तैयार करके यों ही कुछ सरसों और सब्जी के बीज बो दिए। अब भी अंकुरित होंगे। नदी की कीचड़ वाली उपजाऊ जमीन है।

गुलच को जरा भी थकावट नहीं होती। काम करके उसे आनंद आता है। वह मानो रात को भी नहीं सोएगा ! खेत में जाने के पहले तक वह मकान बनाने के लिए आवश्यक कार्य करता है।

लकड़ी का अकाल नहीं है, घास-फूस पर्याप्त है। धनशिरि के किनारे के जंगल में बांस लकड़ी बूढ़े हो गए है। वर्षा के दिनों में नदी में बड़ी-बड़ी लकड़ी बहकर आती है।

बीच-बीच में डालिम गांव जाकर उसने भी खूंटे और शहतीर काटकर इकटठे किए। डालिम के पश्चिम के बडे जंगल में अच्छी लकड़ी मिलती है। कठलुवा, नाहर,

सलख, साल, सोनारू आदि की लकड़ी मिलती है। कुछ भीतर घुसकर उसने चुन-चुनकर अच्छी लकड़ियां काटे। मकान जब बनाऊंगा ही तो थोड़ा टिकाऊ बनाऊंगा।

रोपाई के समय जिस प्रकार जल्दीबाजी करनी पड़ती है, उस प्रकार की जल्दीबाजी नहीं करनी पड़ती। धान पककर झड़ जाने के पहले ही काटकर ले आए तो ठीक है। चिड़िया धान को कितना चुगेगी ? हरिण या जंगली सूअर अथवा हाथी गडबड़ न करें तो गनीमत है। हाथी सबसे अधिक खतरनाक है। एक ओर से तबाह करते चलता है।

किंतु इस पार हाथी कभी-कभार ही आता है। हाथी का भय डालिम गांव में ही है। बड़ा जंगल उससे सटा हुआ है।

गुलच की जमीन ज्यादा नहीं है। बिलकुल कम जमीन में उसने धान की रोपाई का काम कराया है। वह दूसरे की जमीन में खेती करता है। उसका भाग्य खुले तो अगले वर्ष से दूसरे की जमीन में खेती न करने पर भी काम चलेगा। एक आदमी है और चार एकड़ जमीन है—वही बहुत हैं। किंतु इस बार मां नहीं है। रोपाई-कटाई में मुश्किल होगी। किंतु उससे पहले ही रोपाई का काम करने वाली घर आएगी। चिंता नहीं है।

चिंता नहीं है, जमीन हुई, रोपाई का काम करने वाली भी आ ही जाएगी।

और दो अभाव गुलच को हैं—एक धोती और एक नई कमीज का। इतने दिन वह अपने मां की बुनी हुई मोटी और कम चौड़ाई की धोती ही पहनता आया है। किसी तरह ही वह घुटनों के नीचे तक वह पहन सकता है। उसकी कमीज भी तीन साल पुरानी है। कहीं-कहीं से फटने लगी है। वह जामा कम पहनता है, कभी-कभी घूमने जाने के समय ही पहनता है। कंधे पर गमछा हो तो काफी है।

किंतु वह यदि इस बार सरसों बेच सका तो एक चौड़ी धोती और कमीज खरीदेगा।

नौ

बड़े जंगल में सोना के जो खूंटे काटकर रखे गए थे, उन्हें ठीक करने के लिए गुलच कुदाल लेकर निकल पड़ा था। अगहन के बीच का समय है। धान की कटाई करीब-करीब हो चुकी थी। नीची जमीन के शाली धान अभी ठीक तरह पके नहीं थे। इसी बीच मकान का थोड़ा काम कर सके तो अच्छा है। जंगल में ही खूंटों को

ठीक-ठाक कर उन्हें आदमी के सहारे या बैलगाड़ी के द्वारा नदी के किनारे लाना होगा। नदी के किनारे ला सके तो और चिंता नहीं रहेगी।

नेपाली गांव में जाकर उसने अपने मवेशियों के बारे में पूछताछ की। वे ठीक-ठाक ही हैं, थोड़े मोटे-ताजे हुए हैं। धनशिरि के किनारे घास का अभाव नहीं है। बाघ से बचकर रहे तो गनीमत है। अगले साल से वह मवेशियों को नेपाली को नहीं देगा, खुद ही रखेगा।

गुलच को प्यास लगी थी। डालिम गांव में आज उसका अपना घर नहीं था। टूटकर ढह जाने वाला उसका घर आज भी है, किंतु उसमें आज उसकी मां ही नहीं, वहां जाने की उसे इच्छा नहीं हुई।

सभी लोग धान के खेत में हैं। पूरा गांव शांत है। खाना आदि खाकर गांव के बाल-बच्चे, बहू—बेटियां सभी खेत में गए हैं। सभी के मिलकर काम करने से ही होगा।

कपाही के मकान का दरवाजा जरा खुला हुआ देखकर गुलच उसमें चला गया।

"दीदी !"

भीतर से निकल आई, तरा।

गुलच को देखकर वह अवाक् रह गई।

जरा धीमे से कहा, "अरे भैया !"

"हां, तेरी मौसी नहीं है क्या ?"

"नहीं, धान के खेत गई है।"

"किस खेत में गई है ?" मूढ़े पर बैठकर तरा के मुंह की ओर उसने ताका और प्रश्न किया।

"सफीयत बूढ़े के खेत में ? कहां से आया है, भैया ?"

"पाही से ! बड़े जंगल में खूंटे, शहतीर आदि कटवा रहे हैं न ? बड़ी प्यास लगी है, एक कटोरा पानी तो दे ! तेरी मौसी कब आएगी ?"

"अभी कहां आएगी ? सांझ के समय ही आएगी।"

"तू क्यों नहीं गई ?"

पानी के कटोरे को उसके सामने रखकर तरा ने कहा, "हा..."

"क्यों ?"

"मैं नहीं जाती हूं...।"

"क्यों नहीं जाती है ?"

"क्या तुम नहीं जानते हो ?"

"मैं क्या जानता हूं ? और एक कटोरा पानी दे।"

"तुम बैठो, भैया, मैं चाय बनाती हूं। इस जाड़े में ठंडा पानी नहीं पीना

चाहिए।''

यह कहकर उसने उसके मुंह की ओर देखा। उसने भी तरा के मुंह की ओर देखा। तरा का चेहरा दिन-ब-दिन खिलता ही जा रहा है। उसके दोनों गाल गुलाबी हो रहे हैं। उसकी देह भी सुडौल बनी है। गमछा उसकी देह को ढक नहीं पा रहा है।

कुछ देर तक दोनों, एक-दूसरे की ओर देखते रहे। इसके बाद गुलच ने पूछा, "धान काटने तू क्यों नहीं गई, तरा ?''

तरा ने एक बार दरवाजे के पास आकर बाहर की तरफ सर निकालकर देखा। आंगन में दोपहर की कोमल धूप छिटक रही थी। कोई भी आसपास नहीं है। धान के खेत से हल्की हवा बह रही है। हवा में पके धान की गंध मिली हुई है।

तरा गुलच के पास आई। वह उसके पास घुटनों के बल जमीन पर बैठ गई और उसकी ओर जरा झुककर उसने कहा, "मैं और क्या कहूंगी ? तुम्हारे आने पर सदा ही मौसी रहती है। मुझे सफीयत बूढ़े के उस गूंगे के लिए पसंद किया जानेवाला है।''

"किसके लिए ?'' गुलच चिल्ला उठा।

"ज्यादा न चिल्लाओ। कोई सुन लेगा। उस गूंगे के साथ ब्याह होगा तो मैं नदी में कूदकर मर जाऊंगी।''

गुलच ने तरा का एक हाथ अपने हाथ में लिया और कहा, "अच्छा, भीतर ही भीतर यह हो रहा है ? तूने मुझसे पहले ही क्यों नहीं कहा ?''

निरीह आंखों को ऊपर उठाकर तरा ने गुलच के मुंह की ओर देखा, और उसके बाद कहा, "कैसे कहूं, मौसी जो सामने नहीं रहती है ? और तुम भी क्या कहोगे ?''

"हां, अच्छा किया तुमने ! उसके खेत में धान की कटाई में नहीं गई। अच्छा साहस है। किंतु तेरी मौसी को भी मुझसे नहीं कहना चाहिए था ? तेरी मौसी क्या कहती है ?''

"मौसी क्या कहेगी ? सफीयत की जमीन में रोपाई-कटाई करके खाती हूं—न अपनी जमीन ही है, न बस्ती ही ? और हमारे बारे में सोचने वाला ही कौन है ?''

"मैं ? मैं तुम लोगों का कुछ नहीं होता हूं न ? इतनी बड़ी बात को मुझसे इतने दिनों तक छिपा रखा है ? मैं तुम लोगों से दूर हूं न !''

गुलच की आवाज में शिकायत का स्वर स्पष्ट हो रहा था।

तरा ने कहा, "तुम्हें यदि गैर समझती तो क्या यह बात मैं तुमसे कहती ? कुछ करना हो तो तुम ही कर सकोगे। और कौन हमारे लिए कुछ करेगा ? मौसी ठहरी औरत। यदि उस पर दबाव डालें तो शायद वह मान जाए।''

"दबाव डालेगा ? कौन दबाव डालेगा ? यह कुल्हाड़ा देख रही है न, एक ही

बार में दो टुकड़े कर डालूंगा। उस कंजूस के पास थोड़े-बहुत रुपए हैं और उसी के लिए तुझे जोर करके ले जाएगा। हम मानो हैं ही नहीं, हम मर गए हैं ?''

तरा के मुंह पर हंसी चमक उठी। उसके मन में आशा जग गई। गुलच उसे आश्रय देगा, उसकी रक्षा करेगा। उसके पास गुलच रहे तो उसे किसी का भय नहीं है।

वह बैठने के स्थान से उठी और कहा, "तुम बुरा न मानो भैया, तुमसे कहने के लिए मैं रोज सोचती थी। किंतु अकेले में तुम मिलते नहीं। मौसी के रहने पर मैं ये बातें कैसे कहूं ? तुम बैठो, मैं जरा चाय बनाऊं। तुमने खाना खाया है क्या ?''

"हूं !''

तरा रसोई में गई।

कुछ सोचकर गुलच बैठा रहा। उसे कहने के लिए मौका नहीं मिला है, ठीक है; किंतु कपाही ने अब तक यह बात मुझसे कही क्यों नहीं ? पैसा लेकर तरा को उस गूंगे के हाथ बेचने का मतलब क्या है ? औरतों का मन समझना मुश्किल है, पैसा देखने पर अंधी हो जाती हैं।

"तरा !'' उसने पुकारा।

"क्या हुआ, भैया ?''

"तू जरा भी नहीं डरना। दीदी यदि पैसा लेकर तूझे सफीयत के गूंगे के हाथ बेचती है तो तेरी मौमी को भी काटूंगा—जो होगा, देखा जाएगा।''

तरा ने कुछ भी उत्तर नहीं दिया।

इस समय तरा से सुखी और कोई नहीं है। वह आज अकेली ही दुनिया के साथ लड़ सकेगी—वह और नहीं हारेगी। साथ है गुलच !

नए धान के चिउड़े का एक कटोरा तरा ने लाकर गुलच के सामने रखा। उसने दूध भी दिया और गुड़ भी। और इसके बाद एक कटोरा चाय। गुलच के पास आज वह बिलकुल ही निडर है ! उसको कोई भय, कोई शंका नहीं है। अपने मन की बात आज उसने खुलकर गुलच के सामने कह दी है।

खाते समय गुलच ने कहा, "तू जरा भी चिंता न कर तू जानती है तरा मेरा मकान बनने दे, तुम लोगों को मैं अपने घर ले जाऊंगा। यहां इस प्रकार औरों की बात सुनकर रहने की जरूरत नहीं है। जमीन भी कुछ आबाद है। मेरा और है ही कौन ?

गुलच के लिए आज तरा को स्नेह हो आया।

ठीक तो है, गुलच के पास आज सब कुछ होने पर भी कुछ नहीं है। आज वह अकेला है और वह भी अकेली है। उसकी मौसी उसके साथ है, इसीलिए ही कुछ साहस है; नहीं तो उसकी क्या ताकत है ?

कोई भी उत्तर न मिलने के कारण तरा ने कहा, "और जरा चिउड़ा दूं क्या ?''

"नहीं चाहिए। है तो एक बीड़ा पान दे।"

तरा ने पानदान से एक बीड़ा पान उसे दिया। पान को मुंह में भरकर गुलच ने तरा की ओर देखा और कहा, "मैं तुझे स्नेह करता हूं, तरा ! गांव के और किसी के घर नहीं जाता हूं। केवल तुम लोगों के घर ही आता हूं।"

उसके अपने प्यार की बात उससे अधिक अच्छी तरह कहने के लिए उसने नहीं सीखा है।

प्यार के कारण तरा की आंखें डबडबा गईं।

"मैं भी तुम्हें खूब चाहती हूं।" तरा ने कहा।

दोपहर का यह समय इसका साक्षी रहा। गुलच और तरा ने झूठ नहीं कहा है।

"मैं अभी चलता हूं, तू कुछ भी न सोचना। मकान बन जाते ही तुम लोगों को ले जाऊंगा..."

तरा ने कुछ देर तक कुछ सोचा, इसके बाद कहा, "मेरे हाथ में और छह रुपए हैं।"

"हैं तो. ठीक ही है, रख दे। कहां से मिला ?"

"कपड़ा बुन कर बेचा था। उससे मिले थे। दूध बेचकर भी दो या एक रुपया मिला था।"

"अच्छी तरह रख दे, कठिनाई में जरूरत होगी।"

"मुझे नहीं चाहिए, तुम ही ले जाओ।"

"मैं ? मैं क्यों लूंगा ? मैं घूमता ही रहता हूं। पैसा कहां रखूंगा ?"

"रखने की जरूरत नहीं है। तुम अकेले कितना काम करोगे ? खेत से धान भी लाओगे, जमीन भी आबाद करोगे या मकान भी बनाओगे ? रुपए ले जाओ, किसी को खूंटे-शहतीरें तराशने दो। आदमी क्या सभी काम अकेले ही कर सकता है ?"

तरा ने पैसा लाना चाहा।

"तरा"—गुलच ने कड़ी आवाज से पुकारा।

उसने घूमकर देखा।

"पगली न बन। मैं खुद न कर सकूं तो दूसरे आदमियों को लगाऊंगा। पैसे का भी इंतजाम मैं कर लूंगा। किंतु तेरे पैसे की जरूरत नहीं है, तू रख दे। हाथ खाली करके नहीं देना चाहिए।"

तरा ने कहा, "तुम्हारे कष्ट को देखकर ही देना चाहा था। तुम जब लेना ही नहीं चाहते हो तो मैं क्या कर सकती हूं ! हो सकता तो मैं तुम्हारी सहायता कर देती। किंतु तुम रहने लगे धनशिरि के उस पार।"

तरा के गाल पर धीरे से एक थपकी देकर गुलच ने कहा, "बड़ी सहायता

करने वाली निकली है, क्या कर देगी ? खूंटा तराश सकेगी ?"

तरा हंस पड़ी।

गुलच ने कहा, "आज लकड़ी काट नहीं सका। समय तेरे साथ बैठे-बैठे ही काट दिया। अभी चलता हूं..."

"काम में हर्जा होता है तो आते क्यों हो ? मत आओ।"—तरा ने कहा।

"न आकर कैसे रहूं ?"— गुलच ने मुंह भर हंसी के साथ कहा।

जाते समय तरा ने कहा, "तुम बीच-बीच में आते रहना, भैया ! सफीयत बूढ़ा क्या करे, कह नहीं सकते। और मौसी का मन भी मैं समझ नहीं पाई। मुझे कहीं एक जगह सौंपकर वह निश्चिंत होना चाहती है।"

"अ च्छा" तरा ने लंबा करके कहा।

गुलच को और कुछ देर रह जाने के लिए कहने की उसकी इच्छा थी। किंतु, उसने नहीं कहा। इस प्रकार बातों को चबाने से क्या होगा ? जंगल में वह एक खूंटा ही तैयार कर सकेगा।

अकेले ही रहने वाले गुलच के लिए उसे स्नेह हो आया।

दस

अगहन की अट्ठाईस तारीख को सिपरिया गांव के मोलोका बूढ़े के लड़के केलाई के साथ चेनिमाइ का विवाह हो गया। चेनिमाइ सफीयत के छोटे भाई की लड़की है। गुलच के साथ भाग जाने के बाद से चेनिमाइ को और किसी के साथ ब्याह कर देने का इंतजाम अब तक नहीं हुआ था—बदनाम लड़की के साथ विवाह करके कौन सदा लोगों का तिरस्कार सुनता रहेगा ? तिस पर भी दो-चार साहस करके आगे आए थे—कोई रडुआ है तो कोई अधेड़ है। चेनिमाइ के पिता ने ब्याह नहीं दिया। भाग गई थी तो भाग गई थी ! रात को आ गई थी और सबेरे वापस। कोई जारज संतान तो नहीं हुई है। गुलच के साथ जाने के कारण ही हमारी लड़की फेंक देने के लायक हो गई है ?

इसके बारे में अधिक चिंता हुई थी सफीयत को नहीं, चेनिमाइ के पिता दीदारत को ही। लड़की भी उसी चिंता में थोड़ी काली हो गई थी। किंतु उसने खेत में भी काम नहीं किया था, यह बात भी नहीं, इसके अलावा गांव की अधिकतर बूढ़ी, बहू चेनिमाइ की तरह पहले भाग गई थी। चेनिमाइ को इसलिए कोई अधिक बात नहीं सुना सकता था।

दीदारत कभी अकेले ही पछताता है—गुलच के साथ गई थी, उसी के साथ ब्याह कर देना चाहिए था। उसको भी बेकार दुख दिया गया और लड़की के जीवन को भी बरबाद किया गया। अब मेरे गले में ही आ लटकी है।

अंत में सफीयत ने ही किसी प्रकार से चेनिमाइ का मोलोका के बेटे के लिए बंदोबस्त किया। उसका परिवार गरीब है। केलाई की उम्र भी तीस के करीब हुई है। बहुत दिनों से वह एक तरह की किसी खांसी की बीमारी भुगत रहा है—कोई कहता है कि वह दमे का रोगी है, कोई कहता है कि आस्थमा भुगत रहा है। गोलाघाट में एक बार दिखाया गया था। वहां कहा गया कि उसको टी. बी. नहीं हो रही है।

अंग्रेजी चिकित्सा कराने की क्षमता उसमें नहीं थी, और गांव में वैसी चिकित्सा कोई करता भी नहीं, डालिम में एक बार टीका देने के लिए आया हुआ एक आदमी बिना मार खाए किसी तरह बच निकला था।

गांव के ओझाओं से चिकित्सा कराकर वह इतने वर्षो से किसी तरह जीवित है। बीमारी को दबाकर रखने के लिए केलाई गांजा पीता है, और गांजा पीने पर उसकी खांसी कुछ कम होती है।

केलाई की मां नहीं है, अपना पिता मोलोका है और एक छोटा भाई है—तीन आदमियों का परिवार है।

केलाई गोरा नहीं है, सांवला है; किंतु बीमारी के कारण उसको खून कम हो गया है और इसीलिए वह थोड़ा पीला पड़ गया था। वह कद में लंबा है—तिस पर बीमारी के कारण दुबला हो जाने से वह और अधिक क्षीण हो गया है और इसलिए वह और अधिक लंबा दिखाई पड़ता है।

पीले होंठ, रक्तहीन आंखें, दुबले-पतले हाथ-पैर, बातें करने की उसमें क्षमता नहीं है। रात को प्रायः जागते रहना पड़ता है—सोने से खांसी होती है,। सरसों का तेल मालिश करते-करते शरीर पर दाग पड़ गया है। वर्ष में तीन या चार बार ही नहाता है, नहाने से भी खांसी होती है।

बीमारी के कारण दुबले हो जाने की वजह से ही केलाई बातचीत करने में बड़ा ही विनीत है—किसी दिन भी गुस्सा नहीं करता है। गांजा पीने पर भी उसे ज्यादा नशा नहीं होता। एक प्रकार से वह बेकार है—खेत जा नहीं सकता, घर के बाहर-भीतर भी कोई कठिन काम नहीं कर सकता। आग के पास बैठकर खाना पकाना, धूप निकलने पर आंगन में बैठकर टोकरी आदि बनाना, मवेशियों को चराना आदि काम ही वह करता है। यदि उसकी तबीयत अच्छी रहती है। पूर्णमासी, अमावस को उसकी खांसी बढ़ती है। उस समय गर्म राख का सेंक लेकर पड़े रहने के सिवा और कुछ भी नहीं कर सकता।

गुलच केलाई को अच्छी तरह जानता है। गुलच की पाही की जमीन सिपरिया

गांव के दक्षिण-पश्चिमी किनारे हैं। उसके पाही के घर से केलाई का घर एक मील से अधिक दूरी पर नहीं है। मोलोका भी पाही का है। बीच-बीच में गुलच को मोलोका खेत-मैदान में मिल जाता है। एक बार वह दो कुम्हारा देकर केलाई से मछली पकड़ने का एक औजार भी लाया था। लकड़ी का काम केलाई अच्छा करता है।

किंतु, गुलच जब कभी केलाई को देखता है वह सोचता है कि किसी भी समय मर सकता है, इतना दुबला-पतला है वह। और गांजा और सरसों के तेल के कारण उसके शरीर से जो गंध निकलती है, गुलच को वह असह्य होती है। जवान आदमी है, क्या वह जरा साफ-सुथरा नहीं रह सकता ?

केलाई के साथ चेनिमाइ के विवाह के बारे में गुलच को मालूम हुआ। चंद्र और कपाही से। उस खबर ने उसे जरा एक अनबूझ आघात पहुंचाया, उसका उत्साह जरा ठंडा पड़ गया।

उसके मन की अवस्था का शायद अनुमान करके ही एक दिन कपाही ने कहा, "चेनिमाइ के विवाह के बारे में जानकर ही तू हतोत्साहित हो गया है। सयानी लड़की है, उसका विवाह न हो तो क्या घर में बैठी रहेगी ? तेरी यदि उससे ब्याह करने की इच्छा थी तो कुछ करना चाहिए था..."

विरक्त और आक्षेप के साथ गुलच ने कहा, "चेनिमाइ का ब्याह होने के कारण मुझे खराब नहीं लग रहा है। किंतु केलाई दमे का रोगी है। उसके साथ उसका निर्वाह कैसे होगा ? उसको मैं जब भी देखता हूं, अब मरे-तब-मरे जैसा लगता है।

कपाही ने और दिल्लगी न की, एक सयानी लड़की को इस प्रकार दुर्भाग्य की ओर ढकेल देने की बात को लेकर परिहास करना कठोर हृदय का काम है। कपाही ने मन में भी चेनिमाइ के प्रति सहानुभूति जाग उठी।

किंतु उस समय कुछ भी करने का समय नहीं था। किसी का ब्याह कोई करवा रहा है, उसमें गुलच की बात भी नहीं सुनी जाएगी और कपाही की भी नहीं।

गुलच ने यद्यपि मुंह खोलकर कुछ भी नहीं कहा, तो भी उसने एक बात का अनुभव तीव्रता के साथ किया—चेनिमाइ के इस दुर्भाग्य का कारण मैं ही हूं। उसको यदि भगाकर न ले जाता तो वह बदनाम न होती और तब किसी भी अच्छे युवक के साथ उसकी शादी हो जाती।

बहुत कुछ सोचकर उसने अपने को ही सांत्वना दी। यद्यपि मैं ही दोषी हूं, तो भी पूर्ण रूप से दोषी नहीं हूं। मैं उसे भगाकर इसलिए ले गया था कि उससे ब्याह करूंगा। हमारे बूढ़े और उसके पिता ने ही इस जोड़ को तोड़ दिया। मेरा क्या दोष है ?

किंतु, फिर भी चेनिमाइ के लिए उसको दुःख हुआ। बेचारी को उस गांजा पीने वाले और चिरंतन रोगी के साथ ही रहना पड़ेगा।

गलच को खुद दोषी जैसा लगा। वह एक न कही जा सकने वाली अंतर्वेदना

में जलने लगा।

किंतु उसे साथ-साथ केलाई के लिए भी दया हो आई। बेचारे जवान आदमी को इस उम्र में कैसे रोग ने दबोच लिया है ! वह इतना शांत और विनीत है। उसके पीले मुंह की याद आकर गुलच को उस पर दया आ गई।

ब्याह यदि हो जाए तो केलाई को जरा आराम मिलेगा-चेनिमाइ से।

अपने मन की अवस्था को उसने कपाही के सामने खोलने का प्रयत्न किया, "चेनि क्या मुझे श्राप देगी ? मैंने खुद उसे छोड़ा नहीं था, उसके पिता ने ही उसे छीन लिया था।"

कपाही ने कहा, "अच्छा, जो हो गया, हो गया, दूसरे की बात सोचने की जरूरत नहीं है। अगहन समाप्त ही हुआ है। माघ में ही अपना घर बसाने की व्यवस्था करनी चाहिए। क्या मकान पूरा हो गया है ?"

गुलच अब तक चेनिमाइ के बारे में ही सोच रहा था, उसने कहा, "मेरा अनुमान है कि केलाई के घर को मेरे बारे में सभी बातें मालूम नहीं हैं। मालूम होता तो विवाह नहीं करते।"

"उन बातों को कितने ही लोग जानते हैं। कौन इन बातों को कुरेदता फिरता है ? डालिम के लोगों को ही काम नहीं है, उन बातों को कुरेदते फिरते हैं। सिपरिया गांव के लोगों को क्या पड़ा है ?"

सच हो या झूठ हो, कपाही की बात ने गुलच को जरा ढाढस दिलाया। चेनिमाइ की बदनामी के बारे में मोलोका को मालूम न हो तो ठीक है। नहीं तो, वह गालियां सुनती रहेगी। वह चिरंतन रोगी भी उसे तंग करता रहेगा।

और, उन बातों के बारे में उन्हें मालूम न हो तो वह खुद भी बीच-बीच में वहां जाकर उसके बारे में जान सकेगा। उसके मकान से चेनि का मकान ज्यादा दूरी पर नहीं है। गांव का ही कहकर वह बीच में सामान्य रूप से जा सकेगा। हो सकता है कि उसे देखने पर उसके मन को बल मिले।

चेनिमाइ का ब्याह हो जाने के कई दिनों तक गुलच का मन भारी-सा रहा। पके हुए धान के खेत में कटाई के समय भी वह चेनिमाइ की बात भूल न सका।

उस बेचारी का जीवन व्यर्थ हो गया है, व्यर्थ हो जाएगा। उस बीमार आदमी की सेवा करने के सिवा विवाहित जीवन के किसी भी आनंद का, किसी के आराम का, वह आस्वादन नहीं कर पाएगी। केलाई जब तक नहीं मरता है, तब तक उसे इस अधमरे आदमी के साथ रहना पड़ेगा।

उसने अपने आप से कई बार कहा, "मैंने खुद ही अन्याय किया है। मेरे कारण ही आज चेनि की यह हालत हुई है। चेनि निश्चय ही मुझे माफ नहीं करेगी !"

मैं यदि अब चेनि से मिलने जाऊं और वह यदि मुझे अपमानित करके भगा दे तो उसमें आश्चर्य न होगा।

"मैं ही दोषी हूं"—उसने कहा।
दोषी मैं ही हूं, मैं ही !

ग्यारह

पूस के अंत में धान की कटाई समाप्त हो जाती है। माघ-बिहु के लिए और अधिक दिन नहीं हैं। गुलच की खेती कम है, उसका काम पहले ही समाप्त हो गया है, उसने थोड़ी जल्दीबाजी भी की; क्योंकि उसे अपना मकान भी बनाना है।

कुछ दिन के भीतर उसने मकान खड़ा भी किया। उसके खूंटे और शहतीर लकड़ी के हैं। किंतु उसका मकान छोटा है, तीन ही कमरे का। कमरे छोटे-छोटे हैं। आगे वह एक बड़ा-सा मकान बनाएगा। समय मिलने पर बहुत काम हो सकता है। उसने आंगन भी तैयार किया; किंतु फूलों के जिन पौधों को वह रोपना चाहता था, वे उसे खोजने पर भी आस-पास नहीं मिले। बाद में पता करूंगा ! पुआल के साथ यदि धान रखा जाए तो बड़ी कोठी की आवश्यकता होगी, इसीलिए, वह कोठी अगले वर्ष बनाएगा; इस वर्ष एक खत्ता ही उसने बनाया। उसका धान ही कितना होगा ! अपने पहले के बैठक-खाने को तोड़कर उसने गोशाला बनाई। इस समय जरूरत न होने पर भी वर्षा के समय वह मवेशियों को ले आएगा। गाय-बैल-भैंस न हों तो कौन-सी गृहस्थी होती है। मुर्गी और बत्तखों के लिए भी कोई व्यवस्था करनी होगी। जब तक घर में बाल-बच्चे न हों, जब तक आंगन में मुर्गी-बत्तख, बछड़ा-बछड़ी ही न हों; आंगन ही सूना-सूना लगता है। किंतु, मुर्गी और बत्तखों के लिए अभी व्यवस्था न भी हो तो कोई हर्ज नहीं होगा। सोने के मकान के एक कोने में किसी टोकरी आदि से ढककर भी उन्हें रखा जाए तो काम चल जाएगा। आजकल सियार या दूसरा जानवर भी अधिक नहीं निकलता है।

दो चौकियों की आवश्यकता होगी, तीसरी की शायद जरूरत पड़ जाए ! एक पर तरा और वह सोएंगे, दूसरे पर कपाही सोएगी, और तीसरी की मेहमान आदि आने पर जरूरत होगी। यों जमीन पर सोया जा सकता है, किंतु शादी करके घर में लड़की लाकर जमीन पर सोना अच्छा नहीं लगता। सफीयत के घर लोग पलंग पर ही सोते हैं। सोएं, धनी आदमी हैं। हम भी कभी धनी होंगे।

डालिम गांव के घर में दो चौकियां है। एक थोड़ी पुरानी है, उसके पाए थोड़े ढ़ीले हो गए हैं। दूसरी नई है, छह रुपयों में उसी ने ही खरीदी थी। दोनों को ले आना होगा। यहां तक ले आना ही कुछ मुश्किल काम है। गाड़ी, नाव और कंधे

पर किसी तरह लाना होगा। एक नए घर को बसाने के समय कुछ कष्ट सहना ही होगा।

केवल एक असुविधा का समाधान गुलच खोज नहीं सका था। पास कोई पोखरा नहीं है। घर से भी नदी कुछ दूरी पर है—डेढ़-दो फर्लांग होगी। पानी भरने में ही बेचारी पसीना-पसीना हो जाएगी। घर की नींव को तैयार करने के लिए जो गड्ढा खोदा गया था उसे यदि और गहरा किया जाए तो उसमें पानी निकल सकता है—किंतु वह अकेले मकान बनाएगा या पोखरा खोदेगा ? खूब कष्ट हुआ है। किंतु घर के पास पानी होना ही चाहिए।

इसका मतलब यह नहीं है कि वह नदी को घर के पास ही चाहता है। नदी जितनी दूर जाए, जाए। उसकी जमीन को पानी से अपकार न हो, वही वह चाहता है। धनशिरि के स्नेह के कारण ही वह नदी के किनारे अपना संसार बसा रहा है, धनशिरि क्या अभी उससे दुश्मनी करेगी ?

धान के खेत के बीच से जाकर एक दिन गुलच मोलोका के घर के पास पहुंच गया था। किंतु वह मोलोका के घर नहीं गया। मोलोका के छोटे लड़के तिखर से उसकी भेंट रास्ते में ही हो गई थी।

"तुम भैया, किधर आए थे ?" उसने पूछा।

"कुछ बेंतों की आवश्यकता थी। सुना है, इधर जरध के घर में है। सब खैरियत से हैं न ?"

"हां, किसी तरह हैं। किंतु भैया की तबीयत उतनी अच्छी नहीं है। तुम्हारा मकान तैयार हो गया, भैया ?"

"खड़ा तो किया है, अकेला आदमी हूं।"

"आओ, जरा बैठकर जाओ !" तिखर ने कहा।

"अभी नहीं बैठूंगा, काफी देर हो गई है। हो सके तो जरध के घर से बेंत ले चलूं। किसी दूसरे दिन आऊंगा।"

"हां, मैं भी तुम्हारी तरफ आने को सोच रहा था। तुम्हें कुछ सहायता दे सकता तो अच्छा होता। अच्छा, एक दिन आऊंगा..."

पूछने-न-पूछने की तरह से गुलच ने पूछा, "तेरी भाभी कैसी है ?"

"हां, ठीक है। जानते हो भैया, भाभी के आने पर मैं बच गया। खाना पकाते-पकाते मेरी कमर झुक गई थी।"

गुलच ने और कुछ न पूछा। "बेंत की खोज में वह गांव के भीतर चला गया। गांव घुसने के रास्ते पर ही मोलोका का मकान है।"

तिखर देखने में बुरा नहीं है, उसका स्वास्थ्य भी अच्छा है। किंतु वह काला है और बातचीत करने में बड़ी विनम्रता से काम लेता है। खाना पकाने और पानी भरने का काम करते-करते उसका स्वभाव स्त्रैण हो गया था। और सदा खुद ही

पकाकर और अपने ही द्वारा चुनकर खाने के कारण वह जरा पेटू और मोटा हो गया है। वह भी जवान है, उम्र 23—24 वर्ष की होगी।

गुलच ने सोचा—मकान की छत लगाने के दिन वह तिखर को बुलाएगा। छत का काम न कर सकने पर भी वह छत पर बिछाने के लिए खर को ऊपर फेंक सकेगा। कुछ सहायता दे सकेगा। छत पर खर बिछाने का काम अकेले नहीं किया जा सकता। सिपरिया गांव के दो-चार जवानों को बुलाना होगा। आजकल चंद्र मालूम नहीं कहां घूमता रहता है। उसके मिल जाने से, उससे काफी सहायता मिल सकती है। किंतु, वह यों ही गाली देता फिरता है।

विवाह के बाद चेनिमाइ का चेहरा कैसा हो गया है। उसे देखने के लिए गुलच को बड़ी इच्छा जगी थी। किंतु उनके घर के सामने पहुंचकर उसकी हिम्मत टूट गई। केलाई के साथ उसका परिचय है और उससे उसकी बातचीत भी हुई है। मोलोका से भी वह इधर कई बार मिल चुका है। तिखर भी उससे अपरिचित नहीं हैं; किंतु अपने आप जाकर चेनिमाइ के बारे में पूछे तो क्या मालूम कौन क्या कहे ! चेनिमाइ भी क्या सोचेगी ! वह यों ही कम बात करने वाली लड़की है। चेनिमाइ के मन में दुः ख होने पर भी वह उसे व्यक्त नहीं कर सकती। ऐसा न हो तो क्या अपने पिता से कुछ न कहती ? और जब उसे इस चिरंतन रोगी के हाथ में सौंपने के लिए बातचीत हुई उस समय भी क्या वह कुछ न कहती ! बातें न करना ही उसका रोग है।

आंगन में बैठकर बेंत काटते समय गुलच चेनिमाइ के बारे में ही सोच रहा था। उसकी मां नहीं है। उसकी सौतेली मां है—उसकी जीभ खूब चलती है। उसके पिता, ताऊ दोनों यमदूत जैसे हैं। बच्चे उन्हें बाघ जैसा समझते हैं। ऐसे ही एक परिवार में बड़ी होकर चेनिमाइ ने चुप रहकर, मुंह-अंधेरे से रात के समय तक घर का काम करना ही सीखा, धान कूटना, पानी भरना, रोपाई-कटाई का काम करना, मुगा सिल्क का सूत कातना, कपड़ा बुनना। उसके हाथों को आराम ही नहीं मिलता, बात करने के लिए उसे समय ही नहीं मिलता।

उसी व्यस्तता के बीच ही उसका गुलच के साथ परिचय हुआ था, गुलच भी ज्यादा बात नहीं करता। वह ज्यादा सोचता है। उसकी मां भी ज्यादा काम करती है। जब वह अपने पिता के साथ रहता था उस समय दूसरे लोग ही काम कर देते थे। वह भात खाने के लिए ही घर आता है; लोगों से दूर-दूर रहने के कारण ही शायद उसका मन कोमल हो गया है। लोगों के बीच उसको गुस्सा नहीं आता, ऐसी बात नहीं, किंतु आकाश की ओर देखने से, जंगल-झाड़ियों की ओर ताकने से, नदी की ओर नजर जाने से—वह छोटा लड़का जैसा हो जाता है, उसका मन पिघल जाता है। वह एकटक देखता रहता है, खाना-पीना भूल जाता है।

धनशिरि में वर्षा के दिन पानी बढ़ जाने से वह किनारे पर खुशी से कूदने

लगता है। फागुन के महीने में हवा धीरे-धीरे बहने पर वह अकेले ही नाचता है। और तो और, सावन के महीने में बाढ़ जोरों से आने पर वह घर आने के बजाए बाहर निकल जाता है और बारिश में भीगकर नहाता है, हंसता है, किलकारियां मारता है।

वह अपने ही मन में गाना गाता है—ऐसा गाना जिसका न आदि है और न अंत। वह अपने से नाना कहानियां कहता है—अपने मन की आशा-निराशा की कथा, दुख-निरानंद की कथा। वह अकेले घूमता है—अपनी ही धुन में।

इन्हीं हालतों में चेनिमाइ के साथ उसका परिचय हुआ था, चेनिमाइ उसे अच्छी लगी थी, चेनिमाइ भी उसे स्नेह करती थी। यह सही है कि अपना यह स्नेह वह मुंह से व्यक्त करना नहीं जानती थी। उसके मन का मिलन हुआ था, दोनों ने घर बसाने का सपना देखा था, उसके बारे में कानाफूसी हुई थी। किंतु दोनों परिवारों के बूढ़ों में जरा मन-मुटाव था। गुलच के साथ चेनिमाइ का ब्याह नहीं होने दिया था।

एक रात को दोनों भागे थे, उस रात को चेनिमाइ को दोनों हाथों से आलिंगन करके गुलच ने उसके अंदर के छिपे प्यार का अनुभव किया था, किंतु वही प्रथम था। वही अंतिम था।

चेनिमाइ ने कुछ नहीं कहा। गुलच औरों के विरुद्ध प्रतिवाद न कर सकने के कारण अपने पिता से अलग हो गया था। किसकी विजय हुई, किसकी पराजय हुई—किसी को भी समझ में नहीं आया।

चेनिमाइ का ब्याह केलाई के साथ कर दिया गया, शायद गुलच भी एक लड़की ले आएगा। दोनों पास-पास रहेंगे। किंतु दोनों दो परिवार होकर। दोनों एक-दूसरे से अपरिचित होकर। पहले का परिचय उन्हें भूल जाना होगा—गुलच को भी, चेनिमाइ को भी।

गुलच का मन भारी-भारी सा लगा।

बारह

नदी के किनारे के सेमल पर लाल-लाल फूल आने का समय हो गया था। जिन पेड़ों के पत्ते झड़ गए थे वे नए पत्तों के लिए बाट जोहने लग गए थे।

धनशिरि सूख गई थी, उसका पानी नीले रंग का हो गया था। पानी नहीं है, सूखे कगार खड़े हैं, ये आकंठ प्यासे हैं। धनशिरि की गोद एक दिन भर आएगी,

उसकी सूखी छाती सराबोर हो जाएगी।

नदी की बालू पर पानी की खोज में आने वाले जंगली हरिण के खुरों के चिह्न हैं। वे समूह मे आते हैं, पानी पीते हैं और चले जाते हैं। पंखों को बिना हिलाए गिद्धों की पंक्ति आकाश में उड़ती रहती है। उनकी आंखें नीचे बालू पर रहती हैं कहीं आहार तो नहीं निकला है !

जंगल में जंगली चिड़ियां अपनी खुशी में ही गाती फिरती हैं। उनके कंठों में वसंत के स्वागत के लिए सहज उत्साह है। शांत दुपहरिया में जंगली कबूतर युगल कंठ-ध्वनि करता है। दुनिया में मानो और कोई नहीं है। केवल वे दो ही हैं। कोई बिहु विह्वल नौजवान कोई वन-गीत गुनगुनाता है, अपने दुख की कहानी कहता है, जले हुए कलेजे की कथा कहता है। उसके गीतों के स्वर में विह्वलता है।

नई फसल का खाना खाकर लाल बनी हुई गबरू लड़कियां यों ही खिलखिला कर हंसती हैं। उनकी हंसी में फागुन का कच्चा असर है। उनके मन में अपार उत्साह है। उनके देह-मन फड़कते रहते हैं एक-दूसरे को तंग करती हैं, एक-दूसरे को चिकोटी काटती हैं, गुदगुदा देती हैं। गांव के पोपले मुंह के बूढ़ों के साथ गबरू लड़कियों का संबंध जोड़कर चिढ़ाती हैं, हंसते-हंसते लोट-पोट हो जाती हैं। मन में भरे हुए आनंद के कारण उनकी आंखें झलमल हो उठती हैं, होंठों से हंसी छूटती ही नहीं।

गुलच का मन मयूर भी नाचता है, उसका मन भी यों ही बातें करने लगता है। उसके अंतर में सात बिहु का बाजा बजने लगता है।

वह चेनिमाइ की बात नहीं सोचता है, कपाही या तरा की बात भी नहीं सोचता है। उसका अशांत मन कुछ भी न सोचकर सभी बातों के बारे में सोचना चाहता है। चील के सफेद पंख में वह अपने अशांत मन के कंपन का आभास पाता है। धनशिरि के किनारे अकेले बैठकर वह अपने घाट में किसी अस्तगिरि के सौदागर की नाव लगने का सपना देखता है—सौदागर की नाव में सात राजाओं के हीरे-जवाहरात हैं, जो चाहता है—आ और हीरे-जवाहरात इकट्ठा कर।

धनजड़ डंठलों के साथ दुपहरिया की मीठी धूप मित्रता करती है, शाम का कुहरा खर की जड़ों को लोरियां सुनाता है। रात के निष्प्रभ तारे धनशिरि की गोद में जलदेवी की देहरी खोजते हैं। आंगन के सामने पुआलों में धूप की गर्मी आकर इकट्ठी होकर ठहर जाती है।

डालिम गांव में, सिपरिया गांव में, धनशिरि के किनारे की नए सिरे से तैयार की गई जमीन को आखिरी जाड़े की कोमल हवा का झोंका लगता है।

दूध पीनेवाले बछड़ों के मुंह से फेन निकलता है, उनकी माता उन्हें चाटकर रोओं को अस्त-व्यस्त कर डालती हैं। बछड़े पूंछ उठाकर इधर-उधर दौड़ने लगते हैं।

गुलच का मन भी पूंछ उठाकर दौड़ता है।

उसके अपने आंगन की धूलों को कोमल-कोमल लगने लगता है।

कभी-कभी सारा दिन उसका यों ही कट जाता है। जब मन नहीं होता है काम करने की जरूरत नहीं है—बस, हम क्या किसी के गुलाम हैं ? तरा और उसके परिवार के लोगों के आने पर वह रसोई में भी नहीं जाएगा, जब मां थी, उसे खाना पकाने की जरूरत नहीं थी। किंतु जब भात उबलने लगता है, देखते रहने में बड़ा अच्छा लगता—बुड-बुड, भुत—भुत। एक बढ़िया गंध भी आकर नाक में घुसती है। भात का मांड़ कराही के ऊपर से छलककर आग पर पड़ता है, देखकर गुलच को बड़ा अच्छा लगता है।

बहुत सारे कामों को उसे तुरंत कर लेने का मन होता है। कुछ भी न करके यों ही घूमते रहने का मन होता है।

वह एक दिन चंद्र की खोज में डालिम गया।

चंद्र घर में नहीं था, 'गोला' गया हुआ है—तीन दिन हो गए थे। इसी बीच वह सभा-समितियां कर 'गांव की लड़कियों को भी पढ़ना चाहिए', इसके बारे मे प्रचार कर रहा है। उसको शर्म नहीं लगती है ! लड़के दो-एक वर्ग की पढ़ाई कर लेते हैं। यह अच्छा भी है। कहीं लड़की भी पढ़ती है ? शहर की हवा लगी है चंद्र को, गांव की वह क्या हालत करेगा, कोई ठिकाना नहीं है।

गांव के रास्ते को भी सरकार द्वारा ले लेने के लिए उसने आवेदन किया है, एक डाकघर की आवश्यकता के बारे में भी कहा है। उसने और भी कहा है कि गांव के बीच में भी एक अस्पताल चाहिए। उसका दिमाग खराब हो गया है, किंतु उसका साहस है। गांव के कुछ और नौजवानों को साथ कर लिया है। कहता है कि होली में थिएटर करेगा—गांव में कभी न होने वाली बात है ! डालिम गांव में कभी गोसाईं या मठाधीश आने पर माओना (नाटक) होता है। माओना जब नहीं होता तब लड़के चिल्ला-चिल्लाकर उसके संलाप को दोहराते हैं—तू कौन है दुराचार, इस बार तेरी रक्षा नहीं है !

किंतु थिएटर ?

चंद्र पागल न बने तो ठीक है।

सुना है, दो या एक लड़की भी उसके साथ हो गई है। सारी दुनिया डूब जाएगी।

गुलच को चंद्र नहीं मिला।

किंतु चंद्र के आंगन में बहादुर ओझा मिल गया था। ओझा रोग की चिकित्सा करता है, भूत-प्रेत को भगाता है, ज्योतिष-विद्या के सहारे खोई हुई वस्तु को खोज देता है और हस्त-रेखाओं को देखकर भाग्य की बात कहता है। गुलच भी हाथ को आगे करके ओझा के सामने बैठ गया।

"तुझे क्या हुआ है ?" बहादुर ओझा ने पूछा।

चंद्र की मां ने कहा, "नौजवान है, और क्या हुआ है ? एक बार की शादी टूट गई है। अब विधुर हो गया है।—उसका नया घर कब बसेगा, देख दीजिए।"

"दो आने पैसे देने होंगे" ओझा ने कहा।

गुलच का मुख जरा सूख गया, उसके हाथ में पैसा नहीं था, वह जरा असमंजस में पड़ गया।

"अच्छा, देख दीजिए, सच निकले तो मैं ही दे दूंगी—चार आने," चंद्र की मां ने कहा।

गुलच के मुंह पर हंसी खिल गई, चंद्र की मां बड़ी अच्छी है।

हस्त-रेखाओं को देर तक देखकर गंभीर होकर ओझा ने कहा, "तेरा हाथ भी कम नहीं है। लगता है, तू कुछ करके ही दिखाएगा, घर-गृहस्थी भी होगी, यह देखा है ? यह रेखा है। जल्दी ही होने वाली है, लड़की भी लक्ष्मी है, किंतु जरा सावधान रहना, कहीं धोखा न खा जाओ—हां, भय न करना, अच्छा दिन है, अच्छा दिन। जमीन-जायदाद से भरे पड़े।"

ओझा ने जो कुछ कहा, गुलच को अच्छा लगा, किंतु उसे स्पष्ट मालूम नहीं हुआ कि ओझा क्या कह रहा हैं, ओझा की बात ऐसी ही है।

चंद्र की मां ने पूछा—इसकी शादी कब तक होगी ?"

ओझा ने कुछ हंसकर कहा, "जवान लड़के की शादी ! जब भी लड़की ले आता है, तभी शादी होती है, किसकी चिंता है ?"

गुलच को शर्म लगने लगी।

लड़की ले आने पर ही शादी होगी। हां, ठीक तो है—शादी की क्या जरूरत है ? लड़की को लाकर घर में रख देने से ही बस काम पूरा है।

घूम-फिरकर शाम के समय वह कपाही के घर पहुंचता है।

मां-बेटी दोनों घर पर हैं। तरा ने चद्दर की बुनाई का काम शुरू कर रखा है—शाम तक बुनकर करघे से अभी-अभी हटकर आई थी, गुलच को देखकर भीतर आ गई। तरा ने ही पहले कहा. "भैया, कहीं गए थे क्या ?"

"कहां जाऊंगा ! क्या काम से कहीं फुरसत मिलती है ? क्या तुम लोगों की खैरियत है ?"

"हूं, किसी तरह," कपाही ने कहा, "क्या तुम्हारा मकान तैयार हो गया है ?"

"हो जाएगा और—तरा, जरा पानी तो पिला। आज बहुत घूमकर आया हूं...।"

कपाही ने कहा, "अपने भैया के लिए भी चावल पका ले, रात को यहीं खाना खाएगा।"

तरा को और बैठने का मौका नहीं मिला। एक दीया जलाकर दीयेदान पर रखा और रसोई में चली गई।

एक कटोरा पानी लाकर कपाही ने गुलच को दिया और उसे बैठने के लिए एक पीढ़ा देकर खुद भी उससे सटकर एक पर बैठ गई।

"घर बन गया क्या ?"

"दीवार आदि हो गई है। केवल छत डालने का काम बाकी है। कुछ ही दिनों में बन जाएगा। क्या फसल आदि घर में आ गई है ?"

"हां !" कपाही ने भीतर की ओर देखा, और इसके बाद कहा, "गाड़ी इधर फिर आएगी क्या ?"

"गाड़ी ? हां, ले जाना होगा, यहां अपने घर में दो चौकियां और कुछ इधर-उधर की चीजें हैं न ! यहीं यदि रह जाएं तो खराब हो जाएंगी।"

"खेत से जो धान मिला है उसे बोरे में ही भरकर रख दिया है। गाड़ी में चढ़ाकर पहले ही रख आना होगा।"

गुलच का मन आनंद से खिल उठा। कपाही के प्रति उसे नया स्नेह होने लगा। "और कुछ है क्या ?"

"यहां भी कुछ इधर-उधर की चीजें हैं। एक गाड़ी भर हो जाएंगी। सामानों को यदि भेज सकूं तो हम दोनों के लिए और अधिक चिंता नहीं है।"

गुलच चुप रह गया।

दीवार की उस ओर से उनकी बातचीत को तरा ने भी सुना होगा। उस ओर से किसी प्रकार की कोई आवाज नहीं हो रही थी।

कपाही ने कहा, "कोई अधिक चिंता की बात नहीं है, हमें किससे पूछने की जरूरत है, अपने निश्चय पर दृढ़, तो सब ठीक रहेगा।"

गुलच को इस बार भी कोई उत्तर नहीं सूझा।

उसका अपना निश्चय तो निश्चित ही है, कपाही आदि के लिए चिंता थी और वह चिंता भी दूर हुई। और अभी मौका देखकर तरा आदि को अपने घर में ले जाना ही अच्छा है।

दोनो ने कई विषयों पर बातें कीं। तरा ने उनकी बातचीत में कोई हिस्सा नहीं लिया, उसे शर्म लगी थी।

किंतु तरा ने एक बात के प्रति ध्यान दिया था। इधर कुछ दिनों से गुलच और कपाही के हाव-भाव भिन्न दिखाई पड़ रहे हैं। पहले की तरह गुलच ने कपाही को 'दीदी' कहकर संबोधित नहीं किया है। कपाही आज गुलच को 'तू तुम' कुछ भी नहीं कहती, उसका नाम लेकर भी नहीं पुकारती, वह एक बीच की भाषा में बोलती है। हो सकता है कि उनमें आपस के संबंध में हेर-फेर होने वाला हो। इसी कारण से ही संबोधन में उस प्रकार परिवर्तन हो रहा है।

तरा को अच्छा ही लगा।

उसको शर्म भी हो आई। गुलच को भैया कहकर संबोधित करने में उसे भी

माने। आज संकोच होने लगा है ! लेकिन वह दूसरे किस संबोधन से उसे पुकारे ?

खाना परोसते समय तरा ने गुलच का चेहरा एक बार अच्छी तरह देख लिया। उसका चेहरा खिल उठा है। ठीक है, शादी के पहले मन की स्फूर्ति में ऐसा हो जाता है। किंतु वह बड़ा गंभीर होकर रहता है, उसके साथ। ठीक है, मौसी के सामने हल्का तमाशा करना भी अच्छा नहीं है।

बर्तनों को साफ करने के लिए तरा पिछवाड़े में गई; कपाही गुलच के पास आई और फुसफुसाकर उससे कहा, "सामानों को पहले ही यहां से हटाना होगा। बिहु के बाद ही उस गांव की मसजिद में भोज का आयोजन है न, उस समय इस ओर लोगों का आना-जाना कम होगा। हमारे जाने की बात किसी को मालूम ही नहीं होगी।"

गुलच ने संक्षेप में कहा, "अच्छा ठीक है।"

उसके बाद उसने साहस करके पूछा, "तरा इस बात को जानती है या नहीं ?"

"उसे मालूम हो या न हो, इससे क्या होता है ? आज की लड़की है, क्या मालूम नहीं होगा ? उसके बारे में चिंता की कोई जरूरत नहीं है।"

गुलच ने कपाही के चेहरे की ओर सर उठाकर देखा।

कपाही बड़ी सुंदर लग रही हैं, उसका चेहरा गुलाब जैसा लाल हो उठा है, उसका वक्ष भी सुंदर लग रहा है।

थोड़ा सामने की ओर झुककर अपना मुंह गुलच के पास लाकर कपाही ने हंसकर पूछा, "क्या देख रहे हो ?"

इसके बाद अपने हाथ से उसकी आंखों को ढककर उसने कहा, "तरा के आने का समय हो गया है, आज जाओ, मेरे चेहरे की तरफ ताककर बैठे रहने की जरूरत नहीं है।"

आंखों पर से कपाही का हाथ हटाकर गुलच ने पुनः उसके चेहरे की ओर ताककर कहा, "तो बड़े भोज के दिन ?"

"हां, जरा रात हो तो अच्छा होगा।"

तरा आई।

उसे पुकारकर गुलच जाने लगा।

थोड़ा साहस करके तरा ने कहा, "हो सके तो बिहु के पहले एक बार आ जाना, भैया !"

"क्यों ?"

"कुछ बात है, आने पर कहूंगी न..."

गुलच ने केवल इतना ही कहा, "अच्छा, अब चलूं।"

तेरह

माघ—बिहु के तीन दिन पहले ही बारिश हुई।

शुरू में जोरों की बारिश हुई, इसके बाद इसका जोर कम पड़ने लगा। और इसके बाद झड़ी होने लगी, रात और दिन लगातार। अत्यंत ठंडा है, ठंडी हवा के कारण कंपकपी आ रही थी। अंतिम शीत का जोर मेजी (अग्नि-पूजा की बेदी) में आग देने के साथ ही साथ कम पड़ने लगेगा।

इसी बीच गुलच के मकान की छत भी तैयार हो गई थी। उसके मन में अपार आनंद है। बरसात के पहले उसका मकान बन नहीं जाता तो बहुत कष्ट होता। मकान की नींव नम रहती। ठंडे में कांप-कांपकर उसे दीवारहित छत के नीचे ही रहना पड़ता।

पुरानी चादर ओढ़कर गुलच बैठा हुआ था। सिपरिया गांव से चंद्र आ पहुंचा, साथ में था तिखर।

दोनों रिमझिम बारिश में भीगकर ही आए थे।

गुलच ने एक बड़ी आग जला दी। तीनों आग को घेरकर बैठ गए। हाथ-पैरों को सेंकने लगे।

"तू एक दिन मुझको खोजने गया था ?"—चंद्र ने पूछा।

"एक दिन की बात कहता है ? कई दिन गया था। आजकल तुझको पंख लग गया है क्या ? तेरा साया तक देखने को नहीं मिलता। कहां गया था, अभी कहां से आया है ?"

"शहर गया था, मेनी वर्क है—समझा, बहुत काम है। पी डब्लू से कहकर आया हूं कि डालिम घाट में इसी वर्ष एक पुल बनाना चाहिए। उस ओर एक ही गांव है—वान विलेज, नदी के होने के कारण ही दो गांव हैं। यदि पुल बन जाए तो एक ही गांव हो जाए। डालिम और सिपरिया—वान विलेज। क्या कोई कम लाभ होगा !"

"क्या वह बन जाएगा ?"

"क्या कहने से ही बन जाएगा, हजारों उपायों की आवश्यकता होगी। क्या कोई छोटा-मोटा पुल होगा ! किंतु मैं छोड़ने वाला नहीं हूं—इस वर्ष न भी बने, नेक्स्ट इयर बनेगा ही। तेरा मकान बन गया है।" चारों ओर नजर दौड़ाकर चंद्र ने कहा।

उसने बीड़ी निकालकर एक तिखर को और एक गुलच को दी। उसने खुद भी एक जला ली।

तीनों बीड़ी पीने लगे, चुपचाप।

"क्या जरा चाय बना आऊं, बड़ी सर्दी पड़ी है," गुलच ने कहा।

"जरूर बना, मुझे भी बड़ी सर्दी लगी है। चाय की पत्ती है क्या ?"

"है, तू गुड़ की चाय पीता है न ?"

"गुड़ की न पीऊं तो किसकी पीऊं, क्या होटल है कि चीनी की चाय पीऊं ?"

"गांव में चीनी की चाय पीना एक विलासिता है। चंद्र अब भी उतना विलासी नहीं हुआ है।"

तिखर ने कहा, "मैं तेरे मकान को दिखाने के लिए आया था, लौटते समय मवेशियों को देखकर घर ले जाना पड़ेगा।"

"जरा बैठ, बारिश हो रही है, भीग जाएगा।"

किंतु तिखर नहीं ठहरा।

उसके जाने पर गुलच को अच्छा ही लगा।

"बीच-बीच में आते रहना" गुलच ने यों ही कहा।

"जमीन कितनी तैयार की है—चंद्र ने पूछा। जमीन की बात छिड़ने पर गुलच हंस दिया। उसने सब बता दिया और आबाद की गई उसकी जमीन और आस-पास की दूसरी जमीन का पट्टा किस तरह कर लिया जाए उसके बारे में चंद्र से सलाह-परामर्श किया।

चंद्र ने विश्वास दिलाया, "यू डोंट केयर, मैं करा दूंगा। इस साल पट्टा कराने की जरूरत नहीं है, उससे लगान देना पड़ेगा। अगले साल और जमीन तैयार करना। एक साथ पट्टा करवा दूंगा। अच्छा, जमीन हुई, मकान हुआ, किंतु शादी के बारे में क्या सोचा है ?"

गुलच हंस पड़ा।

"उसी के लिए तो मुझे ढूंढने गया था।" आग की लकड़ियों को ठीक करके चंद्र जरा गंभीर होकर बैठ गया। और एक बीड़ी सुलगाई। कुर्ते की जेब से कंघी निकालकर सर के बालों को ठीक किया।

"हां, हां, बोल।"

"एक दुल्हिन लाने की सोच रहा हूं।"

"शादी करेगा ?"

"ऊंहूं, किस प्रकार शादी करूंगा, दुल्हिन खुद ही आना चाहती है।"

"पिछली बार की तरह तो नहीं होगा ?" चंद्र ने पूछा।

"ऐसा होने की संभावना नहीं है, अच्छी लड़की है।"

"लड़की अच्छी हो या बुरी, इससे क्या ! गार्जन क्या कहता है ?"

"और कोई दूसरा नहीं है..." गुलच ने चंद्र की मुंह की ओर देखकर कहा।

बीड़ी का कश लगाकर चंद्र कुछ देर तक कुछ सोचता रहा। एक बार बाहर बारिश की ओर ध्यान दिया, अभी रुकी नहीं थी। ठंडी हवा भी चल रही है।

कुछ देर बाद चंद्र ने कहा, "हां, ठीक ही किया है। एक दुल्हिन लाना बुरा नहीं है। किंतु सभी काम सोच-समझकर करना चाहिए। थिंकिंग गुड। कब

तक लाएगा ?''

"अभी निश्चय नहीं किया है। बिहु के बाद डालिम गांव में बड़ा भोज है, भोज के दिन ही लाने को सोच रहा हूं।''

"दुल्हिन क्या कहती है ?''

"क्या कहेगी ? उसकी राजी खुशी है।''

"डु वन थिंग, एक काम कर। यहां मौलवी है या नहीं ?''

"मौलवी ?'' गुलच ने चंद्र की ओर ताका।

"हां, एक मौलवी का बंदोबस्त करके रखना। दूसरे की लड़की के साथ क्या यों ही घर बसाएगा ? पहुंचते ही मौलवी द्वारा निकाह करवा लेना। ऐसा करने पर तुम लोगों का कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकेगा। चेनिमाइ को लाते ही यदि निकाह करवा रखता तो ऐसा नहीं हुआ होता।''

गुलच का मुंह उज्ज्वल हो उठा। इस बात का ख्याल उसके मन में आया ही नहीं था। निकाह कर लेने पर उसका संबंध दृढ़ हो जाएगा।

"हां, तूने यह अच्छी बात कही है। हमारे यहां का मजफ्फर मौलवी है न, उसी से कहकर रखूंगा।''

"नहीं, मजफ्फर से न कहना। वह बड़ा संदिग्ध चरित्र का आदमी है। मैं उसे अच्छी तरह जानता हूं। सिपरिया गांव के उस छोर पर सिद्दीक मौलवी है न, सिलहट का आदमी है, उससे कहके रखना। लड़की को लाकर घर पहुंचते ही निकाह करवा लेना।''

"सिद्दीक को मैं नहीं जानता। तू ही बंदोबस्त कर देना, चंद्र !''

"तू कैसा मूर्ख है ! तेरा निकाह और मौलवी का बंदोबस्त मैं करूं ? मेरे कहने से क्यों आएगा ? यू मैरेज, आइ निकाह !''

"नहीं चंद्र, तमाशा न कर। तेरे कहने से भी वह आएगा। जरूरत हो तो चार आना पैसा पेशगी भी दे आना।''

"अच्छा, कुछ कर लूंगा; किंतु तू तो उसे भगाकर ही लाएगा। शादी नहीं करेगा न, जरा सावधान रहना। हां, असली बात तो पूछा ही नहीं, वह लड़की है कौन ?''

"तू जानता ही है, वह कपाही...तुझसे कहा था न ?''

"हां, समझ गया, समझ गया, अच्छी लड़की है; किंतु दोनों को ले आना पड़ेगा न ?''

"ऐसा नहीं करूंगा तो कैसे चलेगा ? किसको लाऊंगा और किसको छोडूंगा ? समय कितना हुआ ?''

"मालूम नहीं, किंतु अंदाज से मालूम होता है कि शाम होने वाली हैं। मैं चलता हूं। आज रात को लगता है कि बड़ी सर्दी पड़ेगी।''

"मैं भी चलता हूं। डालिम जाना है।'' गुलच ने कहा।

"जाना है तो मेक हेस्ट, जल्दी कर, आज लौटेगा या नहीं ?"

"कहां रहूंगा, लौटना ही पड़ेगा, गृहस्थी को इस प्रकार क्या छोड़ सकता हूं ?"

दोनों निकल पड़े।

"एक बात हुई, चंद्र..."

"क्या ?"

"दो चीजों का अभी भी बंदोबस्त नहीं हुआ है।"

"किसका बंदोबस्त नहीं हुआ है ?"

"एक पोखरा, और एक ढेंकी का..."

"होगा, होगा। पहले गृहिणी को घर पहुंचा। पोखरा, ढेंकी आदि सब हो जाएगा, उनकी चिंता में अभी से ही सूखने की जरूरत नहीं है।"

दोनों आगे बढ़ गए।

बारिश जरा रुकी है, किंतु बिलकुल नहीं रुकी। रात को और जोर की बारिश आ सकती है।

रास्ते में जाते समय चंद्र ने समझदार जैसे कहा, "रियली समझा है। हम गांव वालों को छह चीजों की अत्यंत आवश्यकता है न ? बेदली, रिकोयार, कुदाली, दाव, कसली, और ढेंकी ये न हों तो काम चलता ही नहीं।"

गुलच ने कहा, "बाकी सब है। ढेंकी को बैठा सकूं तो काम बन जाएगा। डालिम के हमारे घर में एक पुरानी ढेंकी है, उसे ले आना पड़ेगा न ?"

उसकी बात का उत्तर देकर चंद्र ने कहा, "रास्ता ठीक हो तो हमारे यहां भी मोटर-बस चल सकती है। यह हो जाए तो हमें पैदल नहीं जाना पड़ेगा, चाहे तो एक राइस मील भी स्थापित कर सकते हैं। मैं शहर जाने पर उसके बारे मे बातें करके देखूंगा।"

दोनों के बिछड़ने का समय आ गया।

गुलच ने कहा, "तुझे सहायता करनी पड़ेगी, चंद्र। मेरा अपना है ही कौन ? रुपया पैसा भी नहीं है। इन हाथों से और कितना कमाऊंगा ? सिद्दीक मौलवी को तू लेते आना। मुझे कहां फुरसत मिलेगी ?"

"अच्छा, हो जाएगा। तेरी शादी में क्या मैं सहायता नहीं दूंगा ? किंतु सही दिन के बारे में पहले ही कहना। आइ हेल्प यू...नो एल्ड।"

चंद्र घर चला गया। गुलच भी चादर को सर तक लेकर धीरे-धीरे कपाही के घर की ओर जाने लगा।

नदी के उस पार ही शाम हो गई थी, बदली की रात है, अंधेरा हो गया है। इधर-उधर ताककर गुलच ने देखा कि ठंड और बारिश देखकर सभी लोग घर के भीतर ही जाने लगे हैं।

चौदह

बूढ़ा सफीयत खुद नहीं आता। आजकल गूंगे को भी नहीं भेजता। दूसरे आदमी से कहला रहा है। आश्वासन भी दिया गया है, तरा की शादी हो जाने के बाद कपाही के लिए कुछ कर दिया जाएगा। उसे इस तरह और भरी जवानी में वैधव्य जैसा कष्ट झेलना नहीं पड़ेगा। हो सकता है, नाहर भी उसे पुनः अपना ले। उसे अब पहले की तरह गुस्सा नहीं है। और वह यदि राजी न भी हो तो कपाही जैसी एक औरत से कौन नहीं शादी करेगा ? उसका रूप और सौंदर्य सब अटूट है। अब भी देखने से वह सोलह-सत्रह साल की लड़की लगती है। उसकी उम्र तीस के करीब होने को है, यह कौन कहेगा, और आजकल तीस वर्ष है ही क्या ? शहर की लड़कियों के लिए दूल्हा देखने का समय अभी ही हुआ है। हजारिका साहब की एक लड़की का विवाह उस दिन छत्तीस साल की उम्र में ही हुआ है।

पहले तरा की शादी हो जाने दे।

बीच-बीच में सफीयत कपाही को बुला भेजता है। कपाही जाती है। चाय-नाश्ता करके आती है। कभी-कभी धान कूटकर चावल की भी व्यवस्था कर आती है। आने के समय कभी-कभी उसे एक आना पैसा भी दे देता है। अभी संबंधी के लिए रास्ता खुला-सा लगता है।

कपाही के सामने गूंगे की प्रशंसा करके कोई लाभ नहीं होता, उसे सफीयत जानता है। इसलिए उसके बारे में कुछ न कहकर अपने घर के बारे में ही कहता है। जमीन हो तो कुछ न कुछ फसल उपजेगी ही।

कपाही ने अब तक हां या ना कुछ नहीं कहा है। वह मन ही मन परख रही है, अपने मन की बात औरों से नहीं कहती। मौका देखकर वह निर्णय लेगी। तरा का यदि कुछ इंतजाम कर सकी तो वह अपनी व्यवस्था खुद कर लेगी।

गुलच जब कपाही के घर पहुंचा उस समय वह घर में नहीं थी। बूढी सफीयत ने बुला भेजा था, दोपहर के बाद ही निकल गई थी। लौटने में कुछ देर होगी। आजकल खाना खिलाकर ही भेजता है, बूढ़े का स्नेह बढ़ा है।

"भैया हो क्या ?"

"हां, बड़ी सर्दी पड़ी है, तरा ! आग को जरा ठीक तरह से जला। तेरी मौसी नहीं है क्या ?"

तरा ने कहा, "कपाही सफीयत के घर गई हुई है; जल्दी नहीं लौटेगी।" और लौटने पर भी डरने की जरूरत नहीं है। आज या कल वे एक साथ ही रहेंगे।

"वह रात के समय क्यों गई है ?" आग में हाथों को सेंककर गुलच ने पूछा।

"मैंने कहा था न कि देर करने से विपद की ही संभावना है।"

"तू मत डर, और देर नहीं करूंगा, बिहु आ ही गया; उसके बाद के जुम्मे

के दिन भोज है न ? और कितने दिन बाकी हैं ?"

"मुझे इतना डर लग रहा है, मौसी भी मुख खोलकर कुछ नहीं कहती। यों ही आशा दिला रही है। बाद का डर है कि जोर करके कुछ कर न डाले।"

"मान लो कुछ कर ही डाला, तू क्या करेगी ?" तमाशा करने के बहाने गुलच ने पूछा।

गुस्सा करने का भाव दिखाकर तरा ने कहा, "ऐसा कहने में तुम्हें शर्म नहीं आती ? मर्दो का क्या है, कहोगे ही ! मैं दूसरी लड़की की तरह नहीं हूं। तुरंत यदि ले जाओगे तो जाऊंगी। औरों के साथ जाऊंगी भी नहीं, प्यार भी नहीं है। तुम यदि मुझे न भी ले जाओ, औरों के साथ नहीं जाऊंगी—तुम्हारी होकर रहूंगी, चाहे जहां भी रहूं।"

"गुलच ने तरा को पास खींच लिया।"

"तुझसे केवल मैंने दिल्लगी की थी। तू मेरी न होकर और किसकी होगी ? किसी कारण से तू यदि मेरी न भी हो सकी, मैं भी तुझे ही चाहता रहूंगा। मैंने क्या और किसी को प्यार किया है ?"

तरा ने गुलच के घुटनों में अपना सर को रख दिया, गुलच ने उसके सर और पीठ पर हाथ फेरकर प्यार किया।

"तुम यदि छोड़ दोगे तो मैं बचकर नहीं रहूंगी। मुझे धनशिरि के गर्भ में ही खोजना।"

"तू भी मुझसे दूर नहीं रह सकेगी। मैं तुझे कभी नहीं छोडूंगा चाहे जो भी हो।"

"गुलच ने तरा को और पास खींच लाना चाहा।

अपने को छुड़ाकर तरा ने कहा, "ऐसा अभी नहीं करना चाहिए। अभी मौसी पहुंचने वाली ही है, देखूं ! देह पर से हाथ हटाओ।"

"तुझे बुरा लगा है ?" गाल पर हाथ को रखकर गुलच ने पूछा।

गुलच की छाती मे सहजता से कुछ समय तक पड़े रहकर तरा को संतुष्टि हुई। इसके बाद गुलच ने धीरे-धीरे कहा, "तरा, मैं तुझे कभी भी अलग नहीं होने दूंगा। क्या तू मुझे छोड़कर जाएगी।"

उसके प्रश्न का कोई उत्तर दिए बिना तरा एकांत आवेगता के साथ उसके गले में लिपट गई।

घर की छत पर रिमझिम बारिश का कोमल और शांत स्वर है और दीवार पर ठंडी हवा का शोर है। आग के गर्भ में एक लाल उत्ताप है ? दो दिलों के स्पंदन एक होने लगे हैं !

कहीं दूर एक सियार हुवां-हुवां करके भागा है। तरा धीरे-धीरे गुलच को छोड़कर थोड़ा हट आई और आग में कुछ लकड़ियां चढ़ा दीं। वह सर नीचा करके

बैठी रही, मानो उसके लिए उसे लाज लगी है। उनका चेहरा बिलकुल लाल हो उठा।

केवल चौदह साल की लड़की है तरा, किंतु उसी उम्र में वह भरपूर जवान हो गई थी। मोटा-ताजा शरीर, मोटे और सुडौल हाथ-पैर, अनार के फूल जैसे होंठ, सरल गंभीर सुंदर नयन युगल को देखकर गुलच की आंखें तृप्त पूरी नहीं होतीं। कपाही भी सुंदर है, किंतु उस प्रकार की नहीं है, दूसरे प्रकार की सुंदरता उसमें है। कपाही को देखकर लोभ पैदा होता है। तरा को देखने से प्यार करने का मन होता है, गोद में उठा लेने का मन होता है। उसके साथ कुछ-कुछ बिना मतलब की बातें करने का मन होता है। तरा बड़ी छोटी लड़की है।

"तो मैं अभी चलता हूं, तरा !"

"भात खाकर जाना—नहीं तो कहां खाओगे ? इतनी सर्दी पड़ी है।"

"खाना हुआ है तो, दे !"

खाने में बैठकर गुलच ने कहा, "पर भोज के दिन रात को याद रहेगा न ?"

"दूसरे न भूलें तो ठीक है ?" तरा ने कहा।

खाना खाते समय ही कपाही आ पहुंची। जापी बाहर रखकर कपाही भीतर आई, "हिस ! बड़ी सर्दी पड़ी है। ओ तरा, एक लोटा गरम पानी..." अकस्मात गुलच को भात खाते देखकर कपाही रुक गई।

"हां, इधर आया था, तरा ने भात खाकर जाने को कहा..." गुलच ने कैफियत दी।

"सफीयत बूढ़े ने बुला भेजा था। रात काफी हुई होगी !" आग के पास बैठकर कपाही ने कहा।

"किसलिए बुलाया था ?"

प्रश्न का सीधा उत्तर न देकर कपाही ने कहा, "मैं वहां से भात खाकर ही निकली। तरा, तू खा ले।" उसके बाद कहा "क्या करूं, समझ में ही नहीं आ रहा है।"

"क्या हुआ है ?"

"कुछ होगा ही, किंतु कहां ? इधर कुछ इंतजाम हुआ है या नहीं ?"

"हां, सब हुआ है। उस ओर से तो सब ठीक है।"

कपाही ने कहा, "भोज के लिए और अधिक दिन नहीं हैं। पहले सामानों को ले जाना अच्छा था।"

"गाड़ी आएगी" गुलच ने कहा।

भात खा चुकने के बाद कपाही ने एक सलाह दी—भोज के दिन गुलच का इधर नहीं आना ही अच्छा है। वे गाड़ी लेकर यहां से जाएंगे, नदी के किनारे से ले जाने के लिए कोई आए तो अच्छा होगा।नहीं तो किसी प्रकार से भेद खुल जाने का डर है।

सिद्दीक मौलवी को चंद्र की सहायता से किस प्रकार बंदोबस्त करके रखा गया है। उसके बारे में गुलच ने पूरी बात बताई। तरा भीतर से सारी बातें कान लगाकर सुन रही थी। उसने कुछ भी नहीं कहा, किंतु एक बात उसकी समझ में नहीं आई कि उसकी मौसी ये सारे बंदोबस्त चुपचाप क्यों कर रही है। तरा यदि जाना नहीं चाहती तो जोर करके कोई भी उसे गूंगे के साथ नहीं ब्याह सकता। यदि ऐसा हो भी जाए तो वह गले में फंदा डालकर मर जाएगी। कपाही को इस प्रकार डरकर चलने की कोई जरूरत नहीं है। तिस पर भी तरा ने सोचा—तेरे लिए ही मौसी ने ऐसा किया है, क्या मौसी को गुलच के लिए कम स्नेह है !

जाने के समय गुलच ने तरा को आवाज नहीं दी। बारिश कुछ अधिक होने के कारण कपाही ने उसे एक जापी ले जाने के लिए कहा। गुलच के हाथ में नेपाली खुखरी थी, उसे भय नहीं है।

अकेले जाते समय उसके मन में नाना भाव आने लगे थे। तरा यदि आज अपने पिता के साथ रही होती तो उसे प्राप्त करने के लिए इतना प्रयत्न नहीं करना पड़ता। सीधे लड़का मांगकर सर्वसामान्य रीति से उसको अपने घर लाता। आज वह अकेला है, गरीब है। इसलिए ही एक लड़की के लिए आज उसे चोर की तरह ऐसा करना पड़ रहा है। उसे धिक्कार हुआ।

किंतु उसे अच्छा भी लगा। अभिमान भी हुआ। उसका अपना कोई न रहते हुए भी उसने अकेले ही एक घर बनाया है, वह अकेले ही तरा जैसी एक लड़की को लाकर घर बसाएगा, उसने अकेले ही 12-13 बीघे जमीन आबाद की है, और आबाद करेगा। यह मेरा अपना संसार है, इसमें और किसी का भी हिस्सा नहीं है—उसने कहा।

पंद्रह

डालिम गांव की मस्जिद में जुम्मे के दिन भोज है, यह बड़ी बात है। साल में बड़े भोज दो होते हैं। एक, बैशाख के बीच में या जेठ के शुरू में खेती के प्रारंभ के समय। दूसरा माघ के महीने में, खेती की फसल घर लाने के बाद। दोनों भोजों को मसजिद का समाज बड़ा पवित्र मानता है। बीमार या रोग आदि से बचने के ख्याल से अथवा किसी कामना की पूर्ति के लिए बहुत-से लोग भोज में अपनी ओर से चंदा देते हैं या मन्नत करते हैं।

भोज के दिन समाज के लोगों को और काम नहीं होता। घरों को साफ-सुथरा

कर कपड़ा लत्ता धोकर, नहा-वहाकर पूरी तरह परिष्कृत हो जाते हैं। हर परिवार में चावल का चूर्ण बनाते हैं। और उससे पीठे भी तैयार करते हैं। मस्जिद में सार्वजनिक रूप से कड़ाही के कड़ाही मांस बनता है। शाम के समय गांव के लोग बच्चों को साथ लेकर मस्जिद में आते हैं। मस्जिद के दालान में, आंगन में पंक्तिबद्ध होकर बैठते हैं, अपने साथ आए हुए सबके लिए एक-एक करके पीठा रखकर बाकी को सामूहिक भंडारे में दे देते हैं। हर एक पत्ते पर परोसने वाला करछुल से मांस दे आता है। लोग थोड़ा-बहुत खाकर पीठा और मांस को बांधकर घर में जाने लगते हैं, अपने-अपने चंदे के अनुसार अपना-अपना हिस्सा पाते हैं। दरअसल इस सार्वजनिक भोज की सामूहिक सामग्री केवल यही मांस है। मौलवी, गांव का मुखिया और सरदार अधिक पाते हैं। चावल को कूटकर बुधनी बनाने के लिए तरा को सफीयत बूढ़ा आकर भोज के अगले ही दिन बुला गया। कपाही ने कहा, "अच्छा जाएगी, उसके लिए खुद को आने की क्या जरूरत थी ? किसी से कहला भेजते !"

सफीयत ने कहा, "ओ तरा, तू जरा जल्दी जाना, दो पसेरी चावल का चूर्ण बनाना है; इसके अलावा पीठा भी तुझे ही बनाना है।"

कपाही ने कहा, "मस्जिद में जाने के लिए हमारा कोई भी नहीं है। किंतु समाज को हमारी ओर से दो-चार पीठे देने होंगे। मैं ही बना लूंगी। पाव भर चावल का चूर्ण बनाकर पीठा तैयार कर दूंगी। अच्छा तरा, जाएगी ... !"

तरा को आपत्ति या विरोध करने को समय ही नहीं मिला।

जाते समय सफीयत कहता गया, "तरा, हमारे यहां भोज खाकर ही जाएगी, जरा रात भी हो जाए तो चिंता न करना...।"

"तुम्हारे यहां रहने से और क्या चिंता है" कपाही ने कहा।

तरा का कंठ सूखने लगा।

क्या ! मौसी कल यहां से जाने की बात भूल गई है ? सफीयत बूढ़ा के घर यदि रात हो जाए और गुलच यदि गाड़ी लाकर मुझको न पाकर लौट जाए तो क्या वह उसे कम बुरा मानेगा ? क्या मालूम, वह क्या सोचेगा।

क्या मौसी दूसरी बात ही सोच रही है ?

तरा जरा चिंतित और घबराने लगी। तथापि उसने निश्चिय किया, चावल का चूर्ण और पीठा बनाकर वह चली आएगी, जिस किसी प्रकार से हो, चली आएगी। अंधेरा होते वह लौट आएगी ही। उसे कोई भी नहीं रोक सकता। गुलच की गाड़ी आए या न आए, वह उस घर में और नहीं रहेगी, उसकी मौसी को जो होना है होगा। जरूरत पड़ने पर वह खुद ही घर से भागकर गुलच के यहां चली जाएगी। सिपरिया गांव में वह दो बार गई है, दूर से गुलच की पाही भी उसने देखी है।

उसने कपाही से कुछ न कहा। उसे सफीयत ने घर क्यों बुलाया है ? मौसी को बुलाया होता तो अच्छा होता। उसकी मौसी यदि समय पर न आ पहुंचती तो

वह अकेली ही गुलच के घर चली जाती।

और बुलाया है मुझको ही !

कपाही सोने गई, किंतु तरा अपने सामानों को समेटने लगी। सभी सामानों को ठीक करके जाऊंगी, गाड़ी आएगी और कोई बात नहीं है।

सफीयत के घर भोज के पीठा बनाने का मौका मिलने के कारण उसे कुछ आनंद भी हुआ। जिस किसी को भोज का पीठा बनाने के लिए नहीं दिया जाता, पुण्य का काम होता है, उसको भी शायद कुछ पुण्य होगा।

तरा को नमाज पढ़ना नहीं आता। उसे मुनाजात करना भी नहीं आता है। तथापि बिस्तर पर पड़े-पड़े उसने चुपचाप अपने मन में प्रार्थना की : कल के दिन मानो कोई अनहोनी न घटे। कल मैं यहां से गुलच के घर जाऊंगी। कल मेरी शादी होगी, मुझे सफीयत बूढ़े के घर से जल्दी ही भेज देना...।

उसे गुलच की बात याद आई, कल से उसे अकेले नहीं रहना पड़ेगा। मैं उसके साथ रहूंगी, मैं उसके सीने पर पड़ी रहूंगी, वह मुझे अपने दोनों बाहुओं से पकड़े रखेगा। उसके लिए भोज के दो चार-पीठे और तरकारी लेती जाऊंगी, सिपरिया गांव में तो भोज नहीं हुआ है। पोटली को छिपाकर ले जाना पड़ेगा।

मौसी के गले के मीना किए हुए बिरी (गहना) के बारे में उसको याद आया। उसे आजकल मौसी अपने गले में ही रखती है, मुझे वह नहीं देगी क्या ? न दे तो न दे ? गुलच देगा—अब नहीं तो बाद में लूंगी। पूरी जमीन की रोपाई करने पर, आलू-सरसों अधिक होने पर—आधे तोले की एक जोड़ी चूड़ी ले लूंगी। किंतु उससे पहले लेना होगा एक जोड़ा धूरिया (कर्ण-फूल) और एक अंगूठी। हो सकता है, गुलच मेरे लिए एक अंगूठी गढ़ा ही रहा हो...।

उसको धीरे-धीरे नींद आने लगी।

सोलह

भोज खाकर मस्जिद में इकट्ठे हुए लोग अपने-अपने घर चले जाते हैं। मग़रिब की अजान हो चुकी है। सांझ हो गई है। माघ महीने का छोटा दिन है। देखते ही देखते शाम हो गई। माघ बिहु के बाद की बारिश रुक गई थी; आज नवमी या दशमी है ! कोहरा होते हुए भी प्रकाश है।

सफीयत के परिवार के सभी मर्द मस्जिद चले गए। मस्जिद जाते समय बूढ़े ने पुनः तरा से कहा, "तू अभी न जाना। खा-पीकर जाना। तेरा भैया तुझे छोड़

आएगा।''

उसने कुछ नहीं कहा।

गूंगे ने तरा के आस-पास दो-चार चक्कर लगाए; किंतु उसके पास आने का साहस नहीं किया।

मस्जिद से पीठा आदि लेकर लौटने के बाद भी उसने देखा कि उसे पहुंचा आने के लिए किसी को भी ख्याल नहीं है। उसको खाने के लिए पीठा दिया गया, किंतु उसका मन खाने में नहीं था, जाने में था। गुलच की गाड़ी अब तक पहुंच गई होगी। क्या उसके लिए वह इंतजार करता रहेगा ?

सफी की बहू से एक बार मिलकर उसने किसी तरह कहा, "भाभी, मुझे जाना है, और रात भी काफी हुई है। घर में मौसी अकेली है।''

भाभी ने एक व्यग्य हंसी हंसकर कहा, "वह भी तेरा घर है, और यह भी तेरा घर है। क्या करेगी जाकर ? यहीं रह...।''

उसे सुनकर तरा के रोएं खड़े होने लगे, ये लोग किसी प्रकार का षड्यंत्र तो नहीं कर रहे हैं ? यह मेरा घर कैसे हो सकता है ?

उसने कुछ देर और इंतजार किया, उसके बाद उसने सफी बूढ़े को खोजा, बूढ़ा नहीं है। उसे और बुरा लगा। उसे अभी कौन छोड़ आएगा। गूंगे के साथ वह कदापि नहीं जाएगी, जरूरत पड़ने पर वह अकेली ही जाएगी। वह डालिम की लड़की है, डालिम गांव में वह बड़ी हुई है। यहां के रास्तों को वह जानती है। अब तक उसे बाघ नहीं खा सका। आज भी नहीं खा सकेगा।

बड़ी उद्विग्नता से वह इधर-उधर करती रही। घर के दूसरे लोगों को मानो उसकी ओर देखने की फुर्सत ही नहीं है।

मस्जिद का भोज हो गया है, यहां पुनः चहल-पहल क्यों है ? उसका मन किसी अनिश्चित आशंका से घबरा उठा, उसे भय भी लगा।

वह एक बार मारल घर (भीतर की तरफ बैठने का घर) में निकल आई। दरवाजे के पास पहुंचकर वह ठिठक गई, सफीयत यहां बैठा हुआ है, साथ में गांव के और दो-चार आदमी हैं। वह पीछे की ओर सरककर दीवार के इस किनारे ही रुक गई।

"अब जल्दी करो और किसी के आने की बात है क्या ? मूल आदमी ही नहीं पहुंचा है, अहमद मुंशी अभी भी नहीं पहुंचा है, निकाह कौन पढ़ाएगा ?''

तरा के दोनों पैर जोर से कांपने लगे, वह दीवार को पकड़कर किसी तरह खड़ी रही।

"लड़की की मौसी से कहा है न ?''

"करीब-करीब कहा ही हुआ है। आपत्ति करने कि लिए उसे कुछ भी नहीं है। उसको है ही क्या ?''

और सुनने के लिए तरा में न शक्ति थी और न धैर्य। उसके सर में चक्कर आने लगा था। वह किसी प्रकार से उस जगह से हट आई।

वह निस्सहाय-सी चारों ओर देखने लगी, उसकी आंखों के सामने लालटेन मानो नाचने लगी हो। पैर के नीचे की जमीन मानो कांपने लगी हो।

वह कुछ समय तक अनिश्चित भाव से फर्श के बीच खड़ी रही, उसने अकस्मात एक बात सोची—उसके मन में एक तरकीब कौंध गई, उसने क्षण भर में निश्चय कर लिया।

उसने चारों ओर ताका, मर्द घर के सामने की ओर हैं मारल घर में, औरतें रसोई-घर की ओर। और एक क्षण की भी देर नहीं की जा सकती।

दूसरे ही क्षण वह चुपचाप पीछे की तरफ के दरवाजे से सफीयत के घर से निकल गई।

सफीयत के घर के पीछे एक चौड़ा मैदान है, और उसके पार एक पतला जंगल है। किसी विशेष बात के बारे में बिना सोचे तरा ने मैदान को दौड़कर पार किया और जंगल के संकरे रास्ते से जल्दी-जल्दी आगे बढ़ी।

आज इस समय उसे किसी भी हिंसक बाघ या सांप से डर नहीं हैं, उसको भय है मनुष्य से, सफी से, गूंगे से। उसने किसी तरह भाग जाने का प्रयत्न किया, कहां जा रही है, उसके बारे में बिना सोचे ही वह जंगल के बीच से ठोकरें खाकर दौड़ने लगी। उसको केवल एक ही चिंता है—या तो अपने घर पहुंचूंगी या धनशिरि के किनारे। कोई यदि जोर करे—या तो धनशिरि में कूद पड़ूंगी या छूरे से आघातकर खुद भी मर जाऊंगी।

और गुलच की गाड़ी यदि रास्ते में ही मिल जाए ! भय और आशंकाओं के बीच भी उसके मन में आनंद की लहर दौड़ गई। उस समय दुनिया का कोई भी मेरा कुछ भी नहीं कर सकेगा, मैं गुलच के साथ चली जाऊंगी।

आधे घंटे के करीब दौड़ने के बाद वह हांफने लगी, वह जरा ठहर गई, माघ महीने की सर्दी की रात में भी उसको पसीना आ गया था, उसके कपाल पर से पसीना बहने लगा।

उसको जरा डर होने लगा। इतनी रात में इधर कहां आई ? यह तो रास्ता नहीं है, जंगल है। रास्ता खो गया है क्या ? इधर जाने से कहां निकलूंगी ? कहीं पुनः सफी के घर निकल पड़ूं ?

तरा ने एक बार आकाश के चांद की ओर ताका किंतु चांद को देखकर भी वह अंदाज नहीं कर सकी कि वह किस ओर आई; जिस ओर से वह आई थी उस ओर उसने ध्यान दिया—दूर, बहुत दूर उसने मनुष्य की क्षीण आवाज सुनी, किंतु कितनी दूरी पर—वह अंदाज नहीं कर सकी। कभी बिलकुल पास जैसा मालूम होता है और कभी बहुत दूर। किंतु उसने अपने दिल के कंपन को सुना, उसके हाथ-पैर

कमजोर पड़ने लगे।

एक पेड़ को पकड़कर वह कुछ समय के लिए रुक गई। इसके बाद और सोचे बिना ही उसने चलना शुरू किया, रुकने के लिए समय नहीं है।

रात का भी उसे डर नहीं है। भय उसको मनुष्य से है। वह ठीक तरह से कुछ भी नहीं देख पा रही है। जंगल का अंत हुआ है, ये सूखे खर हैं, कोहरा मिश्रित चांदनी में उसे सब कुछ अस्पष्ट दिखाई पड़ रहा है। उसे अजनबी-से लगे, धुंधले कोहरे से होकर वह आगे बढ़ती गई।

उसे अकस्मात मालूम हुआ, उसके पैर के तले यह कोमल, नम जमीन है—मिट्टी है या बालू ? वह रुक गई सामने की ओर देखा। यह तो धनशिरि है ! इधर-उधर घूम-घामकर वह आकर धनशिरि के किनारे पहुंची है।

तरा अकस्मात निडर-सी हो गई, यह परिचित धनशिरि निराश्रितों का आश्रय है, असहायों का सहाय है।

शांत भाव से बहने वाली नदी की ओर उसने एक बार देखा। कोहरा नदी के बहाव पर उतर आया है, उसके ऊपर चांदनी का पतला रंग है। उसको चलने के लिए ताकत न होने की तरह लगा, नदी के कगार की बालू पर ही वह बैठ गई, नदी के किनारे और अधिक सर्दी है, कोहरे की छाती को चीरकर हवा धीरे-धीरे बह रही है। तरा ने चारों ओर देखा, कोई भी नहीं है, कुछ भी नहीं है। उसके चारों ओर कोहरे से घिरा हुआ एक मटमैला संसार है, एक परिचित नदी के अपरिचित कूल हैं, एक परिचित गांव का अपरिचित छोर है, न समझने वाली चांदनी, समझ के बाहर का कोहरा है। चांदनी—धूसर रहस्यावृत शब्द ही रात है।

एक अकेली भयार्त्त लड़की है।

चारों ओर अजनबी रात का आवरण है।

तरा को किसी बात की चिंता न कर सकने की तरह लगा। वह अकस्मात मानो सब सुध-बुध खोने लगी है, उसकी चेतना-शक्ति मानो लुप्त हो गई है।

कुछ देर तक वह उसी तरह बैठी रही, उसने सोचने का प्रयत्न किया कि उसको आए कितनी देर हो गई है—एक घंटा-दो घंटे ! या इससे भी अधिक ?

सफी ने मेरी खोज में हमारे घर में आदमी भेजे होंगे वे शायद मुझे चारों ओर खोज रहे हैं ! उसका विश्वास हुआ कि सीधे घर न जाकर इधर आने से अच्छा ही हुआ ! वे मुझको पकड़कर ले आते।

किंतु गुलच की गाड़ी आकर मुझको न पाकर यदि लौट गई ! गुलच क्या सोचेगा ? मेरे ऊपर वह खूब गुस्सा होगा, वह मुझको बुरा समझेगा। सभी बातों को जब तक स्पष्ट न कर दूं तब तक वह मुझसे शायद बोलेगा ही नहीं !

किंतु जब गुलच को मालूम हो जाएगा तब वह मुझको अधिक प्यार करेगा। उसके लिए ही तो मुझे इतना कष्ट झेलना पड़ रहा है, और किसके लिए ?

तरा को ऐसा लगा कि अभी बहुत रात हो गई है। इस माघ के महीने में नदी के किनारे इस प्रकार अकेले बैठ रहना अच्छा नहीं है। आकाश में चांदनी है—यही गनीमत है। अब रात का दूसरा पहर चल रहा है, और बैठे रहना अच्छा नहीं है।

तरा खड़ी हुई, चारों ओर एक बार देखा। घर को किस ओर से जाना होगा ? नदी के किनारे-किनारे ऊपर की तरफ या नीचे की तरफ ? क्या मालूम, कहां जाकर निकलूंगी ? जहां कहीं भी निकलूं उसकी अपेक्षा यहां गंभीर रात में नदी के किनारे बैठा रहना अच्छा नहीं है। और इतनी सर्दी पड़ी है, अब तक गर्मी लग रही थी फिर सर्दी लगने लगी है, इतनी सर्दी में बैठ रहने से बीमारी ही होगी। होंठ सूख गए हैं हाथ-पैर सर्दी से निस्सार हो गए हैं, पैर की अंगुलियां ठिठुर गई हैं।

उसने नदी की ओर एक बार देखा। इसके बाद बिना सोचे नदी के किनारे, ऊपर दक्षिण की ओर जाने लगी।

चारों ओर सन्नाटा है, चिड़ियों की चहचहाने की आवाज भी किसी तरफ से नहीं आ रही हैं। सियार भी हुआं-हुआं नहीं कर रहा है। बाघ भी नहीं दहाड़ रहा है, भैंसों के रखवालों की लंबी-लंबी आवाज भी नहीं है। कोहरे की नीरवता में लीलती हुई केवल एक पृथ्वी है। तरा के पैरों के नीचे की बालू में ही केवल खस-खस की आवाज होती है, और उसके शरीर पर लगे खर और दूसरे पौधों के पत्तों में खरर-खरर आवाज होती है, पत्तों में लगे हुए ओस कण उसके शरीर में लगते हैं।

उस समय अधिक रात नहीं हुई थी, किंतु उसे लगा था कि रात बहुत हो गई है। उसके पैरों के छाप धीमे पड़ गए हैं। धनशिरि के किनारे के निश्चित आश्रय को छोड़कर वह दूर नहीं जाना चाहती है, आज सबेरे से अब तक का समय उसे एक युग जैसा लगने लगा। उसे सबेरे ही सफीयत के घर चावल का चूर्ण बनाने के लिए जाना, भोज के पीठों को बनाना, मस्जिद में भोज के कारण हुए कोलाहल और उसके बाद वह भयावह घटना। ये घटनाएं उसे मानो याद ही नहीं आ रही हैं। एक दिन के भीतर बहुत सारी घटनाएं हैं। बहुत-सी अनबुझ घटनाएं। समझने के लिए चेष्टा करने से उसे डर लगने लगा।

नदी का किनारा उसे अकस्मात परिचित-सा लगा, कुछ भी भूल नहीं है—यह बरगद का पेड़ है यह घाट है, और यह उनके घर जाने का बाट है।

धनशिरि की ओर एक बार ताककर वह घर के रास्ते पर बढ़ गई।

सत्रह

गुलच और चंद्र दोनों ने मिलकर सारा बंदोबस्त किया। भीम और तिखर ने भी कुछ सहायता की। गाड़ी का बंदोबस्त किया चंद्र ने, घाट में नाव थी ही—मल्लाह से भी चंद्र ने कह रखा था कि किसी के पार होने की बात का प्रचार न हो। मल्लाह ने इससे पहले भी इस प्रकार की लड़कियों को पार किया है। उसने विश्वास दिलाया।

एक समस्या हुई—लड़की को लाकर घर में प्रवेश कराने के लिए भी एक औरत की जरूरत है ? चंद्र ने एक बार कहा—गुलच की मां को ही एक बार समझा-बुझाकर लाने से कैसा होगा ! गुलच तैयार नहीं हुआ, तिखर ने एक उपाय सुझाया—गुलच यदि कहे तो मोलोका अपनी बहू चेनिमाइ को भेज सकता है। गुलच ने शुरू में विरोध किया, इसके बाद उसने उसके बारे में गौर किया—खराब नहीं होगा, ठीक है चेनिमाइ से अधिक उसकी परिचित और कौन है ?

यद्यपि चोरी करके भगाकर ले आने वाली लड़की है, चंद्र ने कहा—हम छोटा-मोटा एक विवाह ही करवा डालेंगे। समाज का समर्थन रहने पर गुलच-तरा के मिलन में किसी को आपत्ति नहीं होगी।

मौलवी समय पर आ गया।

गुलच घाट पर नहीं गया—गया तिखर। चंद्र को दूसरी ओर ध्यान देना जरूरी है। चंद्र के परामर्शानुसार घाट के इस पार भी एक बैलगाड़ी रखी गई। उस पार से दुल्हिन गाड़ी से आएगी—वहां भीम उसका साथ देगा, गाड़ी भी एक नेपाली की है—मल्लाह नदी को पार करा देगा—इस पार दूसरी गाड़ी पर चढ़ाकर तिखर दुल्हिन को घर ले आएगा। पहुंचते ही जरा-सा भी विलंब न करके मौलवी निकाह पढ़ा देगा। दुल्हिन के साथ रहेगी चेनिमाइ।

चंद्र ने ढाढस दिलाया—एवरीथिंग ऑलराइट्। सब ठीक हो जाएगा।

साथ ही मौलवी को पहले ही समझा रखा था। निकाह कुइक्लि करा देना। बाकी मंत्र आदि जो कुछ हो तुम अपने घर में करते रहना—समझे ?

इन बातों में मौलवी अत्यंत समझदार है, मूंछ के नीचे वह केवल हंसा, और अपना सर हिलाया : "मियां-बीवी का मन यदि एक हो जाए तो वही असली निकाह है, बाकी केवल हमारे लिए ही।"

चंद्र इस बात को समझता है।

गांव के सबके सब मस्जिद के भोज में गए—उसी मौके में कपाही के घर के सामने नदी पार कर लिया गया। सभी सामान कुल मिलाकर एक गाड़ी में आ गए।

रात के आठ बजे करीब पुनः आकर कपाही के घर के सामने रुकी। मुर्गे की एक मेखला, पाट के रेशम की एक रिहा और अस्सी नंबर वाले सूत की एक

चद्‌दर पहनकर और हाथ में एक पोटली लेकर कपाही घर से निकल आई अकेली। भीम आगे बढ़ आया।

"और कुछ भी नहीं है न ?"—उसने पूछा !

"नहीं," कपाही जल्दी-जल्दी गाड़ी पर चढ़ गई। गाड़ी चल पड़ी। रुकी हुई नाव से उन्होंने नदी को पार कर लिया।

घाट पर तिखर ने कपाही को दूसरी गाड़ी पर चढ़ा लिया। गाड़ी पर चढ़कर ही कपाही ने कुछ जोर से भीम से कहा, "भीम तू घर जाने के पहले ही हमारे घर में एक बार झांक जाना।"

"क्या काम है ?"

"तरा सफीयत के घर गई थी, शायद वह लौट आ सकती है। किंतु उसके वहीं रहने की ही बात है। यदि वह आए और तुझसे मिले तो कह देना कि मैं आई..."

भीम ने मल्लाह के यहां बैठकर एक चिलम गांजा पीया और धीरे-धीरे कपाही के घर की तरफ बढ़ने लगा।

उसने यों ही अपने आप कहा, ये बातें अच्छी नहीं हो रही हैं।

भीम के लिए यह नई बात नहीं है। डालिम गांव और सिपरिया गांव में शादी बहुत ही कम होती है, प्रायः भगाकर ले आता है या भाग आती है। आखिर में समाज को पान-सुपारी दे देने से ही सब ठीक हो जाता है। शादी करने के लिए कितनों की सामर्थ्य है ? सबके सब गरीब हैं।

चंद्र के निर्देश का मौलवी ने अक्षरशः पालन किया। चेनिमाइ लंबी दामन लिए हुए कपाही को गाड़ी से उतारकर भीतर ले गई। कपाही के बैठने के साथ ही साथ मौलवी पहुंचा। तिखर और गाड़ीवान निकाह के साक्षी बने। मौलवी वकील भी बना, खुतबा भी पढ़ा। दूल्हे का क्या नाम है, दुल्हिन का क्या नाम है—उसके बारे में ध्यान देने की किसी को जरूरत नहीं थी। मुहराने का निर्णय मौलवी ने ही कर दिया—पचास रुपए।

"कबूल किया है ?"

"हूं।"

"बस और कोई बात नहीं है।"

सिलहट के मौलवी ने खुतबा पढ़ा, मुनाजात की, इसके बाद चाय पीकर गुलच और चंद्र से आदावर्ज किया !

एक रुपया हाथ में देकर चंद्र ने पूछा, "निकाह अच्छी तरह पढ़ाया है न ?"

"हां, खूब अच्छी तरह पढ़ाया है," मौलवी ने कहा।

चाय-वाय पीकर सब अपने-अपने घर गए। चेनिमाइ और तिखर को गुलच दूर तक जाकर छोड़ आया।

जाने के लिए तैयार होकर चंद्र ने पूछा, "देखता हूं, औरत एक ही आई ?"

संक्षेप में गुलच ने कहा, "क्या जानें।"

विदा लेने के समय चंद्र ने अपनी एंड़ी चद्दर के नीचे से कागज की लिपड़ी हुई एक पोटली निकालकर गुलच की तरफ बढ़ा दी।

"वह क्या है ?" गुलच ने पूछा।

"सैंडिल है, तरा को उसकी शादी में एक सैंडिल देने की बात कही थी न मैंने..."

"अच्छा दे..."

पोटली को गुलच घर के भीतर रख आया।

"तुम लोग अब आराम करो, मैं चलता हूं," कहकर चंद्र ने विदा ली।

उस समय रात काफी हो गई थी। नदी किनारे की जनहीनता और कुहरा रात को और गंभीर कर डालता था। एक बड़ा काम करने का गौरव लेकर चंद्र ने विदा ली। थोड़ी दूर जाने के बाद उसने चिल्लाकर कहा, "गुलच, गुड नाइट !"

गुलच कुछ देर आंगन में ही खड़ा रहा।उसके मन में एक प्रकार की हलचल हुई, उसने चारों ओर एक बार देखा, सब अपने-अपने घर चले गए हैं। एक अभूतपूर्व आंनद में वह बत्ती को हाथ में लेकर भीतर के कमरे में आया।

कपाही ने सर पर के दामन को हटाकर आंखों को फाड़कर गुलच की ओर ताका, गुलच सुध-बुध खोने लगा, वह मानो कपाही को पहचान ही नहीं सका।

"क्या देख रहे हो ! क्या मुझे नहीं पहचान रहे हो ? मैं ही हूं..."

"तू ?"

"हां, मैं ही हूं। मैं न हूं तो और कौन होगी ?"

कपाही बैठने की जगह से उठ आई, उसके सामने खड़ी होकर उसके हाथ को पकड़ा।

"तरा कहां गई ?"

"कहां जाएगी ? आएगी। आज सफी बूढ़ा बुला ले गया था, नहीं भेजा होगा !" सहजता से कपाही ने कहा।

गुलच ने अकस्मात अपने हाथ को कपाही के हाथों में से छुड़ा लिया।

"क्या हुआ ?" कपाही ने जरा विस्मित होकर पूछा।

सर नीचा करके गुलच धीरे-धीरे बाहर निकल आया। आंगन में खड़ा होकर उसने एक बार धनशिरि की ओर ताका। कुहरे के उस ओर धनशिरि अकेली बह रही है, शांत भाव से—ठीक तरह से दिखाई नहीं पड़ती है। धीरे-धीरे, किंतु भयभीत होकर कपाही भी आकर उसके पास खड़ी हुई।

कुछ देर चुप रहकर कपाही ने धीरे से पूछा, "उस ओर क्या देख रहे हो ?"

कपाही का संबोधन नया था, उसकी आवाज भी अपरिचित-सी लगी। 'यों

ही' उसने कहा, "वह हमारी जमीन है।"

कपाही उसके और पास चली गई और उसके हाथ को पकड़ा। उसकी आवाज बिलकुल रूखी है !

"पास ही है ?"

"हां—उसके उस ओर ही नदी है..."

दोनों जरा देर कोहरे के बीच से ही नए सिरे मे तैयार की गई जमीन की ओर देखते रहे। इसके बाद गुलच ने कहा, "भीतर चल, यहां बड़ी सर्दी है।"

"रात भी काफी हो गई है," कपाही ने कहा।

भीतर आकर कपाही ने कहा, "मेरे आने के बारे में हमारे यहां कोई भी नहीं जानता।"

गुलच ने धीरे से केवल इतना कहा, "हूं।"

कुछ देर तक दोनों बैठे रहे—शब्दहीन, पास-पास। गुलच कुछ सोच रहा था, बीच-बीच में कपाही की ओर ताकता था, बीच-बीच में सर नीचा कर लेता था। जरा भय और जरा संदेह की दृष्टि से कपाही भी बीच-बीच में उसकी ओर ताकती थी।

मिट्टी का दीया उनसे कुछ दूरी पर धीमा-धीमा जल रहा था, कहीं भी किसी प्रकार की आवाज नहीं है।

धीरे-धीरे कपाही ने कहा, "सर्फायत बूढ़ा इस प्रकार की तरकीब कर रहा था कि तरा को अकेली रखकर मुझको नाहर के पास पुनः भेजना चाहता था।"

"नाहर के पास ?"

"हूं। वह अब तक कोई दूसरी लड़की नहीं लाया है। मैं आज यदि भागकर नहीं आती तो वह कुछ कर डालता।"

गुलच ने कपाही के मुख की ओर ताका—तो उसके लिए प्यार है। अपना आदमी अब भी है तो भी उसे छोड़कर गुलच के पास भाग आई है।

कुछ देर बाद उसने पूछा, "तरा को भी क्यों नहीं ले आई ?"

"आएगी, वह यहां न आकर कहां जाएगी ? गूंगे के साथ शादी करने के लिए वह कभी भी राजी नहीं होगी। किंतु साथ कैसे ले आऊं ?"

गुलच ने कुछ भी नहीं कहा, उसका मन न जाने कैसा हो गया था। उसने यों रोना चाहा, किंतु हंस दिया। यों ही।

गुलच के पास आकर कपाही ने उसके मुख को अपने हाथों के बीच कर लिया और उसकी ओर देखकर धीरे से कहा, "रात काफी हो गई है, क्या सोओगे नहीं?"

कपाही को सीने में लेकर गुलच को लगा कि मानो कपाही एक नई गबरू है। उसकी देह में एक जवान लड़की का कच्चा नशा है। कपाही उससे बहुत छोटी लड़की है।...

अठारह

घाट से लौटकर भीम पुनः कपाही के घर पहुंचा। चारों ओर निस्सार है। थोड़े समय के भीतर ही मानो कपाही का घर उजड़ गया है। भीम को कुछ बुरा भी लगा, हां उजड़े घर में लोगों को आना नहीं चाहिए।

उस समय रात का दूसरा पहर चल रहा था।

भीम ने एक बार चारों ओर देखा, कपाही कम चालाक औरत नहीं है। गांव के एक छोर पर दोनों मौसी-बेटी किस तरह रह रही थी ! भय-शंका भी नहीं है, और आज क्या वह कम साहस करके इस घर-द्वार को छोड़कर चली गई है ?

भीम घर के भीतर चला गया। भीतर अंधेरा है, कुछ भी दिखाई नहीं पड़ता, है ही क्या ? देखने में है ही क्या ? कुछ देर तक इस प्रकार रहकर उसे अच्छा लगा, घर के भीतर बाहर से गर्म है। किंतु कुछ क्षण बाद वह फिर आंगन में निकल आया। कुछ भी नहीं है, घर में सामान छोड़कर जाने वाली औरत कपाही नहीं है।

अकस्मात मकान की तरफ ताककर उसने देखा कि कोहरे के बीच से धीरे-धीरे कोई आ रहा है। उसको जरा डर लगा, खुखरी को हाथ में अच्छी तरह पकड़कर उसने जोर से आवाज दी, "कौन है ?"

तरा घबरा गई। साथ-साथ वह भी चिल्ला पड़ी, "कौन ?"

भीम पास चला गया, उसने तरा को पहचाना।

"मैं भीम हूं। तू तरा है क्या ?"

"हां, मैं तरा हूं।"

"इतनी रात अकेली कहां से आई है ?"

"तू यहां क्या कर रहा है ?"—तरा जरा आगे बढ़ आई, "मौसी कहां गई ?"

"तेरी मौसी गई है न ? बहुत पहले ही मैंने घाट पार करा दिया है। तेरी मौसी ने ही कहा था कि घर में तो कुछ नहीं रह गया है ? इसलिए इसे एक बार देखने के लिए आया था।"

तरा थोड़ी देर के लिए घबरा गई। उसके बाद व्याकुल होकर उसने पूछा, "तो मौसी चली गई ?"

भीम ने कहा, "बड़ी सर्दी पड़ी है। तू घर के भीतर ही आ, तरा ! मैं आग जलाता हूं, तेरे पास सलाई है ?"

तरा भीम के पास आई।

"भीम भैया !"

"क्या हुआ, तरा ?"

"मैं भी उस पार जाऊंगी..."

"तू जाएगी नहीं तो यहां किसके साथ अकेली रहेगी ? किंतु, अभी काफी

रात हो गई है।''

"होने दे, मैं यहां नहीं रहूंगी, मैं अभी जाऊंगी। तू मुझे पार करके आ सकेगा ?''

"इतनी रात धनशिरि पार करना अच्छा नहीं है। अभी सबेरा होगा ही, तब तक यहीं रह।''

तरा घर के भीतर आई, भीम के हाथ से सलाई को लेकर उसने कोने में पड़े लालटेन को जलाया, इसके बाद उसने अपनी पोटली को खोजा, मौसी उसे भी ले गई।

कहीं अकेली बिल्ली बैठी थी। तरा को देखकर वह निकल आई। म्याऊं, म्याऊं करके उसके पैरों में वह लिपट गई। तरा ने उसकी ओर देखा। क्षण भर के लिए वह दूसरी बातों को भूल गई। उसने बिल्ली को गोद में भर लिया। बिल्ली की गर्मी उसे अच्छी लगी ! उसने तुरंत ही बिल्ली को उतार दिया।

और बाहर निकल आई।

"भीम भैया, मैं चली...''

"अभी ही जाएगी ?''

"हां आ, तू मुझे छोड़ आना। नदी पार करा देने से ही हो जाएगा। उस पार मैं चली जाऊंगी।''

तरा बढ़ गई, उसके पीछे भीम भी जाने लगा। रास्ते में भीम ने पूछा, "तेरी मौसी तुझे साथ क्यों नहीं ले गई ?''

तरा ने कुछ भी नहीं कहा।

आज जैसी एक डरावनी रात उसके जीवन में कभी आएगी भी, उसने इसे सपने में भी नहीं सोचा था। वह बहुत दिनों से अकेली ही अकेली मानो घूम रही है। चारों ओर सिर्फ अंधेरा और कोहरा है, कब सबेरा होगा !

कोहरा और रात की हवा लगकर तरा के होंठ फट गए थे। उसके ठिठुरे हाथ-पैर दुखने लगे थे। किंतु एक बड़ी उद्विग्नता के कारण उसका शरीर गर्म हो गया था, उस समय वह पगली-सी हो गई थी।

नदी का घाट निःशब्द सो रहा था। कोहरा घना बनकर नदी के ऊपर उतर आया था। चांद धुंधला हो गया था। एक निःशब्द भरा हुआ गांव सो रहा था।

तरा और भीम आवाज किए बिना आगे बढ़ रहे थे। भीम को किसी प्रकार की बात पूछने की इच्छा नहीं हुई थी। वह मानो सब समझ गया था, कुछ भी नहीं समझ रहा था। कपाही तरा को साथ क्यों नहीं ले गई, क्या गुलच कपाही से शादी करना चाहता था, तरा से नहीं ? उम्र में तरा छोटी है ? चैादह साल की है, किंतु उसका गठन तो छोटा नहीं है, वह गबरू हो गई है। और कपाही...वह भी गबरू बनी हुई है। गुलच से वह दो-चार वर्ष बड़ी ही होगी तो क्या होगा वह बिलकुल

ही जवान बनी हुई है, उनका घर आबाद होना चाहिए। तरा का बंदोबस्त भी वे एक दिन अवश्य कर देंगे।

दोनों घाट पीर पहुंचे। एक खूंटे में नाव बंधी हुई है, चप्पू नहीं है।

भीम ने कहा, "तरा, जो हुआ सो हुआ; गुलच और कपाही तो कहीं भागकर नहीं जाएंगे। अब जाकर उनकी नींद हराम करना और सवेरे पहुंचना एक ही बात है, हम घाट की छान के नीचे थोड़ी देर के लिए बैठें। इतनी सर्दी पड़ी है कि हाथ-पैर सभी ठिठुर गए हैं।"

तरा ने आपत्ति नहीं की, उसको बड़ी सर्दी लगी थी। उसके हाथ-पैर कांपने लगे थे।

भीम ने आग जलाई। घटवार की इकट्ठी ही हुई लकड़ियों को आग पर डाल दिया। तरा और भीम दोनों आग के सामने बैठ गए। कोई भी बात नहीं कर रहा था।

हाथ-पैर जब गरम हो उठे, वे मानो सजग हो गए।

भीम ने कहा, "थोड़ी देर बाद सबेरा होगा। तुम लोगों के लिए ही आज मेरी रात भी बर्बाद गई। आज यदि तुझे गुलच के साथ जाने की बात ही थी तो तुझे दूसरी जगह नहीं जाना चाहिए था।"

तरा ने कुछ भी नहीं कहा।

दूर कहीं दो-चार मुर्गे बांग दे रहे थे। रात मानो अकस्मात समाप्त हो गई है। अपने देह-मन मानो पतले-से हो गए हैं। किंतु उस समय भी आकाश और पृथ्वी दोनों कोहरे में छिपे हुए थे।

तरा एकाएक उठ पड़ी।

"मुझे नदी को पार करा दे, भीम भैया !"

"हूं, सबेरा होने का समय हो गया है।"

"उधर का रास्ता कैसे जाएगी ?"

"तू जरा आगे बढ़ा देना। मैं पहुंच जाऊंगी।"

भीम भी उठ पड़ा।

घटवार की छान में रखा एक छोटा चप्पू वह खोज लाया और घाट में उतर आया।

अभी धीमा प्रकाश हुआ था। भीम के पीछे होकर तरा गुलच के घर की ओर चलने लगी। नम जमीन, सूखी घास-कोहरे में भीगी हुई।

कपाही बिस्तर से उठकर दरवाजा खोलकर बाहर आई थी। सामने तरा को देखकर ठिठक गई। किंतु अधिक आश्चर्य न दिखाकर उसने कहा, "तू आ गई ? भीतर ही चली जा। तेरा मौसा अभी उठा ही नहीं। मैं नदी में नहाकर आती हूं।"

तरा कुछ देर के लिए आंगन में खड़ी रही। उसकी आंखों पर धुंधलापन छा

गया। वह बैठ गई। गुलच आज उसका मौसा है ! तरा का सपना टूट गया है। उसने पूरब की ओर देखा। इस आकाश को वह नहीं पहचानती।

उन्नीस

इस बात की जानकारी डालिम गांव में अगले दिन ही हुई। सफीयत के घर से जब तरा गायब हो गई, कुछ देर के लिए लोगों ने उसे खोजा। किंतु कोई विशेष हो-हल्ला नहीं हुआ। सफीयत ने कहा, "ये सब भगेरू लड़कियां हैं, गई तो अच्छा ही हुआ। खोजने की कोई जरूरत नहीं है, नहीं खोएगी।"

किंतु, इस पर भी अगले दिन सफीयत ने तरा के घर यह देखने के लिए आदमी भेजा कि तरा वापस गई है या नहीं। उसी समय सभी बातों का रहस्य खुला।

किसी ने कहा—गुलच ने तरा से शादी की।

किसी ने कहा—तरा से नहीं, कपाही से।

दो-एक दिन के भीतर सभी इस बात को निश्चित रूप से जान गए कि गुलच ने कपाही से शादी की है, तरा से नहीं।

तरह-तरह की आलोचना-प्रत्यालोचना हुई अनुकूल और प्रतिकूल, दोनों प्रकारों की।

तरा को दिखाकर गुलच को फुसलाया और बाद में वह खुद उसके साथ चली गई। औरतों पर विश्वास नहीं किया जा सकता।

उसका पहले से ही कपाही के साथ संबंध था। उस संबंध को उसने अब पक्का किया है।

कहते हैं कि उसने तरा को भी शादी करने की आशा दिलाई थी।

तरा ने भी उस पर काफी भरोसा किया था, किंतु उसने धोखा दिया।

किसने किसको धोखा दिया है, कैसे जानेगा ? किस्मत में जिसकी जो लिखा हुआ है कौन बाधा दे सकता है।

तरा को शादी करने की उम्र तो गुजर नहीं गई है। उसकी उम्र ही क्या हुई है, कपाही से शादी करके गुलच ने अच्छा ही किया है।

चंद्र एक दिन गुलच से मिला।

"...तूने यह क्या किया है, गुलच ? मैने सोचा था कि तेरा लगाव तरा के साथ था, औपजिट !"

अपराधी की तरह सर नीचा करके गुलच ने कहा, "तूने ठीक ही सोचा था।

मैंने इस प्रकार सोचा नहीं था, कहीं गड़बड़ हो गई है।"

"तरा के साथ यदि तेरा लगाव था तो कपाही के साथ निकाह क्यों पढ़ा था ?"

"मैं जान ही नहीं सका। मौलवी ने क्या कहा था उसके बारे में ध्यान ही नहीं दिया। तरा की जगह उसकी मौसी ही आएगी, मुझे क्या मालूम था ?"

"हां उसके बारे में मैंने भी उस समय नहीं सोचा; मैंने सोचा था कि घूंघट काढ़कर तरा ही इस प्रकार आई थी। अब जो हुआ सो हुआ। अब ठीक तरह से चलना, तरा को स्नेह करना..."

"क्यों नहीं करूंगा ? मैं उसको स्नेह करता हूं, किंतु यहां आकर वह मन मारकर रहने लगी है।"

"कुछ दिनों के लिए उसको दुख होगा ही, शी मस्ट सारी। तुम दोनों उससे स्नेह करना। वह छोटी लड़की है—नाट ओल्ड गार्ल।"

गुलच ने कहा, "अच्छा, यह जो हुआ, सो हुआ। देखते ही देखते बुआई का समय आ गया। जितनी जमीन मैंने तैयार की थी, उसके पट्टे तो तू बनवा दे..."

"अच्छा बनवा दूंगा, तू चिंता न कर। इस वर्ष तू अच्छी तरह खेती कर। दाल, सरसों का दाम बढ़ा है, गल्ले का दाम भी बढ़ेगा। अब तू अकेले नहीं है, यू थ्री मैन। अच्छी तरह यदि खेती नहीं करता है तो अकाल में मरेगा।"

गुलच ने भी यह बात सोची है, उसे अभी ज्यादा काम करना पड़ेगा। वर्ष भर के लिए यदि वह अनाज का इंतजाम नहीं कर सकेगा तो उनको कष्ट होगा, कपाही क्या खाएगी, तरा क्या खाएगी ?"

कपाही भी यों ही बैठने वाली औरत नहीं है। अगले ही हफ्ते में उसने गुलच से कहकर दो करघों का इंतजाम करवाया। साथ लाए हुए संचित रुपयों से सूत खरीदवाए। दोनों करघों पर उसने अलग-अलग कपड़ा बुनना शुरू कर दिया। क्या बैठे रहने से खाने को मिलेगा ? करघों के सारे औजार वह अपने घर से ले आई थी।

गुलच को तरा के मुंह की ओर ताकने में भी डर लगता है, तरा को देखने पर उसका मन ठंडा पड़ जाता है, खुद अपराधी की तरह लगता है, वह चुप रहता है।

तरा के जीवन में बहुत परिवर्तन हुए हैं। उस नीरव परिवार में वह और नीरव हो गई। वह बात करती ही नहीं, सर नीचा करके चुपचाप काम करती रहती। सबेरे वह मौसी और गुलच से पहले ही उठती, घर-आंगन साफ करती, नदी से पानी भरती, गाय—बैलों को चारा देती, धान कूटती, घर-आगंन लीपती, और गुलच और मौसी के खाने के बाद घर का सारा काम करके सोती। किंतु सभी कामों में लगे

रहने पर भी उसके मुंह से कोई शब्द नहीं निकलता, पृथ्वी पर मानो और कोई नहीं है। वह अकेली है।

गुलच तरा के मन की बात जानता है, किंतु उपायहीन होकर वह दूर-दूर रहता है, वंशी लेकर नदी के किनारे घंटों बैठा रहता है, बैलों को चरवाने ले जाकर रात को आकर घर में घुसता है।

कपाही केवल बातें करती रहती है, मानो कहीं कुछ भी नहीं हुआ है, वह और गुलच मानो बहुत दिनों से इस तरह ही हैं, तरा भी मानो उनके घर इसी तरह ही थी।

फागुन ने अपना आवरण बदला, चैत के महीने ने करवट ली, वैशाख आया, धनशिरि की छाती में नए पानी का बहाव आया। गुलच के घर के आंगन में नई घास उगने लगी। जमीन नम होकर उपजाऊ होने लगी।

कपाही ने बतख के अंडों को से कर बच्चे निकाले और उन्हें दरबे में रख दिया है, तरा ने भी अपने चूजों को कौवों और चीलों से रक्षा का प्रयत्न किया।

इसी बीच गुलच एक बार डालिम गांव गया। गांव के ही एक परिवार में अपनी मां को बुलवाकर उसने कहा, "तुझे ले जाने के लिए आया हूं, मां ! मेरे यहां चल।" उसी मां ने गुस्से में बड़बड़ाकर कहा, "तेरे यहां ? क्यों ? उस रखनी के हाथ का खाने के लिए मैं तेरे यहां आऊंगी ? चाहे मेरी हालत बदतर भी क्यों न हो जाए, उसके साथ एक ही आंगन में रहने नहीं जाऊंगी।"

सर नीचा करके गुलच ने कहा, "तरा भी है न..."

"उसके रहने से क्या होता है। जैसी मां है वैसी बेटी है। किसी दिन वह भी चंपत होगी। अच्छा किया, उस रखनी को अपने घर में लाकर अब तू ही सुख से रह, मेरे बारे में चिंता न कर।"

उसको भी गुस्सा आ गया था। उसने कहा, "नहीं जाएगी तो नहीं जाएगी, बहू के हाथ का खाना तेरे भाग्य में ही नहीं है।"

"उसके हाथ का खाने की क्या गरज पड़ी है" उसकी मां ने कहा।

किसने किससे ब्याह किया, कौन किसके साथ भाग गई—इनके बारे में सोचने का समय डालिम गांव के लोगों को नहीं है, ब्याह हो जाना ही असल बात है। जो जिससे ब्याह करे ! गुलच को इस ब्याह से किसी प्रकार की असुविधा नहीं हुई। यह अच्छा हुआ या बुरा, इसके बारे में सोचने के लिए उसे जरूरत नहीं हुई। एक औरत की घर में जरूरत है—कपाही ही हो या और कोई। कौन उसको राजा बनाएगी ?

अपने घर में गुलच को जरा संकोच-सा लगता है। किंतु हर काम में वह तरा को ही बुलाता है।

"देख तरा, एक कटोरा पानी ला।"

"तरा, मेरी कमीज को धोकर रखना..."

"तरा, इन जिंदा मांगुर मछलियों को जिला कर रखना..."

"तरा, बैल-गायों को पानी पिलाने के लिए भूलना मत..."

तिस पर भी तरा के साथ उसका अपना संबंध वह अब भी सहज नहीं बना सका। तरा के मौन के बीच मानो एक अव्यक्त शिकायत भीतर ही भीतर उठते-बैठते वह देखता है। उसको बड़ा संकोच होता है, उद्वेग रहता है, इससे मुक्त रहने के लिए वह यों ही तरा को बुलाता है।

कपाही ने एक ही दिन में गुलच के प्रति अपने संबोधन को बदल दिया। "जिस गुलच को वह एक दिन 'तू' कहकर पुकारती थी, आज उसे 'तुम' कहकर संबोधित करने में उसे कोई कठिनाई नहीं हुई। और गुलच को भी कपाही को दीदी की जगह उसका नाम लेकर संबोधित करने में कुछ भी हिचकिचाहट नहीं हुई।

किंतु तरा ऐसा कर नहीं सकी, रोज जिसे भैया कहकर पुकारती थी, उसे 'मौसा' कहकर वह पुकार नहीं सकी। आजकल वह गुलच को किसी प्रकार का संबोधन किए बिना ही पुकारती है, न 'तुम' कहती न 'आप'। भैया भी नहीं कहती, मौसा भी नहीं कहती, किसी प्रकार गोल-मटोल करके पुकारती है। एक न छोड़े जा सकने वाला संकोच उसे बाधा देता है।

इतना होते हुए भी गुलच के प्रति उसके आदर-भाव में कमीं नहीं आई। दिन-दिन बढ़कर वह और गाढ़ा होने लगा। स्पष्ट रूप से कुछ भी न कहने पर भी गुलच की सुविधाओं के बारे में वह पूरा-पूरा ध्यान रखती है। उसके धोती-कुर्ता साफ कर देती है, फटा हुआ कपड़ा सी देती है, उसकी रुचि के अनुसार खाना पका देती है, उसके हर काम में वह सहायता देती है। गुलच को अच्छा लगता है, वह आभार मानता है, किंतु स्पष्ट रूप से कुछ नहीं कहता, कह नहीं सकता।

मवेशियों को मैदान में घास चराते समय कभी यदि अकस्मात बारिश आ जाए तो वही दौड़कर एक जापी ला देती है, पैर में कभी कांटा घुसने पर वही पास में पलथी मारकर बैठकर उसे निकाल देती है, किसी काम के करते समय चाकू से उसका हाथ कट जाए तो वही जरा नमक-हल्दी बांध देती है, गर्मी में कहीं से आने पर वही पास बैठकर उसको पंखा झेल देती है, उसे आराम के लिए वह उसके साथ छाया की तरह रहती है।

किंतु मुंह से वह कुछ भी नहीं बोलती, वह निर्वाक है। यह-वह काम करने के लिए कहकर इधर-उधर की बात पूछकर गुलच उससे दो-चार बातें करने का प्रयत्न करता है, किंतु वह आवश्यक उत्तर के सिवा कुछ नहीं बोलती। हंसना मानो वह भूल ही गई है। गुलच हार जाता है। कपाही इन बातों के प्रति ध्यान नहीं देती। कौन हंसा, कौन बोला—इन्हें देखने के लिए उसे फुर्सत नहीं है। वह नए घर को संभालने लगी है। अकेला एक आदमी क्या करेगा, कितना करेगा, सबके कुछ न

कुछ करने से ही कुछ होगा।

तरा के प्रति संकोच की भावना रहने पर भी गुलच सुखी था। उसको इधर पकाया हुआ खाना और खुला दरवाजा मिला है। अपने सुख-दुख की बात करने के लिए एक औरत मिली है। उसके अलावा, इस नए संसार का वही सृजक है, वही पालक है, उसके ऊपर कहने के लिए कोई नहीं है।

अब वह जितना चाहे उतना ही खेत में काम कर सकता है, या यों ही समय काट सकता है, धनशिरि के किनारे बैठकर जितना चाहे उतना वह आकाश को देख सकता है। खर के पौधों के बीच वह यों ही घूम सकता है।

रात की चांदनी में कपाही और वह आंगन में चटाई बिछाकर बैठे रहते हैं, तरा भीतर खाना पकाती है, वे अपने छोटे-छोटे अभावों के बारे में विचार करते हैं भविष्य की कल्पना करते हैं।

एक पोखरा खोदना पड़ेगा।

खेती के लिए हो सके तो एक भैंसा खरीदना होगा।

उस ओर के सेमल के नीचे की जमीन में केला-जहा धान ही अच्छा होगा। सुवागमणि धान का बीज और लेना चाहिए।

बीच—बीच में उंची आवाज में, बीच—बीच में फुसफुसाकर वे प्यार की दो—चार बातें करते हैं जीवन में घटी असोचनीय घटनाओं के बारे में सोचकर रोमांच का अनुभव करते हैं।

उन्हें चांदनी अच्छी लगती है, उस पार से आने वाली हवा अपनी-सी लगती है।

हो सकता है कि तरा उनकी बातों को कान लगाकर सुनती रहती है, किंतु वह उसमें भाग नहीं लेती। अपने मन की बात वह अपने से ही कहती रहती है। उसकी बातों को हवा सुन सकती है, रात सुन सकती है, पृथ्वी का और कोई नहीं सुन सकता।

एक छोटा-सा परिवार है, एक शांत जीवन है। सुख-विलास का एक छोटा-सा सपना है—बहुत बड़ी आशा है। व्यवस्था छोटी है

"यहीं आंगन के छोर पर फूलों के दो पौधे लगाऊंगा"—जमीन की ओर इशारा करके कपाही से गुलच ने कहा।

"हां"—कपाही ने संक्षेप में कहा। वह शायद उस समय फूल की बात सोच ही नहीं रही थी।

तरा सुनती है। वह भी सोचती है कि फूल के पौधे लग जाने पर वह रोज पानी सींचेगी। बत्तख, कबूतर, गाय-बकरी, कुत्ते-बिल्ली के प्रति उसे खूब प्यार है, उन्हें गोद में उठाकर वह प्यार करती है, उनके साथ बातें करती है।

कपाही पहले से मोटी हुई है, देखने में सुंदर हुई है, उसका चेहरा खिल उठा

है। उसका उत्साह भी बढ़ा है, उसके मुंह से हंसी जाती ही नहीं। उसकी ओर ताककर गुलच का मन खिल उठता है। तरा यदि कहीं जाती है ? तो वह कह ही देता है, "खूब बढ़िया रंग चढ़ आया है, क्या लगाया है ?"

कपाही का चेहरा शर्म से लाल हो उठता है, उसकी आंखें सजल हो उठती हैं। तरा भी पहले से मोटी और सुंदर हो रही है उसके हाथ-पैर सुडौल हुए हैं उसके गाल गुलाब के फूल जैसे हुए हैं, उसके होंठ लाल हो उठे हैं।

गुलच उसकी ओर ज्यादा समय ताक नहीं सकता। वह दूसरी ओर मुंह कर लेता है। तरा भी शायद इस बात को समझती है, वह भी शर्म से लाल हो उठती है।

धनशिरि के किनारे जीवन का स्रोत धीरे-धीरे आगे बढता है।

गुलच के परिवार वालों का जीवन भी।

बीस

अलग—थलग, एक ओर, मैदान के बीच में पाही का मकान है। वही मकान धीरे-धीरे स्थाई मकान बन जाता है। साधारण रूप से लगाए जाने वाले केले और सुपारी के पौधे हरे-भरे हो जाते हैं। पाही का मकान अब पाही का मकान रह नहीं जाता। पाही का पराया मन धीरे-धीरे घरेलू मन में परिवर्तित हो जाता है। नए सिरे से आबाद की जाने वाली जमीन पर नए जीवन की तलौंध पड़ी है।

तिखर बीच-बीच में गुलच के घर आता है। सुख-दुख की दो-चार बातें करते हुए बैठा रहता है। तरा तिखर के सामने ज्यादा नहीं आती है, वह जानती है कि तिखर अविवाहित है। इस प्रकार के आदमी के साथ हेल-मेल रखना आवश्यक नहीं है। कपाही तिखर को अपनापन दिखाती है। उसके प्रति वह आभारी है, क्योंकि वही उसको घाट से अगवानी करके गुलच के घर में ले आया था। तिखर यों शांत लड़का है, वह प्यारा है। नौजवान होने पर भी वह चंचल नहीं है। जरा गंभीर है, इसलिए गुलच भी उससे स्नेह करता है। गुलच खुद भी गंभीर आदमी है, ज्यादा बात नहीं करता। पुरुष को जरा गंभीर होना चाहिए।

कभी चंद्र आ जाता है, तरा और कपाही के बारे में पूछ-ताछ करता है। दो-चार बातों के बारे में परामर्श और निर्देश देकर चला जाता है।

कभी भीम आता है, वह अपने गाय—बैलों के बारे में पूछ जाता है, गुलच के गाय-बैलों की देख-भाल वही करता था। कभी-कभी या तो दही ले आता है या

घी। तरा के लिए उसको स्नेह हो गया है, इसलिए उसके बारे में भी वह पूछ—ताछ कर लेता है।

और कभी-कभी अकस्मात या तो सबेरे के समय या दोपहर के बाद चेनिमाइ आ जाती है, वह गुलच के साथ अधिक बातें नहीं करती है, वह बातें करती है कपाही और तरा के साथ। तरा चेनिमाइ को खूब चाहती है।

चेनिमाइ में यथेष्ट परिवर्तन हुआ है। वह यद्यपि गबरू है, तथापि वह अधेड़ औरत-सी लगती है। उसका परिवार गरीब है, इसके अलावा उसका पति रोगी है। रोज उसकी बीमारी बढ़ती ही जा रही है। अच्छी तरह चिकित्सा करने के लिए पैसे का अभाव है, और अच्छी चिकित्सा वहां होना भी संभव नहीं है। बहुत-से लोगों ने उसको शहर के अस्पतालों में ले जाने के लिए परामर्श दिया है, किंतु सभी बात पैसों पर आधरित है। खुद न कहने पर भी चेनिमाइ के मुंह को देखकर ही यह अनुमान किया जा सकता है कि उसका मन दुख से भरा है। उसकी हंसी भी बड़ी सूखी है, विषादयुक्त है।

गुलच को उसके लिए दुख होता है। उसके लिए स्नेह भी हो आता है, किंतु वह कुछ भी नहीं कहता है। वह मन ही मन सोचता है, उसकी खेती यदि अच्छी हो जाए तो वह दो-चार रुपयों का मुख देख सकेगा; और तब वह चेनिमाइ को गोपन रूप से भी सहायता करेगा, यह उसका कर्तव्य है।

कपाही भी कभी-कभी चेनिमाइ के घर जाती है, किंतु तरा नहीं जाती है, अपने घर से वह कहीं भी नहीं जाती है, कहने पर भी नहीं जाती। चेनिमाइ के बुलाने पर भी वह एक फीकी हंसी हंसकर हट जाती है।

तिस पर भी गुलच का परिवार सिपरिया गांव का अपना बन गया।

गुलच ने नमाज पढ़ना नहीं सीखा है। वह सीख नहीं सका, उसके लिए उसको अफसोस नहीं है। गांव के कितने लोग नमाज पढ़ना जानते हैं। वह जुम्मे की नमाज में भी नहीं जाता है। सिर्फ ईद और बकरीद में मस्जिद जाता है। और कुछ न जानने पर भी औरों के साथ उठ-बैठ करता है।

कपाही भी उसे जुम्मे के दिन मस्जिद जाने के लिए याद दिला देती है। पहले न पढ़ा तो न पढ़ा, अब घर संसार बना है, अल्लाह-रसूल का नाम लेना चाहिए, नहीं तो गांव के लोग क्या सोचेंगे ?

वह कुछ नहीं कहता, कपाही से वह कुछ नहीं कहता है कि नमाज के बारे में वह कुछ नहीं जानता और सीखने के लिए भी समय नहीं है।

मस्जिद में न जाने के लिए कपाही कोई विशेष शिकायत नहीं करती। गांव के कितने आदमी नमाज पढ़ते हैं ? जवान आदमी है, उम्र के बढ़ने के साथ-साथ सब करेगा, इसके अलावा मस्जिद काफी दूरी पर है ! जाने पर आधा दिन चला जाता है।

कभी गुलच चेनिमाइ के घर जाता है यों ही कुशल-मंगल पूछ आता है। देने पर एक घूंट चाय पी आता है। केलाई कैसा है, उसकी क्या चिकित्सा हो रही है, उसके बारे में भी पूछ आता है। उसके घर जाने पर चेनिमाइ भी उससे दो-चार बातें कर लेती है। मामूली घरेलू बातें। दोनों मानो दोनों से दूर रहने का प्रयत्न करते हैं। दोनों के जीवन का स्रोत आज बदल गया है''। इस दुर्लंघ्य दूरी को स्वीकार न कर लेने का कोई तर्क नहीं है।

दूसरी ओर, गुलच और चेनिमाइ को एक-दूसरे के विरुद्ध कोई शिकायत नहीं है। आज उनका संबंध करीब-करीब सामान्य हो गया है। इसके अलावा उनके पूर्व-संबंध के बारे में मोलोका, केलाई-तिखर कोई भी नहीं जानता।

आषाढ़ के बीच का समय है।

खेती-बारी का काम आरंभ हुआ है। कुछ जमीन की रोपाई यहां के लोग आषाढ़ के शुरू में ही करने लगते हैं। किंतु कुछ की रोपाई आश्विन तक होती है। ये जमीन नदी की तलौंध में पड़ी हुई नीची जमीन है।

कपाही और तरा दोनों धान की रोपाई के लिए धान की पौध बीनने गई थी। धूप कड़ी थी। सूरज जरा पश्चिम की ओर चला गया था। आंगन के एक छोर पर बैठकर गुलच बैल हांकने का कोड़ा तैयार कर रहा था।

चंद्र के साथ आदमी उसके आंगन में आया।

"क्या है, गुलच ? खैरियत है न ?'' चंद्र ने पूछा।

"हूं, किस तरह ? आ बैठ, तेरे साथ ये कौन है ?''

"चंद्र और आगंतुक दो मूढ़ों पर बैठ गए।''

"तू इन्हें नहीं पहचान रहा है ? हां, नहीं पहचानेगा। आज बहुत दिनों के बाद गांव में आए हैं। ये हमारे बसीरत चचा हैं।''

गुलच ने बसीरत के मुख को अच्छी तरह देख लिया। तैंतीस-चौंतीस साल की उम्र का एक ऊंचा आदमी है। सांवले रंग का है, छोटी दाढ़ी रखी है। एक नई-सी कमीज और एक लुंगी पहनी है।

"क्या कहा, इनके बारे में ?''—गुलच ने पूछा। वह आदमी को पहचान नहीं सका है। उससे पहले कभी उन्हें देखा है, ऐसा उसे याद नहीं पड़ता।

इस बार आदमी ने खुद ही कहा, "मुझे तुम नहीं पहचानोगे। मैंने भी तुम्हें आज ही देखा है। मैं यहां का रहने वाला आदमी नहीं हूं। बहुत दिनों पहले यहां करीब दो वर्षों तक रहा था। आजकल बीच-बीच में आता हूं। कारोबारी आदमी ठहरा, एक ही जगह अधिक दिन तक नहीं रह सकता।''

चंद्र ने कहा, "ये बीजनेस करते हैं...। बड़े अच्छे काम में हाथ डाला है। हमारे असमिया लोग बिजनेस नहीं करते, करने पर भी प्राफीट नहीं कर सकते। इनकी बात किंतु दिफारेंत है, माने बिग बिजनेस, बिग प्राफीट।

पानदान में पान लाकर गुलच ने उनके सामने रखा।

"यहां क्या कारोबार करेंगे ?" उसने पूछा।

इस बार बसीरत जरा गंभीर बना। और धीरे-धीरे कहा, "चाहे रबी हो या खरीफ, खेती के लिए बहुत-से सामानों की जरूरत नहीं होती है क्या ? जैसे अच्छे बीज, बैल और भैंसा, खेती के दूसरे औजार। और कितनों की ही जरूरत होती है। रुपया होने पर ही ये उपलब्ध हो सकते है। किंतु हमारे किसानों के पास कितना रुपया रहता है ?"

बसीरत ने जितना कहा उसमें और योग देकर चंद्र ने कहा, "किसी की जरूरत पड़ने पर बसीरत पेशगी के रूप में रुपए देते हैं। उसके लिए ब्याज नहीं लेते हैं, थोड़ा-सा मुनाफा कमाते हैं, उसे अभी नहीं मांगते। फसल घर लाने के बाद ही लेते हैं। रुपए के रूप में भी लेते है, अथवा दाल, सरसों, आलू के रूप में भी लेते हैं। संक्षेप में, इतने दिन तक जो काम मारवाड़ी और बिहारी व्यापार करके पाही के किसानों को ठगकर खाते थे, अब अपने ही आदमी बसीरत किसानों को सहायता देंगे।" साथ ही चंद्र ने यह भी कह दिया कि रुपया बसीरत का नहीं है, बसीरत के महाजन का है। किंतु बसीरत और महाजन के बीच बड़ा मेल है। बसीरत जो कहते हैं महाजन सुनता हैं, अविश्वास नहीं करता। सत्रह-अठारह वर्ष से महाजन के साथ यह कारोबार करते आए हैं।"

गुलच ने कहा, "मुझे और कुछ भी नहीं चाहिए। एक भैंसा लेने की जरूरत थी, किंतु आप ठहरे कहां हैं ?"

बसीरत ने कहा, यहीं पास ही, धनशिरि के मुहाने से नाव लेकर आया हूं ! बरगद के पास की पुरानी डालिम घाट में मेरी नाव बंधी है। कई रोज ठहर कर ऊपर की तरफ जाऊंगा।"

इसी समय कपाही और तरा खेत से आई। धूप में धान की पौध बीनने के कारण दोनों का चेहरा लाल हो उठा था। कपाल पर से पसीना बह रहा था। धान के ये पौधे पानी में होने के कारण कीचड़ लगाकर उनकी मेखला शरीर पर उलझ गई थी।

आंगन में आदमी देखकर दोनों तुरंत ही पिछवाड़े में चली गई। आदमियों को और नहीं देखा। बसीरत ने किंतु देख लिया था।

गुलच ने कहा, "अच्छा, मैं घर में सलाह-मशविरा कर लूं। जरूरत होने पर चंद्र से कह दूंगा।"

"अच्छा, अच्छा," बसीरत ने कहा, "हम अभी चलते हैं।" वे जाने लगे।

स्नान करने के लिए कपड़ा लाने के उद्देश्य से कपाही भीतर गई और दीवार पर सूराख से झांककर उसने बसीरत को देखा, थोड़ी देर ताककर वह हट आई।

तरा किसी को देखे बिना नहाने चली गई। आजकल नहाने के लिए नदी नहीं

जाना पड़ता। घर की नींव बनाने के लिए एक जगह जमीन को खोदना पड़ता था, उसे ही थोड़ा ठीककर पोखर जैसे कर लिया गया। बारिश के पानी से भर गया है।

रात को खाना खाते समय कपाही ने पूछा, "चंद्र के साथ वह कौन आया था ?"

"कहीं के बसीरत हैं, कारोबारी आदमी हैं। खेती करने के लिए पेशगी, बीज वगैरह देते हैं। मैं एक भैंसा लेना चाहता हूं।"

"यों ही देंगे ?"

"यों ही कौन किसको देता है ? फसल हो जाने पर रुपयों को वापस करना पड़ेगा। थोड़ा ऊपर से देना पड़ेगा..."

"जरूरत नहीं है, उस प्रकार का उधार लेने की। और लोगों को पहले लेने दो, हम बाद को भी ले सकते हैं।

"ठीक है," गुलच ने कहा।

इसके बाद वे किस जमीन में किस बीज को डालने से अच्छी फसल हो सकती है, किस जमीन की कब रोपाई की जाए, किस जमीन में कितनी बार हल चलाना चाहिए आदि विविधि जरूरी बातों पर बहुत रात गए वे बातें करते रहे।

किंतु कई दिनों के बाद बसीरत फिर आया। उस समय घर में गुलच नहीं था, कपाही और तरा थीं।

आवाज देने पर किसी ने भी जबाब नहीं दिया। उसके बार जरा हिचकिचा कर कपाही निकल आई।

"क्या, गुलच घर में नहीं है ?"

"कहां गया है।"

"क्या, अभी नहीं लौटेंगे ?"

"नहीं जानती।"

"भैंसा खरीदने की बात थी..."

"अभी नहीं चाहिए, एक जोड़ा बैल है।"

"क्या एक जोड़ी बैल से नई जमीन में धान की रोपाई हो सकेगी ?"

कपाही ने जवाब नहीं दिया।

"केवल बैलों से ही खर की जड़ों से भरी हुई नई जमीन में क्या खेती हो सकती है ? भैंसे से एक बार जमीन को महीन कर लेने के बाद बैल से भी हल जोता जा सकता है।

"अभी पैसा देने की जरूरत नहीं है। फसल कट जाने के बाद देने से भी होगा। इस वर्ष यदि न भी मिले, अगले वर्ष मिल जाए तो कोई हर्जा नहीं है। कौन कहां भाग जाएगा ?"

कपाही भीतर चली गई, और पानदान में दो बीड़े पान रखकर बसीरत के

सामने कर दिए।

बसीरत ने एक बार अच्छी तरह कपाही को देखा, कपाही ने भी एक बार उसकी ओर ताककर सर नीचा कर लिया।

जब जाने लगा तो बसीरत ने कहा, "मैं रुपया देकर जाऊंगा, एक भैंसा खरीद लीजिएगा।"

कपाही ने धीरे से कहा, "अच्छा मैं कहूंगी"

कोई भी कागजात नहीं है। बसीरत गुलच को नगद तीन कोड़ी रुपया दे गया। दो कोड़ी अठारह रुपए में गुलच ने एक पश्चिमी भैंसा खरीदा। सुंदर, मोटा—ताजा भैंसा है—उसके दोनों सींग बहुत ही बढ़िया हैं, उसका भाग्य यदि साथ दे तो यह आठ-दस वर्ष तक काम देगा, उसकी उम्र अभी लंबी है।

भैंसे के आने पर सबको आनंद हुआ।

आज गुलच भैंसे का हलवाला है। वर्ष के अंत में भैंसे के दाम के साथ और पंद्रह रुपए देने होंगे। फसल यदि अच्छी हो जाए तो यह कोई बात ही नहीं है।

इस साल क्वार के बाद और जमीन आबाद की जा सके तो रबी की खेती भी कुछ अधिक करनी होगी—दाल, सरसों, गोभी, मूली की खेती।

गुलच की आंखों के सामने हरे सपने की जगमगाहट है।

कपाही और तरा के साथ ही साथ गुलच के घर लक्ष्मी आई। परती उपजाऊ जमीन है, तिस पर हर साल नदी की तलों पर जमकर और उपजाऊ हो गई है, हाथ से यों ही यदि कहीं एक बीज रख दिया जाए, तो तुरंत ही उससे हरा भरा-पैाधा उग आता है। कद्दु के पौधे में चैत के महीने से ही फल आया है, खा—खाकर ऊब गए हैं। दो क्यारी अदरख लगाया गया था, वह देखते ही बनता है। पान का एक पैाधा भी लगाया गया है। छोटे मिर्च का पैाधा भी बरघर के किनारे में ही हुआ है—रोज एक अंजली भर तोड़ने पर भी वह भरा रहता है, खूब फला है।

आज गुलच का घर देखकर ऐसा लगता है कि उसका यह बहुत ही पुराना मकान है, नया मकान नही है।

दूर से एक बार देखने से ही गुलच का मन आनंद से भर उठता है। कपाही—तरा कोई भी बेकार बैठी नहीं रहती। घर के भीतर काम न रहने पर बारी में ही कुछ न कुछ करती रहती हैं। मकान के चारों ओर की बारी में फसल के सिवा और कोई चीज नहीं है। आम, अमरूद, जामुन आदि के पौधे खोजकर तीनों ने लगाए हैं। शाम-सवेरे हुई ढेंकी की आवाज गुलच को दूर से ही अच्छा लगता है। अंतिम रात के समय मुर्गे की बांग को सुनकर उसे और मीठा, और अच्छा लगता है। थोड़ी देर बाद वह उठ ही पड़ेंगे।

खेती से अवकाश मिलते ही दोनों ने कपड़ा बुनने का काम आरंभ किया—कपाही ने दोहरी चद्दर बनाने का काम और तरा ने रिहा बुनने का काम। तरा कपड़े

पर चिड़िया की नाखून की तरह जो फूल काढ़ती है वह सबकी ईर्ष्या की वस्तु होती है। डालिम गांव में रहते समय भी लोग उसे तंग करते थे, 'मकड़ी बुनकरिन' कहकर—उसका काम बड़ा महीन होता है। कहीं भी खराबी नहीं होती, भूल नहीं होती।

करघे पर कपड़ा बुनने की आवाज को सुनकर गुलच का मन नाचने लगता है। एक जीवित परिवार है, एक प्राणयुक्त जीवित परिवार है—चारों ओर हरे जीवन रस का प्राचुर्य है।

किंतु इतना होते हुए भी उसके परिवार में एक चीज का अभाव है—तरा की हंसी, तरा की आवाज। तरा अब भी चुप रहती है। बाहर और भीतर के सभी काम तरा कर जाती है—जरा भी आराम नहीं करती, जरा भी थकावट नहीं है। किंतु वह सदा सर नीचा करके चलती है, उसका मन सदैव विषाद से भरा है, कपाही और गुलच सदा ही आपस में बातें करते हैं, कपाही और गुलच हंसते हैं, बोलते हैं। वह चुप रहती है, कुछ भी नहीं कहती है, नहीं बोलती है कुछ भी नहीं पूछती है, वह मानो है ही नहीं। परिवार में उसके रहने का कोई माने भी नहीं है। आनंद की सारी सामग्रियां जीवन में प्राप्त होने पर भी तरा को कोई आनंद नहीं है। उसका मन पहले से कुछ खुला है। किंतु उसके प्राण की प्रफुल्लता मानो कहीं खो गई है। बाहर के संसार को छोड़ अब अपने मन के भीतर के संसार के संभेद को पाने के लिए साधना कर रही है।

इक्कीस

भैंसे पर चढ़कर धान के खेत को निहारकर गुलच नदी के किनारे की ओर जा रहा था। कार्तिक महीने के बीच का समय होगा। करीब-करीब धान के सभी खेतों में फूल आ गए थे। धान की खेत से कच्चे धान की गंध आ रही थी। उस समय तक कोहरा ठीक तरह से छंट नहीं गया था।

धान के पौधों को काटकर भैंस को खिलाने की जरूरत नहीं थी। धनशिरि के किनारे घास का अभाव नहीं था। घुटनों तक लंबी घास, मैदान और दलदल में फैली हुई है।

सिपरिया गांव की दक्षिणी ओर नदी के किनारे एक जंगल है, किंतु डालिम गांव की पश्चिमी ओर के जंगल के जैसा बड़ा और डरावना नहीं है।

इस ओर हाथी अधिक नहीं निकलता है, किंतु हिरण और बाघ हैं। बीच-बीच

में हिरण खेत में धान के पौधे खाकर नष्ट करता है। किंतु गुलच की जमीन से जंगल थोड़ी दूरी पर है—बिलकुल पास नहीं है।

भैंसे को एक दलदल में छोड़कर गुलच जंगल की ओर बढ़ गया। ओस से भीगी हुई घास उसे अपना-अपना-सा लगा था। उसके प्राण के किसी एक कोने में जंगल के प्रति आदिम स्नेह छिपा हुआ था, जंगल के नम प्रश्वास ने उसे उत्तेजित कर दिया था, अहेतुक आनंद में वह बिना रास्ते से ही आगे बढ़ रहा था। दोनों ओर ऊंचे खर हैं—ओस के कारण उनके पत्ते नीचे को झुक गए हैं।

कोहरे को बींधकर सफेद धूप धीरे-धीरे फैलने लगी है, सारा संसार धूप में उजला हो जाएगा। पेड़-पौधे जीवंत हो जाएंगे।

कुछ दूर जाकर गुलच को एक छोटी राह मिली, नदी के किनारे से होकर खरों के बीच से सिपरिया गांव की तरफ गया, संकरी राह हैं—एक-दो हाथ की चौड़ाई है। गाय-बैलों के चलने के कारण खर-पौधे आदि मुरझा गए हैं।

पश्चिम की ओर घूमकर छोटी राह से गुलच दो-चार पग आगे बढ़ गया—नदी की ओर। सामने की तरफ जब उसने सर उठाया तो उसने देखा कि कोई उस ओर से आ रहा है, गुलच बढ़ गया।

वह चेनिमाइ है।

उसे इस प्रकार देखकर चेनिमाइ भी ठिठककर रुक गई। दोनों ने एक-दूसरे की ओर देखा, दोनों सहम गए। ऊंचे खरों के बीच संकरी राह है, आस-पास कोई भी नहीं है।

"तू, तू इधर कहां से आई है। चेनि ?" गुलच ने पूछा।

"सरबा गांव बुढ़ा के यहां गई थी।"

"गांव बुढ़ा के घर ? क्यों ? सबेरे ही क्यों गई।"

"पांच-रुपए का धान खरीदा था, उसे ही झाड़ आई हूं, तिखर बाद में ले आएगा।"

"तुम लोगों के खत्ते में धान नहीं है क्या ?"

"आज से करीब बीस दिन के पहले ही वह खाली हो गया है।"

कुछ देर दोनों चुप रहे।

"तू इधर कहां जा रहा है ?" चेनिमाइ ने पूछा।

"कहीं भी नहीं, भैंस को लेकर इधर ही निकल आया था।"

"मैं चलती हूं, कोई यहां आ सकता है।"— वह जाने लगी।

"चेनि, जरा सुन !"

"क्या ?"

"सबके सब उलट-पुलट गए हैं, क्या करेगी ?"

कुछ भी जवाब न देकर चेनिमाइ ने सर नीचा कर लिया।

"तेरे बारे में मुझे सदा ही याद आती है।"

"क्यों, कपाही प्यार नहीं करती है ?"

"करती है, तथापि तेरे बारे में मुझे बार-बार याद आती है, तिस पर तेरी शादी केलाई से हुई है।"

"उसके बारे में और न बोल। भाग्य में जो था हुआ। तुम—लोगों का मंगल है, तो मेरा भी मंगल है।"

और कुछ कहे बिना चेनिमाइ चली गई। वह कुछ कहना चाहते हुए भी कह नहीं सका। वह चेनिमाइ की ओर एक टक देखता रहा।

किंतु थोड़ी दूर जाकर चेनिमाइ रुक गई। और घूमकर गुलच से कहा, "सुन तो !"

गुलच पास चला गया।

"चेनि, क्या हुआ ?"

कुछ उत्तेजित स्वर में चेनि ने कहा, "अपने बाप और ताऊ दोनों ने मिल कर मेरे भाग्य का ऐमा हाल किया, इस मरे के साथ शादी कर दी। उसके साथ शादी करा देना एक बात है। किस दिन वह आंख मूंद लेता है, उसका कोई ठिकाना नहीं है। मैं मानो बेगार आ गई। उसकी देख-भाल करनी पड़ती है, घर के ऊपर नजर रखनी पड़ती है, और अब हाथ में टोकरी, सूप लेकर गांव-गांव में धान की खोज में जाना पड़ता है। मैं ये काम और नहीं करूंगी। अभी मौका देख रही हूं। धनशिरि की राह को पहचान रखा है, किसी दिन सुनना कि अमुक औरत ने नदी में छलांग लगाई है, मैंने कह रखा है।"

उसकी बात सुनकर गुलच को डर लगा! क्या आत्मघात करने की बात वह यों ही कह रही है ? किंतु वह अभी कर ही क्या सकता है ?

गुलच ने किसी तरह कहा, "गुस्सा करने से क्या लाभ होगा ? मैं पास ही रहता हूं, तू यदि बुरा नहीं मानती है, तो मैं तेरी पूछताछ करता रहूंगा।"

चेनि ने गुलच की ओर सर उठाकर देखा।

"तेरा अपना एक परिवार नहीं है ?"

"क्यों, इसलिए ही मैं तुम्हारी पूछताछ नहीं करूंगा ? किंतु दूसरे लोग कोई और बात न सोच लें !"

"जो जैसा चाहे सोचे ! मुझसे यदि तुम्हारा स्नेह है तो कभी-कभी मेरे घर आना। नहीं तो मैं इस तरह अधिक दिन तक नहीं जीऊंगी।"

"अच्छा, तू चिंता न कर ! जा !"

इस बार चेनि चली गई। वह बड़ी शांति और भरोसा लेकर गई। गुलच के मन में आज भी उसके प्रति स्नेह है।

गुलच कुछ देर तक वहीं खड़ा रहकर चेनि के जाने की ओर देखता रहा।

चेनि पहले की तरह अब भी है। शादी का केवल नाम हुआ, उसका मर्द बीमार आदमी है। चेनि के लिए उसको दुख हुआ।

वह छोटी राह को छोड़कर घरों के बीच से घर की ओर बढ़ने लगा।

उस समय सफेद मीठी धूप खरों के ऊपर फैलने लगी थी। नदी की ओर से हवा का एक कोमल झोंका बहने लगा था। हवा का झोंका लगते ही वह चेनि की बात भूल गया। आकाश की ओर ताककर उसने देखा—गाढ़ा नीला आकाश है। कहीं भी एक टुकड़ा मेघ नहीं है। नीला आकाश बहुत दूरी पर नीचे उतरकर पृथ्वी को छू रहा है।

हवा के झोंकों के कारण कांपते खरों के पौधे सर-सरकर धूप में जीवंत हो उठे हैं। उसके सामने कोई राह नहीं है, वह खुद राह बनाकर आगे बढ़ने लगा।

वह अकस्मात ऊंचे खरों के बीच रुक गया। वह मानो जरा डर भी गया।

"तरा !"

वह रुक गई।

तरा इस ओर कहां जाती है, वह कहां से आई है ? उस ओर तो कोई राह नहीं है !

तरा उसके सामने पहुंच गई।

"तरा ?"

तरा सर नीचा करे खड़ी हो गई—उसके सामने।

"तू इस ओर कहां जाती है, तरा ?"

"चंद्र आया है, बुलाया है..."

"मैं यहां इस ओर हूं, कैसे मालूम हुआ ?"

तरा ने कुछ नहीं कहा।

गुलच तरा के पास आया और उसकी बांह पर हाथ रखकर पूछा, "सचमुच चंद्र आया है ?"

तरा ने कुछ नहीं कहा।

"अरे तरा, तू मुझसे पहले की तरह क्यों नहीं बोला करती है ?"

जरा सिसककर उसने जवाब दिया, "तुम, तुमने मुझसे क्यों दगा किया ?"

गुलच चुप रहा। कुछ कहना चाहकर भी वह नहीं कह सका। वह तरा को धोखा नहीं दे सकता। किंतु वह तरा को समझाकर भी नहीं कह सका। कि यह कैसे हुआ। वह खुद भी आज तक अच्छी तरह समझ नहीं सका है। आज तरा के इस प्रश्न का कोई जवाब नहीं है।

कुछ देर चुप रहने के बाद गुलच ने पूछा, "घर में तेरी मौसी है या नहीं ?"

"नहीं है, सिपरिया गांव की तरफ गई है। किसी के घर में मुर्गा है, उसी की खोज में गई है।"

गुलच ने खर के कुछ पौधों को पैरों से रौंदकर जगह को जरा चौड़ा किया। इसके बाद कहा, "यहीं कुछ देर बैठें, आ !"

"नहीं कोई निकल सकता है।"

"कौन निकलेगा ? यह क्या राह है ? खरों के इस विस्तृत मैदान में हमारे रहने की बात कौन जान सकेगा ?"

बिछाए गए खरों के ऊपर दोनों बैठ गए।

गुलच ने कहा, "घर में तू सदा बिना बोले दुखी रहती है, मुझे बड़ा ही कष्ट होता है।"

"तुम दोनों हंसी-मजाक करते रहते हो, मैं किस सुख में ऐसा करूं ?"

गुलच ने कहा, "दुखी रहने से मुझे बड़ा बुरा लगता है। घर के भीतर मुझे रहने की इच्छा नहीं होती। मालूम नहीं तू क्या सोचती है।"

गुलच ने तरा के हाथ को अपने हाथ में लेकर कहा, "पहले से मोटी हुई है।"

तरा कुछ कहे बिना कुछ सोचकर बैठी रही।

उसने कहा, "मेरे प्रति तेरा प्यार क्या समाप्त हो गया है ?"

"प्यार न रहा होता तो मैं तुम्हारे घर में पैर भी नहीं रखती। तुम मेरे प्यार को भूल गए हो, इसका यह माने नहीं है कि मैं भी भूल जाऊंगी।"

गुलच ने तरा को दोनों हाथों से अपनी ओर खींच लिया। तरा भी गुलच के साथ लिपट गई।

कुछ देर बाद दोनों उठ पड़े। गुलच ने कहा, "तू अभी जा, मै भैंसे को ले चलता हूं।"

तरा पुनः एक बार गुलच के बाहु-पाश में बंध गई और इसके बाद जिस रास्ते से आई थी उसी रास्ते से लौट पड़ी।

भैंसे को खोजते हुए गुलच भी नदी के किनारे की ओर गया और कुछ देर बाद भैंसे को नकेल से पकड़कर उसने घर की राह ली।

कार्तिक महीने का सूर्य चढ़कर सर के ऊपर आ गया था। सफेद धूप आवारित रूप से आकाश के गर्भ से पृथ्वी पर उतर रही थी।

अपने खेत के एक छोर पर खड़े होकर गुलच ने एकांत भाव से हवा के झोंकों से हिलने वाले धान की ओर देखा। धान के हरे पौधे बढ़िया हो रहे हैं। धान का हर पौधा बढ़कर फैल गया है। बालियां अभी भी पतली हैं सभी में अभी चावल नहीं हुआ है, अभी दूधिया हैं। उसका मन विजय से खिल उठा, नदी के किनारे तक इस लंबी जमीन का मालिक वह है, और कोई भी नहीं है। अगले साल यदि छह बीघे के करीब जमीन और आबाद कर सके तो और किसी चिंता की बात नहीं रहेगी। इस साल उसके बैलों का जोड़ा यों ही बैठा रहेगा। एक ही हलवाहा है, भैंसा और बैल एक साथ कैसे काम में लाएगा ? कोई साथ होता !

बहुत-सी बातों के बारे में सोचते हुए मन के आनंद में वह धीरे-धीरे घर पहुंचा। उस समय कपाही भी आ पहुंची थी।

बाईस

धनशिरि के सीने पर से और एक बाढ़ गुजर गई। बड़ी बाढ़ नहीं थी। इस वर्ष गुलच ने और दो बीघे जमीन आबाद की। पहले की जमीन का वार्षिक पट्टा भी चंद्र की सहायता से करवा लिया। अपने दरबे में पहले की तुलना में बत्तख और मुर्गी की संख्या भी कुछ बढ़ी। गुलच ने नए उत्साह और नई आशा लेकर काम किया। यही समय है। उसके यह जवानी के दिन हैं—छब्बीस वर्ष की उम्र है केवल, अभी ही यदि वह कुछ कर नहीं लेता तो कब करेगा ?

कपाही और तरा भी यों नहीं बैठी है। एक के बाद दूसरा कपड़ा बुनकर, उसे बेचकर, साग-सब्जी उगाकर और उसे बाजार में बेचकर जितना हो सके वे भी दो-चार रुपए कमा रही हैं।

तरा पहले की तरह ही उदासीन है। घर में रहते समय वह बात भी नहीं करती, हंसती भी नहीं, तमाशा भी नहीं करती। कभी कपाही के कहीं जाने पर वह और गुलच अकेले ही घर में रहते हैं। किंतु उस समय भी वह न हंसती है और न बोलती है। पास आकर गुलच यदि प्यार करना चाहता है तो वह हट जाती है, और कहती है, "यों ही प्यार करना, और कुछ न करना।"

गुलच ने आज तक घर के भीतर कोई भी अवांछित कार्य नहीं किया है। और, विषाद भरे मन को लेकर बैठी रही। तरा के हाथ-मुंह पर हाथ फेरकर प्यार करने के सिवा और कर ही क्या सकता है ? अपने मन के प्यार को वह मुंह से व्यक्त करना नहीं जानता।

गुलच जरा सोच में पड़ता है, तरा को कुछ भी समझ में नहीं आता। वह इतना चुपचाप रहती है कि कब क्या सोचती है, कब क्या कहती है—समझ में ही नहीं आता। तरा के मन को कष्ट दिए बिना चलने के लिए वह भरसक प्रयत्न करता है।

तिखर आजकल गुलच के घर प्रायः आता है। तरा तिखर के साथ ज्यादा बात नहीं करती है, कभी जरूरत पड़ने पर एक-दो बात करती है। कपाही के साथ ही अधिकतर बातें करके तिखर चला जाता है। तिखर का आना-जाना बात करने का ढंग आदि से कपाही को अब तक यह समझ में आ गया था, कि तिखर का मन जरा

तरा की ओर झुका है। जब वह कपाही के घर आजकल आता है, तो जरा सज-धज कर आता है। मांग निकालकर बालों को कंघी करता है, कमीज पहनता है और अपने रंगीन रुमाल को जेब में ऐसे भरता है जिससे उसका एक कोना बाहर निकला रहे। उसने आज तक अपने मन की बात को किसी के सामने नहीं कहा, वह आमतौर पर कपाही के साथ अपनी खेती-बारी और गाय-बैलों की बात ही करता है।

उसने अपने मन में ही एक बात सोच रखी है। उसके घर गुलच कभी-कभी जाता है, चेनिमाइ के साथ बात करता है, केलाई के साथ भी बात करता है, चेनि भी कभी-कभी कपाही के घर आती है। वह अपनी बात भाभी चेनि से कहेगा, चेनिमाइ कपाही और गुलच दोनों के भाव को समझ सकेगी; और हो सके तो तरा का मन भी समझ सकेगी। किंतु आज तक चेनिमाइ के सामने मुख खोलकर कहने का साहस उसे नहीं हो रहा है। उसकी भाभी भी क्या कर बैठे ! इसके अलावा, तिखर यह समझ रहा था कि चेनिमाइ केलाई के साथ सुखी नहीं है। उस घर में वह मजबूरी के कारण ही है। इसलिए चेनिमाइ तिखर के लिए कुछ कर देगी, इसकी आशा बहुत कम है।

तिखर इंतजार करने के लिए तैयार है, उसके साथ तरा की शादी न करने का कोई कारण ही नहीं हो सकता। उसके साथ कुछ बातचीत करने का मौका मिलता तो उसे भगाकर ले जा सकता था, किंतु वह मौका अब भी नहीं मिला है।

गत चैत महीने में बसीरत आया था, वह गुलच की खेती-बारी के बारे में पूछताछ करके गया था। बसीरत के न चाहने पर भी गुलच ने उसे दस रुपए दिए और विनय करके कहा कि भैंसे का दाम अगले साल वह दे देगा। भैंसे को खरीदने के लिए उसने समय पर जो पैसे दिए उसके लिए वह आभारी है।

दो-चार मामूली बातों के बारे में बातें करके बसीरत ने विदा ली। बसीरत ने धनशिरि के मुहाने की ओर अपना घर-द्वार बनाया है, किंतु उसका अपना कोई नहीं है। महाजन के साथ रहकर और सौदा-व्यापार करके उसने कुछ संपत्ति बनाई है, किंतु अब तब शादी नहीं की है। उसकी उम्र भी यद्यपि पैंतीस होने को है।

कुछ कहे बिना बसीरत हंस पड़ा। गुलच को इसका माने समझ में नहीं आया। समझने के लिए उसने चेष्टा भी न की। कुछ आदमी शादी नहीं करते।

एक दिन चंद्र आकर खबर दे गया, गुलच के पिता सख्त बीमार हैं। बचने की अधिक आशा नहीं है। खूब सीरियस है, तू जाकर एक बार देख आ।

कपाही के साथ गुलच ने उसके बारे में परामर्श किया।जहां और बरा चावल, उर्द की दाल और कुछ मीठा आलू एक जगह बांधकर गुलच की ओर बढ़कर कपाही ने कहा, "अपने पिता से इनका अपना अहंकार ही बड़ा बना है, जिंदा रहने के समय ही यदि न गया और इधर बूढ़े को कुछ हो गया तो क्या बड़ा भैया अपनी संपत्ति का भाग देगा। क्यों नहीं जाओगे ?"

गठरी को कंधे की एक ओर डालकर, लाज और संकोच से गुलच डालिम गांव की ओर चल पड़ा।

उसके पिता में उस समय बातें करने की शक्ति नहीं थी, तथापि छोटे बेटे को आते देखकर बूढ़े का मन प्रफुल्लित हो उठा।

पिता के मरने के बाद दोनों भाई खूब रोए, उनकी मां भी रोई।

मृतक के 'तीजा' के बाद गांव के लोगों ने परामर्श दिया : बहरहाल बूढ़े की संपत्ति सामूहिक ही रहे। गुलच को इधर पाही में जाने के बाद कुछ जमीन-जाएदाद हुए हैं, इस समय उसे जमीन का हिस्सा नहीं मांगना चाहिए। बूढ़े की बीमारी में बड़े ने काफी खर्च किया है। बाद में दोनों भाई जमीन का बंटवारा कर लेंगे। गुलच शांत बना रहा। उसको दुख है कि वह पिता की कुछ सेवा न कर सका, इसलिए बूढ़े की जियारत के लिए खर्च के रूप में पंद्रह रुपए दिए। डालिम के लोगों ने समझा कि यह गुलच पहले का गुलच नहीं है। वह आजकल दो-चार रुपए दे सकता है। उसका मुख देखकर ही समझा जा सकता है। चेहरा खिल उठा है।

जियारत हो जाने के बाद गांव के कुछ बूढ़ों ने बूढ़े के संचित रुपयों के बारे में हिसाब किया, नकद सात कोड़ी रुपए निकले। बहुतों ने आश्चर्य किया कि बूढ़े ने क्यों इतना रुपया बचाकर रखा था ! सबके फैसले से उनमें से सौ रुपए बूढ़ी को दिए गए। उसके अंतिम दिनों में जो ही उसकी देख-भाल करेगा वही ये रुपए पाएगा। बूढ़ी क्या अब अपने लिए गहना बनवाएगी ? बाकी रुपयों में से एक कोड़ी गुलच को दिया गया। बड़ा लड़का भी एक कोड़ी पाया, तेरह रुपए बड़ी बहू को दिए गए—उसने बूढ़े की काफी खिदमत की है।

बूढ़ी ने कहा, "गांव वालों के रहते समय ही मैं भी एक बात कहना चाहती हूं। अपना मालिक चला ही गया है, मैं भी कितने दिन तक जीऊंगी ? बड़े की बहू मैं देख-सुनकर लाई इसका ही मैं कुछ न कर सकी। इसकी बहू को आज तक नहीं देखा। मेरे गहने पहनने के दिन और नहीं रहे। यह मेरी मीना चढ़ी बिरी (एक गहना), यह मणि माला और मेदी पत्थर जड़ी अंगूठी है। मणि माला मालिक ने खरीद दी थी, जब तक जिंदा रहूंगी उसे मैं किसी को नहीं दूंगी। मेरी इन दो अंगूठियों में से एक बड़ी बहू पाएगी, एक छोटा लड़का पाएगा। और यह बिरी मैं छोटी बहू को देती हूं, उसकी शादी में मैं कुछ भी न दे सकी।"

गुलच ने हाथ बढ़ाकर मां से गहने लिए किसी ने भी आपत्ति नहीं की। आपत्ति करने का कोई मौका भी नहीं था। मां अपनी चीजें जिसको चाहे, दे, जिसको न चाहे, न दे।

बिरी, अगूंठी और एक कोड़ी रुपए और जियारत के चने और नारियल को लेकर गुलच घर पहुंचा। कपाही को उसी बीच बूढ़े की मृत्यु की खबर मिली थी। इसलिए चार दिनों के बाद भी गुलच को आते देखकर उसने कुछ नहीं कहा। बूढ़े

की मृत्यु के लिए उसको रोने के लिए यद्यपि कोई कारण नहीं मिला, तथापि बूढ़े के बारे में दो-चार बातें पूछकर उसको सांत्वना देने के लिए उसने प्रयत्न किया। पिता की मृत्यु के कारण गुलच को बुरा लगा था, किंतु औरतों के सामने रोना-धोना करना उसने अच्छा नहीं समझा। किंतु बंधे हुए भैंसे को लेकर जब वह नदी के किनारे गया, वहां वह जोर से रो पड़ा, एक छोटे बच्चे की तरह। पिता के न रहने के माने क्या हैं, वह आज ही समझ सका।

तरा को उसके मुख को देखकर ही समझ में आया कि नदी के किनारे बैठकर वह अकेले ही रोकर आया है। उसने कुछ न कहा।

रात में सब सो गए। आजकल गुलच, कपाही और तरा तीनों अलग-अलग बिस्तर पर सोते हैं। कभी कोई मेहमान आदि आने पर ही गुलच आकर कपाही के बिस्तर पर सोता है। तरा सदा अकेले सोती है। उसका कमरा भी अलग है।

ज्यादा रात नहीं हुई थी, किंतु दिन भर के परिश्रम के बाद रात को बिस्तर पर पड़ते ही कपाही को नींद आती है। कपाही को आज भी जोर की नींद आई।

अत्यंत सावधानी से तरा अपने बिस्तर से उठ आई। लालटेन बुझी हुई थी, अंधेरे में ही वह आकर गुलच के बिस्तर के पास खड़ी हुई और सोए हुए गुलच के शरीर पर अपना हाथ रखा। गुलच को नींद नहीं आई थी। उसने तरा के हाथ के ऊपर अपना हाथ रखा। वह समझ गया कि यह कपाही का हाथ नहीं है। तरा का हाथ है।

"तरा ..."

"चिल्लाओ नहीं..."

"क्यों आई ? नींद नहीं आई है ?" उसने फुसफुसाकर कहा। उसकी फुसफुसाहट में रोने की नमी है।

कुछ न कहकर तरा ने उसके सर पर हाथ फेर दिया, उसके मुख और आंखों पर प्यार से हाथ फेरकर कहा, "क्यों रोते हो ? आज सारा दिन रोए हो न, बड़ा दुख हुआ है न ?"

एक अबोध, अनाथ बच्चे की तरह गुलच ने अपने सर को तरा की गोद में रख दिया, तरा ने उसके बालों के बीच अंगुली फेरी और सर और पीठ पर हाथ फेरने लगी। गुलच को ऐसा लगा कि यह तरा नहीं है उसकी स्नेही मां है। उसको और अधिक रुलाई आई।

गुलच बहुत देर तक उसी प्रकार तरा की गोद में सर रखकर पड़ा रहा, और तरा ने उसके मुंह, सर और शरीर पर हाथ फेरकर उसे सांत्वना देने का प्रयत्न किया।

उसके मुंह के पास अपना मुंह ले जाकर तरा ने फुसफुसाकर कहा, "तुम्हारा दुख देखकर मुझे बड़ा कष्ट होता है। और रोना-धोना न करना।"

गुलच असहाय की तरह उसके शरीर पर झुकी हुई तरा के गले से लिपट

गया। वह मानो बिलकुल ही निस्सहाय है, कहीं एक निश्चित आश्रय खोज रहा है।

तरा ने कहा, "मैं तो हूं, इतनी फिक्र क्या !"

गुलच तरा को पास खींचकर। उसके गाल पर अपने गाल को रखकर दबा रखा। तरा ने भी मानो निकटता के परम विश्वास के साथ उसके दुख को भुलाने की चेष्टा की।

दूसरे कमरे में उस समय कपाही गहरी निद्रा में सोई है।

बिस्तर पर से उतरकर गुलच के गाल पर प्यार से अपने गाल को फेरकर तरा ने कहा, "और दुखी रहोगे तो मैं भी रो पड़ूंगीं।"

और इसके बाद वह अपने बिस्तर पर लौट आई।

गुलच एक छोटा लड़का है।

गुलच एक अबोध शिशु है।

सर पर हाथ फेरकर शांत न करने से वह रोता ही रहेगा—तरा ने सोए-सोए सोचा।

अगले दिन बिरी को कपाही के हाथ में देकर गुलच ने कहा, "मेरी मां ने यह तेरे लिए भेजी है..."

कपाही ने उसी समय बिरी को पहना, उसका मुख आनंद से खिल उठा।

"देख तरा, इधर आ...।"

तरा सर नीचा करके बिना बोले उसके पास आकर खड़ी हो गई।

यह अंगूठी तेरी किस अंगुली में आती है, देख। इसे मां ने मुझे दिया था। मुझे इसकी क्या जरूरत है ?"

अंगूठी को तरा ने पहन लिया।

"अपनी मौसी को दिखा न..."

आज गुलच को आंनद हुआ, कपाही और तरा को खानदान के उत्तराधिकार के रूप में एक-एक गहना मिला है। उसने कहा कि कुछ दिन के बाद वह मां को ले आएगा। कपाही ने बात को सहज भाव से लिया, किंतु तरा चुपचाप हट गई—उसने कुछ नहीं कहा।

तेईस

कपाही के साथ सलाह-मशविरा न करके मौका पाकर जब गुलच एक कोड़ी और तेरह रुपए में बछड़े के साथ एक दुधारी भैंस खरीद लाया तो उसके बिना पूछे इतना

पैसा खर्च करने के कारण कपाही पहले चिढ़ गई।

गुलच ने कह दिया, "एक भैंस खरीदूंगा और उसे भी तुझसे पूछकर खरीदूंगा ? बछड़े के साथ भैंस एक कोड़ी तेरह की बात छोड़, दो कोड़ी तेरह रुपए में भी नहीं मिलेगी। मालिक को रुपयों का अभाव होने के कारण ही उस तरह कम दाम पर बेची है। हमारा कम से कम डेढ़ कोड़ी में डेढ़ कोड़ी रुपए का लाभ हुआ है।

कपाही को बात समझ मे आई थी, तथापि उसने कहा, "गाय भैंस सब के सब मेरे गले में डालकर अब धनशिरि के किनारे जल-कंवरी की साधना में न लगे रहे तो गनीमत है। मैं किस-किसकी देख-भाल करूं !"

तरा ने सामान्य रूप से कहा, "घर की देख भाल मैं कर सकती हूं।"

"हां, तू घर के भीतर आराम कर और मैं भैंसों के पीछे जंगल में भटकती रहूं। और इधर यह मोलोका के घर जाकर दिनभर चिलम का कश लगाते रहे।"

गुलच ने इतना ही कहा, "यह भी बछड़ा है।" इसके बाद भैंस को लेकर वह दूसरे पार चला गया।

रबी की खेती में गुलच को खासा लाभ हुआ था। आलू, सरसों और उर्द की फसल से उसे काफी लाभ हुआ था।

बसीरत से भैंसा खरीदने के लिए जो पैसे गुलच ने लिए थे, सारे के सारे पैसे नदी के घाट पर उससे मिलकर दे आया। उसका मन हल्का हुआ, उधार का बोझ अपने ऊपर रहे तो मन खुलासा नहीं होता। बसीरत की सहायता के लिए उसने सरलता के साथ आभार प्रकट किया, और कहा, "बड़ा उपकार हुआ। भैंसा अभी भी ठीक है। वह न मरे तो और कई साल उससे काम लिया जा सकता है। आहु धान के अच्छे बीज की जरूरत है, मिल सकता है क्या ?"

एक दिन बसीरत खुद आकर गुलच के आंगन में कई पसेरी बीज डाल गया।

उस दिन गुलच के कहे अनुसार बसीरत को घर के भीतर कपाही ने जलपान कराया। बातचीत कुछ भी नहीं हुई थी। बसीरत भी सर नीचा करके जलपान करके बाहर चला आया था।

बसीरत ने कहा, "कुछ ही दिनों में वह धनशिरि के मुहाने में चला जाएगा, फिर आश्विन कार्तिक महीने में लौटेगा। बरसात के दिन में कुछ भी नहीं करना है।"

बसीरत एक दिन नाव लेकर चला गया। कपाही से जाते समय कह गया।

गुलच का काम पहले से बहुत बढ़ गया है। भैंस को दूहकर दूध बेचने का काम भी नया हुआ। कपाही ने एक बार सलाह दी थी कि उसे नेपाली के बथान में छोड़ आना चाहिए किंतु गुलच ने नहीं माना। भैंस बड़ी शांत है, उसका बछड़ा बड़ा सुंदर है। वह बचा रहे तो दो-तीन वर्षों मे हल जोतने के काम में आ सकेगा, और नेपाली को दे तो दूध दूह-दूहकर उसे सुखा डालेगा। और दूध का भी क्या

पूरा दाम मिलेगा ?

बीच-बीच मैं भैंस को तरा भी चराती है। उसे भैंस के लिए बहुत प्यार होता है।

इधर-उधर जाने में कपाही बिरी को पहन लेती है। तरा अंगूठी को नहीं पहनती है। देने की वस्तु थी, उसने दी—पहनना, न पहनना उस पर निर्भर करता है—गुलच कुछ भी नहीं कहता है।

गुलच ने एक दिन देखा कि तरा ने अंगूठी पहन रखी है। वह अनदेखा करके हट जाना चाहता था। तरा ने आवाज दी, "जरा ठहरो ना !"

धीमी आवाज से उसने पूछा, "क्या मौसी घर में नहीं है ?"

तरा ने भीतर से तह किए हुए कपड़े का एक टुकड़ा लाकर गुलच के हाथ में दिया और कहा, "इसी बार का है। आज ही तैयार हुआ है। इसी से ईद के लिए एक कुर्ता तैयार करवा लेना।"

गुलच का चेहरा आनंद से लाल हो उठा।

"हां, ईद के लिए एक अच्छा कुर्ता सिलाने की बात मैं सोच ही रहा था।

उसने कपड़े की तह, को खोलकर देखा, महीन कपड़ा बना है। भूरे रंग का, थान के कपड़े जैसा।

"ईद के लिए तेरे पास अपना कपड़ा है क्या ?"

"मेरे पास है, कुछ भी नहीं चाहिए।"

कपाही और तरा दोनों को छींट कपड़े के दो ब्लाउज देने की बात गुलच बहुत पहले से ही सोच रहा था। किंतु यहां कोई अच्छी दुकान नहीं है। दो गज कपड़े के लिए वह गोली चला जाए, यह उसे पसंद नहीं है। पहले भी वह नहीं गया है। उसे कोई जानकारी भी नहीं है। कोई उसे ठग भी सकता है। किंतु वह एक बार अवश्य ही टाउन जाएगा, कम से कम एक कोड़ी रुपए का बहुत सारा सामान खरीद लाएगा।

गुलच ने तरा को प्यार से देखा। तरा ने सर नीचा कर लिया।

कपड़े के टुकड़े को तरा के हाथ में देकर गुलच ने कहा, "अभी तू ही रख। कल मैं दर्जी को दे आऊंगा।"

उसके बाद हल्का मन लेकर वह घर से निकल पड़ा। तरा को उसके लिए बड़ा स्नेह है। उसको आज तक किसी ने भी ईद या बकरीद में कपड़े का एक टुकड़ा भी नहीं दिया है।

तरा को उसके लिए बड़ा स्नेह है।

कहीं गड़बड़ी हो गई है नहीं तो...

धूप काफी कड़ी थी, खेत की एक जगह का पानी सींचकर टोकरी भर मांगुर और गरै मछली उसने पकड़ी और घर पहुंचाई। तरा मछली रखने वाली दलनी पर

मछलियों को रख रही थी।

कहीं से चंद्र और चार लड़के उनके आंगन में पहुंच गए।

"क्या मछलियां पकड़ी हैं ?" चंद्र ने पूछा।

गुलच ने कहा, "तरा, बैठने दे, लोग आए हैं। चंद्र, तुम लोग बैठो मैं नहा आता हूं।"

चंद्र और बाकी लड़के आंगन में मूढ़ों पर बैठे।

"क्यों, कैसी है, तरा ! पहले से मोटी हो गई है।" चंद्र ने तरा की ओर देखकर कहा।

तरा ने सर नीचा कर लिया। किस समय क्या कहना चाहिए, चंद्र सोचता ही नहीं।

"हां, अभी ही तो घर-आंगन देखने में अच्छे लग रहे हैं। अच्छा, फूल भी लगाया है। घर और फूल के बाग बढ़िया लग रहे हैं" चंद्र ने कहा, "गार्डेन होना चाहिए।"

घर के सामने जिस जगह गुलच सदा फूल लगाने की बात सोचता है उसी जगह तरा ने गेंदा फूल के दो पौधे लगाए हैं। बड़ी पंखुड़ियों का गेंदा फूल है। वे फूलने भी लगे हैं। पास ही एक सूरजमुखी का पौधा भी है। वह पौधा बहुत ही बढ़िया हुआ है।

तरा ने पानदान लाकर चंद्र के सामने रखा।

इसी बीच गुलच पोखरे में नहाकर आ गया था।

"कहां नहाया ?"

"एक पोखरा खोदा है न !"

"अच्छा किया है, अच्छा किया है, अपने घर के पोखरे के पानी के समान कैसे हो सकता है ? रिवर का पानी और..."

"गंदला..." शब्द के अंग्रेजी शब्द न पाकर वह रुक गया।

एक मूढ़ा लाकर गुलच भी बैठ गया।

चंद्र ने कहा, "एक काम से ही आया हूं..."

"पहले पान तो खा !"

इसके बाद चंद्र ने आने के कारण की व्याख्या की, "इस सिपरिया गांव में कोई स्कूल नहीं है। यहां आदमी तो कम नहीं हैं। एक-एक परिवार आकर अब पूरा गांव बन गया है। अब उसे पाही कहने से काम नहीं चलेगा। किंतु गांव के इतने लड़के-लड़कियों के लिए आज तक एक पाठशाला भी नहीं बनी—सरकार हमें आदमी ही नहीं समझती। अतः गांव के लोगों को मिलकर अपनी ओर से ही एक पाठशाला खोलनी चाहिए। नहीं तो हमारे लड़के-लड़कियां अशिक्षित ही रह जाएंगे। सिपरिया गांव में धनशिरि के किनारे बांस-लकड़ी का खरवेंत का अभाव नहीं है,

काम कर सकने वाले जवान और बूढ़ का भी अभाव नहीं है। गांव के लोग यदि पाठशाला का मकान बनाकर कुछ लड़के-लड़कियों को इकट्ठा करके एक मास्टर का बंदोबस्त कर दें तो बोर्ड को इसे अपने हाथ में न लेने का कोई कारण नहीं है। नहीं तो आइ शैल सी। मैं खुद जाकर डी.आई. को ले आऊंगा। हमारे विलेज क्या सदा ही इस प्रकार इलिटारेट बने रहेंगे ! शहर के लड़के-लड़कियों के लिए पग-पग पर पाठशाला है। हमारे एडुकेटेड नहीं होने के कारण ही हमें सब कोई नेगलेक्ट करते हैं।"

गुलच ने पूरी बातें सुनीं और कुछ सोचता हुआ दिखाकर कहा, "तुम लोग यों ठीक ही कह रहे हो। किंतु, उसमें मैं क्या कर सकता हूं।"

"तुझे बहुत कुछ करना होगा। एक आम सभा होगी। उसमें सभी बातें लोगों को समझा दूंगा। तुझे उस सभा में सभापनि होना होगा।"

"अरे, नहीं, नहीं, मुझे सभा में जाने से ही डर लगता है। अनपढ़ आदमी को सभापति बनाकर उसका तमाशा देखना चाहता है। ऐसा तमाशा मेरे साथ न करना।"

"तमाशा नहीं है, हमारे यहा तू जैसा है दूसरे भी ऐसे ही हैं। तू संपन्न आदमी है, यदि सभापति बनकर दो-चार बातें कहता है तो सभी मान लेंगे। मनी आल रेस्पेक्ट—रुपयों का सब कोई सम्मान करते हैं।"

गौरव और शर्म से लाल होकर गुलच ने कहा, "मैं तो कुछ नहीं जानता..."

"और दूसरा ही क्या जानता है ? तू कर सकेगा; और मैं तेरे साथ रहूंगा। आइ एम विथ यू। तुझे सभापति बनना होगा। और स्कूल का सभापति तुझे ही बनाऊंगा।"

"स्कूल का सभापति क्या होता है ?"

"होता है, होता है। बाद में समझेगा। किंतु स्कूल बनाने के लिए फंड की जरूरत पड़ती है। बहुत सारे रुपये खर्च होंगे। तू क्या दे सकता है, दे !"

इसी समय चंद्र के साथ आए हुए लड़कों ने एक ही स्वर में कहा, "सभापति को पच्चीस रुपए का चंदा देना होगा।"

"पच्चीस रुपए ? कहां से मिलेंगे भाई ! अच्छा काम करने के लिए जब आए हुए हो तो मै एक रुपया दूंगा।"

"एक रुपया ? नहीं, नहीं। आप यदि एक रुपया देंगे तो दूसरे लोग क्या देंगे ?"

अंत में गुलच से स्कूल के लिए पांच रुपए का चंदा लेकर चंद्र और उसके साथी वहां से गए। उसने भी चंदा खुशी से दिया।"

उनके जाने के बाद गुलच ने कपाही और तरा से कहा—पांच रुपए कुछ भी

नहीं है। अच्छे काम के लिए जब आए हैं, हम ही न दें तो कौन देगा ? किंतु, चंद्र सभापति या कुछ बनने के लिए कह गया है। क्या मालूम, उसने तमाशा ही किया है या सचमुच ही कहा है।''

"तमाशा करने की बात क्या है ! कहा है, हो जाना सभापति।''

"हां, ठीक है।''

सभापति बनने की बात को सोचकर गुलच को भीतर ही भीतर डर लगा था, क्या करना होगा, क्या कहना होगा ! किंतु डर लगने की बात उसने कपाही और तरा के सामने नहीं की, वे क्या सोचेंगी ? भाग्य में जो लिखा है !

शाम को घर से निकलते समय गुलच का मन एक नई उमंग से भर उठा था। उसका पैसा कमाने का कार्य आज सार्थक हुआ। उसने आज जीवन में कभी न किया गया एक काम किया है। उसने आज स्कूल के लिए चंदा दिया है। पच्चीस रुपए मांगे थे, दे देना ही अच्छा था। उसने सोचा—आगे समय है। स्कूल यदि बन जाता है तो जरूरत पड़ने पर और दूंगा !

आज पांच रुपए भी कम नहीं हैं।

उसके अपने मन में आनंद की बात थी, और किसी से खुलकर कह देने की इच्छा हुई। रुपया और किस लिए है ?

चौबीस

केलाई का स्वास्थ्य रोज-रोज खराब होने लगा था। किसी खास प्रकार का इलाज भी नहीं हुआ था। जवान आदमी है, चंगा होने के लिए, जिंदा रहने के लिए उसकी उत्कट अभिलाषा है। किंतु जब असाध्य रोग के साथ घनघोर दरिद्रता किसी को नाश करने का षड्यंत्र करता है, उस समय दरिद्रता की ही विजय अनिवार्य है।

वह प्रायः बिस्तर पर ही लेटा रहता है। अदरख के रस, तुलसी, मधु से दवा लेता है। वैद्य की गोलियां खाता है, चंगा नहीं होता है। रोग किसी तरह दबा रहता है। मोलोका और तिखर ने उसके चंगे होने की आशा छोड़ दी है। उसके अलावा केलाई के बारे में चिंता करने के लिए उन्हें समय भी नहीं मिलता है। दिन-रात पेट की चिंता में ही रहना पड़ता है।

चेनिमाइ केलाई के प्रति अपने एक दायित्व की बात को समझती है, किंतु वह भी ऊब गई थी। एक सेहत वाली गबरू, एक चिर रोगी की सेवा में लगे रहकर आनंद का अनुभव नहीं करती है। उसकी धारणा ही बन गई थी कि केलाई चंगा

नहीं होगा। बचपन का उसका रोग है और इन इलाजों से कुछ होने को नहीं है। उसको गुस्सा हो आता है—सफीयत पर, अपने पिता पर, मोलोका और तिखर पर। केलाई पर गुस्सा नहीं आता। उसके लिए उसे दया ही आती है, स्नेह होता है, वह कर ही क्या सकता है ? सबने मिलकर शादी करवा दी, उसने शादी की। गांव के अंधा, लंगड़ा, गूंगा कोई भी शादी किए बिना नहीं रहता। केलाई सिर्फ रोगी है।

तिस पर भी चेनिमाइ का अपमानित यौवन विद्रोह करना चाहता है। किसी प्रकार के संपर्क के बिना ही एक रोगी के लिए खटने का कोई माने नहीं है वह बीच-बीच में सोचती है कि वह केलाई को छोड़कर भाग जाएगी—छिपकर नहीं, सबके सामने जाएगी, कोई यदि प्रश्न करे तो वह स्पष्ट कह देगी कि केलाई के साथ उसका कोई संबंध नहीं है। तुम लोगों को यदि उसके लिए स्नेह हो रहा है तो अपनी बेटियों की उसके साथ शादी करा दे, मैं नहीं रहूंगी।

किंतु निस्सहाय, कातर, सुखी नजर से उसकी ओर देखने वाले केलाई के लिए कभी-कभी उसको बड़ा स्नेह हो आता है। वह मानो बात न कर सकने वाला एक छोटा लड़का है, वह मानो चेनिमाइ की गोद में पनाह लेकर जिंदा रहना चाहता है, चेनिमाइ यदि उसे छोड़कर चली जाए तो वह फूट-फूटकर रोकर मर जाएगा। उस समय चेनिमाइ उसके हाथ-पैरों को पोंछ देती है, थोड़ा सरसों का तेल गर्म कर उसकी छाती में मालिश कर देती है। अरवी की तरकारी को अच्छी तरह बना देती है। उसका यह प्यार मानो केलाई को बहुत शक्ति देता है, उसके सूखे होठों पर कृतज्ञता का गूंगा भाव उफन आता है। बेहद दुख प्रकट करके वह चेनिमाइ के हाथ को पकड़कर कहता है—मेरे लिए तुझे बड़ा कष्ट हुआ है, है न चेनि ! तू यों ही कष्ट उठा रही है, क्या मैं चंगा होऊं ? चेनि को उसके लिए और स्नेह हो जाता है। उसको दुख हुआ है, यह बात गलत नहीं हैं। किंतु क्या रोग अच्छा नहीं होता ? वह सोचती है रुपया-पैसा होता तो उसे कहीं शहर के अस्पताल में ले जाकर इलाज करवाती, शायद वह चंगा हो जाता। पास ही कहीं अच्छा अस्पताल होता तो केलाई शायद चंगा हो जाता, किंतु यह बिलकुल एक पिछड़ा हुआ देहात है। यहां बाघ, हाथी, आदमी, रोग—सभी एक साथ रहते हैं। एक बार बीमार हो तो बचने का कोई उपाय नहीं है, नहीं तो केलाई को निराशा नहीं होती।

बीमार केलाई के पास बिना उद्विग्नता से नींद लाने की चेष्टा करके चेनिमाइ अपने आप कहती है, केलाई के मर जाने पर मेरे यहां से कहीं चले जाने की बात अलग है, किंतु मैं उसके साथ जब तक रहूंगी तब तक यह मेरा आदमी है। इससे मैं कभी भी विश्वासघात नहीं करूंगी। जब संबंध टूट जाएगा। तब बात अलग है।

किंतु केलाई से दूर रहकर जब चेनिमाइ खेत में काम करती है, उस समय इन विचारों को प्रयोजनहीन समझती है। केलाई के साथ मेरा क्या संबंध है ? इस प्रकार अकेली बूढ़ी होने में क्या मजा है ?

तिस पर भी वह अपने को दृढ़ता के साथ समझाती है कि अपने मर्द रहते तक दूसरे की ओर नजर डालना ठीक नहीं है, मर्द चाहे बीमार ही क्यों न हो। बदनामी के लिए उसे डर नहीं है किंतु जो विवाह एक बार हो गया है उसका असम्मान वह नहीं करेगी वह इतनी बुरी लड़की नहीं है, हो नहीं सकती।

जरूरत पड़ने पर वह गुलच के घर आती है। जरूरत की दो-एक चीज मांग कर लाती है कपाही और तरा भी घर में उपलब्ध वस्तु को बिना दिए नहीं रहतीं। चेनि भी समय मिलने पर कभी ढेंकी में धान कूट देती है, दो-चार टकुओं में सूत लपेट देती है, कभी आंगन में सूखने के लिए फैलाए गए धानों को ही और एक बार पसार देती है, कभी अधिक मछली होने पर कुछ काट कूटकर जाती है। इन कामों के लिए उसे कभी भी कहना नहीं पड़ता।

गुलच के साथ भी वह बातें करती है। गुलच किसी के साथ ज्यादा बात नहीं करता, चेनि से भी कुशल-मंगल पूछने के सिवा और बात नहीं करता। किंतु तरा के द्वारा वह जो हो सके दिलाता है, चावल-मछली, साग-सब्जी और दो-चार आने पैसे भी। वह भी लेने के लिए नहीं हिचकिचाती है, गरीब का अहंकार दिखाने से क्या होगा।

समय मिलने पर गुलच कभी-कभी चेनिमाइ के घर जाता है। उसकी, केलाई और घर के बारे पूछताछ करके एक बीड़ा पान खाकर वह वापस आता है। गुलच के घर जाने पर चेनि उसकी खातिर करती है, पानदान को सामने लेकर बैठ जाती है और अपने सुख-दुख की बात करती है। गुलच आजकल गांव का एक नामी आदमी है। खत्ते में धान है, गोशाला में गाय बैल हैं और बारी में पान-सुपारी है। चाहने पर एक कोड़ी रुपया धोती की तहमद से निकालकर दे सकता है। उस गुलच का मोलोका के घर आने की बात एक माने रखती है। मोलोका भी उसे पंसद करता है।

कभी-कभी गुलच कपाही और तरा के अनजान में ही घर से थोड़ी चाय की पत्ती, जरा चीनी भी ले आता है। चेनिमाइ के हाथ में देकर कहता है, "जरा चाय बना दे तो प्यास लगी है।"

कभी बाहर ही बाहर नेपाली के बथान से लाई गई भैंस का घी बांस के पोर में भरकर गुलच चेनि को दे आता है। केलाई शायद इससे ही खा सकता है; कभी-कभी दो-चार आने-पैसे भी चेनि को दे आता है—पटसन में अल्लाह के कारण कुछ लाभ हुआ है। ले ये दो आने रख, दुआ करना।"

चेनि को गुलच के लिए स्नेह हो आता है।

एक दिन रात को चेनि ने गुलच को आंगन के एक छोर पर बुलाकर कहा, 'चंद्र या कोई और आदमी तेरे यहां आता रहता है। क्या वह कुछ इंतजाम नहीं कर सकता ?"

"किसका ?"

"इनकी चिकित्सा का। यहां रहने पर अच्छा होगा ! यहां कहां दवा मिलती है, कहां पानी ! हाथ में रुपया-पैसा एक भी नहीं है। किससे चिकित्सा कराऊंगी ? कहीं गोलाघाट के सरकारी अस्पताल में रख सकते तो शायद वे चंगा हो जाते..."

गुलच ने कुछ नहीं कहा।

ये बातें वह नहीं जानता, चंद्र ही जानता है। सदा शहर जाता रहता है।

"चंद्र के आने पर ही पूछना तो..."

"किंतु वहां उसे रख आने पर उसकी देख-भाल कौन करेगा ?"

"वहां के डाक्टर लोग देखेंगे। खर्च भी कहते हैं, नहीं चाहिए और जरूरत पड़ने पर हाथ कान का बेचकर जितना हो सके इंतजाम करूंगी। तुम लोग भी दो-चार रुपए देना..."

कुछ देर तक चुप रहकर गुलच ने कहा, "हां, चंद्र कभी-कभी अपने गांव में ही अस्पताल बनाने की बात करता है, मैं उसकी ये बातें उसका प्रलाप ही कहता था। यहां एक अस्पताल होता तो हमारे लोगों को इतना भुगतना नहीं पड़ता।"

गुलच ने अपने मन में ही निश्चय किया : "पाठशाला स्थापित करने की तरह चंद्र यदि यहां अस्पताल खोलने का इंतजाम करे तो मैं कट्ठा भर जमीन भी दूंगा, दो कोड़ी रुपया भी दूंगा। गांव में एक स्कूल. एक अस्पताल की जरूरत है।"

गुलच ने चेनिमाइ को ढाढस दिलाया, "तू चिंता न कर, चेनि। चंद्र को आने दे, यदि ऐसा कुछ किया जा सकता है तो किया जाएगा। रुपया-पैसा जो चाहिए मैं दूंगा, तू चिंता न करना। उस दिन तू जिस तरह कहती थी, मैं दूसरी ही बात सोच रहा था।"

चेनि ने कहा, "कभी बड़ा गुस्सा आता है, मैं सदा बीमार की सेवा के लिए ही संसार में आई हूं क्या ! दूसरी ओर जिस परिवार में ब्याह हुआ है वहां सुबह-शाम का खाना भी और के घर से मांगकर ही लाना पड़ता है। न मरूं तो क्या करूं ? किंतु चूंकि तू पास ही है, इसलिए तेरे साहस में ही मैं हूं—नहीं तो कब क्या कर डालती हूं, मैं खुद नहीं जानती।

गुलच ने चेनिमाइ को सांत्वना देना चाहा। अपने आदमी के लिए स्नेह होना स्वाभाविक है। तिस पर वह बीमार है।

गुलच ने चंद्र के आने तक प्रतीक्षा की।

वह बहुत दिनों के बाद ही आता है। मालूम नहीं कहां घूमता रहता है ! आजकल उसका पहनावा भी पहले से अच्छा हुआ है। पिछली बार जब वह मिला था तो वह छींट कपड़े का हवाई शर्ट पहने था। कलाई पर एक सुंदर हाथ-घड़ी थी। थोड़ी-सी मूंछ भी शायद रखी थी। गहरे नीले रंग का एक पैंट पहना था, तह को

पहले की तरह ही मोड़ लिया था। किंतु घुटनों तक जंगली घास का कचड़ा लगा हुआ था। उसका मुख सूख-सा गया था। शायद खाने का कोई ठिकाना नहीं है, चौबीसो घंटे घूमता ही फिरता है।

केलाई का रोग अच्छा भी हो सकता है—पैसा खर्च करना पड़ेगा। उसका रोग यदि ठीक हो जाए तो चेनिमाइ को सुख होगा। उसका परिवार फिर बन जाएगा। किंतु सरकारी खर्च से यदि चिकित्सा हो जाए तो अच्छा है, नहीं तो चेनिमाइ को कहां रुपया मिलेगा ?

बाद में जो होगा, होगा; पहले उसे एक अस्पताल में रख तो दें।

कपाही के साथ उसके बारे में सलाह करने की बात उसने दो-एक बार सोची थी, किंतु उसने बाद में निश्चिय किया कि इसके बारे में उससे नहीं कहना ही अच्छा है। वह भी क्या सोचेगी ! औरत का मन पा नहीं सकते, किंतु कपाही बुरी औरत नहीं है। चेनिमाइ का पति यदि चंगा हो जाए तो कपाही को बुरा मानने का कोई कारण नहीं है। पर सभी बातों को औरत से नहीं कहना ही अच्छा है।

पच्चीस

बहाग-बिहु के कुछ ही दिन पहले गुलच डालिम गांव गया। उसे आजकल डालिम जाने के लिए समय ही नहीं मिलता, और वहां जाने के लिए कोई जरूरत भी नहीं पड़ती। वह आहिस्ता-आहिस्ता सिपरिया गांव का रहने वाला हो गया था।

उसकी मां और बड़ा भाई ठीक तरह से चल रहे थे। गांव के दूसरे लोगों का समाचार भी ठीक ही था। अपने ही गांव में एक पराए आदमी की तरह आकर उसे अच्छा लगा था। गांव के लोग स्नेह से उससे बातें करते थे। कपाही कैसी है, दाल-सरसों कितने आए ?

अपने सुख और समृद्धियों के बारे में कहकर गुलच को अच्छा लगा। डालिम को छोड़े हुए इधर तीन साल होने को है। उसकी हालत में काफी परिवर्तन हुआ है, हालांकि डालिम पहले जैसा ही है। केवल दो-चार पौधे बड़े हुए हैं। दो-चार किशोर जवान बने हैं। दो-चार किशोरियां युवती बनी हैं।

अपनी मां और बड़े भाई के साथ उसने एक बात की सलाह की। डालिम गांव की पैतृक संपत्ति के बारे में क्या किया जाए ? बेच देने की उसकी इच्छा नहीं है। किंतु अच्छी कीमत मिलने पर वह बेच भी सकता है। ले सके तो बड़ा भाई ही उसे ले ले, अपने घर की बात है। इस समय उसका बड़ा भाई उसकी जमीन

में खेती आधी फसल देने के बंदोबस्त पर करता है। किंतु कई सालों से उसने फसल ली ही नहीं। उसकी मां भी है, बड़े भाई का परिवार भी बड़ा है और उसे भी अल्लाह कुछ दे रहा है, वह न भी ले तो चल जाता है।

किंतु बेचने के निर्णय के दो कारण हैं। सिपरिया गांव में अच्छी जमीन मिलने वाली है। दाम कुछ अधिक कह रहा है, किंतु जमीन अच्छी है। बाढ़ का भय नहीं है। बाघ, भालू का भी कोई अधिक डर नहीं हैं। और उस ओर गांव की हालत भी दिन-दिन अच्छी हो रही है। जमीन को यदि खरीद सके तो आगे फायदा ही फायदा है।

दूसरी बात है—गांव में इतना दाम देकर उस जमीन को लेने वाला कोई आदमी नहीं है। उसका दाम आठ सौ कहा है, जमीन करीब सात एकड़ होगी, उसके हाथ में अभी पांच सौ के करीब रुपए हैं। और तीन सौ की आवश्यकता है। जमीन के बदले जमीन लेगा। अच्छी बात है। उसके अलावा, आजकल सिपरिया गांव का धनी आदमी गुलच को ही माना जाता है। आठ सौ रुपए में उस जमीन को न ले तो लज्जा की बात होगी।

गुलच ने एक बार बसीरत की बात सोची थी। किंतु बसीरत अच्छा आदमी होने पर भी गुलच उससे रुपया उधार लेने के लिए तैयार नहीं है। भैंसा इसलिए लिया था कि उसने रुपए अपनी ओर से पहल करके दिए थे। और उस समय की बात भी अलग है।

उसकी मां ने उसे डालिम की जमीन बेचने के लिए मना किया। कोई दूसरा उपाय करके वह जमीन ले लो, न छोड़ो। किंतु, यहां की जमीन मत बेचो। पूर्व पुरुषों की संपत्ति बेचने पर लक्ष्मी चली जाती है।''

बड़े भाई ने कहा, "यदि बेचना ही है, तो और को न दो। मैं ही किसी तरह ऋण आदि करके लूंगा। अभी थोड़ा-सा रुपया दे देता हूं, कुछ पटसन हुए हैं, गुड़ भी कुछ मिला है, इन सामग्रियों को बेचकर कुछ दूंगा। चाहे तो तू ही कभी फिर हमसे ले लेना।''

गुलच ने कहा, "बैशाख हो ही गया। अभी दो सौ रुपए पेशगी देकर रखूं। बाकी रुपए आश्विन-कार्तिक महीने में देने पर भी राजी हो जाएगा शायद। तू यदि यहां की जमीन लेना चाहता है तो सावन-भादो के महीने में ही रुपए देने होंगे।

मां के परामर्शनुसार यह तय किया गया कि गुलच धान की जमीन के दो हिस्से बेचेगा। उसकी अपनी बारी और धान की कुछ जमीन वह अभी नहीं बेचेगा।''

बड़े भाई ने कहा, "सावन के अंत में बसीरत आने वाला है। वही पटसन लेता है। उसी से रुपया लेकर दाम चुका देगा।''

गुलच राजी हो गया।

मां की उसके साथ जाकर उसके घर को देखकर आने की इच्छा थी। किंतु

गुलच ने मां को अपने घर ले जाने का नाम तक नहीं लिया। एक बार जब वह ले जाना चाहता था, वह नहीं गई। अब जाएगी तो खुद जाएगी।

उसके न कहने के कारण उसकी मां ने भी कुछ न कहा। उसने ही जब नहीं बुलाया तो क्या मेरे ही न जाने से काम नहीं चलेगा ?

गुलच सफीयत के घर भी गया।

अन्य बातों के साथ सफीयत ने चेनिमाइ के बारे में भी पूछा। उसने जवाब दिया, किंतु साथ ही यह भी कहा, "चेनि का ब्याह उस परिवार को देखकर ही करना चाहिए था। वह दमे का रोगी है, परिवार कंगाल है, एक शाम खाता है तो दूसरी शाम खा नहीं सकता।"

सफीयत ने चर्चा को बंद करके कहा, "जिसकी घर में ही बदनामी होती है ? उसके लिए राजकुमार कहां से मिलेगा। हां, तेरा बाल-बच्चा क्या हुआ ?"

गुलच ने सर नीचा कर लिया, सफीयत ने समझा कि गुलच का कोई बाल-बच्चा नहीं हुआ है। अधेड़ कपाही को लेकर घर बसाया है—कहां से बाल बच्चा होगा !"

"चिंता करने की जरूरत नहीं है। किस्मत में है तो होगा। नहीं, तो दूसरी से शादी करना। तेरे पास आजकल दो-चार पैसे हैं। कितने ही लोग तुझे लड़की दे देंगे।"

कुछ रुककर बूढ़े ने पूछा, "किंतु, तरा भी साथ रहती है न ? किसी की ओर से उसके विवाह की बात नहीं चली है ?"

किसी तरह संभलकर गुलच ने जवाब दिया, "नहीं, किसी की ओर से भी नहीं।"

"हां, अपने गूंगे के लिए उसे लाना चाहते थे। किंतु वह छिनाल रातोंरात भागकर तुम लोगों के घर चली गई। देखूंगा कौन-सा राजकुमार उससे शादी करेगा। तू उस पर ठीक तरह से नजर रखना, आखिर औरत है, किसी दिन रुपया-पैसा सब लेकर भाग जाएगी।"

सर नीचा करके गुलच बैठा रहा, तरा की किसी से शादी कर देने की बात उसने कभी नहीं सोची थी। सफीयत की यह बात सुनकर उसकी छाती में कांटा सा चुभने लगा। उसका मुंह सूख गया। उसको कोई जवाब नहीं सूझा।

सर नीचा करके उसको चुप रहते देखकर सफीयत ने अपनी आवाज को जरा कोमल करके कहा, "तरा की शादी के बारे में यदि अब तक किसी ने नहीं कहा है, तो हमारे गूंगे के साथ ही उसकी शादी कर दे। उसकी मां की इच्छा थी। अब तू ही लड़की का मालिक है, तू जैसा कहेगा वैसा ही होगा। तू यदि शादी कराना चाहोगे तो है, वह क्या इंकार कर सकती है ?"

गुलच और सह नहीं सका, वह कुछ समय चुपचाप रहकर तुरंत उठ पड़ा।

"मैं अभी चलता हूं चचा, बहुत समय हो गया है। दिन के भीतर ही नदी पारकर जा सका तो अच्छा है। वैशाख में हुई बारिश के कारण धनशिरि में बड़ी बाढ़ आई है।"

"अच्छा, अच्छा जा ! किंतु मेरी बात को याद रखना। हम क्या कोई नए समधी हैं ? पहले से ही हम नजदीक के हैं। तरा को यदि हमारे घर बहू होने दिया तो तुझे यह घर भी मिल जाएगा।"

गुलच को गुस्सा आ गया। कुछ कहे बिना वह बाहर आ गया। और डालिम गांव में न ठहरकर घर की ओर पग बढ़ाया। एक बार चंद्र से मिलकर जाने की इच्छा थी, किंतु उसको और ठहरने की इच्छा नहीं हुई।

बाप-दादे की जमीन-जायदाद की बिक्री नहीं करनी चाहिए—लक्ष्मी चली जाती है।

तेरा बाल-बच्चा क्या हुआ है ? होगा, होगा, नहीं तो और एक से शादी कर लेना।

और एक से शादी करूंगा !

गबरू लड़की घर में आकर दे जाएगा !

गबरू लड़की !

और एक लड़की...

तरा को हमारे गूंगे के लिए...

तरा को गूंगे के साथ ?

गूंगे के साथ तरा की...

मां की इच्छा थी ?

कपाही तरा की गूंगे के साथ शादी करा देने के लिए राजी थी ?

आठ सौ रुपए में सात एकड़ धान उपजाने की जमीन !

सात एकड़।

तेरे बाल-बच्चे कितने हुए हैं ?

बाल-बच्चे !

नहीं तो दूसरी शादी करेगा !

तरा का ब्याह हमारे गूंगे के साथ—

गुलच को चक्कर-सा आने लगा ! वह कुछ भी नहीं समझ सका। कुछ गड़बड़ हो गई है।

सारा रास्ता वह इन्हीं बातों को सोचता गया।

धनशिरि में बहुत पानी आया है। कई वर्षों से वैशाख महीने में इतनी बाढ़ नहीं आई, सावन-भादो में वह क्या रूप लेती है, कौन जानता है ! एक छोटी-मोटी बाढ़ यदि अभी आ जाए तो बहुत बुरा होगा। रोपाई की जमीन पर तलौंछ छोड़

जाएगी। किंतु यदि खेती के बीच में आई तो ?

यदि आ ही जाए तो न करने का क्या उपाय है ? धनशिरि को कौन बाधा दे सकता है ?

हमारे गूंगे के साथ ही तरा की शादी करा दे। इस समय तू जो कहेगा, वही होगा। तू मालिक है।

होगा, होगा, बाल-बच्चा होगा; नहीं तो एक और शादी कर लेना।

गुलच ने निश्चय किया कि वह और डालिम गांव नहीं जाएगा। एक ही दिन में वह असमंजस में पड़ गया। उसके मन में एक अशांति भर दी। उसके अंतर में एक दुश्चिंता भर गई। उसने आज कल्पनातीत बात सुनी।

नहीं, नहीं, डालिम गांव के साथ उसका कोई संबंध नहीं है। उसको 'वहां दुख-ही-दुख था, फिर डालिम आने पर उसको दुख ही होगा। डालिम आकर उसने अपने मन को बेकार ही अशांत कर लिया।

वह डालिम की जमीन-जायदाद सब बेच देगा। डालिम के साथ अपना सारा संबंध तोड़ लेगा। वह सिपरिया गांव का आदमी होकर रहेगा। धनशिरि के पश्चिम-पार में उसका मंगल नहीं है। धनशिरि की पूर्वी पार उसको पनाह दे रहा है, उसे आदमी किया है। उसके हाथ में दो-चार पैसे आए हैं।

तुझे ही स्कूल का सभापति होना होगा।

स्कूल के लिए पच्चीस रुपए का चंदा देना होगा।

चंदा देना होगा !

गुलच चंदा देता है, स्कूल बनाता है।

डालिम गांव में उसके लिए कुछ भी नहीं है।

घर पहुंचने के बाद भी गुलच के मन से विषाद का बादल नहीं छंटा।

"क्या, सबका मंगल है..."? कपाही ने पूछा।

"हूं !"

"मां की तबीयत ठीक है न ?"

"हूं !"

"सफीयत बूढ़े के घर ?"

"कोई भी नहीं मरा, चुप रह।"

छब्बीस

उस दिन रात को गुलच को अच्छी नींद नहीं आई, बड़ी गर्मी भी थी और दिन भर धूप में ही दौड़-धूप करना पड़ा। कई-एक परिवारों में चाय-वाय भी पीनी पड़ी। उसने सोने की चेष्टा की, किंतु विविध चिंताओं के कारण उसको नींद नहीं आई।

मुर्गे की बांग के साथ-साथ उसने बिस्तर छोड़ा।

पूरब के आकाश में उस समय क्षीण प्रकाश दिखाई पड़ रहा था। घर के भीतर थोड़ा बहुत प्रकाश आ रहा था। शुक्र ग्रह का प्रकाश उस समय भी मंद नहीं पड़ा था। उसका प्रकाश थोड़ा-सा लाल हो गया था। पश्चिम का आकाश उस समय भी धुएं रंग के अंधेरे में डूबा हुआ था।

बिना शब्द किए दरवाजा खोलकर वह बाहर निकल आया। नदी के किनारे से ठंडी हवा का एक झोंका आ रहा था। हवा में नमी थी—शरीर को बिलकुल ही शीतल बनाती थी।

आंगन जरा भीगा हुआ था, धूल भरे आंगन में अंतिम चैत की शेष रात का पतला कोहरा पड़ा है। आंगन में पैर रखकर गुलच के शरीर को शांति मिली। खेती के समय वह इसी समय हल जोतने के लिए उठता है, उस समय ठहरने का वक्त नहीं रहता, देखने की फुर्सत नहीं होती। जल्दीबाजी में हल-बैल लेकर वह खेत में भागता है। इस समय उसे खेत जाने की जरूरत नहीं है। आकाश और पृथ्वी को देखने के लिए उसे अब अवकाश मिला।

इस समय कोई भी आदमी नहीं जागा था। बांग देने के बाद मुर्गे भी सो गैए हैं। सूरज का प्रकाश नहीं है, तारों का भी प्रकाश नहीं है। धूसर नील आकाश का एक अपना प्रकाश चारों ओर फैल गया है—सफेद नीला धूसर पीला। यह आकाश का अपना रंग है, जमीन का अपना रंग है, पृथ्वी का अपना रंग है। विमल आनंद में आश्चर्यचकित होकर उसने चारों ओर घूमकर देखा। पृथ्वी छोटी बनकर उसके पास आ रही है। उसका मन बिलकुल साफ हो गया। अपने आनंद की बात किसी और को बहुत सारी बातों से समझाकर कहने की इच्छा हुई।

उसने चारों ओर देखा—कोई नहीं है।

आंगन की एक ओर भैंसे बंधे हुए हैं, वे सोए हुए हैं, पास जाकर सोई हुई एक भैंस को जगाकर उस पर उसने हाथ फेर दिया। भैंस ने एक बार आंख खोलकर देखा और गुलच को सामने देखकर फिर आंख मूंदकर सो गई। वह गोशाला के पास गया, सभी गाय-बैल पीठ पर सर रखकर सो रहे हैं। वह लाल बछड़े के शरीर पर यों ही थपथपाकर हट आया।

उसने पुनः चारों ओर देखा, पूरब का आकाश धीर-धीरे सफेद हो रहा था। शुक्र ग्रह का प्रकाश धुंधला होता जा रहा था। हवा मानो कहीं से प्रकाश को चारों ओर छितरा रही हो।

गुलच के सामने ही सूरजमुखी फूल का पौधा खड़ा है। वह जरा पास चला गया, थोड़ी देर एक कंदुक की ओर देखता रहा। पिछले ही साल तरा ने सूरजमुखी फूल के पौधे को लगाया था। आज वह उसके सर के बराबर हो गया है। उसने अकस्मात देखा कि उसके देखते ही देखते सूरजमुखी का एक कंदुक तपाक से खुल गया। कंदुक एक फूल में बदल गया।

उसने कभी भी फूल खिलते हुए नहीं देखा था, देखा है खिला हुआ फूल।

फूल उसी प्रकार खिलता है—उसने अपने आप कहा।

आंखों के सामने खिले फूल को देखकर उसके मन में कुछ नए भाव जगे। तरा को बुलाकर फूल को दिखाने से उसको आनंद होगा—उसने सोचा।

और क्षण भर फूल की ओर ताककर वह दहलीज पर आया।

उसने पुनः आकाश की ओर देखा, पूरब के आकाश की छाती के सफेद बादलों में हिरण्यगर्भ के सिंदूर की रेखाएं खिंची हैं। शुभ, शांत प्रकाश पृथ्वी पर फैल गया है।

आकाश इतना सुंदर हो रहा है !

इतनी सुंदर बनी है पृथ्वी !

तरा को जगा दूं—

उमंग में उछलकर वह भीतर आकर तरा के कमरे में चला गया। बीच के कमरे में कपाही अभी भी घोर निद्रा में है, उसके बिस्तर के पास से ही वह तरा के कमरे में गया, उसको होश ही नहीं है, नाक बजाकर सो रही है। सुबह की मीठी नींद।

तरा के बिस्तर के पास पहुंचकर वह एकाएक रुक गया।

नीची दीवार के ऊपर से और छोटी खिड़की से होकर सबेरे का सुनहरा प्रकाश भीतर आ रहा है। तरा के बिस्तर पर, तरा के शरीर पर प्रकाश आकर धीरे से बैठा है।

गुलच ने चुपचाप तरा की ओर देखा।

तरा नींद में है। ऊपर की ओर मुंह कर वह सो रही है। गर्मी के कारण ही शायद उसने जामा खोल रखा है। उसका दूध-सा सफेद शरीर निकल रहा था। हाथी के दांत जैसे सफेद भरे हुए कड़े दोनों उभार सांस लेने के साथ-साथ ऊपर-नीचे हो रहे हैं। उसकी दोनों मांसल भुजाएं बिस्तर पर ढीली पड़ी हुई हैं। एक हाथ बिस्तर पर से लटका हुआ है।

तरा की मेखला ऊपर उठ जाने के कारण उसकी दोनों सफेद जांघे उघड़ी पड़ी हैं।

गुलच आश्चर्यचकित हो गया।

उसकी छाती कांपने लगी। इतना भरपूर रूप है, इतना उन्मुक्त यौवन है ! शरीर का इतना भरपूर विकास उसने अपने जीवन में कभी नहीं देखा है। दूध-सी सफेद तरा की समस्त देह के प्रत्येक अणु में हजारों सपनों का उन्माद है, हजारों कामनाओं का आह्वान है।

बाहर पृथ्वी में प्रकाश लगातार बढ़कर तरा की आंखों पर धीरे से आ बैठा। तरा के मीठे होंठों पर मीठी हंसी की एक स्मित रेखा दिखाई देने लगी। कमल की

दो कलियों की आकाशोन्मुख वंदना में हजारों रातों की चेतना खोने का उन्माद है।

गुलच जरा तरा की ओर बढ़ गया, उसने फिर एक बार तरा के संपूर्ण शरीर पर एक नजर डाली, उसके बाद बिस्तर पर से लटके हाथ को धीरे से उठाकर उसकी छाती पर रख देना चाहा।

तरा जग गई।

उसने अपनी आंखों को बड़ी कोमलता से खोला।

गुलच को डर-सा लग गया, वह जरा सहम गया, किंतु कपाही की खर्राटी हुई नींद ने उसे जरा साहस दिलाया।

घुटनों के नीचे मेखला को खींचकर तरा बिस्तर पर ही सहज रूप से बैठ गई। उसकी आंखों पर से एक लज्जा-कोमल विजय लुढ़क गई।

अपनी सरल दृष्टि से गुलच की ओर शांत भाव से देखकर तकिए के नीचे से ब्लाउज को निकालकर उसने पहना।

गुलच अवाक होकर खड़ा रहा

आंखों के इशारे से तरा ने पूछा, "मौसी जगी है क्या ?"

गुलच ने सर हिलाया, "नहीं जगी।"

चद्दर को शरीर पर लपेटकर बिना शब्द किए तरा बिस्तर पर से उतरी और आंखों के इशारे से गुलच को बाहर जाने को कहा।

गुलच धीरे से बाहर निकल गया।

उसके पीछे तरा भी निकल आई।

दोनों ने कपाही की ओर देखा। वह अब भी गंभीर नींद में है।

आंगन के छोर पर सूरजमुखी फूल के पौधे के पास आकर गुलच रुका।

तरा भी उसकी दाईं ओर आकर खड़ी हो गई।

पूरब के आकाश में उस समय सबेरे का रंग स्पष्ट होने लगा था। गुलच ने आकाश की ओर ताका, पृथ्वी अभी उन्मुक्त प्रकाश के बीच स्पष्ट हो उठी है।

सर उठाकर गुलच के मुंह की ओर ताककर उसने फुसफुसाकर पूछा, "क्या हुआ है ?"

कुछ कहे बिना गुलच ने सूरजमुखी की ओर अंगुली उठाकर दिखाया।

खिले हुए फूलों को देखकर तरा का मुंह प्रफुल्लित हो उठा।

आकाश का प्रकाश आकर उस फूल को छू रहा था। हवा जरा-सी गर्म होने लगी।

"मेरे पास क्यों गए थे ?" तरा ने फुसफुसाकर पूछा।

उसने फुसफुसाकर कहा, "मेरे सामने ही देखते-देखते यह फूल खिल उठा, तुझे बुलाकर दिखाने के लिए गया था।"

तरा ने सुंदर हंसी हंसकर कहा, "अरे, मैं समझी थी कि कोई और बात

है...''

गुलच ने एक बार तरा की ओर देखा, शर्म और खुशी में वह लाल हो उठा था।

इसके बाद उसकी बांह पकड़कर उसे हिलाकर कहा, "इतनी बड़ी हो गई है, सोना भी नहीं जानती।''

शर्म के मारे लाल हो उठे मुंह से तरा ने उसी स्वर में कहा, "है ही कौन ? केवल तुम ही हो घर में।''

गुलच और बोल नहीं सका।

"तेरी मौसी उठ गई होगी—जा !''

तरा ने इस बार जरा ऊंची आवाज में कहा, "इतनी देर तक सबको क्या सोए रहना चाहिए ?''

एक हल्का, आनंद चंचल मन लेकर गुलच कपाही के कमरे में घुस गया।

उस समय तक स्पष्ट प्रकाश हो गया था। सबेरा हो गया था। कपाही की नींद तब तक नहीं टूटी थी। शायद गर्मी के कारण उसको भी रात को नींद नहीं आई थी।

वह कपाही के पास गया।

करवट लेकर कपाही सो रही है। उसका एक होंठ जरा टेढ़ा होकर लटका हुआ है। उसकी देह पर से भी कपड़ा उतर गया था। उसकी देह का रंग भी तरा की देह के रंग जैसा लाल-सफेद है। किंतु उसकी देह तरा की देह की तरह चिकनी और भरपूर नहीं है। उसकी देह पर और कपाल पर दो-चार अस्पष्ट रेखाएं उभर आई हैं। उसके मुंह पर उम्र का दबाव स्पष्ट दिखाई पड़ रहा है।

उसके उरोज भी भरे हुए और मोटे है, किंतु जरा लंबा होकर लटक गए हैं। वे यौवन के सौंदर्य को पूर्ण रूप में पकड़ कर नहीं रख सके हैं।

बांह से पकड़कर गुलच ने उसे जगा दिया।

"अरे, कितना सोती है, उठ, दोपहर हो गई है।''—कपाही सकपकाकर उठ पड़ी। वह साधारणतया इतनी देर तक सोई नहीं रहती।

"क्या दरबे को खोल दिया है, तरा ?''—आंखें मलकर बिस्तर पर से ही कपाही चिल्लाई। किंतु उस समय तरा बर्तनों को लेकर पोखरे के किनारे पहुंच गई थी। उसने मौसी की आवाज नहीं सुनी। सुनने पर भी न सुनने का बहाना किया।

सबेरे का बढ़िया मौसम है, गुलच का मन भी खुशी से भरा है, पिछले दिन डालिम गांव से लाया गया विषाद भी इस समय तक छंट गया था। कुछ अस्पष्ट आशा और एक स्पष्ट आनंद ने गुलच को प्रफुल्लित कर दिया। उसने गोशाला का दरवाजा खोल दिया, गाय बछड़े निकल आए, दुधारी गाय को एक और खूंटे में बांधकर बाकी को निकल जाने दिया। पूंछ हिला-हिलाकर दौड़ते हुए बछड़े नदी की

ओर जाने लगे।

कपाही के आंगन में आनंद के कुछ रंग बिखर गए।

कपाही ने गुलच के आनंद के प्रति लक्ष्य किया, किंतु उसका कोई कारण उसे समझ में नहीं आया। तथापि गुलच को जरा आनंदित देखकर उसको भी आनंद हुआ। यह आदमी सुबह के मुंह-अंधेरे से रात के उल्लू के चिल्लाने के समय तक काम करना ही जानता है; हंसना, बातें करना आदि जानता ही नहीं। आज ही उसका मन जरा प्रफुल्लित हो उठा है।

कपाही ने तरा में किसी प्रकार का बाहरी परिवर्तन नहीं देखा, यह भी गुलच की तरह ही हुई। सर नीचा करके यह केवल काम करना जानती है। मुंह पर कोई हंसी नहीं है। मालूम नहीं, किस प्रकार की गबरू लड़की है यह !

कपाही तरा के मन की हालत के बारे में जानने के लिए बीच-बीच में कोशिश नहीं करती, ऐसी बात भी नहीं।

तरा की ब्याह-योग्य उम्र हो गई थी, देखते ही देखते उसकी उम्र सत्रह साल की हो गई थी। वह अब छोटी नहीं है। इसके अलावा परिवार में और कोई दूसरा प्राणी नहीं है। वह किसके साथ मन की बात कर सकती है ? कहीं किसी के घर जाने के लिए भी यहां किसी संबंधित आदमी का परिवार नहीं है। सभी नए सिरे से परिचित लोग हैं। और गबरू लड़की का सब के घर यों ही आना-जाना भी अच्छा नहीं है। लोग विभिन्न बातें कर सकते हैं।

गुलच भी इस प्रकार है कि तरा के ब्याह के लिए वह कुछ भी नहीं सोचता। वह क्या इसी तरह घर में ही बूढ़ी हो जाएगी ? हां, तरा के विषय यदि कोई इंतजाम नहीं हो तो उसके मुंह पर हंसी कहां से खिलेगी ? और, इस तरह रहना अच्छा नहीं है। इसके बारे में गुलच के साथ सलाह करनी चाहिए।

इसके बारे में चर्चा की जा सकती है। आज गुलच का मन प्रफुल्लित है। और दिन वह इस प्रकार कहां रहता है। इन बातों के बारे में चर्चा करने के लिए भी डर लगता है। किंतु इस आदमी को अकल नहीं है, यह बात भी नहीं है; नहीं तो उसकी हैसियत आज इस प्रकार की नहीं होती। उसने कुछ सोचकर रखा होगा। किसी अच्छे घर में तरा को ब्याह सके तो और चिंता नहीं रहेगी।

किंतु उस दिन उसके बारे में चर्चा करने के लिए उसे कोई मौका नहीं मिला, तरा दिन भर घर में ही थी। उसके सामने इस बात के बारे में चर्चा नहीं की जा सकती। और दोपहर के बाद गुलच ने कपाही के साथ इधर-उधर की दो-चार बातें ही कीं।

बिहु के दिन भी इस बात के बारे में चर्चा न हो सकी। उन दिनों गुलच विभिन्न कार्यों में व्यस्त रहा था। इच्छा करते हुए भी वह बिहु में डालिम गांव नहीं गया। सिपरिया गांव के आस-पास ही वह घूम आया, कई-एक परिवारों में वह गया,

और नदी के किनारे और खेत में अकेले ही अकेले घूमता रहा।

आकाश के गर्भ में पानी ही पानी है। भरा हुआ बादल ढोल और शहनाई की आवाज सुनकर नीचे उतर आया है। हवा में केवड़े के फूल की महक बहती आई है। धनशिरि के गर्भ में स्रोत का उत्ताल नृत्य हो रहा है। सेमर के फल फटकर उसमें से रूई निकलकर चारों ओर फैल गई है। उड़ते हुए बादलों के साथ उड़ती हुई रूई की होड़-सी लगी है।

सूखे मैदानों की छाती को चीरकर जमीन के नीचे से घास की नोंक उठ आई है। हवा की छाती में जीवंत वन की प्राणवंत महक है। आकाश और वातास में हजारों जीवन की हजारों प्राण-धाराएं व्याप्त हैं।

अपने घर की चारदीवारी गुलच के उड़ते हुए मन को बांधकर नहीं रख सकती। मन में पर लगे हैं, परों पर रंग चढ़ा है, रंग के साथ सौरभ सना है और उस सौरभ में जीवंत वन का प्राण-संचार है।

गुलच को इधर-उधर घूमते रहना पड़ता। बंधन-मुक्त प्राण-पक्षी है, नीड़च्युत होना चाहता है, घाट की नाव घाट-मुक्त होकर बीच सागर में चला जाना चाहती है, वैशाख की पृथ्वी पुरानी को भूल जाने के लिए आह्वान करती है। सभी नए हैं, गुलच के मन के भीतर एक नया आदमी जग उठता है, कच्चे खर के किसलय हरे हो जाते हैं, ढेकिया साग के सुंदर सिरे घुंघराले होते जाते हैं। मन के मोड़ पर रंग चढ़ने लगता हैं।

गुलच को ऐसा लगता है कि वह मानो सात ढोल बजाकर नाचेगा, हाथ-ताली देकर कपाही, तरा और गांव की लड़कियों और बहुओं को बिहु में नचाएगा, नाचने वालियों की पिंड़लियों पर से पसीना बह जाएगा। उसके पेंपा (एक बाजा) की आवाज से केतकी की छाती कांप उठेगी।

गुलच बिहु नाचने नहीं गया, किंतु उसके मन में अपार बिहुमय स्थानों की चहल-पहल है, उसका मन नाचने लगता है।

कल-कल करके बहने वाली धनशिरि से वह कहता है—जरा रुक नहीं सकती ! रोज बहकर तुझे क्या मिलता है ? वैशाख आया है, बिहु आया है, जरा ठहर कर एक बार नदी नाच जाती, तू केवल बहना ही जानती है। आ, जा, तुझे एक दिन के लिए नहीं नचा सका, अफसोस रह गया। तेरे किनारे एक दिन हम नाचेंगे समय होने पर जरा ठहरकर देख जाना...

और भी कुछ कहता है उसका मन, उसका मन क्या कहता है। वह खुद भी नहीं समझता। धनशिरि शायद उसके मन की बात जानती है, शायद नहीं जानती उसे परवाह नहीं है। नाचने की इच्छा होने पर नाचना चाहिए, गाने की इच्छा होने पर गाना चाहिए, बिहु नाचने की इच्छा होने पर बिहु नाचना चाहिए।

यह मन के ऊपर निर्भर है।

आंधी आना, धनशिरि का बहना, सेमल की रूई उड़ना, बाढ़ से किनारा टूटना, चारों ओर विनाश की सृष्टि करना—यही जीवन है, यही बिहु है।

गुलच के मन के मंदिर पर उसी बिहु का रंग चढ़ा है। वह और कोई दूसरी बात नहीं जानता।

सत्ताईस

आषाढ़ का महीना शेष होने को था, निचली जमीन के लिए गुलच ने अंतिम रोपाई के लिए बीज डाले। नदी के किनारे कुछ जमीन थी, आश्विन के महीने में ही रोपी जा सकती है। खेती के शुरू के दिनों में उसमें पानी जमा रहता है। उसके लिए बीज भी अंत में डालना पड़ता है।

कहीं से आकर चंद्र उससे उसके खेत में ही मिला।

"क्या अभी भी बीज नहीं डाला है, गुलच ? बड़ी देर कर दी है—क्यों ?"

"ये बीज तो सबसे अंत की खेती के लिए ही हैं। तू कहां से आया है ?" खेत की मेड़ पर चढ़कर गुलच ने कहा।

"इस ओर कैसा है ?"

"अच्छा ही है। आया कहां से ?"

"डालिम की ओर से कोई खबर नहीं मिली है ?"

"ऐसी कोई खबर नहीं मिली है। बहुत दिनों से उधर नहीं गया हूं, क्या हुआ है ?"

चंद्र ने दो बीड़ियां निकालीं और एक गुलच को दी।

चंद्र की बीड़ी से ही अपनी बीड़ी जलाकर गुलच भी कश लगाने लगा।

"उस ओर एपिडेमिक हुआ है।"

"क्या हुआ है ?"—एपिडेमिक शब्द का अर्थ गुलच को समझ में नहीं आया।

"धुएं को धीरे-धीरे छोड़कर चंद्र ने कहा, "कलेरा हुआ है। पुराने डालिम की ओर दो मरे भी हैं।"

उसकी आवाज में किसी प्रकार की उत्कंठा नहीं है।

"कलेरा हुआ है ! हम तो जानते ही नहीं। अभी हाल कैसा है ?"

"और कई-एक को बिना लिए थोड़े जाएगा ? हमारी बात को उड़ा देते हैं। होवाए नट डाई ? क्यों न मरेगा ? पोखर के सड़े हुए पानी पीते हैं। नदी का पानी नहीं ले जा सकते हैं ! और वे क्या मनुष्य हैं ? जानवर की तरह रहेंगे, घर द्वार-साफ

करने का कोई नियम नहीं है। आल डर्टी, घर के चारों ओर डर्टी ही डर्टी। पानी गर्म करके पीने के लिए जब कहते हैं, तब हंसकर उड़ा देते हैं। आषाढ़ का गरम पानी है। हम पूस के महीने में भी ठंडा पानी पीते हैं। अब मरो ठंडा पानी पीकर। मुझे खबर मिलते ही पहुंच गया। इतना कहा—नो लिश्न—आल लाफ। खुद गोलाघाट जाकर एस. डी. ओ. से कहकर सरकारी डाक्टर को ले आया, इंजेक्शन नहीं लेते। जो नहीं लेते वे नहीं मरेंगे तो कौन मरेगा ? लेट डेम डाइज।''

"तो डाक्टर आया है !'' गुलच ने कहा।

"कहां आता है ! कोई डालिम में आता है ? मैं जाकर ले आया, आज चार दिन से वही है। इंजेक्शन दे रहा है, और कोई नया आदमी बीमार नहीं पड़ा है, किंतु नाहर इसी बीच चल बसा।''

"कौन चल बसा ?''

"नाहर, जिसने पहले कपाही के साथ ब्याह किया था। जवान आदमी था, यंग मैन, किंतु होगा क्या, डेथ किलिंग एवरी बाडी।''

नाहर की मौत के कारण गुलच को आनंद होना चाहिए या दुख—इसके बारे में वह खुद ही निश्चय न कर सका; उसे अच्छा ही लगा, ऐसा उसे आभास हुआ। नाहर नहीं रहा।

एकाएक गुलच ने पूछा, "सफीयत की ओर नहीं हुआ है ?''

"उस ओर नहीं हुआ, होने की संभावना देखकर पहले ही इंजेक्शन दिया है। कुछ लोगों ने इंजेक्शन लिया है। प्रिवेन्शन बैटर देन किओर।''

गुलच को मानो यह बात पसंद न आई। हैजा होकर सफीयत बूढ़ा, चेनि का पिता... सबको मरना चाहिए था। जिनको मरना है वे नहीं मरते।

चंद्र ने कहा, "इस ओर के बारे में जानने के लिए आया था। लोग इधर से उधर और उधर से इधर आते ही रहते हैं। किसी प्रकार यहां भी हो सकता है। कलेरा स्प्रेड करता है।''

गुलच ने कहा, "अब तक उसके बारे में नहीं सुना है। हमारे यहां नहीं हुआ है।''

दोनों धीरे-धीरे खेत से गुलच के मकान की ओर चल पड़े। आषाढ़ के महीने में भी चंद्र ने पीछे की ओर रस्सी लगा सैंडल पहन रखा है। पैंट को घुटनों तक कर लिया है। आंखों पर एक जोड़ा काला चश्मा भी है। उसके चेहरे पर दाढ़ी लंबी हो गई है। कई दिनों से बनाई नहीं गई है। शायद उसे समय ही नहीं मिला है।''

रास्ते में ही गुलच को एक बात की याद आ गई। उसने पूछा, "डाक्टर को हमारी तरफ भी एक बार नहीं ला सकता ?''

"डाक्टर को ? क्यों ?''

"चेनिमाइ को—तुझे याद है न ? वह...।''

"मोलोका की बहू ? वह... उस समय की... तेरी ?"

"हां भाई, उसके मर्द को बीमारी है, पुरानी हो गई है। डाक्टर यदि एक बार देख लेता !"

"यह तो एपिडेमिक का ही डाक्टर है, उसको हुआ क्या ?"

"कोई खांसी की बीमारी है, श्वास या एजमा बीमारी है।"

"देख लेने पर भी डाक्टर इलाज नहीं कर सकेगा। कलेरा के लिए ही आया है।"

"इलाज चाहे तो बाद में करे। हम सोच रहे हैं कि उसे यदि गोलाघाट के सरकारी अस्पताल में नहीं ले जाएंगे तो उसके चंगे होने की आशा नहीं है। यदि डाक्टर एक बार देखकर गोलाघाट ले जाने के लिए व्यवस्था कर देते तो।"

दोनों गुलच के आंगन में पहुंचे।

तरा, ओ तरा... चंद्र ने आवाज दी।

तरा भीतर से निकल आई।

"अरे, भैया।"

तेरा भैया न होकर, कोई तेरे लिए राजकुमार आएगा ? एक कटोरा चाय पिला। मेरा गला सूख गया है।

झुंझलाहट भरी नजर से उसे ताककर तरा तुरंत रसोईघर में गई। गुलच को भी धूप में प्यास लगी थी।

गुलच ने कहा, "जरा बैठ, मैं हाथ-पैरों के कीचड़ को साफ करके आता हूं। तरा, हो सके तो जलपान का भी इंतजाम करना।

और एक बीड़ी सुलगाकर चंद्र ने चश्मे को खोला और पूछा—क्या तेरी मौसी नहीं है ?"

रसोई से ही तरा ने आवाज दी, "क्या, मेरे हाथ से तुम चाय नहीं पीओगे ?"

चंद्र ने कहा, "हूं, रिप्लाई देने के लिए सीखा है। हां, तुझमें गुण होता तो क्या इतने दिन घर में बिन ब्याही रह जाती ?"

"अच्छा, रहने दो। तुम ही कौन शादी कराकर बच्चों के बाप बने हो। हमसे इस तरह की बात कहने के लिए तुम्हें शर्म आनी चाहिए थी।"

"अच्छा और दो वर्ष तक इंतजार कर। देखना, शहर की राजकुमारी लाकर घर में रखूंगा।"

"और इसीलिए ही गांव में मन नहीं लगा है। मैं पहले ही समझ गई थी...।"

गुलच के गला साफ करने की आवाज सुनकर तरा चुप हो गई।

थोड़ी देर बाद दोनों को चाय और जलपान दे गई।

तरा की ओर देखकर चंद्र ने जरा गंभीर होने की चेष्टा की और कहा, "तरा

को कहीं ब्याह देने का इंतजाम किया है या नहीं, यह तो बड़ी हो गई है... ।''

उसके प्रश्न को सुनकर गुलच के मुंह में भरने वाला जलपान का कौर बीच में ही रुक गया। एक बेबस नजर से उसने चंद्र की ओर देखा।

चंद्र ने कहा, "हां, जहां-तहां ब्याह न देना। हमारे समाज में लड़की का जन्म होते ही ब्याह देने की बात की जाती है। लड़की का मत लेने के बारे में महसूस ही नहीं करते। ब्याह देने पर अच्छा घर-द्वार देखकर, अच्छे लड़के के साथ ही देना, उसके लिए अच्छा लड़का मिलेगा ही।''

गुलच ने जलपान आधा ही खाया, चाय भी उसने जल्दीबाजी में पी, और किसी प्रकार संभलकर कहा, "देखूं, एक बीड़ी दे तो। ओ तरा, जरा आग लाना... ।''

दीवार के उस किनारे तरा उत्कंठित होकर खड़ी थी। उसका दिल कांपने लगा था। गुलच के उत्तर के लिए फांसी की सजा के लिए रुके अपराधी की तरह वह सांस रोके खड़ी थी। गुलच की नीरवता ने उसे भयहीन न करने पर भी उसे कुछ हद तक आश्वस्त किया।

झुकी हुई नजर से आकर वह किसी तरह जले हुए एक अंगार को गुलच के हाथ में दे गई।

चंद्र ने कहा, "तू मत डर, तरा ! आइ एम योर ब्रादर। तेरा ब्याह जहां–तहां नहीं हो सकता, मैं बड़े ही अच्छे लड़के से तेरा ब्याह करा दूंगा।''

"जा...!'' धीरे से कहकर तरा पुनः भीतर चली गई।

गंभीर होकर चंद्र ने गुलच को समझाने की कोशिश की–"पहले हमारे यहां हिंदू लड़कियों का स्वयंवर होता था। लड़की देख-सुनकर लड़के को चुनती थी और खुद उसके गले में माला डालती थी। कहते हैं कि आजकल यूरोप और अमेरिका की ओर लड़का और लड़की के मन का मेल होने पर शादी होती है। हमारे गांवों में ही लड़कियों को जोर-जबर्दस्ती से ब्याहा जाता है। किंतु ये नियम आज भी अचल हैं। तरा का भी एक दिन ब्याह करा देना, किंतु उसका मन पाने पर ही, उससे पूछ करके ही। जोर-जबर्दस्ती से उसका ब्याह न कराना। गांव की कुछ लड़कियां जो किसी न किसी के साथ भाग जाती हैं, उनकी यह बात भी खराब नहीं है, मन का मेल ही रीयल मैरेज है।''

सर नीचा करके गुलच चंद्र की बातों को सुनता गया, किंतु उनका अर्थ वह नहीं समझा।

तरा को ब्याह देना होगा।

तरा के लिए अच्छा घर-द्वार और एक अच्छा दूल्हा खोजना होगा। यानी तरा को अपने से कहीं दूर भेजना ही होगा।

चंद्र की बातों से गुलच की चिंता और बढ़ी। तरा के ब्याह के बारे में सोचने

से भी कठिनाई होती है ! वह इतना कठोर कैसे होगा ? तरा को वह किस प्रकार दूर भेजेगा, कैसे अलग करेगा ?

तरा यदि जाना नहीं चाहे तो !

प्यार की आग जितनी जल्दी जलती है, उतनी जल्दी बुझती नहीं। बुझने के समय और अधिक जल उठती है।

चंद्र जाने को तैयार हुआ।

"मैं फिर डालिम जाऊंगा, तू चिंता न करना। हो सके तो परसों मैं डाक्टर को ले आऊंगा। हम चेनिमाइ के पति के घर जाएंगे। यदि डाक्टर एडवाइस दे तो उसे टाउन ले जाने का एरेंजमेंट कर लूंगा। तू चिंता न करना, मैं तो हूं।''

चंद्र चलने को हुआ।

तरा भीतर से निकल आई।

"भैया, जा रहे हो क्या ?''

"न जाकर तुम लोगों के यहां तमाशा करते रहने से क्या मेरा काम चलेगा ? एगेन डालिम गांव जाना होगा। अच्छा तरा, मैं चला।''

एकाएक गुलच कह उठा, "अच्छा चंद्र, हमारे यहां एक अस्पताल की स्थापना नहीं कर सकते ?''

चंद्र ने गुलच के मुंह की ओर ताका।

"कौन कहता है, नहीं हो सकता ? हु सेज ? गांव के लोग चाहें तो कुछ असंभव नहीं। मैं तो बहुत दिनों से सोच रहा हूं। किंतु मेरे पास तो केवल मुंह है, रुपया तो नहीं है। तू यदि इसमें जरा पहल करो, तो मैं हाथ डाल सकता हूं। ठीक ही है, एक अस्पताल की नेसेसिटी हो गई है।''

"हां...'' गुलच ने धीरे से कहा।

फिर मिलकर चर्चा करने की बात कहकर चंद्र चला गया।

गुलच ने आंखें उठाकर तरा की ओर देखा। तरा ने भी देखा।

गुलच ने नजर नीची कर ली।

उसे भय-सा लगा, कोई एक अदृश्य षड्यंत्र ही मानो तरा को उससे अलग करके ले जाना चाहता है।

अट्ठाईस

धान की रोपाई का दिन है, दूसरी बातों के बारे में ध्यान देने के लिए समय नहीं

है। जल्द ही रोपाई का काम पूरा करना होगा। एक दिन का विलंब होने का अर्थ है, भारी नुकसान होना।

कपाही और तरा दोनों रोपनी मे बड़ी पटु हैं। उनके हाथ बड़े तेज हैं। एक एकड़ के करीब जमीन की रोपनी दोनों एक ही बेर में कर आती हैं। तरा पानी-पौध भी एक ही बेर में बीस-बाईस पुलिंदे तक उठाती है—उसको थकावट नहीं होती।

मौसम अच्छा हुआ है। आषाढ़ के पूरे महीने में बारिश होती रही, अभी सावन के इस पक्ष में धूप निकली है। मिट्टी सड़ गई है, अतः रोपनी के लिए जमीन अच्छी बनी है। बड़ी बाढ़ आने के पहले धूप के दिनों में ही रोपनी का काम हो जाए तो पौधे अच्छे बनेंगे और उस समय कोई भय नहीं रहेगा।

कौवे-मुर्गी के जगने के पहले ही गुलच खेत में जाता है। साथ-ही-साथ कपाही और तरा भी उठती हैं। गाय और भैंसों को दूहती हैं, जलपान तैयार करती हैं, धान कूटती हैं, इसके बाद गुलच के लिए जलपान लेकर दोनों खेत के लिए निकल पड़ती हैं। हल की सीत या हेंगे में कभी हाथ से और कभी जकाइ (मछली पकड़ने का बांस का एक औजार) से मछली पकड़ती हैं। इसके बाद रोपाई या बिरवे उठाने के काम में लगती हैं। किसी दिन कपाही घर में ही रह जाती है। खेत में आज ज्यादा काम नहीं है, तरा ही कर लेगी। वह घर में दोपहर का खाना बनाती है, बीच-बीच में करघे का काम भी कर लेती है।

खेत में धूप के कारण लाल हुए तरा के मुंह को देख—देखकर मन के आनंद में गुलच हल चलाता है; जमीन को हेंगे से चूर करता है, तरा के साथ छोटी-छोटी बातें करता है। अधिक धूप लगने पर वे दोनों मैदान के किसी आम या पीपल के पेड़ के नीचे बैठ जाते हैं। गुलच एक बीड़ी सुलगाकर पीता है। तरा मिट्टी सने चद्दर से अपने मुंह को पोंछती है, एक कटोरा पानी पीती है। उसके बाद पुनः खेत में उतरती है।

कभी तरा घर रहती है, कपाही खेत में।

उस दिन धूप बड़ी कड़ी थी। जोते गए मैदान के पानी और कीचड़ भी गर्म हो गए थे, भैंसा और बैल चलना नहीं चाहते थे, धूप की गर्मी तीखी थी।

कपाही और गुलच दोनों खेत से बाहर आए। इतनी धूप में खेत में रहना संभव नहीं है।

दोनों आकर पीपल के पेड़ के नीचे आकर बैठे। गुलच की खाली पीठ धूप के कारण जल गई थी। उसने कपाही की ओर अपनी पीठ को देकर कहा, "देख, अंधौरी तोड़ देना।"

पास आकर कपाही गुलच की पीठ की अंधौरी तोड़ने लगी। उस ओर के बांस के झुरमुटों से हवा का एक झोंका बह रहा था। उनको जरा शांति मिली। उमस कुछ कम हुई।

रोपने के लिए उस समय जमीन आधी से अधिक थी। कुछ जमीन में तो दूसरी बार हल चलाया ही नहीं गया। गुलच की एक ही चिंता है।

और दो-चार औरतों को रोपनी के काम में न लगाए तो लगता है कि सावन के भीतर खेती पूरी नहीं होगी। जो नई जमीन निकाली गई थी, वह तो पूरी बाकी ही है।

केवल रोपनी और बिरवे उठाने से ही काम होने वाला नहीं है ? बैल का जोड़ा यों ही बैठा हुआ है। महीना-पंद्रह दिन के लिए किसी को हल जोतने के लिए रखना होगा। अकेले और कहां तक काम चलेगा ?

"औरों से हल जोतवाना हो तो मुझे पसंद ही नहीं आता। कुछ हलवाहे ऐसे होते हैं कि उनसे मिट्टी महीन होती ही नहीं। किंतु, एक यदि न रखा गया तो काम नहीं चलेगा।

गुलच के मन को पाने के लिए कपाही ने प्रयत्न किया, "तुमसे एक बात कहना चाह रही थी मैं।"

"क्या है ?"

"मोलोका का लड़का...वह तिखर... इधर आ-जा रहा है। अपने घर में खेती-बारी केवल नाम के लिए ही है। उसे ही यदि रखा जाए तो बुरा होगा ?"

गुलच खेत की ओर देखकर बैठा रहा, कुछ नहीं कहा।

जरा रुककर कपाही ने कहा, "और एक बात है।"

उस बार भी गुलच ने जवाब नहीं दिया। कापही की बात के प्रति केवल ध्यान दिया।

"अकेले तुम खेती-बारी, घर-द्वार... कितनी जगह नजर रखोगे ? मैंने सोचा है कि तिखर को ही तरा के लिए घर-जमाई कर लें। लड़का कोई खराब है ?"

"क्या ?" गुलच चिल्ला पड़ा।

उसकी चिल्लाहट से कपाही डर गई। किंतु उसकी बात बंद नहीं हुई। उसने कहा, "हम भले ही तरा को छोटी समझें किंतु वह छोटी नहीं है। आज नहीं तो कल, किसी से उसका ब्याह नहीं होगा ? तिखर यदि पसंद नहीं है तो दूसरे लड़के को देखो। तुम्हारा इन बातों के प्रति काई ध्यान ही नहीं है।"

गुलच झटपट उठ पड़ा और गरजकर कहा, "चुप रह। इच्छा है तो अपने लिए ही किसी को घर-जमाई कर ले। मुझे मालूम नहीं है क्या कि एक बार सफीयत के गूंगे के साथ तू उसका निकाह करवाना चाहती थी ? इस बार तुझे मिला मोलोका का लड़का—तिखर। तुम लोग दोनों जाओ, जहां इच्छा हो वहीं जाओ, जिसके साथ जाने की इच्छा है उसी के साथ जाओ—हो सके तो मैं अकेले ही खेती करूंगा। नहीं कर सका तो नहीं करूंगा। न बारी-बारी से काम करने वाला है, न बंधक है, सीधे घर-जमाई है। घर-जमाई द्वारा जोती गई जमीन की फसल मुझे नहीं खानी है।"

वह खेत में उतर गया, और साए में आराम किए हुए भैंसे की पीठ पर जोर से कोड़ा लगाया। एकाएक डरकर भैंसा जुआ और हेंगे को घसीटकर दौड़ने लगा।

उसके साथ-साथ कपाही भी खेत में उतरी। वह गुलच के पास चली गई और डर जाने पर उसने धीरे से कहा, "कौन-सी ऐसी बात कही है मैंने, घर-जमाई करने की बात कहने से ही क्या वह घर-जमाई हो गया ? भैंसे को क्यों पीट रहे हो, मुझे ही दो कोड़े लगा दो...। मैंने एक बात कही है, उसके लिए इतना गुस्सा करने की क्या जरूरत है ?"

खेत से दोनों चुपचाप घर की ओर चल पड़े। कपाही ने देखा कि गुलच का मुंह विषादपूर्ण है। क्रोध और दुख के कारण वह उत्तेजित हो उठा। किंतु वह बोला ही नहीं।

धीरे से कपाही ने कहा, "मुझे मालूम है—तुम आजकल मुझको फूटी आंखों से भी देखना नहीं चाहते, मालूम नहीं मैंने क्या किया है !"

फिर भी गुलच ने कोई जवाब नहीं दिया। दोनों चुपचाप घर पहुंचे।

तरा यों ही बात नहीं करती।

घर में मानो कोई जिंदा आदमी नहीं है।

तरा ने खाना परोस दिया। दोनों ने चुपचाप खाया। गुलच नहाया तक नहीं, एक लोटे पानी से हाथ-पैरों के कीचड़ को साफ किया।

तरा ने एक बार गुलच के मुंह की ओर और एक बार कपाही के मुंह की ओर देखा—हालात को समझने के लिए। वह कुछ भी अंदाज नहीं कर सकी, उसे इतना ही आभास हुआ कि खेत में उनके बीच कुछ हुआ है।

खाना खाकर गुलच ने भैंसे को नहलाया और उसी प्रकार आकर बिस्तर पर लंबा हो गया, कपाही ने भी आंगन में एक चटाई बिछाकर घर के साए में आराम किया।

तरा ने किसी से भी कुछ न पूछा।

थोड़ी देर बात कपाही उठी और किसी से कुछ कहे बिना मुंह में एक बीड़ा पान भरकर खेत की ओर चल पड़ी।

घर से आधे मील की दूरी पर उनका खेत है। तरा ने देखा कि ढलते दोपहर की तेज धूप में ही कपाही सीधे खेत की ओर गई है, कुछ देर बाद मलुका बांस के झुरमुट में कपाही छिप गई।

तेज धूप है, चारों ओर शब्दहीन, निस्सार-नीरव। नीले आकाश के गर्भ से सफेद धूप गलकर नीचे गिर रही है। पेड़ के पत्ते धीरे-धीरे कांप रहे हैं।

आंगन में निकलकर तरा ने चारों ओर देखा—कोई नहीं है। चारों ओर स्तब्ध शून्य है, केवल धूप है और सावन की रोपी जाने वाली जमीन है। और कुछ नहीं है, कोई नहीं है।

तरा भीतर चली आई।

थोड़ी देर रुकी।

इसके बाद सीधे गुलच के कमरे में जाकर उसकी खाली पीठ पर अपना हाथ रखा। बिना हिले-डुले गुलच पहले की तरह ही तकिए में मुंह छिपाकर पेट के बल पड़ा रहा।

तरा गुलच के पास ही बिस्तर पर बैठी, और कुछ झुककर उसके मुख के पास मुख ले जाकर प्यार से पूछा, "आज क्या हुआ, कोई बात है ? यह क्या हो रहा है ?"

गुलच पहले की तरह पड़ा रहा।

तरा ने सर पकड़कर उसके मुंह को अपनी ओर कर लिया। गुलच की आंखें गीली थीं।

"तुम्हारा शरीर इतना गर्म है ! क्या तुम्हारी तबीयत ठीक नहीं है ?"

आंखों को पूरा खोलकर गुलच तरा की ओर देखकर रुक गया। तरा ने भी देखा।

उसका सर हिला-हिलाकर तरा ने पूछा, "अरे क्या हुआ है ? मुझसे भी नहीं कहते, ठीक है..."

तरा जाने लगी।

करवट बदलकर गुलच पीठ के बल सोया, और बिना कुछ कहे गंभीर दृष्टि से तरा के मुख की ओर देखा।

"क्या देख रहे हो मेरे मुंह पर ?"

गुलच ने तरा के हाथों को अपने हाथ में लेकर कहा, "तू-तू, मुझे छोड़कर जा सकेगी ?"

"मालूम नहीं, तुम क्या कह रहे हो। मैं तुमको छोड़कर कहां जाऊंगी ? जाने के लिए मेरा और है ही कौन ?"

"तुझे ले जानेवाला यदि कोई निकले ?"

इस बात को सुनकर तरा का मन विषाद से भर उठा। उसने नजर नीची कर ली।

कुछ देर बाद गुलच ने कहा, "तेरी मौसी तेरे लिए एक लड़के को घर-जमाई करना चाहती है..."

कुछ देर बाद अपनी सरल किंतु गंभीर और वेदना-सिक्त आंखों से तरा गुलच की ओर देखती रही। उसके बाद अपने दोनों हाथों से गुलच के गले से चिपककर उसकी छाती में अपना मुंह छिपाकर सिसक-सिसककर रोने लगी।

गुलच ने तरा को दोनों हाथों से पकड़ लिया और उसकी पीठ पर प्यार से हाथ फेरकर कहा, "मेरा और कोई नहीं है। तू यदि जाना चाहती है, मैं तेरा ब्याह

करा दूंगा, किसी अच्छे घर में ही दूंगा।''

इस बार तरा ने अपनी हथेली से गुलच के मुंह को बंद कर दिया। गुलच की ठुड्डी के नीचे अपने मुंह को रखकर वह सिसक-सिसककर रोती हुई उसकी छाती पर ही पड़ी रही। तरा के बाल में भीतर अंगुली फेरकर गुलच ने कहा, "तू क्यों रोती है ? चल, खेत चलें, तेरी मौसी अकेली पूरा नहीं कर पाएगी। काफी जमीन रोपने के लिए बाकी है।''

तरा ने गुलच की बातों के प्रति ध्यान दिए बिना उसको पकड़े रखा और उसकी छाती पर उंघटी हुई एक छोटी लड़की की तरह पड़ी रही।

तरा रोई थी। आंसू उसकी आंखों से टपटप गिर रहे थे। गुलच को अपनी छाती में नए सिरे से आबाद की गई जमीन की तलौंध भरे खेत की कच्ची गंध का अनुभव हुआ। सफेद दोपहरी रो रही थी।

उनतीस

चंद्र ही उस खबर को गोलाघाट से एक दिन ले आया। केलाई के लिए सरकारी अस्पताल में एक जगह की व्यबस्था हुई है। चंद्र के द्वारा जोर देने पर और डालिम आने वाले डाक्टर द्वारा केलाई की जांचकर उसका समर्थन करने के कारण उसको यह मौका मिला।

भादो की दस तारीख के करीब एक रोगी जाएगा, और उसकी जगह केलाई को दी जा सकेगी। उसी दिन रोगी को ले जाकर पहुंचाना पड़ेगा। नहीं तो दूसरे रोगी को उसमें भर्ती किया जा सकता है।

चंद्र और गुलच दोनों ने जाकर उसके बारे में मोलोको और चेनिमाइ से कहा। इस बात के बारे में जानकर चेनिमाइ को आनंद हुआ। किंतु उसे चिंता भी हुई–केलाई को यहां से किस प्रकार गोलाघाट ले जाया जाएगा ? और उसके लिए खर्च कहां से जुटाएगी ? उसके हाथ में एक कौड़ी भी नहीं है।

और अपनी जमीन की रोपाई का काम समाप्त होते ही तिखर डालिम गया, वहां किसी के घर हल चला रहा है, एक मास के लिए बंदोबस्त है। वह लौटेगा, आश्विन के शुरू में। मोलोका को इसके बारे में अपना मत देने के लिए कुछ भी न था।

चंद्र ने कहा, "सरकारी अस्पताल में रहने पर भी हाथ में कुछ रुपए की जरूरत होगी। डाक्टर, नर्स... सबको कुछ न चखाया तो इलाज अच्छा नहीं हो सकता। कम

से कम आना-जाना आदि सब मिलाकर-फिफ्टी सिक्स्टी के करीब लगेंगे—यानी तीन कोड़ी के करीब। रोगी के हाथ में दो-चार रुपए होने चाहिए। नो मनी नो लाइफ। दवा भी खरीदनी होगी।''

बड़ी दीनता से चेनिमाइ ने कहा, "मेरे हाथ में एक कौड़ी भी नहीं है, तुम लोग जानते ही हो। तीन कोड़ी रुपया मैं खर्च कर सकती तो इसी तरह नहीं रहती।''

कुछ सोचकर गुलच ने कहा, "खर्च का कुछ न कुछ इंतजाम होगा। तू इतनी चिंता न कर। आदमी को किसी तरह गोलाघाट पहुंचाने का ही सवाल है।''

चंद्र ने भरोसा दिलाया, "वह व्यवस्था मैं कर दूंगा। मेरे विचार से यहां से इसे डालिम घाट तक बैलगाड़ी से ले जाकर वहां से बर घाट तक नाव से ले जाना होगा। वहां से बस से जाना होगा। यहां से बड़े रास्ते तक बैलगाड़ी से जाने पर तो कष्ट होगा, उसकी देह में कंकाल ही बचे हैं।''

उसकी बात में चेनिमाइ और गुलच ने भी साथ दिया। फिलहाल इस भादो की आठ तारीख को जाने का निश्चय हुआ। बसीरत की बड़ी नाव बड़घाट की ओर आने वाली है। उससे कहकर डालिम घाट से केलाई को बड़े घाट तक ले जाया जा सकता है। बसीरत उतना खराब आदमी नहीं है। उसके अलावा गुलच के साथ भी उसका परिचय है, चंद्र के साथ तो दोस्ती है।

भादो के पहले हफ्ते में ही बसीरत खुद भी डालिम गांव आने वाला है।

चंद्र ने कहा, "इस बीच वह इधर आ नहीं सकेगा। नेपाली गांव में गाय-बैलों को बीमारी हुई है, बहुत-से लोग इसके कारण खेती भी नहीं कर पा रहे हैं। वह उस ओर जाएगा और जो सहायता दे सकता है देगा।''

हमारे गांव में एक पशु-चिकित्सालय की आवश्यकता है। नहीं तो आदमी, बैल कुछ भी नहीं बचेगा।

इसके बाद चंद्र ने विदा ली। पूरी व्यवस्था करके वह समय पर आ पहुंचेगा। यदि जाना निश्चित है तो गुलच और चेनि बाकी व्यवस्था को पूरा कर रखें।

चंद्र के जाने के बाद गुलच और चेनिमाइ ने इस विषय पर कुछ और परामर्श किया, पहली बात है कुछ रुपयों की जरूरत। रुपयों की व्यवस्था हो जाने से चंद्र बाकी व्यवस्था कर लेगा—चिंता करने की जरूरत नहीं है। किंतु ढाई कोड़ी-तीन कोड़ी रुपए कहां से मिलेंगे ?

चंद्र के सामने यद्यपि गुलच ने रुपयों के बारे में कह दिया था, वह भी अब सोच में पड़ गया। बात यद्यपि तीन कोड़ी की ही कही है, पर एक सौ रुपयों की जरूरत होगी। वह इतनी जल्दी इतने रुपए कहां से चेनिमाइ को देगा ?

जमीन खरीदने के लिए जो रुपए उसने अलग करके रखे थे केवल वही उसके हाथ में हैं।

तथापि भरोसा देकर गुलच ने चेनिमाइ से कहा, "सब हो जाएगा, तुझे चिंता

करने की जरूरत नहीं है।''

चेनि ने कहा, "उनके पास कोई कपड़ा भी नहीं है। घर में किसी तरह चल जाता है, किंतु वहां शहर की बात है। एक जोड़ा बदल न सके तो कैसे काम चलेगा ? कुछ कपड़ों का इंतजाम करना पड़ेगा।''

इस बार गुलच ने चेनि के मुंह की ओर देखा।

उसको शायद पूरा भरोसा है कि उसका आदमी गोलाघाट जाने से ही अच्छा हो जाएगा। उसका एक सुखी संसार होगा। नहीं तो इस मृत्युमुखी आदमी के लिए उसे इतना करने की जरूरत क्या है ?

गुलच ने कहा, "मैं ही रुपए दे दूंगा–तू कपड़ा लेना चाहती है तो ले लेना, किंतु लाएगा कौन ?''

"रुपया मिलने पर किसी तरह ले आऊंगी...''

"आने के लिए मेरे पास समय नहीं है। जाना चाहती है तो मेरे साथ ही चल–अभी। पैसा ले आना।''

गुलच के घर बातचीत कर, चाय-नाश्ता करके लौटने में सांझ हो गई थी।

उसे चेनि को जरा आगे आकर छोड़ आना पड़ा।

रास्ते में चेनि ने कहा, "तुम लोगों का घर भी हमारे घर की तरह ही सूनसान लगता है। घर में कोई बाल बच्चा न हो तो कैसा सूना-सूना लगता है।''

"हां'' गुलच ने कहा।

"तरा है, इसलिए जरा व्यस्तता है। उसका कहीं ब्याह हो जाए तो घर में घुसने की इच्छा नहीं होगी।''

गुलच चौंक उठा। चेनि भी तरा के ब्याह की बात कहती है। बिना कुछ कहे वह चलता रहा, चेनिमाइ उनके पीछे-पीछे चली।

"एक बात कहने की इच्छा रहते हुए भी कहने के लिए मौका नहीं मिला, अधि...''

"हूं''

"तरा को किसी ने ब्याह के लिए कहा है ? किसी ने भी यदि नहीं कहा तो हमारे तिखर के साथ ही ब्याह दे।''

गुलच एकाएक घूम पड़ा।

चलती हुई चेनि गुलच के पास सकपकाकर खड़ी हो गई।

कड़ी आवाज में गुलच ने कहा, "तिखर के लिए यदि प्यार हुआ है तो खुद क्यों नहीं उसके साथ कर लेती ? उस मरे हुए मर्द के हाथ-पैर क्यों सहला रही है ?''

"क्या कहा ?'' उसी कड़ी आवाज में चेनि चिल्ला उठी, "तूने ऐसी बात कही ! जा–मुझे घर में छोड़ने की जरूरत नहीं है। अकेली ही चली जाऊंगी। ले, अपने रुपए भी ले जा, नहीं चाहिए। मरने दे, मांग-मांगकर जिलाने की जरूरत नहीं है।''

चेनि ने रुपयों को गुलच की तरफ बढ़ा दिया।

सांझ के समय, रास्ते में ही कजिया हो गया।

गुस्से में दोनों कांपने लगे।

एकाएक अपनी ओर बढ़ा हुआ चेनि के हाथ को पकड़कर गुलच ने चेनि को अपनी ओर खींच लिया। चेनि भी उसके सीने में घुस पड़ी। गुलच ने धीरे-धीरे कहा, "तरा के ब्याह की बात न कर, चेनि ! वही मेरा सब कुछ है, बाल-बच्चे नहीं हैं—उसे कहीं ब्याहकर निकाल देने से मैं घर में किस प्रकार रहूंगा।

अभिमान और शिकायत भरे स्वर में चेनि ने कहा, "तुम्हें क्या इस प्रकार बात कहनी चाहिए ? क्या करूंगी ? मैं भी दूसरे की हो गई हूं, प्यार करने की इच्छा होते हुए भी सीधे ऐसा नहीं कर सकती।''

बच्चे की तरह गुलच ने कहा, "तरा मुझको अत्यंत स्नेह करती है, वह न रहेगी तो मैं रह नहीं पाऊंगा "तुझे बुरा लगा है न ?''

"क्यों नहीं ? भाग में था, बीमार के साथ ब्याह हुआ। कुछ कर-धर के देखती हूं, चंगा होगा तो ठीक है, नहीं तो मरना है तो मरेगा। तू है ना, हो सके तो स्नेह करना, नहीं तो कही चली जाऊंगी। किंतु अपना आदमी जब तक जिंदा रहेगा, तब तक दूसरे की बात नहीं सोचूंगी।''

और कुछ देर गुलच ने चेनि को सीने में दबाए रखा। अपने दांपत्य जीवन के सुख से वंचित होकर भी चेनिमाइ अपने बीमार पति के लिए दुआ कर रही है, गुलच को यह बात अच्छी लगी।

उसने धीरे-धीरे चेनि को छोड़ दिया।

चेनि किंतु उससे नहीं हटी, उसकी बांह में हाथ रखकर उसके मुख की ओर ताककर चेनि ने कहा, "तेरे लिए मेरा पुराना स्नेह जरा भी कम नहीं हुआ है। कपाही कुछ सोच सकती है, केवल इसी का भय है।''

इस बात को कहकर चेनि ने गुलच के मुंह को अपनी ओर खींच लिया और उसको चूम लिया। गुलच ने फिर उसे दोनों बांहों के भीतर कर लेना चाहा था, किंतु चेनि दूर हट गई—और कहा, "कहीं से कोई निकल सकता है, अब चलें।''

दोनों आगे बढ़े।

कुछ देर चुप रहने के बाद चेनि ने कहा, "रुपया-पैसा होता तो मैं भी गोलाघाट जाती। शहर देखना भी हो जाता और आदमी की व्यवस्था के बारे में भी जान आती।''

गुलच ने कहा, "मैं भी कभी गांव से बाहर नहीं गया हूं। एक बार जाने की इच्छा थी। देखता हूं, केलाई के साथ ही शायद जा सकूं, तू भी जाएगी क्या ?''

"रुपए-पैसों के ऊपर ही सब बात निर्भर है, जाना चाहने पर भी क्या जा सकते हैं ? तू यदि ले जाएगा तो जाऊंगी।''

"अच्छा, मैं सोचकर देखता हूं, मेरा भी वहां काम है। डालिम की जमीन को बेचना चाहता हूं। बेचने के बारे में यदि तय हो जाए तो रजिस्टरी करने के लिए कहते हैं कि गोला जाना ही पड़ेगा। कौन जाने, दोनों काम एक ही साथ हो जाएं।"

और बहुत–सी बातों के बारे में चर्चा करके देर रात को ही गुलच घर वापस हुआ।

तीस

कई-एक काम लेकर गुलच एक दिन किसी न किसी प्रकार से डालिम गांव गया। उसके घर के पास की सभी जमीनों की रोपाई हो गई थी, किंतु नई जमीन सब के सब बाकी थीं। पानी ठीक तरह से सूखा नहीं है। ये जमीन और वर्षों में भी वह आश्विन के आरंभ में ही रोपता है। कोई जल्दीबाजी नहीं है। जल्दीबाजी करने पर भी कोई लाभ नहीं है।

जमींन यदि पड़ती भी रहे तो गुलच तिखर को अपने घर में हलवाहा नहीं रखेगा—यह बिलकुल स्पष्ट है। कपाही ने जो कहा है, चेनि ने जो कहा है, उसके बाद तिखर को उसके घर में पैर रखने के लिए मौका देना एक भूल होगा। तरा पर तिखर की नजर पड़ना गुलच को सह्य नहीं होगा।

भीम के साथ परामर्श करके एक महीने के लिए एक नेपाली लड़के को रखकर वह किसी तरह खेती का काम समाप्त करेगा। और खेती समाप्त होने के बाद गाय-बैलों की देख-भाल करने के लिए भीम को ही रख लेगा।

दूसरी बात है कि बड़े भाई के साथ जमीन बेचने के संबंध में अंतिम परामर्श करेगा। भैया यदि अभी ही अधिक रुपया दे सकता है, तो अभी ही वह टाउन जाकर बैनामा लिख देगा। इस काम के लिए वह बार-बार डालिम नहीं आ सकता। उसको और काम है।

तीसरी बात है कि वह किसी न किसी प्रकार से चंद्र से मिलेगा। सावन समाप्ति पर है। केलाई को यदि ले जाया जाएगा, और चेनि और उसका जाना होगा तो चंद्र के साथ पूरी व्यवस्था कर लेनी होगी। ज्यादा दिन नहीं है।

चौथी बात है कि यदि मिल जाए तो बसीरत के साथ भी इसके संबंध में और दूसरी बातों के बारे में परामर्श करे।

बाकी काम उसके सोचे अनुसार ही हुए।

चंद्र की खोज में वह तीसरे पहर उसके घर के लिए निकला।

चंद्र को बुखार है, लेटा हुआ है।

"तू कब आया है, गुलच ?"

"दोपहर के पहले ही आया हूं। तुझे बुखार कब से है ?"

"आज दो दिन हो गए हैं। बड़ी गर्मी पहुंची। कल तो खूब बुखार था। हण्ड्रेड थ्री के करीब था..."

"तूने क्या किया था ?"

चंद्र बिस्तर पर बैठ गया।

"एक स्टेज बनाने का काम हाथ में लिया है..."

"स्टेज ? वह क्या है ?"

"थिएटर स्टेज ! टाउन में बड़ा—बड़ा स्टेज है। सुंदर थिएटर होता है। दूसरे गांवों में भी स्टेज है। हमारे यहां भी एक चाहिए।

बिना समझे ही गुलच ने कहा, "हां, चाहिए तो।"

"हमारे गांव के लोग भी इसे चाहते हैं। बांस-लकड़ी इकट्ठे हो रहे हैं।"

"उन कार्यों को बरसात के बाद हाथ में लेना चाहिए था।"

"अरे, काम करने का और क्या मौसम होता है ? अभी से ही यदि बांस-लकड़ी आदि का इंतजाम कर रखें तो विंटर में स्टेज बनाने में आसानी होगी। अच्छा, तेरी खेती-बारी कैसी हो रही।"

गुलच ने अपनी खेती-बारी के बारे में कहा, और यहां आने के बारे में भी कहा।

"अच्छा होगा गुलच, तू भी चल, नगर-शहर बिना देखे बूढ़ा होना ठीक नहीं है। और चिंता न कर—बैनामा की रजिस्टरी मैं करा दूंगा।"

जरा रुककर चंद्र ने कहा, "हां, एक बात हैं। इस डालिम की खेती की जमीन बेचना चाहता है ?"

"हां—"

"अपने घर की नींव और बारी ?"

"अभी नहीं बेचूंगा।"

"एक बात कहना चाहता हूं" चंद्र ने कहा।

"क्या ?"

"तुझे हमें एक डोनेशन देना होगा।"

"डोनेशन ? क्या होता है ?"

"स्टेज बनाने के लिए डालिम की अपनी बारी में से एक टुकड़ा जमीन दे।"

जरा सोचकर गुलच ने कहा, "लोगों को चाहिए तो दूंगा, क्यों नहीं दूंगा ?"

चंद्र ने कहा, "जिनको है यदि वे ही नहीं देते तो गांव की उन्नति कैसे होगी ? मेरा तो कुछ भी नहीं है। मैं केवल मैं ही हूं। पढ़ना-लिखना भी विशेष नहीं हुआ।

इसलिए मैं खुद ही काम में लग जाता हूं। लोग गाली देते हैं, दें, है न ?''

"तुझे कौन गाली देगा ? औरों के लिए काम कर रहा है, गांव के लोग तेरी प्रशंसा न भी करें तो भी तुझे आशीर्वाद देंगे।

"जो भी कहे; आइ डू माइ ड्यूटी। तब तू अपनी बारी देगा ?''

"कहा न ! पड़ती रहने से बेहतर है कि गांव के लड़के खेल-तमाशे करेंगे।''

गुलच को सहजता से अनुभव हुआ कि जमीन लेने से देने में ही अधिक आंनद है। एक स्कूल होगा, एक अस्पताल होगा, एक स्टेज होगा, एक सार्वजनिक संस्था होगी। तुम सदा नहीं रहोगे, किंतु संस्था रह जाएगी। इस दान के अधिकारी बनना अभिमान और आनंद की बात है।

अपनी वस्तु को खुशी से दान कर सकना ही स्वतंत्रता है। अपने मामूली दान की महान प्रतिश्रुति के द्वारा गुलच को इस स्वतंत्रता का अनुभव हुआ।

अपने भैया को बेचे जाने वाली जमीन का दाम उसने एक पैसा भी कम नहीं किया। जरूरत पड़ने पर दो-चार रुपए यों ही दूंगा, किंतु दाम कम नहीं कर सकता। उसके भाई को मालूम है कि गुलच की जुबान इधर-उधर नहीं होती।

उसके भाई ने इस संबंध में विशेष बातें नहीं की।

घाट में गुलच बसीरत से मिला।

बसीरत की नाव में ही केलाई बड़ घाट तक जा सकेगा। बड़ी नाव है—कोई चिंता नहीं है, छज्जा भी है। धूप और बारिश का भी डर नहीं।

गुलच ने निडर होकर शहर जाने का निश्चय किया। उसने इसके बारे में बसीरत से कहा, उसे आनंद हुआ।

बसीरत ने अपनापन दिखाकर गुलच की योजना का स्वागत किया। जाना चाहिए, शहर देखना चाहिए। गोलाघाट आखिर कितनी दूर है, एक-आध दिन का रास्ता है।

गुलच ने विनम्रतापूर्वक कहा, "यों कोई चिंता नहीं है। दोनों औरतों को इस बरसात में अकेले छोड़ जाना अच्छा नहीं लग रहा है। हो सके तो आप इनका ख्याल रखेंगे।

बसीरत ने सम्मति दी, समय और मौका पाने पर वह अवश्य ही जाएगा, दूर ही कितनी है ? गुलच को भरोसा हुआ।

किंतु जब वह शाम को अकेले घर वापस आया तो उसका मन एकाएक विषाद से भर उठा। चेनि ने यों ही नहीं कहा था। बाल-बच्चे जिस घर में नहीं होते, उसमें जाने की इच्छा नहीं होती, खाली-खाली-सा लगता है। गुलच के आंगन में शिशु के पैर के छाप कब पड़ेंगे ? उसका यदि बेटा होता तो डालिम के नेपाली मुहल्ले में आने की कोई जरूरत नहीं होती। बेटा बड़ा होकर हल चलाएगा, वह भैंसे का हल चलाएगा, गुलच बैल का हल चलाएगा। वह खेत के चारों कोने साफ करेगा

और गुलच हेंगा चलाएगा, दोबारा हल चलाएगा, वह नई जमीन निकालेगा और गुलच उस जमीन के लिए नया बीज चुनेगा।

किंतु उसकी कोई आशा गुलच को अब तक नहीं दिखाई पड़ी। कपाही को लाए हुए आज तीन साल हो गए हैं, बाल-बच्चा आज भी नहीं हुआ। इतने दिन तक जब नहीं हुआ तो शायद होगा नहीं।

एक बेटा ही यदि नहीं होता तो इतनी मेहनत करने की क्या जरूरत है ? मेरे बाद ये संपत्तियां किसके हाथ में जाएगी किसे मालूम ! कपाही की उम्र मुझसे अधिक है, किंतु वह बूढ़ी नहीं हुई है। उससे भी बूढ़ी औरत को भी बाल-बच्चा हो रहा है।

गुलच ने मन ही मन निश्चय किया कि वह आज कपाही से पूछेगा कि उनके बाल-बच्चे होने की कोई संभावना है या नहीं। यदि नहीं है तो वह क्या करेगा गुलच किसी भी निर्णय पर नहीं पहुंच सका।

इकतीस

पूरी व्यवस्था करके चंद्र समय पर आ पहुंचा। इसी बीच रोपी जा सकने वाली जमीन भी उसने रोप ली। नेपाली हलवाहा हट्टा-कट्टा है। उसने हल चलाने के अलावा खेती के दूसरे सभी कार्यों में बहुत मदद की। और कपाही और तरा ने भी अथक परिश्रम करके रोपाई पूरी की। चेनिमाइ भी तीन दिन आकर उसकी मदद की। मौसम अच्छा है, दो दिन पहले रोपी जा सके तो सबके लिए अच्छा है।

कुछ निचली जमीन और बिरवा उगाने वाली जमीन ही रह गई। गुलच का मन थोड़ा हल्का हो गया है। उसके न रहने पर भी नेपाली हलवाहे की सहायता से कपाही और तरा उसकी रोपाई कर सकेगी।

अठारह दिन तक बारिश नहीं हुई है। भादो का सूखा है। सहन ही नहीं होता। धूप आग की तरह है। किंतु उस दिन गुलच ने देखा कि दक्षिण दिशा की ओर मेघ इकट्ठा हुआ है। हो सकता है, दो-चार दिनों के भीतर खूब बारिश हो और बाढ़ आ जाए। इतने दिन तक बारिश नहीं हुई है, एक बार शुरू होने पर जल्दी छूटने वाली नहीं है। लक्षण अच्छा नहीं है। लंबे सूखे के बाद बड़ी बाढ़ आ सकती है।

ईश्वर करे न आए !

गुलच की अधिकतर जमीन नदी के किनारे है, और निचली जमीन है। बाढ़ का पानी घुसने पर बचने की आशा नहीं है।

किंतु आज छह वर्ष से धनशिरि में बाढ़ नहीं आई है और बांध भी नहीं है।

ईश्वर करे, बाढ़ न आए।

गुलच के रहने का घर जहां है वह स्थान ऊंचा है। सारा गांव पानी में डूबने के बाद ही उसका घर डूबेगा। घर के चारों ओर ढाल जमीन है और वहीं एक टीले जैसे स्थान पर उसका घर है।

और बाढ़ यदि आ ही जाए !

क्या वह केवल उसके लिए ही आएगी ? सब के लिए आएगी। सूखा, आंधी, बाढ़ को कौन रोक सकता है ?

भादो की आठ तारीख को रविवार है।

उससे पहले ही, शुक्रवार को बहुत सोच-विचारकर, और सवेरे से सजधजकर गुलच जुमे की नमाज के लिए सिपरिया गांव की मस्जिद में गया। नमाज के सभी नियम उसे मालूम नहीं हैं। फिर भी वह ईद, बकरीद आदि में मस्जिद में जाकर जमायत के साथ ही उठ-बैठ करता है। आज तीन साल से उसने सिवाय ईद की नमाज़ के दूसरी नमाज़ पढ़ी ही नहीं। उसको याद ही नहीं पड़ता।

दुकान से उसने दो मोमबत्तियां भी खरीद लीं। गोलाघाट जाने के लिए उसने जो नई कमीज सिलवाई थी उसे और नई धोती को भी पहन लिया।

भादो का महीना है, मस्जिद में आदमी कम है। जवान आदमी कोई भी नहीं है। खेत में जो नहीं जा सकते, ऐसे दो-चार बूढ़े हैं और सिर्फ वह है।

वजु करके गुलच मस्जिद में गया और मोमबत्तियों को सीधे जलाने के स्थान पर रखा। उसने मन ही मन इस प्रकार से दुआ की कि उसे अपने को भी समझ में नहीं आया।

गोलाघाट को निकला हूं। इसके पहले और कभी नहीं गया हूं। हे अल्लाह, विपदाओं में रक्षा करना। चेनिमाइ भी जाएगी, उसको भी किसी प्रकार का कष्ट न हो। अपने पति को अस्पताल में रख आएगी।

और मेरा बाल-बच्चा नहीं है। मुझे एक बच्चा चाहिए न ! बच्चा होने पर मेरा और कोई दुख नहीं रहेगा।

दो मोमबत्तियां मस्जिद में जलाई हैं। तुम मेरी दुआ सुनना। अल्लाह !

नमाज़ पढ़कर घर वापस होने के समय गुलच के मन में एक शंका जगी।

क्या अल्लाह मेरी सभी दुआओं को पूरा करेगा ? किसी एक के बारे में ही दुआ मांगनी चाहिए थी। सबको एक साथ मांगना अच्छा नहीं हुआ। किंतु जो कुछ हो मुझे एक बच्चा चाहिए। उसके लिए जरूरत पड़ने पर और दो मोमबत्तियां मस्जिद में दूंगा। मस्जिद में मनौती भी दूंगा।?

धान के पौधे सजीव हो उठे हैं। पहले के पौधे काले रंग के हो गए हैं। कपाही और तरा के हाथ में लक्ष्मी है। उनके रोपने पर सात दिन की उखाड़ी गई पौध भी

जीवंत हो उठती है।

अच्छी धूप निकली है। धान के पौधों के कीड़े इस बार तंग नहीं कर सकते। जहां धान के खेत में गंध निकलना शुरू हो ही गया है।

अपने खेत को देखकर गुलच का मन आनंद से भर उठा।

यह मेरा है, ये सबके सब मेरे हैं—जमीन भी, फसल भी। उस ऊंची जमीन के पौधे जरा लाल हुए हैं। दो टुकड़ी गोबर दे देना होगा। एक कोने में हेंगे से कीचड़ इकट्ठा हो गया।

केलाई के लिए दुआ मांगने के लिए चेनिमाइ ने मस्जिद में भी अपनी बारी के दो गुच्छे केले के भेजे थे, नमाज़ पढ़कर जमात केलाई के लिए मुनाजात करके दुआ करे। जमात ने दुआ की। केलाई बीमार है। चिकित्सा के लिए शहर जा रहा है। उसकी बीमारी ठीक कर दे, अल्लाह !

अल्लाह सबकी अंतिम आशा और सहारा है।

सरल सामूहिक प्रार्थना सांत्वना देती है, आत्मविश्वास देती है।

गुलच ने भी आज केलाई के लिए प्रार्थना की। केलाई मर भी जाए, उसे बुरा नहीं लगेगा। किंतु चेनिमाइ जब जमात को केले भेज रही है।

औरों के साथ उसने सरल भावना से दुआ की। केलाई के चंगा हो जाने से चेनि सुखी होगी। उसे बाल-बच्चे होंगे, एक सुंदर संसार होगा। केलाई ठीक हो जाए।

मस्जिद से आने के बाद अगले दिन भी उसने खेत में काम किया। अगले दिन भादो की सात तारीख थी।

सबेरे ही चंद्र आया।

एक बैलगाड़ी भी केलाई को ले जाने के लिए डालिम से मोलोका के घर लाई गई, एक दिन के लिए तिखर भी घर आया।

कपाही भी चेनि के घर जल्दी ही गई। केलाई के साथ ही चेनिमाइ भी गोला जाएगी, यह छोटी बात नहीं है। साथ में जाएंगे चंद्र और गुलच। कपाही ने जाकर सामान आदि बांधकर मदद की।

घर में अकेली ही बैठी हुई तरा से गुलच ने कहा, "तुम लोग कुछ भी चिंता न करो, यदि संभव न हो तो खेत में न जाओ। नेपाली ही कर लेगा। मौसी और तू घर में ही रहना। गाय-बैलों की देखभाल करना।"

"वहां कितने दिन रहोगे ?"

"कह नहीं सकता। केलाई के लिए जो कुछ करना है, चंद्र करेगा। किंतु मेरा काम कचहरी में है—जमीन बिक्री के कागजात बनवाने हैं। एक ही दिन में हो जाए तो ठीक है। नहीं तो दो-तीन दिन लग सकते हैं। मौसम पर ही भरोसा नहीं हो रहा है। बादल है। आज शाम तक बारिश हो सकती है।"

"ज्यादा दिन न लगाना। यदि जल्दी काम न हो तो चले आना, बाद में

जाना।"

"देर क्यों लगाऊंगा ? वहां क्या मेरे मामा का घर है कि पड़ा रहूंगा।"

जलपान की एक पोटली तरा ने बांध दी। धोती-कमीज भी ठीक करके दी। और सलाह दी, "शहर-वहर की बात है, ठीक तरह से चलना...।"

गुलच ने कहां "हां।"

पान का रुमाल बांध करके तरा ने कहा, "मुझे चिंता बनी रहेगी, जल्दी आना।"

तरा के हाथ को पकड़कर गुलच ने कहा, "आऊंगा, आऊंगा ही। तुझे बिना देखे मैं अधिक दिन नहीं रह सकता।"

आंगन में आकर और आकाश की ओर ताककर गुलच ने कहा, "मौसम उतना अच्छा नहीं है। आज बारिश होगी ही। इतने दिन तक धूप हुई है, आंधी न आए तो गनीमत है। अच्छा, मैं चला, तरा !"

तरा डयोढ़ी पर खड़ी होकर उसके जाने की ओर देखती रही।

सूखकर केलाई की हड्डियां निकल गई थी। उसे उठाकर किसी तरह से गाड़ी पर चढ़ाया गया। चेनि ने कपाही से गले लगकर रोते हुए विदा ली। केलाई की धंसी हुई आंखों में दो बूंद आंसू निकल आए।

मोलोका ने इतना ही कहा, "अल्लाह है, जा।"

धनशिरि के घाट तक छोटा-मोटा एक जुलूस-सा हो गया। सिपरिया गांव के दो-चार लोगों ने आकर केलाई को विदा दी।

किसी-किसी ने फुसफुसाकर कहा, "और वापस आने की आशा नहीं हैं, कब्र की मिट्टी बुला रही है।"

किसी-किसी ने कहा, "जवान आदमी है, शहर का बड़ा डाक्टर देखे तो अच्छा भी हो सकता है। दूसरा और कोई रोग नहीं है, खांसी-खांसी क्या दुरारोग्य है !"

"रोगी होने पर भी चेनि को अपने पति के लिए बड़ा स्नेह है। और कौन उस प्रकार से उस बीमार के साथ लगी रहेगी ? उसकी किस्मत खराब है।" किसी ने कहा।

किंतु चंद्र की बात सुनकर सब चुप रह गए। उसने कहा, "गांव का एक आदमी शहर में मरने जा रहा है, इस समय दुख करने से क्या होगा ? हमारे गांव में ही एक अस्पताल बना होता, इस प्रकार खींचा-तानी करके शहर जाने की जरूरत नहीं होती। केलाई यदि चंगा न हुआ तो इसके लिए तुम लोग ही जिम्मेदार हो—यू आर रेसपनसिब्ल। किंतु देखना वह चंगा होकर ही लौटेगा, वी गो।"

चंद्र जो सोचता है वही कहता है। उसकी बात का विरोध करने से कोई फायदा नहीं होता।

तिखर भी घाट तक साथ गया। नाव पर केलाई को चढ़ा देने के बाद वह

भी बिना रोए रह नहीं सका, उसने किसी तरह गुलच से कहा, "मैं छोटा भाई होकर भैया के लिए कुछ भी नहीं कर सका। तुम लोगों के ऊपर ही उसका भार दिया है।"

इसके बाद चेनि से कहा, "भाभी, गुलच भैया और चंद्र जब गए हैं, तुम्हारी कोई चिंता नहीं है। किसी चीज ही जरूरत पड़ने पर खबर भेजना।"

इसका अर्थ सबको समझ में आया। तथापि किसी ने बुरा नहीं माना। कोई ऐसी बात नहीं कही है जो नहीं होती। केलाई का यदि कुछ हो जाता है—भाई को खबर देना जरूरी होगा।

कपाही औार तरा के बारे में ख्याल रखने के लिए उसे तिखर से कहने की इच्छा हुई थी, किंतु उसने नहीं कहा। तिखर और कपाही मिलकर उसकी अनुपस्थिति में तरा के बारे में कुछ कर डाले तो ! क्या भरोसा है !

किंतु तरा के ऊपर उसको पूरा विश्वास है। उसने किसी से कुछ नहीं कहा, दो औरतें हैं, रह जाएंगी।

दस बजे के करीब नाव छूटी।

भादो की धनशिरि का गबरू स्रोत है। पानी किनारों को छूता हुआ बह रहा है। गंदा पानी है, आकाश, बदली है नाव के भीतर केलाई, चेनि, गुलच और चंद्र हैं।

यह यात्रा मानो मृत्यु के विरुद्ध जीवन की यात्रा है। पानी नीचे बहता है, नाव ऊपर चलती है।

ऊपर की ओर देखकर एक मल्लाह ने कहा, "बारिश के पहले ही हम बरघाट पहुंच जाएं तो ठीक है। आकाश काले बादलों से भर गया है। नदी के बीच यदि बारिश आ जाए तो हमें आगे बढ़ने में असुविधा होगी।"

चंद्र, गुलच और चेनि ने भी आकाश की ओर देखा शायद केलाई का भाग्य ही खराब है, मौसम धोखा देगा। किंतु भागने से कहां विपदा दूर होती है ? इतने दिन के सूखे के बाद गुलच और चंद्र के आने के कारण क्या बारिश नहीं होगी ?

नाव जितनी तेज जा सके उतनी तेज जाने लगी।

बत्तीस

बारिश अभी नहीं रुकी है। मूसलाधार बारिश लगातार हो रही है। आकाश में केवल बादल ही बादल हैं। बारिश कब छूटेगी, कोई कह नहीं सकता।

नाव बरघाट के पास पहुंचते-पहुंचते बारिश की बड़ी-बड़ी बूंदे गिरने लगी थी। किसी प्रकार नाव को घाट में बांधने के समय तक बारिश बाढ़ की तरह आ गई थी।

चेनि और केलाई नाव के छज्जे के नीचे ही रहे। बारिश की परवाह किए बिना गुलच और चंद्र किनारे आ गए। आज बस मिलने की आशा नहीं है, घाट की किसी छत के नीचे ही रहना होगा। रात को भात खाने का कोई प्रश्न नहीं है। जलपान कर पड़े रहेंगे। केवल बारिश से बचे रहने का ही प्रश्न है। और बीमार केलाई इस बारिश में न भीगे तो गनीमत है। नहीं तो वह मर जाएगा।

उस रात वहीं रहकर अगले दिन बारिश में ही वे तीनों बस से गोलाघाट आए। अगला ही दिन है दस भादो। उस दिन चंद्र और गुलच ने केलाई को अस्पताल में भर्ती करा दिया। अब केलाई का जीवन डाक्टर और अल्लाह के हाथ में है। डाक्टर ने जांच करके उन्हें भरोसा दिलाया कि विशेष भय का कोई कारण नहीं है। चंद्र, गुलच—किसी ने भी उस बात पर विश्वास नहीं किया।

सिपरिया गांव से यहां पहुंचते-पहुंचते वह और कमजोर हो गया था। अस्पताल पहुंचाते-पहुंचाते उसकी ऐसी हालत हुई थी कि किसी भी समय उसका कुछ हो जाना अस्वाभाविक नहीं था। चेनिमाइ को किंतु विश्वास हो गया था कि डाक्टर ने यों ही नहीं कहा है, शायद केलाई चंगा हो जाएगा।

चंद्र की कही हुई एक बात चेनि को याद आई। उसने गुलच को एक ओर बुलाकर कहा था, "आदमी को यों ही छोड़ जाना क्या अच्छा होगा ? डाक्टर को कुछ नहीं देना होगा ? और उन दोनों लड़कियों को भी कुछ देंने से ही शायद कुछ काम होगा ?"

कमर में बांधकर लाई गई जाल की गठरी को गुलच ने चेनि की ओर कर दिया।

एक सौ दस रुपए थे, नाव और मोटर में कितना खर्च हुआ मालूम नहीं है।

"उसमें से कितना देना है दे।"

"मैं क्या जानती हूं ?"

उसने रुपयों को चंद्र के हाथ में दिया।

गांव में बड़ा बनकर रहने पर भी उन बड़े आदमियों के सामने वह जरा विनम्र होकर चलता है। उसने चेनिमाइ और गुलच के सामने किसी प्रकार की कमजोरी नहीं दिखाई। उसने दोनों पक्षों को सामने रखकर कहा, "यह सरकारी अस्पताल है, डाक्टरों को सरकार से वेतन मिलता है। किंतु किसी रोगी को जब अधिक ध्यान देकर देखेगा तो कुछ खातिर करनी ही होगी। सुना है कि बड़े-बड़े अस्पताल में यदि ऊपर से न दिया जाए तो रोगी मर भी जाए तो कोई भी डाक्टर उसकी तरफ नहीं देखता। यहां तो उसके आधा को भी आधा करना होगा। इस प्रकार से देना नोट

गुड। किंतु नियम भी चल रहा है।''

गुलच ने कहा, "आदमी के जीवन से रुपया बड़ा नहीं है। मनौती के रूप में कुछ देना चाहिए।''

चेनि ने गुलच को याद दिलाई कि उसे रुपए की जरूरत होगी। "कुछ कागजात तैयार कराना है न ? वहां भी न जाने किसको कितना देना पड़ेगा !''

"मेरा हो जाएगा, इस बार न हो तो अगली बार आऊंगा। अभी पहले बीमार की बात सोच।'' गुलच ने कहा

"उधर शहर देखने का काम भी बाकी है। रहने-खाने की व्यवस्था करनी होगी।'' चेनि ने कहा।

"सब हो जाएगा। क्या तुम लोग यहां दो-चार दिन रह सकोगे ?''

"क्यों ?'' गुलच और चेनि ने प्रश्न किया।

"मुझे तीन दिन ठहरना होगा। तुम लोग भी यदि रह जाओ तो एक साथ वापस चलेंगे। नहीं तो तुम दोनों जाओ—मैं तुम लोगों के साथ नहीं जा सकूंगा।''

चेनि ने गुलच के मुंह की ओर और गुलच ने चेनि के मुंह की ओर देखा।

गुलच ने कहा, "क्या हम अकेले जा नहीं सकते ?''

चेनि ने कहा, "यहां बस पर चढ़ा देने से बरघाट में जाकर उतरकर उधर जा सकूंगी, किंतु एक साथ जाते तो अच्छा होता।''

गुलच के कागजात की रजिस्ट्री नहीं हुई—दोनों पक्षों को हाजिर रहना चाहिए। गुलच का बड़ा भाई नहीं आया, गुलच को उसके लिए अफसोस नहीं है। जमीन उसकी अभी भी है, उसके भैया ने कुछ रुपए भी दिए हैं। इस बार नहीं हुआ, एक बार और आएगा, शहर में आना शुरू ही हुआ है।

चंद्र, गुलच और चेनि ने दोपहर का खाना एक होटल में ही खाया। चंद्र को ठीक लगने पर भी चेनि और गुलच को अच्छा नहीं लगा। तरकारियां कड़वी हैं। उसके अलावा दाल, भात और थोड़ी-सी मछली है, और उन्हीं के लिए उन्हे पांच रुपए चार आने देने पड़े।

किंतु एक चाय की दुकान में रसगुल्ले के साथ चाय पीने में उन्हें मजा आया। शहर में चाय और ढंग से बनाते हैं। चीनी और दूध मिला देते हैं। पीने पर कोई नशा नहीं होता, किंतु मिठास रहती है। मिठाई खाकर गुलच को अच्छा लगा। उसने एक और लालमोहन और पेड़ा मंगाकर खाए। पैसा काफी गया, किंतु उसके लिए बुरा नहीं लगा। शहर जब आया हूं तो खर्च होगा ही।

बारिश होते रहने के कारण उनका अधिक घूमना नहीं हुआ। तथापि चंद्र ने दो रिक्शों को बुलाया। एक पर खुद चढ़कर, दूसरे पर गुलच और चेनि को बिठाया और शहर में एक चक्कर लगाया—कचहरी, हाईस्कूल, बरुआ का भवन, यमुना, दोस कम्पनी और बहुत कुछ स्थान दिखाए।

शुरू में गुलच और चेनि विस्मित हो उठे, कुतूहल से इधर–उधर देखने लगे थे।

किंतु कुछ देर बाद उनको कुतूहल होते हुए भी विस्मय नहीं रहा। सभी चीजें उन्हें परिचित-सी लगीं। वे मानो शहर में बहुत दिनों से हैं।

चंद्र ने अफसोस जाहिर किया, "तुम लोगों का भाग्य खोटा है, मौसम साफ रहना चाहिए था, तभी घूमकर आराम मिलता। तुम लोग भी आए और बारिश भी आई, क्यों घूमोगे, क्या देखोगे ?"

किंतु गुलच ने कहा, "हो गया, बहुत कुछ देखा शहर का, शहर भी गांव जैसा ही है। कई आदमी अधिक हैं और कुछ दुकाने बेशी हैं। और है ही क्या ? मैंने समझा था कि शहर कुछ और ही प्रकार का होता है। एक दिन में ऊब गए।"

गुलच को और एक बात की चिंता थी।

तरा की उसको बार-बार याद आ रही थी। घर में तरा और कपाही अकेली है। दूसरी ओर आज तीन दिनों से मूसलाधार बारिश हो रही है। मौसम का लक्षण अच्छा नहीं है। बारिश हो, उससे कुछ नहीं होता, केवल धनशिरि में बाढ़ न आए। गाय-बैलों को छोड़ आया है। अधिक पानी होने पर अकेली औरतें क्या करेंगी ? किंतु उसके घर की नींव ऊंची है—सामान्य रूप से वहां पानी नहीं चढ़ सकता।

रात को भी तीनों ने होटल में ही खाना खाया।

गुलच ने चंद्र से कहा, "रात को कहीं पड़े रहने की व्यवस्था कर। कल मैं सबेरे ही चला जाऊंगा, अच्छा नहीं लग रहा है।"

चंद्र ने कहा, "कोई चिंता न कर, मेरे कई परिचित लड़के हैं। मैं जब आता हूं, उनके यहां ही रहता हूं। वे मेस में रहते हैं, हम भी वहीं रात को रहेंगे।"

"क्या वहां जगह होगी ?" गुलच ने पूछा।

"होगी, कुछ असुविधा तो होगी ही, खर की झोपड़ी है, जगह कम है। तुम दोनों को कोई कष्ट नहीं होगा। मैं अपने लिए कुछ कर लूंगा।"

तीनों रिक्शे से आकर शहर के एक किनारे की एक झोंपड़ी के सामने उतरे। एक लालटेन लेकर एक लड़का निकल आया।

"ये ही है क्या ?"

भीतर जाकर चंद्र ने कहा, "उस ओर इंतजाम किया है ?"

लड़के ने कहा, "बिस्तर बिछाया ही हुआ है। तुझे और मुझे रमेश के घर ही जाना होगा। वहां केवल यदु ही है, एक बिछौना यों ही पड़ा है। वहीं हम सो सकेंगे।"

गुलच ने कहा, "हमारे, भी कुछ कपड़े हैं।"

लड़के ने कहा, "आप लोग यहीं सोएं, कोई चिंता न करें। हम पास ही रहेंगे, रात को किसी कारण से जगाना हो तो आवाज दीजिएगा।"

चंद्र ने भी सब कुछ दिखा दिया और रमेश के घर सोने चला गया। चेनि और गुलच कैसे सोएंगे उसके बारे में उसने नहीं सोचा।

एक तख्त पर एक बिस्तर लगाया हुआ था, और दूसरा एक तख्त यों ही पड़ा हुआ था, उस पर कोई बिस्तर नहीं था।

इधर-उधर देखकर गुलच ने कहा, "तू वहीं सो, मैं यहीं किसी प्रकार सो लूंगा।"

"दूसरे के बिस्तर पर सोने में मुझे अच्छा नहीं लगता है। तू ही यहां सो, मैं ही वहां जाऊं।"

"नहीं वहीं सो, यहां केवल बड़े कपड़े को ही बिछाया है, कड़ा होगा।"

चेनि बिछाए गए बिस्तर पर सोने नहीं गई।

"जो चाहे कर, कहकर थका हुआ गुलच वहीं लंबा हो गया।

बारिश लगातार हो रही थी। बारिश की आवाज के सिवा और किसी प्रकार की आवाज सुनाई नहीं पड़ती। जरा ठंड भी लग रही है। झोंपड़ी की दीवारों के सुराख से हवा आ रही थी।

चेनिमाइ ने अपनी पोटली खोलकर एक जोड़ा कपड़ा निकाला और पहने हुए को बदलकर उसे सूखने दिया। कपड़े को निकालकर गुलच के लेटे हुए बिस्तर के एक किनारे लेटकर कहा, "औरों के बिस्तर पर सो नहीं सकती, जरा उधर खिसकना।"

सोकर उसने दीए को बुझा दिया।

कुछ देर तक दोनों ने चुप होकर नींद लाने की चेष्टा की, किंतु एक को भी नींद नहीं आई।

"चेनि !"

"ऊं !"

"कल हमें यहां से जाना ही होगा, जोर से बारिश आई है। गांव में क्या हुआ मालूम नहीं।"

"हां, नदी में बाढ़ न आ गई हो !"

उसने गुलच की ओर करवट बदल ली।

"तूने मेरे लिए बड़ा कष्ट किया है न ?"

गुलच ने कुछ नहीं कहा, उसने भी चेनि की ओर करवट बदल ली।

"अपना रुपया-पैसा भी मेरे लिए खर्च कर रहा है। क्या बीमार सचमुच चंगा हो जाएगा ?"—चेनि की आवाज में शंका है।

"कैसे कहूं ? हो भी सकता है।" गुलच ने कहा।

"मेरा मन कह रहा है कि वह चंगा नहीं होगा। इसके चंगा होने की बड़ी आशा है।"

"हां" गुलच ने यों ही कहा।

दोनों फिर थोड़ी देर चुप रहे और बारिश से हुई छप-छप आवाज को सुनते रहे।

धीरे से चेनि ने कहा, "हम दोनों जो साथ ही रह रहे हैं, क्या चंद्र ने कुछ भी नहीं सोचा है ?"

"चंद्र कुछ भी नहीं सोचता है। वह एक अलग ही किस्म का आदमी है।" गुलच ने कहा।

'सच' चेनि ने आश्चर्य प्रकट किया और गुलच के और पास जाकर कहा, "सोचने दे, यदि सोचता भी है।"

तैंतीस

बरघाट के पास बस से उतरते ही गुलच और सारे यात्रियों ने धनशिरि की जो मूर्ति देखी, उनके दिल धड़कने लगे। धनशिरि के गर्भ में पानी ही पानी है, चारों ओर फेन ही फेन है, पानी से नदी के किनारे टूटने को हैं। बारिश आज जरा रुकी है। यदि ऐसा ही रहे तो पानी की वृद्धि से स्थिरता आ सकती है। किंतु ऊपर पहाड़ पर यदि बारिश हो तो इस बार धनशिरि किनारा तोड़कर ही रहेगी, इसमें किसी प्रकार का संदेह नहीं है।

नदी से नीचे जाकर यदि डालिम के घाट में उतरते तो वे जल्दी ही पहुंचते। किंतु, ऐसा करना संभव नहीं है। छोटी नाव में जाना खतरे से खाली नहीं है। बड़ी नाव घाट में नहीं है। बसीरत की नाव लौट गई है।

चंद्र आदि होते तो सोच-विचारकर कुछ कर देते। उसमें साहस भी है, अकल भी है। नहीं तो क्या वह शहर और गांव सभी जगह इस प्रकार अगुवा बन सकता है ?

किंतु वह शहर में ही रह गया। कहा कि किसी से मिलना है। सिपरिया गांव में इधर स्थापित पाठशाला के लिए किसी ग्रांट के संबंध में किसी से उसे मिलना है, न जाने और कितना काम है उसे। वह शायद परसों तक आ पहुंचेगा। हमारे साथ ही लगा रहे तो लोगों का क्या काम होगा ?

चेनि और गुलच दोनों चलने लगे, रास्ता ठीक नहीं है। दूर भी काफी है, सूखे मौसम में छह-सात मील भी दूरी होती है। और अब बरसात में घूम-घामकर जाने से दस मील से कम दूरी नहीं होगी। दस मील पैदल जाना गुलच के लिए कोई कठिन

काम नहीं है। पर चेनि को थोड़ा कष्ट होगा, रास्ता-घाट भी कीचड़ आदि से भरा है।

सबेरे ही अस्पताल में जाकर उन्होंने केलाई से विदा ले ली थी। गुलच ने कहा, "डाक्टर ने कहा तू अच्छा हो जाएगा, कुछ भी चिंता न कर...।" इसके बाद उसने उसके हाथ में पंद्रह रुपए देकर कहा, "कष्ट के समय आवश्यकता हो सकती है, रख ले।"

केलाई ने दो बूंद आंसुओं से अपना अव्यक्त आभार प्रकट किया।

चेनि ने केलाई के मुंह पर हाथ फेरकर देखा, हाथ-पैरों को यों ही मल दिया, इसके बाद कहा, "यहां रहने की कोई सुविधा नहीं है। सभी अपरिचित लोग हैं। खर्च भी बहुत चाहिए, नहीं तो मैं रह ही जाती।"

उसके मुंह की ओर ताककर क्षीण आवाज में केलाई ने कहा, "यहां रहने की जरूरत नहीं है। कहां खाएगी ? कहां रहेगी ? गुलच भैया के साथ तू चली जा।"

जरा रुककर उसने कहा, "हमारे घर में कुछ भी नहीं है। हमारे बूढ़ा तुझे कैसे खिलाएंगे ? तिखर भी क्या करेगा, समझ में नहीं आता। तू मेरे साथ सुखी नहीं हो सकी, बड़ा कष्ट हुआ है। गुलच भैया तुझे स्नेह करेगा।"

इतना कहकर वह थक गया। उसकी आंखों के कोने में पानी जमा हो गया। चेनि और गुलच कुछ देर तक उसकी ओर देखते रहे। उन्होंने उसकी आंखों में जीवन की कोई ज्योति नहीं देखी। उनको अनुभव हुआ, वह मानो लगातार मृत्यु की ओर बढ़ रहा है।

चेनि की आंखें भी भर आईं।

शायद अपने स्वामी के रूप में नहीं, जिंदा रहने की आशा रखने वाले एक जवान आदमी को देखकर ही।

इसके बाद वे अस्पताल से निकल आए।

बरघाट से चलते समय दोपहर हो ही गई थी। जल्दी घर पहुंचें तो अच्छा है। नहीं तो घर पहुंचने में रात हो सकती।

कीचड़ में चलने का अभ्यास दोनों को है। दोनों जवान और सेहतमंद हैं। सत्ताइस साल का गुलच और इक्कीस साल की चेनि है। जंगल के बीच से वे दोनों धीरे-धीरे आगे बढ़े। दक्षिण के आकाश में मेघ घना है। वर्षा के मौसम के मेघ पर कोई भरोसा नहीं है। रास्ते में यदि जोर से बरसने लगे तो सर छिपाने के लिए भी कहीं जगह नहीं है। भीगकर बिलकुल तर हो जाना होगा।

सुनसान रास्ते में, एक परिचित गबरू साथ लेकर दोपहर को निस्तब्धता भंग करके चलने में एक आंनद होता है। दोनों के मन में अपार कथाएं हैं, किंतु कहने की कोई जरूरत नहीं है। गुलच आज चेनि का आश्रय और सहारा है। वह उसके ऊपर निर्भर करेगी। वह उसकी सभी आफतों से रक्षा करता रहेगा।

गुलच अब तक भी चेनि के साथ अपने संबंध को निर्णित नहीं कर सका है, केलाई अब भी जिंदा है, शायद वह जिंदा ही रहेगा, तब तो उसे उतनी चिंता नहीं है। किंतु केलाई यदि न बचे !

गुलच चेनि की देखभाल कर सकेगा और खर्च दे सकेगा। किंतु उनके बीच का सामाजिक संबंध क्या होगा ? कपाही है, तरा भी है—एक समाज है।

गुलच की चिंता में बाधा देखकर बीच में चेनि ने पूछा, "क्या सोच रहा है ? मेरे विषय में सोचने की उतनी जरूरत नहीं है।"

"न सोचूं तो कैसे होगा ?"—गुलच ने कहा।

चेनि ने कहा, "सोचकर ही क्या करेगा ? मेरे भाग्य में जो है, होगा।"

जरा रुककर उसने कहा, "कुछ होगा तो मेरा होगा। तू चिंता न कर।"

"तू कैसे गुजारा करेगी ?"

"कपाही के रहते हुए भी क्या तू अब भी मुझसे स्नेह नहीं करता ? उसी प्रकार मुझसे स्नेह करते रहना ! और मुझे क्या चाहिए, जब तक मुझसे स्नेह करता रहेगा, तब तक मुझे किसी से डर नहीं है।

एक दिन चेनि उसके साथ अपना घर छोड़कर भाग आई थी, उसकी पत्नी बनने की आशा से, जीवन-संगिनी बनने के संकल्प से। वे आशाएं चकनाचूर हो गई हैं। उनके जीवन का स्रोत दूसरी ओर बहने लगा। चेनि पुनः परिस्थितिवश उसके पास आई है। किंतु पास आने पर भी आज उसे अपनाने, अपनाकर रखने का पथ बंद हो गया था। उसके जीवन में कपाही का प्रवेश अचंभे में डालने वाली स्थिति में है। कपाही के साथ उसका पति पत्नी का संबंध हो गया है—सामाजिक स्वीकृति है।

और केलाई अब भी जिंदा है।

चेनि शायद संतान का सपना देख रही है। संसार जो सोचे, सोचने दे; गुलच जानता है कि चेनि के कोई संतान हो तो उसका पिता केलाई नहीं होगा, वह खुद होगा ! यदि सचमुच संतान हो ही।

कपाही उसे शायद पितृत्व का सम्मान नहीं दिला सकेगी। किंतु मन की गहराई की ओर देखकर गुलच ने एक बात बड़ी तीव्रता से अनुभव की ! चेनि और कपाही—इनमें से एक को भी वह नहीं चाहता। वे यदि उसके जीवन में न भी रहें तो भी उसमें किसी प्रकार की अपूर्णता नहीं रहेगी, उनके साथ उसका सामाजिक अथवा और किसी भी प्रकार का संबंध ही क्यों न हो।

बहुत कुछ सोचकर उसको प्रतीत हुआ कि कपाही और चेनि—दोनों में से कोई भी, वह जो चाहता है, उसका प्राण जो चाहता है—उसकी पूर्ति नहीं कर सकती। वह उनको नहीं चाहता, उनके न रहते हुए भी उसकी जिंदगी चलती रहेगी।

गुलच का जी घबरा उठा।

काला बादल नीचे उतर आया था। उस समय भी दिन का कुछ समय बचा था, तथापि सांझ होने को थी।

एक बीड़ी सुलगाने के लिए गुलच जरा रुका। बरगद की जड़ पर बैठकर चेनि ने भी पान की गठरी को खोली।

चलते चलते वे किसी एक गांव में पहुंचे।

बीड़ी को दांतों से दबाकर उसने यों ही सामने की ओर देखा। उसकी आंखें जहां तक स्पष्ट देख सकती हैं वहां तक हरा-भरा धान का खेत है, धान के पौधों के पत्ते अधिक हरे हो गए हैं। धान के पौधे बढ़ रहे हैं। हवा में धान के पौधों के पत्ते सर-सर शब्दकर झूम रहे हैं। आंखों की दृष्टि जहां तक गई है वहां तक खुले खेत की केवल विस्तृति है।

गुलच के मन की घबराहट तुरंत ही कहीं खो गई। उसका मन किसी एक अद्भुत आनंद से भर उठा। वह एकांत रूप से निष्पलक दृष्टि से धान के खेत की ओर देखता रहा। चेनि भी देखती रही।

"धान के खेत को देख रही है, बड़ा सुंदर लगता है"—सपने के आवेश में गुलच ने कहा। उसकी आंखें धान के खेत पर हैं।

"हमारी ओर भी इस बार ऐसा ही हुआ है।"

आनंद के मारे गुलच ने चारों ओर देखा, अकस्मात किसी बीज को देखकर वह खड़ा हुआ और झटपट उस ओर बढ़ गया।

"उस ओर कहां जाता है ?" चेनि ने पूछा। गुलच ने कोई उत्तर नहीं दिया।

चेनि खड़ी होकर गुलच के जाने की ओर कुतूहल से देखने लगी।

कुछ देर बार एक भैंसे की नकेल को पकड़कर खींचते हुए गुलच लौट आया।

"वह किसका भैंसा मिला ?" चेनि ने पूछा।

"मालूम नहीं किसका है ! बांध तोड़कर धान के खेत में आकर बहुत सारे खा डाले हैं। धान के पौधों को यदि इस प्रकार भैंसों से नष्ट कराया जाए तो धान कहां से होगा ?"

भैंसे ने एक बार शिकायती नजर से गुलच की ओर देखा और इसके बाद घास चरने लगा।

"केवल खेत लगाने से ही नहीं होता। कुछ देख-भाल तो करनी चाहिए। गाय-बैल खाकर समाप्त कर दें तो आदमी के लिए क्या बचेगा ?" गुलच ने कहा।

इसके बाद शेष रास्ते में दोनों में और कोई विशेष बात नहीं हुई।

सांझ होते-होते चेनि को अपने घर में छोडकर गुलच अपने घर की ओर तेजी से बढ़ा। केलाई के बारे में मोलोका और दूसरों को कुछ कहना हो तो चेनि ही कह देगी।

आने-जाने का खर्च, चंद्र के जरिए डाक्टर-नर्स को दिया गया खर्च, केलाई

के हाथ में दे आए खर्च और होटल में चाय-नाश्ता और खाना खाने का खर्च—सब लेकर अपने साथ जितना रुपया वह ले गया था, उसमें से केवल सत्ताईस रुपए ही वापस आए। गठरी से रुपए निकालकर उसमें से सात रुपए अपने हाथ में रखे। बाकी एक कोड़ी रुपए उसने चेनि के हाथ में देकर कहा, "कुछ दिन चला। मैं उस ओर कब आ सकूंगा, कह नहीं सकता।"

हाथ बढ़ाकर चेनि ने रुपए ले लिए और उसके मुंह की ओर अंधेरे में ही एक बार ताका। वह नहीं रुका।

घर पहुंचकर उसने देखा कि मकान के सामने बैठकर तिखर कपाही के साथ बात कर रहा है। उसने एक बार दोनों की ओर देखा। तिखर ने पूछा, "आ गए ?"

उसकी बात का कोई उत्तर न देकर गुलच सीधे पिछवाड़े में गया। उसने पुकारा, "तरा !"

तरा ने जल्दीबाजी में बाहर आकर उसके हाथ की पोटली को लेकर उसके हाथ-पैर धोने के लिए एक लोटा पानी दिया। उस समय बाहर अंधेरा हो रहा था। लालटेन और लोटे को लेकर गुलच आंगन में निकल गया।

लोटे को आंगन में ही रखकर लालटेन को हाथ में लेकर वह गोठ में गया, और लालटेन के प्रकाश में गाय-बैलों को एक बार एक-एक करके देखा।

"गाय-बैलों को खिलाया है, तरा ? भैंस का पेट नहीं भरा होगा, घास काटकर नहीं लाई होगी ? सफेद बछड़ी ?—हां, हां—है, है।"

लालटेन लेकर उसे जाते हुए देखकर भैंसा उठ पड़ा। उसने उसके कपाल पर हाथ फेर दिया। भैंसे ने अपनी काली आंखों से उसकी ओर देखा, प्यार भरी नजरों से।

लोटे से उसने दाएं पैर पर पानी उड़ेला था, हठात उसे कुछ याद हो आया। लोटे को वहीं रखकर आया। दाब को लेकर उसने मशाल बनाई और उसे जलाकर खेत की ओर तेजी से भागा।

"अभी वहां जाते हो ?" तरा ने पूछा।

"खेत को एक बार देख आता हूं। नदी में बड़ा पानी आया है। कहीं यदि किनारा तोड़ डाला तो सब कुछ चला जाएगा..." कहते हुए हाथ में मशाल को लेकर वह खेत की ओर बढ़ गया। कपाही ने तिखर से कहा, "आते ही खेत देखने के लिए चल पड़ा। धान का खेत रात भर में कहां जाएगा ? सबेरे जाकर देखने से क्या बिगड़ जाता ? हम दोनों से एक बात भी नहीं की, और सीधे खेत में दौड़ा। इस आदमी को और कोई चिंता नहीं है क्या ?"

तरा कुछ देर तक गुलच के जाने की ओर देखती रही और इसके बाद उसके खाने के इंतजाम में लगी।

चौंतीस

अगला दिन।

घोर काले मेघ से आकाश छाया हुआ है। रात की घनघोर वर्षा के बाद सुबह के समय वर्षा यद्यपि रुक गई है, तथापि पुनः वर्षा होने की संभावना अब भी आकाश के गर्भ में है। दक्षिण की ओर लगातार मेघ गरज रहा है तथा बिजली कौंध रही है। एक अनहोनी विपदा के लिए भयभीत पृथ्वी प्रस्तुत हो रही है। हो सकता है कि कुछ देर बाद ही मूसलाधार वर्षा आ जाएगी।

इस प्रकार लगातार हुई बारिश का परिणाम बुरा हो सकता है।

सबेरे हल जोतने के समय ही गुलच सोते से उठकर बाहर आया। एक बार चारों ओर उसने नजर दौड़ाई। आज हल जोतने की आशा नहीं है। नदी किनारे की जमीन में पानी छलक रहा है। नदी का पानी अभी भी घुसा नहीं है। किंतु बारिश के पानी से ही सारे खेत में रुपहली चादर बिछ गई है। खेत में कमर तक पानी आ गया है।

कुछ घबराकर गुलच थोड़ी दूर उस तरफ देखता रहा। इसके बाद कुदाली को उठाकर नदी के किनारे की तरफ चला गया।

कपाही और तरा ने कुछ भी कहने का साहस न किया। गुलच का मुंह भी आकाश की तरह ही गंभीर और भरा हुआ था। कल घर पहुंचने के बाद से उसने किसी के साथ बात नहीं की है। कपाही और तरा कुछ भी समझ नहीं पा रही है।

खेत में जाकर गुलच ने देखा कि गांव के दूसरे लोग भी दाब, कुदाली आदि लेकर नदी के किनारे आए हैं, और सब मिलकर आने वाली बाढ़ से अपने खेतों की रक्षा के लिए नदी के किनारे मिट्टी डालकर बांध जैसा बनाने में व्यस्त हैं। आस-पास के जंगल आदि काटकर, मिट्टी डालकर अभी बांध तैयार नहीं हो सकता। आज रात तक बाढ़ से गांव की रक्षा करना संभव नहीं होगा।

सिपरिया गांव के जवान-बूढ़े सभी व्यस्त हैं, वे धैर्यहीन हो उठे हैं। धनशिरि को वापस भेजना है, नहीं तो धनशिरि मृत्यु को ले आएगी। कुदाली, दाब, हाथ—जो जिस प्रकार से कर सकता है नदी के किनारे मिट्टी डाल रहा है। किसी प्रकार से एक हाथ ऊंचा बांध तैयार हो जाए, शायद विपदा से बच जाएंगे। उस ओर नदी का किनारा ऊंचा है, सहजता से तोड़ नहीं सकती। नीचे डालिम के घाट की ओर भी ऊंचा कगार है। बीच में आधे मील के करीब नदी का कगार नीचा है। इसी स्थान से गांव में विपद आ सकता है।

प्राणों की बाजी लगाकर, दम भर भी आराम न करके सबेरे से दोपहर तक सभी ने मिलकर नदी के कगार को कुछ ऊंचा किया। बांस, लकड़ी आदि के खूंटे गाड़कर घास-फूस, खर आदि के ऊपर मिट्टी देकर बांध तैयार किया। बारिश यदि

जोर की न हो तो बांध नहीं टूटेगा, बाढ़ का पानी गांव में नहीं घुसेगा।

दूसरे आदमी के आने के बाद भी गुलच और कुछ समय तक अपने खेत के पास के कगार पर मिट्टी डालता रहा। बाढ़ आने पर नदी के किनारे की नए सिरे से आबाद की गई उसकी ही अधिक जमीन पानी के प्रभाव में आएगी। अंत में बड़ी भूख लगने के कारण खेत की ओर घूम-घूमकर, देखकर वह धीरे-धीरे घर की ओर जाने लगा।

उस समय दोपहर ढलने लगी थी।

कपाही और तरा उसके लिए व्यग्रता से प्रतीक्षा कर रही थी। पोखरे में डुबकी लगाकर घर आते ही तरा ने भात परोस दिया। उसने चिंतित होकर भात खाया।

वह थक गया था। किंतु आराम के लिए समय नहीं था। उसने एक जामा खोजकर पहना और छत में रखे एक कोड़े को खींच लिया।

पान को उसके हाथ में देकर कपाही ने पूछा, "फिर कहीं जा रहे हो क्या ?"

गुलच ने कुछ न कहा।

तिखर कल भी आया था, आज भी आकर बैठा था।

कपाही की बात को बंद करके कड़े शब्दों में गुलच ने कहा, "क्यों आया था, वह मेरे घर क्यों आता है ?"

"एक आदमी के आने से क्या कसूर होता है ? केलाई को ले जाकर शहर में छोड़ आए हो, उसके बारे में जानने के लिए भी नहीं आएगा ?"

"अपनी भाभी नहीं है क्या, उससे पूछने से क्या उसके बारे में जानकारी नहीं मिलेगी ? यहां पान खाकर गप्प करते रहने से ही उसे केलाई के बारे में मालूम होता है...! इस बेगार को और कोई काम नहीं है। गांव के सब के सब नदी पर बांध देने के लिए गए हैं, और यह आया है गप्प हांकने के लिए।"

कपाही को गुस्सा आया। गुलच ने कभी भी इस प्रकार की कडी बात उससे नहीं कहीं थी। उसने भी टका-सा जवाब दिया, "और खुद जाकर दूसरे के घर गप्पें नहीं लड़ाते ! मुझे क्या मालूम नहीं है। दिन में एक बार चेनि के घर न जाने से मन को शांति ही नहीं मिलती। अपनी कमाई का पैसा खर्च करके केलाई को गोला ले जाने की क्या जरूरत पड़ती थी...?"

कठोर आवाज में गुलच चिल्ला उठा, "कपाही, आज तेरा हाल बुरा होगा। मेरा धन—मैं खर्च करूं या नदी में बहा दूं—तू कौन है उसके बारे में सवाल करने वाली ? एक रखनी औरत की इतनी बड़ी बात—!"

"मैं रखनी औरत हूं, और तू खुद क्या है ? दूसरे की औरत को शहर में ले जाकर घूमने, घुमाने में शर्म नहीं आती ? इधर लोग हाय-तोबा कर रहे हैं।"

गुलच हठात मुड़ गया और अत्यधिक क्रोधित होकर हाथ के कोड़े से कपाही को पीटने लगा। "भागकर आने वाली औरत, बदमाश... जा, मेरे घर से निकल।"

कपाही स्तब्ध रह गई, वह रोई नहीं। चिल्लाई भी नहीं, उसने दृढ़ता से कहा, "पीट ! जितना पीट सकता है, पीट ! अभी मुझको पीटकर भगाएगा। केलाई को मरने के लिए रख आया है न ? चेनि को घर में लाना है न ! मैं अभी ही निकल जाऊंगी, मैं ही तुम लोगों के रास्ते का रोड़ा बन बैठी हूं !"

"जा, जा,—तुझसे किसने कहा है 'ना जा' ? जा, जहां जाना चाहती है, जा। मैं यदि तुझे वापस लाने के लिए जाऊं तो मुझको कुत्ता कहकर पुकारना। घाट में बसीरत नाव लेकर इंतजार कर रहा है—जा, वह इंतजार कर रहा है। मैं क्या नहीं जानता हूं। नाहर के साथ निकाह करके बसीरत के साथ आंख लड़ाने वाली है तू ?"

तरा घबरा गई। उसने एक बार गुलच की ओर और एक बार कपाही की ओर देखकर इतना ही कहा, "तुम लोगों को आज क्या हुआ है ? कोई कुलक्षण हुआ है ? कजिया करने की क्या जरूरत है ?"

गुलच सीधे भीतर से निकल पड़ा। उसने बंधे हुए गाय-बैलों को खोल लिया और चेनिमाइ के घर की ओर हांकते हुए जाने लगा।

कपाही थोड़ी देर खड़ी रही। वह स्वगत बोलती गई, "कहीं कोई ठिकाना नहीं था, मैंने आकर घर को बसाया। और अब मैं बनी भागकर आने वाली"। नहीं खाऊंगी इस बदनाम भरे घर में। बसीरत के साथ जाऊं, या और किसी के साथ, कहीं चली जाऊं। हाथ हैं, कमाकर खाऊंगी—नहीं तो दुनिया है, मांगकर खाऊंगी। तुम लोग ही अपना राज-भोज खाओ।"

एक छोटी-सी पोटली कांख के नीचे दबाकर कपाही धीरे-धीरे घर से निकल आई और डालिम घाट की ओर चल पड़ी।

घबराई हुई और बुद्धिहीन होकर तरा कपाही के जाने की ओर देखती रही। इसके बाद उसकी मौसी जब उसकी आंखों से ओझल हो गई उसने अपने आप ही कहा, 'क्या जाने—यह क्या हो रहा है।'

घर के भीतर रहने में अकेली तरा को खराब लगा। वह आंगन में निकल आई। आकाश काले बादलों ने घेर लिया था। उमस-सी लग रही थी। जोर की बारिश में और ज्यादा देर नहीं है।

वह आकर आंगन के छोर के गेंदा फूल के पास ही रुकी। दोनों पौधे सूख गए हैं। सूखकर काले होने वाले कई फूल डंठल में लटके हुए हैं।

उसने सूरजमुखी की ओर नजर डाली। सुबह एक फूल फूला था। अब सूरज पश्चिम की दिशा में जाने के साथ-साथ वह भी पश्चिम दिशा की ओर घूम गया है। सूरज बादलों के बीच छिपे रहने के कारण फूल का उजलापन जरा म्लान हो गया है। किंतु उसकी पंखुरियां ताजा हैं।

कुछ देर तक वह फूल की ओर एक टक देखती रही और फिर भीतर चली आई। एक बार उसने आकाश की ओर देखा—आकाश में प्रलय की पूर्व सूचना है।

गाय-बैलों को लेकर गुलच सिपरिया गांव के उस छोर पर पहुंच गया। जरध के घर की ओर काफी ऊंचा है, वहां कभी भी पानी नहीं चढ़ा है। नदी में बाढ़ आने की पूरी संभावना है। किंतु उसके मकान तक बाढ़ न पहुंचे, बाढ़ आने पर गाय-बैल बह जाने का डर है, नहीं तो खाने-पीने में उनको बड़ा कष्ट होगा। बाढ़ यदि न आए तो दो-चार दिनों में उनको वापस ले जाएगा।

गुलच घर की ओर जल्दी लौट रहा था। अकस्मात चंद्र मिल गया—वह भी जल्दीबाजी में आ रहा था।

"कहां से आया है, चंद्र ?" चंद्र रुक गया।

"आ ही रहा हूं—टाउन से। वहीं धनशिरि में फ्लड होने की खबर मिली। ऊपर की तरफ बड़ी भयानक बाढ़ आई है, हमारे यहां भी होगा—कोई कह नहीं सकता। रिलिफ की व्यवस्था करनी होगी। तुम लोग ठीक तरह से पहुंच गए न ?"

"हूं, किसी तरह पहुंच गए। हम गांव वालों ने एक बांध तैयार किया है। अभी तक तो ठीक है। किंतु यदि ज्यादा बारिश हो तो वह नहीं टिकेगा।"

"आकाश देख न, बारिश होने ही वाली है। तू यहां क्यों आया है ?"

"गाय-बैलों को छोड़ आने के लिए। बाढ़ आने पर कौन किसकी खबर रखेगा ?"

"अच्छा नो टाइम, बात करने के लिए समय नहीं है। मैं टाउन में एस. डी. ओ. से कह आया हूं—रिलिफ भेजने के लिए। यहां भी एक रिलिफ कमेटी बननी चाहिए—यदि बाढ़ चढ़ आए। तेरे खत्ते में अनाज है न ?"

"हां, थोड़ा-बहुत है।"

"आदमी तो बच जाएंगे—अनाज को बचाने की व्यवस्था कर। विपद आया है—अनाज और रुपया-पैसा की सबको जरूरत होगी। अच्छा, चिंता न करना—मैं चलूं..."

"हमको तत्काल कोई विपत्ति नहीं है। तथापि तू ध्यान रखना"—गुलच ने कहा।

"हां अवश्य, अवश्य। तुम लोग अनाज को मचान पर चढ़ाओ। मैं घाट से बसीरत की नाव लेता आऊंगा। हो सके तो तू भी रिलिफ के काम में निकलना।"

कहते हुए चंद्र चला गया, उसको रुकने के लिए समय नहीं है, धनशिरि में बाढ़ आई है, आकाश में घनघोर बादल हैं।

'बाढ़ में बह जाने पर भी मैं बसीरत की नाव पर नहीं चढ़ूंगा'—गुलच ने अपने आप से कहा। कपाही से वह आज जिस प्रकार से घृणा करता है, बसीरत से भी उसी प्रकार घृणा करता है।

गुलच धीरे-धीरे घर चला आया।

आंगन के सामने वह जरा रुका। अकस्मात उसकी नजर भी सूरजमुखी के

ऊपर पड़ी। सांझ के धुंधलेपन से पहले वह फूल मुरझा गया है। थोड़ी देर तक फूल की ओर ताककर वह नदी के किनारे की ओर चल पड़ा।

उस समय सांझ पूरी हो गई थी। मेघाच्छन्न आकाश और नीचे उतर आया है। किसी भय से मानो खेत के पौधे भी मुरझा गए हैं। वह जाकर नदी के किनारे पहुंचा और पगली होकर नाचती हुई आनेवाली धनशिरि की ओर देखा। उसकी आंखों में आंसू आ गए। कगार पर से होकर पानी बहने के लिए और चार अंगुल ही रह गए थे। विषाद और निस्सहाय होकर वह घर की ओर आया। बड़े दुख के साथ उसने एक बार अपने खेत की ओर देखा। कुछ देर तक वह देखता ही रहा—इसके बाद वह पागल की तरह घर की तरफ चला।

"कपाही फूफी है क्या ? कहां जा रही है ?" चंद्र ने पूछा।

कपाही ने सर उठाकर देखा।

"शाम के समय कहां जा रही है ?"

"तू कहां से आया है ?"

"टाउन से—किधर जा रही है ?"

"मुझे घर से निकाल दिया है..."

"निकाल दिया है ! किसने ?"

"गुलच ने..."

"तमाशा न कर। भारी बारिश होने वाली है। यह क्या तमाशा कर रही है ! सच बोल, क्या हुआ है ?"

"सच कह रही हूं। गोलाघाट से आने के समय शायद चेनि ने कुछ कहा। कल से बात-चीत नहीं हुई है, आज एक बात पूछते ही हलके कोड़े से पीटकर निकाल दिया है।"

"क्या ! गुलच ऐसा हो गया है ? चेनि ने क्या कहा है ?"

इधर-उधर देखकर कपाही ने कहा, "उस बात के बारे में किसी को मालूम नहीं, चेनि शायद जानती है..."

"कौन-सी बात है ?"

"और कौन-सी बात है, बसीरत की बात..."

"बसीरत की बात है ? बसीरत की क्या बात है ?"

"नाहर के यहां से मैं उसके कारण ही नहीं निकाली गई थीं ?"

"तो क्या हुआ ?" चंद्र कुछ उतावला हो गया था।

"बसीरत को फिर हमारे घर आते देखा है।"

"तो ?" चंद्र ने कपाही के मुंह की ओर सीधा देखा। थूक निगलकर घबराती हुई कपाही ने कहा, "किसी ने कुछ कहा होगा..."

"बसीरत ? माने इधर का बसीरत ?" चंद्र ने कपाही के मुंह की ओर देखा।

कपाही ने अपनी नजर नीची कर ली।

चंद्र की आंखों के सामने मानो बहुत-सी बातें स्पष्ट हो गई। "मान लो वह आता ही है, उससे क्या होता है ?"

"किसी ने उस घटना के बारे में गुलच से कहा है। पहले की सभी बातों को जानकर वह गुस्से में जल उठा है। चेनि ने ही उससे कहा होगा।"

चंद्र ने एक बार आकाश की ओर देखा। उसके बाद शांत भाव से कहा, "मैं भी तुझसे बहुत दिनों से एक बात कहना चाहता था—डोंट माइंड। गुलच ने तरा के साथ ही ब्याह करने की बात पहले से सोच रखी थी, किंतु बीच में गड़बड़ हो गई। अब भी यदि तू बुरा नहीं मानती तो तू बसीरत के साथ चली जा। वह शायद तेरे लिए ही आज तक बिन ब्याहा रह गया है। गुलच को रहने दे..."

बारिश की बड़ी-बड़ी बूंदें टपकने लगी थीं। चंद्र ने जल्दबाजी करके कहा, "अच्छा बाद में जो करना है कर, अब आ, बारिश आ गई है। घाट में शायद बसीरत की नाव है। हम जल्दी पार कर लें।"

कपाही ने आए हुए रास्ते की ओर एक बार प्यासी नजर से देखा। इसके बाद कुछ भी न कहकर चंद्र के पीछे जल्दी-जल्दी घाट की ओर उसने कदम बढ़ाया।

चंद्र ने कहा, "नो एन्ड, सब ठीक कर दूंगा। तुझे पीटा है, अच्छा, आइ शैल सी। तू जी न दुखाना। एवरिथिंग आलराइट—सब ठीक हो जाएगा।"

हो-हो करके आने वाली बारिश की आवाज में चंद्र ने और क्या कहा है, सुनाई न पड़ा, दोनों आगे बढ़े।

पैंतीस

गंभीर रात है।

अंधेरा है। डरावनी रात है।

आकाश की छाती टूट गई है। हवा के घरघराने की आवाज हो रही है। बिजली के गिरने के कारण हृदय को कंपा देने वाला गर्जन हो रहा है और बीच-बीच में आंखों को चकाचौंध कर देने वाली बिजली चमक रही है।

प्रलय उतर आया है।

धनशिरि ने किनारा तोड़ा है। बाढ़ का पगला स्रोत कगार तोड़कर, बांध खंड-विखंड होकर अंधेरे के बीच चारों ओर फैल गया है। नदी के प्रवाह की भयानक आवाज विपन्न धरित्री की रुलाई की तरह आर्त्तनाद की सृष्टि कर रही है। प्रचंड और

दुर्वार गति के साथ धनशिरि पगली की तरह अपनी खुशी से सबको तबाह करके चली है। दूर जगंली जानवर आर्त्तनाद कर रहे हैं। धान के खेत मारसिया गा रहे हैं।

हर हर, गर गर, छर छर छरर—पृथ्वी का भयार्त्त निनाद है।

कहीं किसी की आवाज नहीं सुनाई पड़ती।

तरा ने कई बार दीया जलाने का प्रयत्न किया, किंतु नहीं जला सकी। वह बुझ जाता है। आकाश और पृथ्वी—सर्वत्र व्याप्त अंधेरे का काला अजगर सबको निगल रहा है। अंधेरा ही अंधेरा है।

मध्य रात है।

बाहर धनशिरि की पागल बाढ़ है।

तकिए में मुंह छिपाकर गुलच पड़ा हुआ था। उसके मन में हजार दुर्बोध्य चिंताएं हैं। तरा धीरे-धीरे आकर उसके पास आ खड़ी हुई। आभास पाकर गुलच बिस्तर की ओर चला गया।

"इतनी बारिश और हवा चल रही है। मालूम नहीं, मौसी कहां चली गई"—तरा ने कहा।

गुलच ने कुछ नहीं कहा।

कुछ देर तक बाहर की बाढ़ और बारिश की ओर कान लगाकर तरा ने फिर कहा, "आज क्या हो गया है, मौसी को इतनी गाली देकर मार-पीट क्यों की ?"

गुलच ने तरा के एक हाथ को खोजकर अपने हाथ में ले लिया और कोमल कंठ से धीरे-धीरे कहा, "तू कुछ नहीं जानती तरा, बहुत सारी बातें हैं..."

तरा गुलच के शरीर पर प्यार से हाथ फेरने लगी।

"क्या बात है ?"

"एक बार तुझे सफीयत के गूंगे से ब्याह देने का षड्यंत्र किया था, इस बार फिर तिखर के साथ। इन बातों के बारे में तुझे मालूम नहीं है..."

तरा ने गुलच के पास जाकर उसके बालों में हाथ फेरकर कहा, "तो क्या हुआ ? इस कारण मार—पीट करनी चाहिए ?"

"मुझे भी अच्छा नहीं लगा है। आज बहुत गुस्सा आ गया। क्यों, मालूम नहीं। तुझको बुरा लगा है क्या ? तुझसे यदि उसे स्नेह है तो वह वापस आएगी—तू चिंता न कर।"

तरा बिस्तर पर आ बैठी।

उसने कुछ नहीं कहा।

दूर बाढ़ की आवाज हो रही है। पृथ्वी की छाती पर आकाश टूटकर गिरा है। मध्य रात्रि की आंधी पगली होकर कहीं छर-छर करके उड़ गई है।

कुछ देर उस ओर कान लगाकर गुलच ने कहा, "धनशिरि बांध तोड़कर आई है—सुनी है आवाज ?"

"बाढ़ का पानी हमारे खेतों को डुबा देगा," तरा ने चिंतित होकर कहा।

"नदी में जब बाढ़ आती है तो मनुष्य उसे रोक नहीं सकता," गुलच ने कहा।

घर की छत पर बारिश की लगातार आवाज हो रही है। दूर बाढ़ की आवाज हो रही है।

गुलच के सीने के पास ही तरा धीरे-धीरे सो गई।

"तुझे डर लग रहा है ?" उसको अपने पास खींचकर गुलच ने पूछा।

बिना कुछ कहे उसने गुलच की छाती में अपने सर को छिपा लिया।

"अब तुझे मुझसे कोई भी छीनकर नहीं ले जा सकता।" तरा को बाहु-बंधन में लेकर गुलच ने कहा।

"बाढ़ जब आती है, कोई भी उसे रोक नहीं सकता।" तरा को बाहु-बंधन में लेकर गुलच ने कहा, "बाढ़ आई है, इस वर्ष की फसल बरबाद हो गई है। मौसी भी गई, सब गए। जाने दे, तू है..."

तरा ने दृढ़ता के साथ गुलच को पकड़ लिया। उसकी शंकाहीन सांस से वह नमी रात भी गर्म हो उठी।

गुलच ने शांत भाव से कहा, "तू है, तू ही मेरा सर्वस्व है।"

'सत्य की इतनी बड़ी बात उसने कभी नहीं कही थी' गुलच ने सोचा।

नए सिरे से आबाद की गई जमीन पर से बाढ़ बह आई है। धनशिरि के स्रोत की पगली गति है।

नदी का स्रोत नहीं रुकता है—गतिशील नदी है।

रात की सूरजमुखी प्रकाश की खोज करती है। जीवन गतिशील है।

"तरा !" तरा नहीं बोलती है।

तरा को सीने से लगाकर गुलच ने सोचा, "बाढ़ आकर भी हमारा घर बहा नहीं ले जाएगी। हमारे घर की नींव ऊंची है।

जर-जर, छर-छर बारिश की गंभीर आवाज है। इस शब्द के उस पार कोई भी पृथ्वी नहीं है।

और भी अधिक गंभीरता और दृढ़ता के साथ तरा ने गुलच को अपने पास खींच लिया।

"...तू मेरा घर है, मेरा खेत है, मेरा सर्वस्व है।"

पृथ्वी के तप्त गर्भ में भीगा आकाश उतर आया है। ...धनशिरि किनारा काट रही है। नए सिरे से आबाद की गई जमीन पर भादो की बाढ़ तलौंछ ले आई है।

उस समय चंद्र शायद रिलीफ की चिंता कर रहा था...कहीं उजागर होकर। शायद किसी कपाही को ढांढस दिला रहा था। वर्षा की बाढ़ आई है, बाढ़ चली जाएगी, भय किसके लिए...?

मुद्रक : ब्यूटी प्रिंट, 10/8020 मुलतानी ढांडा, पहाड़गंज, नई दिल्ली-55